लेंगें उनोंकों १।) रुपया निछरावल दरमें रेल खरच जुदा लगेगा हमारा ठिकाणा बीकानेर राजपूताना उपाध्याय श्रीरामलालगणिः रांघडी विद्याशाला.

अजैवी वात.

अभी पंचम आरेके अडाई हजार करीव वर्ष वीते हैं इसवख्त जैननाम धराणेवाले ऋषीजन कोई तो छाछके आसरे पांच २ महीना पाणीके धोवणके साहरे मासक्षमण ६० दिनतक तपस्या करते हैं ममता जाहिरामें त्यागी भई प्रगट मालम देती हैं ठंढ गरमी वगेरे नानाकष्ट सहते हैं तो फिर ये क्या अजवी ढंग है कै किसी भी ऋप-साहव पास वैमानिक देवता तो दूर रहै मगर व्यंतर निकायका भी कोई देवता प्रगट नहीं होता ये एक अजवी वात है कभी कोई साहिव फरमांयगें कैकालका दोप है तो ये भी वात प्रत्यक्ष प्रमाणसें वाधा खाती है क्योंकै मुरसिदावादमें पूरणचंदजी सनातन जैनधर्मी गोलछा वडा तपेश्वरी था उनोंके और लखमीपति धनपती दुगडकी माता महताव कुंअरजीके धर्मांराग था और महतावकुंअरजीका अगर तपस्यांकी गिणना इतनें परही समझलेणा सालभरमें २० दिन भोजन ३० एकासणां ४० आंविल वाकी सव उपवासमें ही व्यतीत होताथा जव अणसणकिया तव पूरणचंदजीने अरज करी हे माता आपके देह छूटणेपर मुझें यावजीव आंबिल पचखाण है मगर देवता होणेपर जरूर दर्शन देणा वस उसवाद वावूसाहवनें वोही प्रारंभ करा महतावकुंअर ईसाण देवलोकर्में प्रत्यक्ष भये तव पूरणचंद तपेश्वरीनें ४ जणोंके भव पूछणा श्रीसीमंधर स्वामीसें कहा जती मोतीचंदजी उनोंके धर्मोपदेशक थे उनोंका, तथा आपका, रायवहादुरकोठारीमे घराजजीका, तथा तेरे पंथियोंके पूजजीतमलजीका, मोतीचंदजीके २७ भव वताये, पूरणमल एका भवावतारी, मेघराजजीके संक्षात भव चोथे पुरुपका जो कहा सो में नहीं लिखता कारण वहुत पुरुषोंके माननीय पुरुपकी अवज्ञाकरणी नेक नहीं समझा गया ५० अदमी पडिकमणा

अजीम गंजमें वडी पोसालमें करतेथे उस वखत दसुं दिसामें तेजपूंज मुगटकुंडलादि सोभा सहित पूरणमलजीकों आमंत्रणकर कहकर अदस्य भये ये विक्रमसंवत् १९।२४ कीसालकी वात है फेर दादा गुरुदेवने फतेमलजी भडगतियेकूं अजमेरमें तेसें गैणचंदजी गोलछेकूं बीकानेरमें लक्षमीपति दूगडकों २६ कीसालमें वालूचरमें अभी हांलानया सिंधु-देशमें सेठ श्रीभगवानदास दादागुरुके परमभक्तकों ६० कीसालमें प्रत्यक्ष दर्शन देकर सिरकारी कोटकी तीजोरीमें वंधकरी भई २७ हजारकी अंगूठी साहव पास कूंची और अंदरसें गायव गई सेठकी ७ वर्षकी जेल बचादी एसें हजारों जगे दादा गुरुदेवकी प्रत्यक्षतामसहूर है लिखें तो वडा ग्रंथ वणजावै फेर थोडासा नमूना प्रत्यक्ष जोकी बीका-नेरमें भया और आपलोकोंनें देखा सो है ६२ कीसालमें जो खरतर गछी तनसुखजीनें राजाधिराज गंगासिंहजीकों आगे दिन वताकर मेह वरसाया वसमें जादा नहीं लिखे चाहता प्रमाण प्रतिष्ठित बीसोंजती-योंके पास इस पडतेकालमें प्रत्यक्ष देवता आते हैं तो फेर ये अजव ढंगकी क्या बात है एसे तपस्याकारक साधू नांम धराणेवालों पास देव क्यों प्रत्यक्ष नहीं होते जो कोई कहेगा जो देवता आवै तो एसे ऋषियोंकों क्या लेणा है कुछ उनोंकों संसारी कामोसें तो तालूका नहीं हैं (जवाव) भगवान तीर्थंकरोंकों क्या लेणा था हरि केसी मुनिकों क्या लेणा था इसतरे अनेक साधुओं पास देवता आये थे मगर कहांई आवे ही धर्म वढाणा तो साधुओंका फर्ज है इसीवास्ते तो गांम २ फिरते रहते हैं एसा देव प्रत्यक्ष होय तो अन्यमती एसें साधोंसें तुरतही दयाधर्म ग्रहण करलेतें जतीलोक मांनप्रतिष्ठा वास्ते तथा किसीका कष्ट मिटाणे प्रयोग करते हैं तो तुरत होते देखा है इसका मतलव और है वो एक विना देवता है न देवी है. फकत मनुष्योंमें तपेसरी वजणा है ये अजवी वात है अंगरेजलोक मेसमेरे-जिम करते प्रत्यक्ष व्यंतर देवतां बुलाते हैं अव तो देसीलोक भी सीख गये हैं वो लोक हमेस ब्रह्मचर्य भी नहीं पालते हैं अमेरिकामें

एसी विद्या निकली है सोमरा भया चाहे सो हो बुलाकर बात करा देते हैं दिखता नहीं है बापदादा भाईकी बोली वोही पिछान सकते हो घरकी गुप्तबात पूछो जवाब देदेगा तुमनें अभी सुणा होगा बीदासरमें अग्रचंदजती नागोरीलूंका गछीको तेरापंथियोंका पूज्यडालचंदजीनें ६१ की सालमें बीदासरके उपासरेमेंसें बणियों कूं कहकर निकाला था एसें क्रियावंत तपेसरीजीमें फेर उसनें कहांतकविताई सो आप ओसवाल तो जांणते हो सो जाणतेही हो मगर अन्यदर्शनी हजारों लाखों लोकोंकों याकम है, जतीतो क्रियाहीन, ओसवाल कहा करते हैं तो फेर एसें त्यागी वैरागि जिनाज्ञा तुमारी समझ मुजब पालणे वालोंपर क्रियाहीनकी मंत्रशक्ति वचन श्राप केसें असर करा फेर जो उनोंकै उपासक ओसवाल अग्रचंदको बहोत मनाते फिरे ५ हजार १० हजार रुपे धामे उसने तो राम कहकै रहीम कहाई नहीं अग्रचंद बीकानेर इलाकैसांडवेगांममें ५० वर्षकी ऊमरवाला ६७ की सालमें मोजूद है हमसें भाटी ठाकुर गोपालसिंहजीनें कहा तेरे पंथी पूज्यडालचंदजीकै शरीरमें असंख्या कीडे काले मूंके पडगये थे इसी हालतमें पुनर्जन्म होगया तब हमनें कहा कर्मगति विचित्र है पूर्वकर्म उदय आणेपर बडे २ हारगये जतीजीका मंत्र वचन निमित्तमात्र हो गया ठाकुर बोले महाराज आखर जरे पाखर है में तो प्रत्यक्ष देख लिया जतीलोकोंमें इल्मका बीज कायम है तब इतना फेर हमनें कहा एसा क्रोध करकै दुर्दशा करणी जतीजीकों भी मुनासिब नहीं था.

पडते कालमें भी जतीलोकोंमें मंत्राधीन देवता देखणेमें आये इससे साबित अनुमान होता है श्रीजिनदत्तसूरिः मणिधारी श्रीजिनचंद्रसूरिः श्रीजिनकुशलसूरिः दादा गुरु देव संवत् विक्रम इग्यारेसें संवत् १३ से तक भये तद्पीछे संवत् पनरेसे उतरते जंगमयुग प्रधान भट्टारक श्रीजिनचंद्रसूरिः गुरुदेव भस्मरासी ग्रहकै उतरतेही अवतारी प्रगटै जिनोंकै ज्ञान क्रियाकी अदभुत तारीफ बछावत करम चंदकै मूंसें सुण बादसा अकब्बर खास निजकलम् फुरमान बीनती लाहोर नम

पजावसें लिखी और अपणे खासमरजी दान उमरावोंको गुरूको बुलाणे भेजै उसवखत महाराजके ८४ चेलोंमें मुख्य सकलचद्रोपाध्यायके शिष्य श्रीयुत पडित समयसुदरजी भी विहारमें सग थे उनोंनें गुरु गुण छद अष्टक बनाया है सो लिखताहू. ।

सतनकी मुखं वाण सुणी जिनचद मुणिंद महतजती तपजप्प करै गुरु गुज्ञरमें प्रतिबोधत है भविकुसुमती, तनही चितचाहन चूप भई समयसुदरके गुरु गच्छपती, भेजै पतसाह अजव्वकी छाप बोलाये गुरु गजराज गती, १ एजी गुज्ञरतैं गुरुराज चले विचमें चोमास जालोर रहें, मेदनी तटमें मडाण कियो गुरु नागोर आदर मानल है, मारवाडरिणी गुरुवदनकों तरसै सरसै विच वेगव है, हरख्योसघ लाहोर आये गुरु पतसाह अकव्वर पावग है, २ एजी साह अकव्बर वव्वरके गुरु सूरत देखत ही हरखै, हम जोगी जती सिद्धसाध व्रती सवेंही खट दरसनके निरखै, टोपी घसऽमावसचदउदय अज तीन बताय कला परखै, तप जप्प दयाधर्म धारणकों जग कोई नहीं इनकै सखै ३ गुरु अमृतवाण सुणी सुलतान एसा पतसाह हुकम्म किया सब आलम माहि अमार पलाय बोलाय गुरु फुरमाणदिया जगजीव दयाधर्म दाक्षणतैं जिन सासनमैं जुसोभागलिया, समयसुदर कहै गुणवतगुरु दग देखत हरखत भव्य हिया, ४ एजी श्रीजीगुरुधर्म ध्यान मिलै सुलतान सलेम अरज्ञकरी, गुरु जीव दया नित प्रेमधरै चितअतर प्रीति प्रतीतिधरी, कर्मचद बुलायदियो फुरमाण छोडाय खभायतकी मछरी समयसुदरकै सच लोकनमैं नित खरतर गच्छकी क्षातिखरी, ५ एजी श्रीजिनदत्तचरित्र सुणी पतसाह भये गुरु राजियेरे, उमराव सबैकर जोड खडे पभणे अपणे मुखहाजियेरे, चामर छत्र मुरा तब मेट गिगड दू धूधू बाजियेरे, समयसुदर तूही जगन गुरु पतसाह अकव्वर गाजियेरे ६ हे जीज्ञान विज्ञान कला गुण देख मेरा मन सदगुरु रीझीये जी, हुमायूंको नंदन एम अखे अब सिंघ पटोधरकीजियेजी, पतसाह हजूर थप्यो सघसूरि. मडाणमत्रीश्वर

वीझीयेजी, जिणचंदपटे जिणसिंहसूरिः चंदसूरज जूं प्रतपी जियेजी, ७ हे जीरीहडवंस विभूषण हंस खरतर गच्छ समुद्रशशी, प्रतप्यो जिन माणिक्यसूरिःके पाट प्रभाकर ज्यूं प्रणमुं उलसी, मन शुद्ध अकब्बर मांनत है जग जाणत है परतीत एसी, जिनचंदमुणिंद चिरं प्रतपो समयसुंदर देत आशीश एसी ८ इति गुरुदेव अष्टकं.

उसवखत नकास (चित्तेरे) नेंतसवीर वादसा और गुरूमाहाराजकी उतारी सो वीकानेरके खरतर भट्टारक श्रीपूज्यजी पास मौजूद है उसकी नकल उतारी भई जतीलोकों पास मोजूद है नकासने वादसा अकब्बरकी सभामेंसें वादसाके पिछाडी मुख्य २ तसवीर लिखी है वीरवल, करमचंद वछावत, तथा काजी खानखा, और श्रीगुरुमाहाराजके सर्व साधु समुदायमेंसें ३ तीन साधुनांमी लिखे हैं, वेप हर्ष, परमानंद, तथा समयसुंदर, वाकी तो उस वखत अनेक खान सुलतान राजा रहीस तथा जती साधुसंग थे, ये खरतर युग प्रधानि गुरुदेवोंनें जोजो उपगार जैन माहाजनोंका जीते दमकिया और इनोंका जो सच्चे मनसें पूजनस्मरण ध्यान करते हैं तो स्वर्गमें प्राप्त भी संकटमें साहाय करते हैं कलयुगमें हाजराहजूर देव है, एक जिज्ञासुनें पूछा देव तथा गुरूकी चढाई वस्तु अलीन होती है तो फेर दादासाहवकी चढाईसेससीरणी लोक केसें खाते हैं (जवाव) हे महोदय २४ ही तीर्थंकर मुक्तसिद्ध स्वरूप होगये इसवास्ते शिव कहाते हैं इसवास्ते शिवके अर्पण की वस्तु अलीन है चारों गुरुदेव देवलोकमें हैं श्रीजिन दत्तसूरि सौ धर्म देवलोक टक्कविमान ४ पल्यकी ऊमर इत वातकी प्रत्यक्षता श्रीसीमंधर स्वामीसें पूछके निश्चय देवतापास खरतर श्रीसंघने कराई प्रभूनें गाथा कही सो गणधर पदवृत्तिमें तथा गुर्व्वावृली वगेरे १० ग्रंथोंमें लिखी है श्रीजिनकुशलसूरिः भुवनपती निकायमें देवता होकर फागुण सुदि १५ कों सर्व जगे २ अपणे चतुर्विध संघकों दर्शन देकर कहा वडे दादासाहव सौ धर्म देवलोकमें हैं मेरा आयू दीक्षलिये पहली भुवनपती निकायका वंध गया था

इसवास्ते तुम सर्व संघ धर्मध्यांनमें तत्पररहो एसा फुरमा अंतर्ध्यान भये अभी यडे गुरुदेवके भक्ती करणेवालेकी भी सहायता श्रीजिनकुशलसूरिः गुरु करते हैं इसवास्ते देवगती प्राप्त गुरूकी प्रशादी लीन है तब जिज्ञासु बोला देवलोकमें प्राप्त भैये देवताका गुण ठाणा चोया सम्यक्तीका है और श्रावक व्रतधारी सम्यक्तीका गुणठाणा पांचमा, तथा साधु प्रमादीपणे वर्त्तता ६ अप्रमादपणे सातमा गुण ठाणा धराता है तो चोथे गुण ठाणेवालेकों वंदन पूजन केसें करै (जबाब) इसबातका निशल्यपणा अंतरंगसें धारो श्रीनंदीसूत्रमें प्रथम चलते ही २३ गाथामें क्या लिखा है, जिसके लिखे भये सूत्र अर्द्ध भरतक्षेत्रमें चल रहा है, तं वंदे खंधिलायरिए, अर्थात् उस खंधिलाचार्यकों में नमस्कार करता हूं इसीतरे २७ पाटका नाम लिखकर देव ऋद्धिः गणी तक आचार्य भगवान पाटानुपाटकों देव ऋद्धिः गणीके शिष्य देव सेनगणधर नंदीसूत्रमें सब लिखे आगमोंकी नूंद लिखते वंदना करी है एसेंही कल्पसूत्रमें थविरावलीमें वंदना करी है और जंबूस्वामीके बाद जितने आचार्य २५ भये सब देवलोक गये पंचम आरेके सबब मुक्ति नहीं गये हैं, फेर सुण जैन आम श्वेतांबर दिगांवर नवकार मंत्र गिणते है उसमें भूत भविष्यद् वर्त्तमांनतीनों यथार्थ जिनाज्ञाधारक आचार्य उपाध्याय और सर्व साधुओंको हमेस नवकार गुणते सो बखत नमो २ करते हैं तो विचार २१ हजार वर्षके पंचम आरेके अंत तक दुप्रभसूरिःतक जिनाज्ञाधारक आचार्योंकों नमस्कार भयाया नहीं ये सब देवता भये और होंयगें एसा समझ अमूल्य चिंतामणी रत्नरूप जिस गुरुदेवोंनें जैनधर्म राजपूत महेश्वरी ब्राह्मनादिकोकों धारण कराया एसे उपगारीका वंदन पूजन जो चतुर्विध संघ करते हैं वो सूत्रोंकी आज्ञा मुजब एकांत इस भव परभव श्रेयकारी है जो सूत्र न माने उस मनोमतीकों ब्रह्मा भी स्यात् नहीं समझा सकै जो अपणे बापकों न मांने तो ताजीरातहिंदका कायदा उसका क्या कर सकै इतना ही लिखणा उसके लिये काफी है तेरे पंथी श्वेतांबरी फिरकेवाले नमो

आयरिआणंपदसें तृप्त नहीं भये तब भीषमजीनें ये मतकी नींव लगाई इसवास्ते उनोंकों आदि विश्वकर्मा इस फिरकेका समझ एसा मंत्र जपणा सरू करा (भी भाराजी ममाडाका) विद्यमान काळूराम-जीका आदि अक्षर, का लियां एसें पहली भये सात जिनोंका आदि अक्षर लेकर मंत्र जपते हैं, इनोंकी श्रद्धा मुजब इनोंकों देवता भये मांनते होंगें और इनोंके मतावलंबी साध श्रावक उन देवतोंकों नम-स्कार करणा सिद्ध भयाया नहीं, इत्यादि प्रमाणोंसें सिद्ध है दादा गुरु देव जैन संघके परम उपगारी वंदन पूजन योग्य है, क्योंके भीषमजी वगेरोंने तो रांधेकूं रांधा जेसा किया है कुछ मिथ्यात्वकुलके राजपूत ब्राह्मन माहेश्वरी ब्राह्मणादिकोंकों मिथ्यात्व दूर कराय ओसवालादिक जैन दयाधर्म तो नहीं धराया सिरप अनुकंपादान तीर्थंकरोंनें किसी भी सूत्रमें मना नहीं किया भीषमजीनें अपणी युक्तिसें सावद्य अनु-कंपा १ निरवद्य अनुकंपा २ भेद लगाकर अनुकंपादान निषेध किया एसेंही किसी जीवकूं कोइ दुष्ट जीव जाती वैरसें या क्रोध इर्ष्यासें मारता होय तो असंजती अव्रतीकूं बचाणेसें अधर्म होय एसी प्ररूपणा करी चोथे पांचमें छट्ठे सातमें गुणठाणे वालेकूं १३ में गुणठाणे वर्त्तणे वाले केवलीकी करणी करणेका उपदेस करा एसे अनेककुयुक्ति कल्पित कर्त्ताकों जब अपणा धर्माचार्य मांनके तीर्थंकर सदृस अपणे उपगारी मांनकर सवासे डेढसें वर्षसे जैनधर्मका पैदा होणा मांनकर उनोंके नामका आदि अक्षर जपते हैं, तो हे बुद्धिवानों तुम विचार करो धन्य २ श्रीरत्नप्रभसूरिः धन्य २ श्रीगुरुदेव श्रीजिन दत्तसूरिः जिनोंनें लाखों घरोंकों जैनधर्म कुलस्थापन कर अनेक जुल्मीयोंके महाघोर जुल्मोंसें बचाकर जिन जती आचार्योंनें जैनधर्मियोंकों सावतसिके छत्र छायांकर जैनमहाजन कुल कायम रख लिया क्रोडों जैन सिद्धां-तोंके भंडार कायम रख लिया एसे उपगारियोंके उपगारसें जैनसंघ लायक बंद कभी उसराण नहीं होसकते आजके धडे २ दुनियामें जो जो त्यागी पण नांम धराते जैन फिरकेके साधु आचार्य अपणा सिका

जमाते फिरते हैं वो सिक्का हमारी समझ मुजब राखपरलीं पणा कांसी पात्रपर रंग कमलपत्रपर जलबिंदु इत्यादि दृष्टांत मुजब कभी स्थिति धराणे वाला नहीं हम तो उसी समर्थ गुरूके पायावंद है कै जिन उपगारीनें पत्थरोंकों चिंतामणी रत्न बनाया (मांस मदिरा मक्षियोंकों दयाधर्मी २२ अभक्षोंकें त्यागी महाजन वणाया) एक राजपूतकों तो माहाजन वणाओ, उस गुरुदेवके निज शंतान प्राय प्रमाद धारण किया है अस्तकाल दोषसें, जिसका उदय उसकूं अस्तता घेरती ही है, फेर भी उदयकाल इयजती लोकोंमें ही आवेगा, क्योंके युगप्रधान गंडिकामें भद्र बाहू श्रुतकेवली २१ हजार वर्षका पंचम आरेमें २३ उदय जैनधर्मका फुरमाया जिसमें २ हजार ४ सर्व युगप्रधान जैन धर्म वढाणेवाले होंयगें नाम संवत् सब लिखा है, इससें एसा मत समझणा के जैनधर्मी भये २ महाजनोंकों अपणा मत झलाणे वाले होयगें, वो युगप्रधान मिथ्यात्व अन्यधर्म छुडाकर राजादिकोंकों जैन-धर्मी बणाणेवाले होंयगें उसमें श्रीजिनवल्लभ श्रीजिनदत्त श्रीजिनचंद्रा-दिक जो जो नांम लिखे सो भये अनेक, ओर होते रहेगें, इसीवास्ते ही अंग चूलिया सूत्रमें बकुश, कुशील, जतियोंकूं अपणे शंतान निजसें दुप्पहसूरि:तक, कभी मंदाचारी, कभी उग्रविहारी, एसोंसें २१ हजार वर्षतक अविछिन्न साधु साधवी आदिक संघ रहेगा एसा फुरमाया बिच २ में केइ २ निन्हव कल्पितमत प्ररूपणे वाले कल्पित भेष कल्पित क्रिया काय क्लेसादि तपकरणे वाले उन्मार्गीयोंका मत चलणा फुरमाया लेकिन् वो मेरी आज्ञा बाहिर है गोतम एसा फुरमाया, भगवानं फुरमाया वो अक्षर सत्य है मगर जतीलोकोंके आजकल अस्तकालका स्वरूप देख अचरजहो रहा है प्रथम जातिवंत रूपवंत शिक्षमिलते नहीं कोइ जगे मिले तो पढणेकी व्यवस्था नहीं केवली गम्यबात है, इसवास्ते हे जतीलोकों हिम्मत मतहारो, हिम्मते मरदां मदते खुदी इस मिसलेपर कटि बद्ध रहो जरूर महाजन वंसतुमारी वृद्धिकी कोसीस करेंगें शोले संस्कार गृहस्थ जैनियोंके कुल क्रमके

अगर जतीलोकोंकों महाजन लोको कराणा सुप्रत कर देवेतो जतीलोकोंकी जरूर वृद्धि होजावे इस वखत जैनमाहणोंका काम जतियोंसें लिया जाय तो वहोत ही अच्छा होजावे तब जिज्ञासु वोला साहिब गुजराती श्रावकतो कोन फरंसमें एसा निश्चय करते हैं महात्मा मथेणोंकों १६ संस्कार सोंपणा चाहिये, हम पूछते हैं इसका कारण क्या, तब बोला विवाह संस्कार जती उघाडे सिरवाला केसें करासके, हे जिज्ञासु आगे जैन ब्राह्मण जो ऋषी बजते थे वो सिरपर पंचकेशी खुलेसिर गलेमें जिनोपवीत कमंडल उपानत् पवित्रिका छत्री एसे खुले सिरवाले चारों वर्णोंवालोंका विवाहादि संस्कार कराते थे या नहीं फेर खुले सिरवाले जती साधू बिंबप्रतिष्ठा चैत्यप्रतिष्ठा जैसा सर्वोपरि मंगलीक कृत्य करातेहै या नहीं, जैसें अंजनशलाका करणेवाला त्यागी गुरु इंद्र जेसा मुगट कुंडलधारे तेसेंहीजती गुरू चमरीमें कागदके बणे मुगट कुंडल धारकर आर्य वेदोक्त मंत्रसे हवनादिक विवाह संस्कार करा सकता हे, त्यागी पूर्वधारी दशमें पूर्वकी मंत्रविद्या सिद्ध करते मनोमई होमकी सामग्री बणाकर आहूती भावसें देते मंत्रविद्या सिद्ध करते हैं, देखो उवाई सूत्रमें लिखा है मंत विसारया-इत्यादि साधुओंका वर्णन, तेसेंही जती गुरू, कन्यादान कर्त्ताके हाथसें मंत्र पढ २ आहूती दिराकर हवन कराकर विवाह संस्कार पूर्ण करे आजकलके महात्माओंकों सनातन जैनधर्मकी किसीविरलेकों प्राय आस्तारही होगी और जतियोंमें एसा कम वक्त कोई विरला होगा सो जैनधर्मका आस्ता नहीं धराता हो, जैसा जैनकी आदि मर्याद शास्त्ररहस्य जती पंडित जाणते हैं एसा दुसरे कब जांणते हैं, आरंभ समारंभ जेसा खुले ख्याल गृहस्थी करता है, और करेगा एसा जती भेपधारी जरूर करता संकेगा, और नहीं करेगा, जेसें उपदेश मालामें लिखा है, गाथा·) धम्मं रक्खइ वे सो, संकइ वेमे णदिक्खिओमि अहं, उमग्गेण पडंतं, रक्खइराया·जणव ओव १ (अर्थ) भेष है सो धर्मकी रक्षा करता है, वेप करके संकता है केमें दीक्षितहूं, जेसें उन्मा

गेमें पडते जनपदकी राजा रक्षा करता है तेसे भेष रक्षा करता है १ कोई भारी कर्मा भेष लेकर महारंभ करे तो खाया भया जहर जरूर प्राणका नास करै ये अगली गाथाका परमार्थमें स्याद्वादतादि खलाई है इसवास्ते जरूर २ श्रीसंघ १६ संस्कार काम जतियोंके सुप्रत कर अपणे धर्माचार्य कलाचार्यके कुलकी वृद्धिकरै जतीलोक स्याद्वाद न्याय व्याकरण सूत्रार्थ पढकर जब हुसियार होंयगे तो व्याख्यान सुणाना धर्म सीखाणा कला सीखाणा इत्यादि अनेक उपगार अभी करते हैं और जादा तर करते रहेगें जो गृहस्थ. धर्मतत्व शून्य हृदय वाला जतियोंकों कहते हैं तुम पगडी बांधो तो हम १६ संस्कार करावै इस कहणेवालेकों महामिथ्यातत्वाभिमानी मूर्ख नहीं तो क्या समझा जावै एक एसी समझवालोंका दाखला जतियोंके द्वेषीयोंनें ३ वर्ष पेस्तर कराथा वो वांचकर बुद्धिवान समझ सकते हैं पालीताणें सहरमें एक पंचमहाव्रत उच्चरा भया गुजरातियोंके साधूनें मंदरमें देव द्रव्यकी चोरी करी पोलिसनें उसें पकडा तब एसी समझवाले गुजरातियोंनें उसको अगला भेष उतरवाकर जती गोरजीका वाना पहराया या मतलब इस वातका निरापेक्षीयोंनें विचार लेणा हुआ जति योंकी उडाणी एसा २ द्वेप जतियोंसें गुजरातके केईयक मूर्ख सिरोमणी रखते हैं वाना बदलाया तो उसें गृहस्थी ही क्योंन बणाया क्या वीर प्रभूके शिष्योंका श्वेतांबर वाना नहीं है जब उसनें साधूपणेमें चोरी करी तो फेर साधूकाहेका मगर एसे दृष्टि रागी हिया शून्यजतियोंकों पगडी बांधणेका उपदेश करे तो ताजब ही क्या जैनधर्मके फिरके दो-सही मसहूर है श्वेतंबरी १ और दिगांबरी २ ओसवाल १ श्रीमाल २ श्रीश्रीमाल ३ पोरवाल ४ सब महाजन कोम श्वेतांबरी जती श्वेतांब-रीयोंके उपदेशी उपाशक होणेसें कहाते हैं श्रावगीपरवाल नरसिंघ पुरे गोरारे इत्यादि नग्न मुनियोंके उपदेशी उपासक दिगांबरी कहाते हैं अग्रवाले हुंवड बघेर वाल दिगांबर श्वेतांबर दोनों पक्षके कहाते हैं जतीलोक छद्मस्थतापणे कर केइयक चारित्रकूं कर्बुराकर रखा है बाकी

जो जती पंचमहाव्रतधारी क्रिया उद्धारी पणे वर्त्तता है वो संवेगी साधू कहाते हैं सामान्य वृत्तिवाले जती गुरूजी, वजते हैं जती गुरू विगर भी माहाजनोंका काम नहीं चलता है उठावणा मंदिरकी प्रतिष्ठा पूजा गायन नवतत्वादि श्रावकोंको पढाणा व्याख्यान पचखाण सामायक प्रतिक्रमण वगेरे जती गुरू विना कोण जैनधर्मकी स्थिती रखेगा त्यागी गुरु न तो सर्वक्षेत्रोंमें पहूंचते और न सर्वकाम श्रावकोंका वो करासकते हैं असली त्यागी तो गृहस्थके साथ पडिक्कमणा नहीं करते खुसामंदिये शिथलाचारीका हाथकोन पकडता है करते होंगें, घरपर जाके साधू व्याख्यान चोपई सुणावै नहीं, जतीलोकं ही सुणाते है जतीलोक नहीं होय तो जैनमहाजन लोक मिथ्यात्वी होजाते जिन लोकोंकै जतीलोकोंसें परिचय नहीं रहा वो माहाजन भी शैव विष्नु वगेरे अनेक मतधारी वणगये इस वखत पालीताणेमें जती बोर्डींग खुली है इसकामके प्रेरक जती दयासागरजी तथा नाणचंदजी मुंबई वाले हैं धन्यवाद है कच्छदेशी श्रावगोंकूं जिनोंनें हजारों रुपे इस चंदेमें भरे हैं इसतरे गुजराती मारवाडी पूरवी लोक मदत देकर रकम उत्पत.खरच अपणे काबूरखकर निगराणी रखेगें तो बडा उदयका कारण होगा -कोइ इन जतियोंमेंसें उत्कृष्टी वृत्तिवाला आत्मार्थी भी मोहणलालजी शिवजी रामजी किरपाचंदजी भायचंदजीकी तरे जती साधू रूप रत्न निकलते रहेंगें केई ४ गुणठाणी,केइ पांचम गुणठाणी, सर्व बाकी ६ गुणठाणधारी तो निश्चेही होंयगें,इसवास्ते जैनको न्फरंसनें १६ संस्कार जतियोंसें कराणा निर्विवाद श्रेयकारी समझै, फेर तो दाता लोक महाजनोंके समझदारीके सामनें मेरी कोता समझ साहजीकी सीख फ़लसेतक मारवाडका मिसला तो है ही, लेकिन् जांणता हूं मेरी अरजीपर बुद्धीवान जरूर गौर करेगें.

प्रथमग्राहकमहाशयोंकेनाम

४१ रायबद्रीदासजीबहादुर	कलकत्ता
२५ जीतमलजी नथमलजी गोंलछा	लस्कर
५ सवाईरामविजैरामश्रावगी	हेदराबाद
२ नेतराम रामनारायण	हेदराबाद
४ मंदनचंदजीमुगडीमुनीम	मुंबई
२ मूलचंद मनोरमलसूराणा	हेदराबाद
२ कुंदनमलजीश्रावक	हेदराबाद
२ जेठमलइंदरचंदश्रावगी	हेदराबाद
२ जैनमित्रमंडलीसभा	भोपाल
१ सिरदारमल सुगनमल	हेदराबाद
१। हीराचंदपूनमचंदछल्लाणी	हेदराबाद
१। भीषणचंद कानूगा	हेदराबाद
१। सिवराज रुगनाथमल सूराणा	हेदराबाद
१ रूपासा दीपासा सांखला	कलमनूरी
२ मानमल रूपचंद गोलछा	हेदराबाद
१ चूनीलाल मोतीलाल गोलछा	हेदराबाद
१ नथमलजी माहेश्वरी कोठारी	बीकानेर
१ धर्मचंदजी डोसी	देसणोक

प्रथम सहीकरणेवाले

५ लखमीचंदजी घीया	मुंबई
१ हस्तमल रतनलाल गोलछा,	हेदरावाद
१ लछमीलाल विजयलालनीमाणी	हेदरावाद
१ मदनचंदरूपचंद कोचर	हेदरावाद
१ पूनमचंद गणेशमल	हेदरावाद
१ वकतावर कुंदणमल	हेदरावाद
१ जुहारमल सुजाणमल गोलछा	मधरास
१ हुलासचंदजी कोठारी	अजीमगंज
१ चुनीलाल जीवापना	महतपुर
१ मुतेजकरणजी कोचर	वीकानेर
१ माणकचंदजी वछावत	अजीमगंज
१ संतरामजी दूगड	अमृतसर
२ निहालचंद पूनमचंद	फलोधी
१ रायहुकमचंद टेकचंदटांक	दिल्ली
१ हीरालाल.भोलानाथटांक	दिल्ली
१ हीरालाल रूपचंदटांक	दिल्ली
१ रूपचंद रिखमलटांक	दिल्ली
१ उमरावसिंहजी टांकवी०ए०	दिल्ली
१। मोहणलालजी गोलछा	वीकानेर
१। मगनमलजी कोठारी	वीकानेर
१। सुगणचंदजी सावणसूका	वीकानेर
१। पूनमचंदजी कोठारी	वीकानेर
१। अमरचंदजी बोथरा	वालूचर
२। मूलचंदजी मालू	गोहरगंज
१। केसरीचदजी सांड	वीकानेर

॥ श्रीसद्गुरुभ्यो नमः ॥

जैनराजपूत महाजनवंश ओसवालवंशोत्पत्ती प्रारंभ ॥

॥ वंदों श्रीमहावीर जिन, गणधर गौतमस्वाम, मद्म नमूं नित सारदा, पूरणवंछित काम १ ओसवालवड भूपती, सूरवीर मच्छराल, राजकुमर दाता गुणी, सरणागत प्रतिपाल २ अश्वपती महाजन विसद जिन धर्मी रजपूत, दयाधर्म श्रद्धा धरी, अदल करै करतूत ३ देव एक अरिहंत जिन, गुरूजती अभिराम, द्रव्य भाव पूजा करै, अहनिस धर्मी धांम ४ क्षात लिखूं इण वंसकी, वडज्यूं पसरोसाख, रहो सदा चढती कला धनसुत कीरत लाख ५

श्री चोवीसही तीर्थंकरोंकै शासनमें उग्रकुल १ भोगकुल २ राजन्यकुल ३ और क्षत्रीकुल ४ इन चारों वर्णोंवाले जो जैनधर्म पालते थे वो सब गृहस्थ श्रावक नामसें कहलातेथे इतिहास तिमरनाशकके ३ प्रकाशमें राजा शिवप्रशाद सतारे हिन्द लिखता है स्वामी शंकराचार्यके पहले इस आर्यावर्त्तमें २० करोड मनुष्योंकी वस्ती सब जैन (बोद्ध) थे वेदके माननेवाले कासी कन्नोज कुरुक्षेत्र कस्मीर इन चार क्षेत्रमें बहोत कमसंक्षा प्राय अस्तवत् रहगये थे जैनोंकों बौद्ध इसवास्ते लिखा है की और विलायतोंवाले जैनोंसें वाकबकार नहीं है कारण जैनियोंकी वस्ती मध्य खंडमें केइलाखोंकी संक्षा मात्र रहगई है चीन जपानके जो मांसाहारी तांत्रिक रातकै खानेवाले जो बौद्ध है उनसें आर्यावर्त्तके जैन (बौद्धों) सें कोइ संबंध नहीं है मतलब अब जो जैनमतके विरोधी हिंदमें २० करोड मनुष्योंकी वस्ती है वो सब जैन धर्मवालोंकी ओलाद है कारण इनोंके वडेरे सब जैनधर्मी थे जैनधर्मी राजा तथा प्रजाकी वस्ती थी इस वखतमें अमेरिका इंगलस्तान जर्मन आदि विलायतोंके वडे २ विद्वानोंका निर्धार किया भया है कै सृष्टीकै

प्रवाहकी सरुआतसेंही जैनधर्म है बाकी आजीविकाके लिये पीछेसें मनुष्योंनें नये २ धर्मोंकी कल्पना करी है इस वातकी सबूती देखणी होतो अमेरिका वगेरे देसोंमें फिरकर दयाधर्मका उपदेश करणेवाले स्वामी विवेकानंदजीकृत (दुनियाका सबसें प्राचीनधर्म) इस पुस्तकको देखो ये स्वामी आज दिन अन्यधर्मवालोंको विलायतोंमें मदिरा मांसादिक कुकर्म छुडाकर बडाही उपगार किया है स्वामीका लिवास गेरू रंगितहै एसे संन्यासीयोंका जीवितव्य सदाके लिये अमर है स्वामी शंकराचार्य जिनोंकों भये हजार आठसे वर्ष भया एसा इतिहास तिमर नासकमें लिखा है इनोंनें राजाओंकी मदत पाकर जैनधर्मीयिकों कतल करवाया ये वात माधवाचारीकृत शंकरदिग्विजयमें लिखी है वस जवरन् दयाधर्म जैन छुडाकर मिथ्यात्व हिंसा धर्मलोकोंकों धारण कराया मरता क्या नहीं करता इसन्यायसें लोकोंनें कबूलकर लिया बाद रामानुजादिक चार संप्रदायनें मांसमदिरा योंतो खाणेकी मनाई करी मगर यज्ञकर खाणेमें दोष नहीं माना इसतरे जैनधर्म घटते गया राजाओंनें जैनधर्मके सख्त कायदे देख पूर्वोक्त आचारियोंका माल खाणा मुगत जाणा उपदेसपर कायम होते गये यथा राजा तथा प्रजा इस न्याय जैनधर्म जो मुक्तिमार्गथा सो लोकोंनें छोडदिया वेदपरयकी न मनानेवाले स्वामी शंकराचार्यनें एसा उपदेस करा वेदकी श्रुतीसें जो जज्ञमें बोडे बकरे आदि जीवोंको मारते हैं उन जीवोंकी हिंसा नहीं होती ये वात मांसाहारियोंकों रुची तब देवी भेरुं आदिकोंके सामने पूजाके वाहने पशुओंकों मार मांस खाणेमें दोष नहीं येभी जज्ञ है और रामानुजादिक भक्तीमार्गवालोंनें छप्पन्न भोग छउंऋतुओंके सुखदाई खानपान पुष्प अतर रामकृष्ण नारायणकी मूर्त्तीकी बलि देकर भक्तजनोंकों प्रसादी खाणा सरू कराया एसे इंद्रियोंके सुखपोपणरूप धर्मके सामने पांचों इंद्रियोंका दमन करणा एसा त्याग वैराग्यरूप जैनधर्म कब प्रसन्न मोजी सोखीलोकोंकों आता था इत्यादि कारणोंसें जैनधर्म थोडे पालणेवाले लोक रहगये २४ में अंतके तीर्थंकरनें फुरमायाथा

हे गौतम! इसतरे पर भस्मरासी ग्रह मेरे जन्मरासीपर मेरे निर्वाण बाद आयगा इसकारण जैनधर्मका उदय २ पूजा सत्कार कम होता जायगा तब महाप्रभावीक आचार्य २१ हजार वर्षका पंचम आरेमें २३ वखत जैनधर्म बढाते २ उद्योत करते रहेगें मेरा शासन अखंड २१ हजार वर्ष चलेगा चतुर्विधसंघ रहेगा एसा लेख निर्वाणकलिका वगेरे ग्रंथोंमें लिखा है इसीतरे जैनधर्मका स्वरूप भगवद्वचनसें जाणकर जिन २ आचार्योंनें जैनधर्मकी आबादी करी नींव पुखताडालीसो संक्षेप वृत्तांत इहां दरसाते हैं इन जैनधर्मके लाखों श्रावक बणाणेवाले पडते कालमें उद्योतकारी जादातर अव्वलतो सवालाख घर राजपूतोंके महाजन वंशके १८ गोत्र थापणेवाले पार्श्वनाथस्वामीके छठे पाटधारी श्रीरत्नप्रभसूरिःबाद ५२ गोत्र लाखों घर महाजन बणाणेवाले श्रीमहावीर स्वामीके ४३ में पट्टधारी श्रीजिनवल्लभसूरिः एक लाख तीस हजार घर राजपूतोंकों महाजन बणाणेवाले दादा गुरु देव श्रीजिनदत्तसूरिः हजारों घर महाजन बणाणेवाले मणिधारी श्रीजिनचंद्रसूरिः इत्यादि फेर गुजरात देसमें लाखों घर जैनधर्मी श्रावक बणाणेवाले मलधार हेमसूरिः पूर्ण तलगछी श्रीहेमाचार्य और छुटकर गोत्र केइ २ औरभी अल्पसंक्षासे ओरभी आचार्योंनें घणाये हैं जादा इतिहास सर्वगोत्रोंका लिखणेसें लाख श्लोक संक्षा होणा संभव है इसवास्ते जादा तर प्रसिद्ध २ गोत्रोंका इतिहास लिखते हैं,

सबसें पहले माहाजन १८ गोत्रओसियां पट्टणसें प्रगटभये ये पट्टण विक्रम संवतके पहले चारसे वर्षके लगवग वसाथा जिसका कारण एसा भया श्रीभीनमाल नगरीके राजा पमार भीमसेणके पुत्र ३ बडा ऊपलदेव छोटा आसपाल आसल, ऊपलदेव राजकुमार ऊहड, ऊधरण, दो. मंत्रियोंकों संगले दिल्लीकेसाहान साह साधुनाम महाराजाकी आज्ञाले ओसियां पट्टण नग्र वसाया राजाकी हिफाजतसें चारोंवर्णके करीब ४ लाख घर वसगये जिसमें सवालाख घर तो राजपूतोंके थे तीस वर्ष जब राज्य करते व्यतीत भया राजा प्रजाका धर्म देवीउपासी वाम

मार्गथा उनोंकी देवी सचाय थी मांसमदिरासें देवीकी पूजा कर खा-
णापीणा करतेथे इस घातकों मुक्ति जाणेका धर्म समझते थे इस वखत
श्रीपार्श्वनाथ भगवानके छठे पाटधारी श्रीरत्नप्रभसूरिः केशीकुमार गण-
धरके पोतेचेले मासक्षमणसें यावज्जीव पारणा करणेवाले १४ पूर्व्वधर श्रुत
केवली भगवान विचरते २ श्रीआबूपहाड तीर्थपर पांचसें साधुओंके
संग चतुर्मासमें रहे जब विहार करणे लगे तब उस तीर्थकी अधिष्ठा-
यिका अंबादेवीनें विनती करी हे प्रभु ! मरुधर देसकी तरफ विहार
करणा चाहियै गुरूनें कहा इस देशमें दया धर्मी लोकोंकी वस्ती नहीं
होणेसें साधुओंकों धर्मध्यानमें अंतराय पडताहे आहार पाणी मिल
नहीं सकता तब अंबानें कहा आपके पधारणेसें बहोत धर्मका लाभ
होगा तब गुरु पांचसे साधुओंकों तो गुजरातके तरफ भेजे एक शि-
ष्यकूं संगले विहार करते ओसियां पट्टण पहुंचे किसी देवस्थानमें
आज्ञा लेकर मासक्षमण तप करते भये ठहरे चेला अपणेवास्ते गोचरी
जाता धर्म लाभ करते फिरता मगर जैनधर्मके कायदेसें किसी जगे
आहार पाणी नहीं मिला तब किसी गृहस्थका रोग औषधीसें मिटाकर
उसके घरसें भिक्षाले निर्वाह किया ये बात गुरूनें ज्ञानके उपयोगसें
जाणी तब शिक्षकों ठवका दिया तब शिक्ष अदवसें अरज करी हे
प्रभु इस वस्तीमें हरगिज ४२ दोषरहित आहार नहीं मिलता देख
मेनें दोषित आहारसें निर्वाह कियाहै तब गुरूनें कहा विहार करणा
चाहियै तइयार भये तब उस महात्मामुनिःके तपके प्रभावसें सचाय
देवीनें विचारा धिक् २ एसे तारण तरण निस्पृही मुनिः इस वस्तीसें
भूखे जायगें तो इस वस्तीमें अमंगल होगा तब देवीनें रूबरू आकर
नम्रतापूर्वक अरज करी हे कृपासिंधू एसे आपकों जाणा उचित नहीं
है आप इस प्रजाकों लब्धि मंत्रसें धर्मकी शिक्षा दो गुरूनें कहा साधु
विनाकारण लब्धि फिरावे तो दंड आवे तब देवीनें कहा हे भगवान
आपसें कुछ छिपा नही है तीर्थंकरोंकी आज्ञा है भगवती सूत्रमें साधु-
ओंकों तरवार ढाल लेकर मुनियोंकों जिनधर्मके निंदक तथा घाति-

योंकों समझाणेकूं साधू लब्धिवंतको उत्पतणा कहा है संघमें महा आपदा डालणेवाले महादुर्बुद्धि वली ब्राह्मणकों विष्णुकुमारनें पुलाक लब्धिसें जानसें मारडाला आलोयण प्रायश्चित्तले उसीभव मुक्ति गये उस दिनसें राखी बांधणेका तिवार ब्राह्मनोंनें चलाया और आगे गोसालेका जीव जो साधुओंपर रथ डालेगा उसकूं सुमंगल साधू रथसहित जलायगा गोसालेका ज़ीव नरक जायगा मुनिः आलोयण प्रायश्चित्तले उसही भवमें मुक्ति जांयगें दशाश्रुतस्कंध सूत्रमें संघकी आपदा मिटाणे लब्धि फिराणी लिखी है आज्ञाका आराधक कहा लेकिन् संघके कार्यनिमित्त लब्धि फिराणेवाला साधू विराधक नहीं अगर विराधक होते तो उसी भवमें मुक्ति साधू केसें जाते संसारके जीवभी लाभ जादा और नुकसान कम एसा काम सब बुद्धिमान करते हैं एसा विवहार देखणेमें आता है और साधुलोकभी एसा करते हैं जैसें मुनिः एक गामसें दुसरे गाम जब विचरते हैं तो अनेक जीवोंकी हिंसा होती है मगर एक जगे जादा रहणेसें स्नेहवद्ध मुनिः हो जाते हैं और अति परिचय अति अवज्ञा ये दोपभी लगता है, सोनालक वचनंभी है (दोहा) वहता पाणी निरमला, पडामंधीला होय, साधू तो रमता भला, दाग न लग्गे कोय १ और अनेक क्षेत्रोंमें विद्वान मुनिःयोंके उपदेससें अनेक भव्य जीव सम्यक्त व्रतधारते हैं जिनमंदिर ज्ञान भंडारकी सार संभाल होती है, मिथ्यात्वी निन्ह्वोंका दाव नहीं लगता, श्रावक लोकस्यादवाद न्यायतत्व पढकर अनेक जीवोंकों समझाणे समर्थ होते हैं, इत्यादि अनेक लाभकी तरफ खयाल करकै, विचरणेकी आज्ञा साधुओंकों तीर्थंकरोंनेंदी है, फेर दरवज्ञा बंध करणा और खोलणेसें, प्रतक्ष पंचेंद्री जीवोंतककी हिंसा दीखती है, इसीवास्ते साधु साध्वीके प्रतिक्रमण सूत्रमें (उघ्घाडकवाड उघ्घाडणाए) इसका पाप तीर्थंकरोंनें फुरमाया लेकिन् साध्वीयोंकों दरवज्ञा बंध करणा और खोलणेकी आज्ञा दी मतलब कोई हरामखोर रातकों खुला दरवाजा देख साध्वीयोंका शील न खंडितकरदेवै तो

जीवहिंसासें शील रक्षाका जादा धर्म समझ साध्वीयोंको उपाश्रयका दरवाजा बंध करणा तीर्थंकरोंनें फुरमाया इसीतेरेही माछीगर धीवर सोनक कसाई सर्व्व यवन जातीयोंके देवकुल मठ मंडपादि करणेसें एकांत हिंसा आरंभ आश्रव वतलाया श्रीप्रश्न व्याकरण सूत्रके आश्रव द्वारमें, और महानिशीत सूत्रमें दानशील तप भावनाका जो फल एसा फल श्रीजिनराजका मंदिर कराणेवाले श्रावकोंकों तीर्थंकरोंनें फरमाया है, मंदिर जिनराजका कराणेवाला श्रावग वारमें देवलोक जाणा फुरमाया इसीवास्ते ज्ञाता सूत्रमें जहां द्रोपदी पूजा करणे गई उहां जिन मंदिर श्रावग लोकोंका कराया भया था, चंपानगरी भगवान महावीरके केवल ज्ञानयुक्त विचरते समयमें वसी उसके पाडे २ यानें महोले २ में जिनमंदिर श्रावक लोकोनें कराये भये थे तभी तो उवाई सूत्रमें नगरीके वर्णनमें लिखा है, श्रावग लोकोनें जिन मूर्त्तियां असंख्य करवाई तभी तो व्यवहार सूत्रमें साधुओंकों जिन प्रतिमाके सामनें आलोयण लेणा लिखा है विगर प्रतिमा भरायें किसके सामने आलोयण लेणा सिद्ध होता इत्यादि अनेक वातोंसें सिद्ध है के जिसमें अल्प पाप बहुत निर्जरासो कांम साधु श्रावकोंकों करणेका हुकम तीर्थकरोंनें दिया है आप श्रुत केवली सर्व जाणहो में इतने दिन मिथ्या धर्ममें मुरझारहीथी आज आपकों अवधि ज्ञानसें जाण मिथ्यात्व त्याग अर्हंत भाषित तत्वकों अक्षर २ सत्य समझ तव में आपकेपास आई हूं और मेरी अरजकों आप सफल करो दयाधर्म वढे इसमें आपकों वडा लाभ है यद्यपि आप वीतरागी एक भवावतारी निर्मोही हो तथापि धर्म वृद्धि करणा आपका फर्ज है क्या महावीरस्वामी सद्दालपुत्रकों योंनहीं समझा सकते थे तथापि उसके मकानपर चलाके गये और अनेक वातें पूछी वाद श्रावक किया केवल ज्ञानी वीतरागीकों घरपर जाणेकी क्या गरजथी मगर जो जिसतरेपर समझणेवाला होय उसकों उसीतरेही दयाधर्मकी प्राप्ती वीतरागी कराते हैं इतनी अरज सुण गुरुनें चेलेकों भेज सहरमेंसें एक रूईकी पूणी मंगवाई दसमें विद्याप्रवादमें लिखे

मंत्रसें उस पूणीकासांप बणाकर हुकम दिया जेसें दयाधर्मकी वृद्धि
होय एसा कर अब वो सांप भरीसभामें बैठा भया राजा उपलदेवकै
पुत्रकों जाकै काट खाया लोक मारणे भगे अदस्य हो गया राजानें
विषवैद्य गारुडी जोगी ब्राह्मन मंत्रवादी * इलाजियोंसें बहोतही इलाज
कराया मगर विष फैलतेई गया कुमर अचेत मरे जेसा हो गया
उस.दिन नगरीमें हाहाकार मचगया प्राये प्रजानें अन्नजलभी नहीं
लिया मरा जांण स्मसानकूं लेचले लाखों अदमी रोते पीटते नगरके
दरवजेतक पहुंचे तब गुरूके हुकमसें चेलेनें रथी रोकी और बोला
तुम इस रथीकों मेरे गुरूके पास लेचलो अभी कुमरकों जिला देंगें
ये वचन सुणतेही राजा उपलदेव कुछ धीरजपाया और चेलेके
पिछाडी हो लिया जहां श्रीआचार्य महाराज विराजमान थे उहां
पोहचा आचार्यकों देखतेही राजाका दिल एसा दरसाव देणे लगाकी
जरूर मेरे पुत्रकों ये भगवान जिलायही देंगें राजा अपणा मस्तक
गुरूकै चरणोंमें धरकै दीनस्वरसें रोता भया बोला हे प्रभू मेरे वृद्ध-
पनकी लाज आपकै आधीन है पुत्र विगर सब जग सूना है इंसतरे
वहोत स्तुति करी और बोला स्वामी मेरा कुटंबतो उसराण आपकी.शंता
नसे कभी नहोगा बलकै ओसियां पट्टणकी सब प्रजा इस.मुनिः भेषसें
कभी उसराण न होगी तब सब प्रजाभी गद २ स्वरसें कहणे लगी हे
पूज्य कुंवरजीकों जो आप सचेतन कर दोगे तो सब प्रजा आपकी
सदाके लिये गुलामी करेगी तब गुरु बोलै हे राजेंद्र जो तुम सब
लोक जैनधर्म अंगीकार करो तो पुत्र अभी सचेत होजाता है राजा
प्रजा तथास्तु जय २ ध्वनिः करणे लगी गुरूनें योगविद्यासें पासकिया
तुरत वो पूणिया साप आकर डंक चूसणे लगा जहर उतार कर अदस्य.
होगया कुमार आलस मोडकै बैठा होगया और पितासें पूछणे लगा
इतने लोक जमा होकर मुझें जंगलमें रथीमें डालकै क्यों लाये ये
सुणतेही राजा और प्रजाकै आनंदकै चौधारै छूट पडे और राजानें
कुमरकों छातीसें लगाय बडा आनंद पाया और राजा सेठ सामंत

गुरूका महा अतिशय देख साक्षात् ईश्वर समझ चरणोंमें लगे और जय २ ध्वनि होणे लगी राजा बोला आप ये राज्यभंडार सर्वस्व लेकर मुझें कृतार्थ करो गुरु बोले हे भूपती ये तुच्छ सुखदाई महा-दुःखका कारण राज्यकों समझ हमने हमारे पिताकाभी राज्य त्याग दिया इसवास्ते हे राजेंद्र स्वर्ग मुक्तिका अक्षय सुख देणेवाला सर्व जीवनकों आनंद उपजाणेवाला श्रीसर्वज्ञ अर्हंत परमेश्वरका कहा भया विनय मूल धर्मकों ग्रहण करो राजा पूछता हे हे स्वामी मुझें समझाओ तब गुरु सर्व प्रकारकी जीवहिसा सर्व प्रकारका झूठ सर्व प्रकारकी चोरी सर्व तरेका मैथुन सर्व तरेका परिग्रह सर्व प्रकारका रात्रि भोजन त्यागणें रूप जो धर्म है सो हे राजा साधुओंकै करणे योग्य है और गृहस्थकै सम्यक्त सहित वारे व्रत हे सो तीर्थंकरोंनें फुरमाया है देव अरिहंतके चार निक्षेपे वंदनीक पूजनीक हैं, जिनेश्वर देवकी हे राजेंद्र द्रव्य भावसें पूजन करो श्रीजिनेश्वरका चैत्यालय कराओ जिनेश्वरकी प्रतिमा करवाओ सतरे भेदसें अष्ट द्रव्यादिकसें पूजन भावसेती करो जेसें श्रीराय प्रश्नी सूत्रमें लिखी है, तेसें सुगुरु, पहले लिखे सो पट् व्रतोंके पालणेवाले, जिनेश्वर देवका कहा भया, सत्यधर्मका उपदेश, यथार्थ करणेवाले, जिनोंकों वस्त्रपात्र उतरणे मकान अन्नपाणी औषधी शुद्धगवेपणीय देओ वंदन सत्कार गुणकीर्त्तन करो धर्म केवली कथित जिसमें पहले तो वाईस अभक्षका त्याग करो नव तत्व पट्द्रव्य और श्रावक धर्मका आचार विचार सीखो और आदरण करो जिनधर्मकी प्रभावना करते भये गरीव अनाथ दीन हीनका उद्धार करो रथयात्रा संघयात्रा तीर्थंकरोकी कल्याणक जमीन स्पर्शनरूप भावभक्तीसें तीर्थयात्रा करो इसतरे हे राजेंद्र व्यवहार सम्यक्तकी करणी करते निश्चय सम्यक्तकों समझो आत्माही देव आत्माही गुरु आत्माही धर्म इस स्वरूपके ज्ञाता होकर पांच अणुव्रत तीन गुणव्रत चार शिक्षाव्रत एवं सम्यक्तयुक्त १२ व्रतधारो अमृतरूप जिन वाणी सुणकें सवालाख राजपुतोंका अनादि मिथ्यात्वका पड़दा दूर भया सबोंनें श्रावकधर्म

अंगीकार किया सचाय देवीकी मदतसें धर्मपाया इसवास्ते सम्यक्त धारणी साधर्मणीकों उपगारणी जाणकै लपसी नारेल खाजा चूरमा पक्वान्नसें बली देणा सरू रखा जगत्तारकवीरप्रभूका मंदिर कराणा सरू करा सचाय देवी प्रत्यक्ष होकर मांहाजन विरुद दिया इसवातकों सुणकै भीनमालका राजा आसलनैंभी जैनधर्म अंगीकार करा औरभी नमालमें महावीरप्रभूका मदिर कराणा सरूकरा दोनों मंदिरोंकी प्रतिष्ठाका महुर्त्त एकदिन होणेसें रत्नप्रभसूरिनें दोयरूप रचकर ओसियां औरभीनमालके मंदिरमूर्त्तीकी प्रतिष्ठा एक कालमें करी जैनधर्मका आचारविचार सीखके सब राजपूत १० वर्षमें हुसियार भये जब दोनों मंदिरभी चार मंडपका सिखरवद्ध १० वर्षमें तइयार भया जब प्रतिष्ठावाद साधर्मी वात्सल्य राजानें किया तब ब्राह्मन जो राजाके कुल भिक्षुकथे उनोंनें भोजनकी वखत्त सिर फोडी करणी सरूकरी तब राजानें कहा अगर जैनधर्मकी श्रद्धा धारण करो जिन- मंदिरकी सेवा और जती गुरूकी टहल बंदगी धारण करो तो तुमारा मरणे परणे लागदापाहमलोक देंगें अन्यथा नहीं देंगें तब मग जा- तिके ब्राह्मणोंमेंसे १० पुरुषोंनें कहा ये वात हमें मंजूर है लेकिन् जिन मंदिरमें जो बली चढाये जाती है वो, हमें देणा होगा क्योंकै आगे ये रिवाजथा जो जिनमंदिरमें बली (नेवेद्यफल) चढाये जातेथे वो सब मंदिर ऊपर कूटपर धरा जाताथा उसको कउअे आदि खा जातेथे इसवास्ते कोशमें कउएका नाम संस्कृतमें बलिभुक् कहते हैं तब राजाने अपणे पमारोंके कुलभिक्षुककों महावीर प्रभूका मंदिर झाडू देणा । बरतण मांजना दीपक जगाणा जल लाणा इत्यादि मंदिरका काम करणे सुप्रत किया मंदिरका बलिदान खाणेसें (बलिभद्) भद्धातु खाणे अर्थमे हैं यानें बलिदान खाणेवाला जातका नाम पडा लोकोंनें बलिभद्शब्दको विगाडकर (बलध) कहणे लगे ऊपल देव पमारकी औलादका श्रेष्टी गोत्र रत्नप्रभसूरिःनें स्थापन कियाथा वो विक्रम संवत् १२०१ में चितोडमे राणेजीकी राणीकी आंख अच्छी करणेसें

वैद पदवी पाई उसदिनसें श्रेष्टि गोत्रका नाम वैद्यगोत्र प्रसिद्ध भया रत्नप्रभसूरिका उपकेश गच्छ वजजाता था सो संवत् १०८० के वर्षमें दुर्लभ (भीम) राजाकी सभामें कुंमलाविरुद पाया ये बलि अद्भोजग अभीभी वैदगोत्र और कुमला गच्छके सेवगपणेकर अपणा हक्कलेते हैं इस तरे साधर्मी वात्सल्यमें ओसवाल महाजनोंके संग भोजन करणेसें भोजक कहलाये देव अरिहंत और गुरुजतीकी सेवा करणे लगे तब राजा प्रजा उंचे शब्दसें सेवग कहणे लगे इस तरे ८४ जातके ब्राह्मणोंमेंसें मगा ऋषीकी औलादके मग ब्राह्मण गोत्र १० राजा उपल देवके महाजन होते सो वखत भये बाकी ९ गोत्रवालोंका हक्क १७ गोत्रोंके सेवक भिक्षुकपणेका हक्कदार रहै राजा उपलदेवके पिताके भाई सालगजी जिनोंकों राजा तातजी यानें (पिताजी) कहके पुकारते थे इसवास्ते प्रथम गोत्र तातेहड १ बाफणा २ कर्णाट ३ बलहरा ४ मोराक्ष ५ कुलहट ६ विरहट ७ श्रीमाल ८ श्रेष्ठिगोत्र (वैद-राजा उपलदेवका ९) सह चिंती गोत्र १० (ये राजा उपलदेवका जो प्रधानथा उसका) आईचणाग गोत्र ११ भूरि (भटेवरा) गोत्र १२ ये राजाके सेनापतीका) भाद्रगोत्र १३ चीचटगोत्र १४ कुंभट गोत्र १५ डीडूगोत्र १६ कनोजगोत्र १७ लघुश्रेष्ठिगोत्र १८ ये गोत्र राजाजीके भाई छोटे आसपाल उसका भया इस गोत्रमें सोनपाल जी नामके नामी पुरुष भये इनके नामसे लघुश्रेष्ठी गोत्रवाले सब सोनावत बजणे लगे उपल बडे भाई जिनोंका श्रेष्ठ गोत्र आसपाल छोटाभाई जिसका लघुश्रेष्टी ये दोनों वैद सोनावत बजते हैं सेठिया और सेठी गोत्र जो अब प्रसिद्ध है वो सब जिन श्रीदत्तसूरजीके प्रतिबोधे भये हैं पाली नगरमें, और सुचिंती गोत्र वर्द्धमानसूरिः खरतर गच्छाचार्यके प्रतिबोधक है सुचिंती और सहचिंती दो गोत्र जुदे है बाफणा गोत्र और बहुफणा गोत्र अलग २ है बहुफणा जात श्रीजिनदत्तसूरजी प्रतिबोधित है जिनोमेसें ३७ साखफंटीहै इनोंका गच्छ खरतर है श्री श्रीमाल गोत्र श्री जिनचंद्रसूरिः खरतर गच्छाचार्यनें महतीयाण गोत्रमेंसें

प्रतिबोधके महाजन किये हैं श्रीमाल और श्रीश्रीमाल गोत्रजुदा नहीं है एक हीं.है श्रीमाल जातीकों पांवोंमें सोना पहरणेकी मुमानत नहीं है यवन वादसाहोनें सदाके लिये इनायत किया भया है इनोंमें जातीकै नख वहोतथे तब तो सगपणभी श्रीमाल २ आपसमेंही करतेथे मगर श्री जिनचंद्रसूरिःनें इनोंकों कहाथा तुम लोक जहांतक गच्छ भेद नहीं करोगे तहांतक धन और जनसें चढती कला रहेगी मगर भावीके वस श्री जिनराजसूरिः स्वर्गवास भयेवाद वो वचन निभा नहीं इससें परवार वहोत कम होगया लेकिन् गच्छ खरतरमेंही रहै इस वास्ते गुरुभक्तीसें लक्ष्मी तों इनोंकी अबीभी दासी वण रही है अब तो ओसवालोंकों बेटी देणे लेणे लग गये हैं ८४ जातकै व्यापारी गोत्रोंमें श्रीमालोंकों वादसाहनें उच्च पद दियाथा इसतरे १८ गोत्रोंकी प्रथम थापना भई फेर सवालख देसमें रत्नप्रभसूरिःने सुघड चंडालिया ये दोयूं गोत्रोंकै दस हजार घर प्रतिबोधे दसगोत्रभोजग लोकोंनें वाम मार्ग छोडा नहीं प्रच्छन्नपणे वोभी क्रिया करते रहै और . अबी भी करतैहैं इसवास्ते इनोंकै द्वेषियोंनें इस करतूतसें इनोंकों सूद्रोंमें दरज करदिया अभी विक्रम संवत् १९५७ में श्रीवीकानेर राजपूतानेमें इनोंकों शूद्र समझ राज्यका कर लगाणा सरू करणेका विचारथा आखर ब्राह्मनोंकै पुराणोंसें साबित होगया कै भोजगशाक्य द्वीपसें आये भये मगारूपीकी ओलाद है शाक्यद्वीप चीनका नाम है घोधोंकों शाक्य संज्ञा है जेसी गडवड वाकी पुष्करणादिकोंकी है वेसीही इनोंकी कारण पुराण वणाणेवालोंकी ये चतुराई है जिसके गोत्रकै प्रथम उत्पत्तीका पत्ता नहीं मिला उनोंकों किसी देवताकी ओलाद ठंहरालेणा है मतलब संज्ञापूरणेड इस न्यायसें इतिहास तिमिरनासकमें राजा शिवप्रशाद सतारे हिंदनें इस पुराणोंकी वातपर पूंछडिया रांजाका दष्टांतभी लिखा है वोसच मगर जैनलोक एसा । इतिहास कभी नही लिखते कारण देवतोंकी ओलाद मनुष्य नहीं, देवतोंकी उत्पत्ती

भोगसें नहीं है मनुष्योंकी उत्पत्ती भोगवीर्यसें है जानवरसें जानवर मनुष्योंसें मनुष्योंकी पैदास है तुराईका बीज बोणेसें ककडीकेसें पैदा हो सकती है भोजकोंनें अपणी उत्पत्ती सूर्य जो आकाशमें प्रकाश करता है उससें मानते हैं पुराणोंपर यकीनरखके, बुद्धिमान अंग्रेज तथा जैन तथा औरभी अकलवरोंनें विचार करणा चाहिये क्या सूर्य देव एसा व्यभिचारी और अन्याई है सो सती कूंतीका शील तोड डाला और मनुष्य ब्राह्मणोंकी कवांरी लडकियोंका जवरन् शील तोडते फिरता वाहरेसूर्य नारायण गवरमिंटके राज्यमें एसा काम करणेवालोंकों जबरजन्नाके कायदेसें जरूरही सजा होती उस वखत उस कन्याके वापनें सूर्यकों श्राप देणे रूप सजा दीनी लिखी है खैर हमकों इतिहास यथार्थ जो भया सो लिखणा है किसीके खंडणसें तालूक नहीं भोजकोंके ६ गोत्र पीछेसें १० जातमें मिले हैं इसमें २ गोत्र तो गूजर गोड ब्राह्मण थे ४ पुष्करणे ब्राह्मण ये ६ जात माळव देशके वड नगरमें श्रीजिनदत्तसूरजी पधारे तब मरी भई गऊ जिनमंदिरके सामनें धरदी उसकों दादासाहेबनें परकाय प्रवेस विद्यावलसें उठाय रुद्रके स्थानपर जागिराई तोभी इन ब्राह्मणोंनें वहोत उपद्रव करणा सरू करा तब उहांके क्षेत्राधिष्ठायक वीरोंकों हुकम दियाके इन ब्राह्मनोंकों तुम समझावो उन वीरोंनें उन सबों ब्राह्मणोंकों उन्मत्त पागल वणा दिये वो नगे होकर बुरी चेष्टासें भटकणे लगे बाद वडनगरका राजा तथा प्रजा श्रीजिनदत्तसूरिः जीसें आजीजी करी तब गुरूनें कहा ये लोक सदाके लिये देव गुरूकी टहल करते रहै और मेरे किये भये महाजनोके भिक्षुकरहै तो अच्छे हो जाते हैं संबंध और भोजन मग जो भोजक है उनोंके साथ इनोकों करणा होगा राजा प्रजा जमानत करी तत्काल वो लोक अच्छे होगये इनोंमें राजाका मुख्य गुरु ब्रह्मसेन जिसका पुत्र देवव्रत सो देवेरा भोजग कहलाया जिसकी ओलाद वीका नेरमें हांसावत तथा आदी सरि ्यावजे है इन सोलेंद्र गोत्रोंका लाग दादासाहिब समस्त महाजनोपर

लगा दिया पहली १८ गोत्रपरही था, बाद महाजन लोग राज्यके कारबारी थे इससें शिव विष्णुका मंदिरभी इनोंके सुप्रत करवा दिया अब तो ओसवालोंके घरकी कच्ची रसोई खाणेमें भोजग लोक वहोत जगे इतराज करते हैं पूछि तो कहते हैं ओसवालोंके चतुराई और पवित्रता नहीं ओसवालोंसें पूछते हैं तो कहते हैं जब कूंडेमें बैठते हैं वाममार्गमें तब पवित्रता और चतुराई पूरी रहती है या अधूरी जगतसेठजीके पास केइयक भोजक विद्वान पंडित गये थे उस दिनसें मुरसिदा वादमें भोजकोंकों पांडेजी कह्य करते हैं इतनेकर संक्षेप इतिहास महाजन १८ गोत्रोंका तथा १६ गोत्र भोजकोंका दिखलाया इस बातकों भये कितने वर्ष भये सो प्रमाण लिखते हैं ओसियां नगरीके नांमसे महाजनोंकों ओसवाल संज्ञा भई राजा उपल देवका कराया भया वीरप्रभूका मंदिर ओसियांमें आसल राजाका कैराया भयाभीनमालमें अभी मौजद है माहेश्वर कल्पद्रुमग्रंथमें ओसवालोंके होणेका जमाना इसतरे लिखा है

सवईया च्छंद

श्रीवर्द्धमान जिन पछै वर्ष बावन पदलीधो, श्रीरत्न प्रभसूरि • नाम तास सतगुरु व्रत दीधो, भीनमालसुं ऊठिया जाय ओसियां वसाणा क्षत्री हूआ साख अढार उठै ओसवालकहाणा, एक लाख चोरासी सहस घर राजकुली प्रतिबोधिया, रतनप्रभू ओसा नगर ओसवाल जिण दिन किया १ प्रथम साख पमार सेस सी सोद सिंगाला, २ णथंभाराठोड वंसंच बालवचाला, दइया भाटीसो नगरा कछावाधन गोड कही जै, जादम झाला जिंद लाज मरजादलही जै, खरदरा पाट औपे खरा लेणा पटाज लाखरा, एक दिवस इता महाजन भया सूर वडा वडी साखरा २

इसके बाद खरतर गच्छाचार्यनें प्रायें बहुत गोत्रं प्रतिबोधे सो और विरले गोत्र और २ आचार्योंनें प्रतिबोधे सो सब इनोंमें मिलते गये सुणते हैं संवत् सोलेसेमें खरतर गच्छाचार्यसें मोहणोत गोत्र प्रतिबोधे

गया वस जाता जंबू लेगया ओर आडीटाटी देगया, वो न्याय इस गोत्रसें भया फेर कोइभी गोत्र राजपूत माहेश्वरी या ब्राह्मणोंमेंसें नहीं थापागया ये प्रताप सब तत्वदृष्टीसें देखो तो जिन प्रतिमानिंदकोंसें भया कालका माहात्म इनोंका आचार विचार देख राजपूत माहेश्वरी और ब्राह्मण लोक जैनधर्मसें घृणा करणे लग गये इस वखत जो जैनधर्म चल रहाहे सो सब प्रताप जती आचार्य महाराजोंका है अब तो वाजे महाजनभी एसे कट्टरवणगये हैं सो जिनधर्मकी प्राप्ती कराणेवालोंकी शंतानसेंवेमुख हो गये हैं और अपणें वडेरोंकै वचनोंकों भूल गये हैं लायक वंदलोर्केका वाप और वात एक है सवइयेमें लिखाहै श्रीवर्द्धमान भगवानके निर्वाण पहुंचे वाद ५२ वर्ष पीछे रत्नप्रभसूरिःकों आचार्यपद गुरूने दिया और ७० वर्ष पीछे वीरप्रभूके निर्वाणकै ओसियांमें अठारे गोत्रोंकी थापना करी भोजग लोक संवत् वीयावाईसा कहते हैं सो सच है मगर वीयावाईसा राजा नंदिवर्द्धनका है राजा विक्रमका नहीं सो हिसाब लिखते हैं जब भगवान महावीर दीक्षाली तब संवत्सरी दान देकर प्रथम प्रजाका ऋण उतार भाई राजा नंदिवर्द्धनका संवत्सर चलाया वाद प्रभू ४२ वर्ष विद्यमान रहे और निर्वाण पाये वाद ७० वर्षपर १८ गोत्रभये एवं ११२ दसवर्ष वाद आचार विचार सीखते तथा मंदिर कराणेमें लगा १२२ वर्षपर प्रतिष्ठा तथा साधर्मी वात्सल्यकै भोजनपर भोजग गोत्रकी थापना भई एसाही प्रमाण कमला गच्छकै आचार्यकै दपतरमें तथा हमारे वडे उपाश्रयकै भंडारकै पुस्तकोंमें लिखा है तथा भगवान महावीरकों मुक्ति पहुंचेकों इस ग्रंथके लिखते वखत २४३६ का संवत् चल रहा है यानें अश्वपती गोत्रकी प्रथम थापनाकों भये आज २३६६ वर्ष वीता है विक्रम सं।१९६६ तक अब खरतर तथा और २ आचार्योंके वनाये भये गोत्रोंका संक्षेप इतिहास दरसाते हैं

प्रथम सुचिंती गोत्र

विक्रम संवत् १०२६ में श्री जैनाचार्य वर्द्धमानसूरिः खरतर

विरुद पाणेवाले श्रीजिनेश्वर सूरिःके गुरु विहा! करते दिल्ली पधारे उस नगरका राजा सोनीगरा चउहाण उसका पुन वोहित्थ कुमारकों वगाचेमें सूतेकों पैणा साप पीगया नगरीमें हाहाकार मच गया रोते पीटते मरा जाण स्मशानमें गाडनेकों लाये उहां वड वृक्षनीचे पांचसें साधुओंसें विराजमान आचार्यनें पूछा ये कोण मरगया लोकोंनें सब स्वरूप कहा राजानें वीनती करी हे संत महा पुरुष आपका दयाधर्म सफल होय किसीतरे मेरा सुतसचेतनहो में और मेरा परिवार आपके उपगारसें सदाके लिये आभारी रहेगें इस पुनकी ओलाद जहांतक सूर्य चंद्र पृथ्वीपर उद्योत करेगें तहांतक आपकी शंतानकी कदम पोसी करते रहेगें इस वखत जो दुख मेरे तनमें हो रहा है सो परमेश्वरही जाणता है इसके दुखसेंमेंभी मरजाउंगा तब आचार्य वोले हे राजेंद्र जो तुम सपरिवार जैनधर्म धारण करो मेरे शिष्य प्रशिक्षोसें वे मुखधर्मत्यागकै तुमारी ओलाद कभी नहीं होवे तो ये पुत्र सचेत होजाता है राजा तथा परिवारकै लोकोंने इस वातकूं पूर्णब्रह्म परमेश्वरकी साक्षीसें कवूल करी गुरूनें दृष्टि पास कीया तत्काल आलस मोड कुमर वैठा भया सवै लोकोंके परमानंद भया राजानें गुरूमहाराजकों महोच्छव पूर्वक नगरमें पधराये धर्म व्याख्यान सुणकर सम्यक्तयुक्त बारे व्रत उच्चरे कुमर जैनधर्मका आचार विचार सीखा गुरूमाहाराजनें इसकों सचेत करणेसें सचेती गोत्र स्थापन करा गच्छ खरतर मानते हैं सह-चींती गोत्रसें सचेती गोत्र जुदा है

वरदिया (वरढिया) दरडा

धारा नगरीका राजा भोज परलोक भये वाद तवरोंनें मालवदेशका राज्य लेलिया भोज राजाके ओलादवाले १२ थे १ निहंगपाल २

---

१ इस गोत्रके भाग्यशालीसेठ वृद्धीचदजी सींधिया सरकारकें खजांनचीथे इनोंकै पुत्र गुलाबचदजीनें फलवर्द्धी पार्श्वनाथकै मदिरके अतराप हजारो रुपे लगाकरगढवणवाया पार्श्व प्रभूकी कृपासें इनोंके पुत्र हीराचदजी अजमेर नगरमें महाश्रीमत धर्मशाली देव गुरुके भक्त रहते हैं

तालणपाल ३ तेजपाल ४ तिहुअणपाल ५ अनंगपाल ६ पोतपाल ७ गोपाल ८ लक्ष्मणपाल ९ मदनपाल १० कुमारपाल ११ कीर्तिपाल १२ जयतपाल १३ इत्यादिक

ये सब राजकुमार धारानगरीकों छोड मथुरामें आरहे तबसें माथुर कहलाये कुछ वर्षोंके वीतनेबाद गोपाल और लक्ष्मणपाल केइ गांममें जावसे सं ९५४ में श्रीनेमिचंद्रसूरिः श्रीवर्द्धमानसूरिः के दादागुरु उद्योतनसूरिःकै गुरु उहां पधारे उस वखत लक्ष्मणपालनें गुरूकी वहोत भक्ती करी धर्मोपदेशहमेंसां सुणा करे एकदिन एकांतमें गुरूसें अरज करी हे गुरु नतो मेरे पास जादा धन है और न मेरे कोइ शंतान है इन दोनों विना जीवतव्य संसारमें वृथा है आप परोपगारी हो कोई एसी कृपा करोकै मेरी आसा पूर्ण होय तब गुरूनें कहा जो तुम जैनधर्म धारण करो तो सर्व कामना सफल होयगी धन पाकर सात क्षेत्रोंकी भक्ती करणा सुपात्र तथा दीन हीनकूं दान देणा सदाके लिये तुमारी ओलाद मेरे शंतानोंकै धर्म उपाशक वेमुख न होंगें तो जा तेरे मकानके पिछाडी अगणित द्रव्य जमीनमें गडा है उसकूं निकालते जो तुझें मत निकाल एसा शब्द कहै उसकूं कहणा में नेमि चंद्रसूरिःका श्रावक हूं इस धनका आधा भाग सुकृतार्थ लगाऊंगा तब तेरे तीन पुत्र होगा इतना सुण लक्ष्मणपाल अपणी भार्यासमेत सम्यक्तयुक्त बारे व्रत गृहण किया उसीतरे वो निधान निकला शत्रुंजयका संघ निकाला अगणित द्रव्य धर्ममें लगाते तीन पुत्र पैदा भया १ यसोधर २ नारायण ३ और महीचंद गुरु श्रीनेमिचंद्रसूरिनें आशीर्वाद दियाथा इन पुत्रोंसें तुमारा कुल वढेगा योवन अवस्थामें महाजनवंशमें इनोंका व्याह किया उसमेंसें पहले नारायणकी स्त्रीकै गर्भ रहा पीहरमें जाकै जोडा जन्मा जिसमें लडका तो सांपकी सिकलवाला और दुसरी लडकी, इन दोनोंकों लेकर सासरे आई अब वो सांपकी सिकलवाला लडका शीतकालमें चूल्हेकै पास सोताथा लोटपोट करता चूल्हे पास चला गया मावीके वस उसकी

वहिननें पाणी गरम करणे पिछली रातकूं अंधेरेमें चूल्हा सिलगा दिया उससें जलकर वो नाग सिकल वालक मरकर शुभ भावसें व्यंतर देवता भया अब वो नागदेवके रूपसें आकर अपणी वहिनकोंतक लीप देणे लगा तब लक्ष्मणपाल जंत्रमंत्र बलिदान कराया तब प्रत्यक्ष होकर बोला जबतकमें व्यंतरयोनिमें रहूंगा तबतक लक्ष्मणपालकी ओलादकी लडकियां कभी सुखी नहीं रहेगी कुच्छ न कुच्छ आपदा होगी ये वात सुण बहुत लोगोंनें विचारा नागदेव सच है या झूठ इतनेमें एक कमरके दर्दवालेनें आकर कहा जो. तूं सच्चा देव हे तो मेरी कम्मर अच्छी करदै तब देव बोला लक्ष्मणपालकै घरकी दिवालसें तेरे दरदकी जगे स्पर्शकर अभी पीडा चली जायगी उसने दिवालसें स्पर्श किया कम्मर अच्छी होगई तब उसदेवनें लक्ष्मणपालकों वर दिया जो चिणक पीडावाला तुमारे घरका स्पर्श करेगा सो तीन दिनसें निश्चै पीडा रहित होगा वर दिया उसका अपभ्रंस लोक वरढिया कहणे लगे वो उसकी वहिन भाईके हित्याके वदले मोहसें शुभध्यानसें मर व्यंतर निकायमें देवी भई भूवाल उसका नाम है इसकों कुलदेवीकर पूजणे लगे नेमी चंद्रसूरिःके तीजे पाटधारी जिनेश्वर सूरिकों खरतर विरुद मिला मूलगच्छ इनोंका खरतर है

कूकड चोपडा गणधर चोपडा चीपड गांधी वडेर सांड

खरतर गच्छाधिपती जैनाचार्य अभय देव सूरिःजीके शिष्य वाचनाचार्य पदस्थित श्री जिन वल्लभ सूरिः ११७६ वर्ष विक्रमके विचरते २ मंदोदर नग्रमें पधारे उहांका राजा नानूदे पडिहार साख इंदा गुरूकी वहोत भक्ती करी और अरज करी हे परम गुरू मेरे पुत्र नहीं गुरूनें कहा पुत्र होणेसे संसार वढेगा साधू संसार वढाणे विना जैन संघके काम विगर निमत्त भाखै नहीं इसवास्ते तूं इतना करार करेकी पहला पुत्र आपका शिक्षदीक्षितकर दूंगा तो वताकर पुत्र रूप संपदा करदुं राजा वडे हर्षसें ये वात कवूल करी गुरूनें कहा तुम और तुमारीस्त्रीयेमेरा वास चूर्ण सिरपरलो दोनोंनें लिया गुरूनें

कहा जवान मत पलटना चार पुत्र होगा गुरुविहार करगये क्रमसें ४ पुत्र भया इधरसं ११७९ में श्री अभय देवसूरिः वादि देवसूरिः अपणे धर्म मित्रकों कह गये मेरे पट्टपर वल्लभकूं थापन करणा देव सूरिःनें कहा वल्लभकी आयू अब थोडी है लेकिन् इसनें वाचनाचार्य पदमें रहते ५२ गोत्र राजपूत माहेश्वरी ब्राह्मनोकों जिनधर्मी महाजन वणाये हैं इसवास्ते महाप्रभावीक है में स्थापन करदेंगा श्रीजिन वल्लभ सूरिःकों स्थापन किया ६ महीने आचार्य पदपालके देवसूरिःकों दत्तकों पट्टधारी वणाणेका फुरमाकर स्वर्गवास भये १०८ चिन्ह करकै सुसोभित शरीरधारी श्रीजिन दत्तसूरिकों देवसूरिनें सूरिमंत्रदिया सवा क्रोडन्हीं कारकै जापकी सिद्धिकर श्रीजिनदत्तसूरिः विचरते २ मंदोवर नग्र पधारे राजानें वहोतही उच्छव किया भक्ती दरसाई गुरू कहा हे राजेंद्र गुरुमाहाराजका वचन याद है आपनें क्या करार किया था राजानें राणीसें पूछा राणी वोली राजाके पुत्रकों श्रीजिनदत्तसूरिः घर २ भीख मंगायगें हरगिज पूत्र नहीं देणे दूंगी पुत्र दिया तो प्राणत्याग दूंगी तव राजा लाचार हो गुरूसें कहा हम सव आपहीके हैं आपका गुण हमारे शंतान कभी नहीं भूलेंगें गुरु उहांसें विहार कर गये कर्मके वसरातकों भोजन करते वडे पूत्रकै सांपकी गरल खाणेमें आगई कूकड देके, प्रभातसमें वैद्योनें इलाजपर इलाज किया मगर कुछ फरक नहीं भया तीसरे दिन वदन सव फूट गया मंत्रजंत्र सब कर चूके महादुर गंध महाविदरूप वदनमेंसें पीप झरणे लगा मरणके। मुख पडा राणी हाय २ कर रोणे लगी सहरमें हाहाकार मच गया तव गुणधरजी कायस्थ जो दिवानथे उनोंने राजासें अरज करी हे महाराज आपनें महापुरुषोंसें दगावाजी करी उसके फल है आप अगर अपणा भला चाहते हो तो उनही परम पुरुषके चरण पकडो राजा घोडे सवार हो सोझत इलाकेसें गुरूकों पीछा लाया गुरू देखकर वोले जो तुम सहकुटुंब जैनधर्म धारकर खरतर गच्छके श्रावक वणो तो अच्छा हो सकता है राजानें कहा मेरी आल ओलादलायक वंद होगी सो खरतर

गुरूका उपगार कभी भूलेगी नहीं न कभी वे मुख होगी गुरूनें कहा ताजा मखण लावो दिवान उस वखत फूकडी नाम गउराजाकी थी उसका मखण ले आया गुरूनें योगविद्याका अलक्षपास कर दृष्टिसें हुकम दिया चोपडो लगातेही पीप बंध भया दुरगंध गई तीन दिनमें कंचन वरणी काया भई ये चमत्कार देख नानूदे सहकुटुंब जैनी महाजन भया गुरूनें फूकडी गऊका मख्खण चोपडणेसें फूकड तथा चोपडा गोत्र स्थापन करा चीपड पुत्रका चीपड गोत्र थापन करा सांडे पुत्रका सांड गोत्र थापन करा सांड गोत्र दोय है फूकड सांड १ तथा सियाल सांड २ गोत्र जुदा २ है एसा चमत्कार तथा जैनधर्म सुणकर गुणधरजी हंसारिया कायस्थ दिवाननें जैनधर्म अंगीकार करके महाजन भया उसका गुणधर चोपडा गोत्र गुरूनें स्थापन करा गुण-धर चोपडामेंसें गंधीपणेका रुजगार करणेसें गांधीगोत्र अलग भया नौनूजीके पांचमी पीढी दीपचंदजी भये इनोंका व्याह ओसवालोंमें भया दीपचंदजीके ग्यारमी पीढी सोनपालजी भये जिनोंनें संघ निकाल लाखोंका द्रव्यधर्ममें लगाया मंडोवरमें नानुदेजीनें जिनमंदिर कराया सो अभी मोजूद है सोनपालजीके पोते ठाकुर सीजी वडे बुद्धिवान चतुरथे वडे सूर धीर थे तब रावचुंडेजी राठोडनें अपनें कोठारका काम सुपुर्द किया उस दिनसें कोठारी कहाये राववीकेजीनें हाकमी दी सो हाकम कोठारी कहाये वीकानेरमें, इनोंकी शाखा १२ है फूकड १ कोठारी २ हाकम ३ चीपड ४ चोपडा ५ सांड ६ वूचकिया ७ धूपिया ८ जोगिया ९ वडेर १० गणधरचोपडा ११ गांधी १२ इणवारें इजातवालोंके आपसमें भाईपा है

धाडेवाह टाटिया कोठारी

गुजरात देशमें डीडोजी नामका एक खीची राजपूतोंकों संग लिये धाडा मारताथा गुजरातके राजा सिद्धराज जयसिंघनें ये वात सुणी तब इसकों पकडनें केइ २ योद्धार भेजे मगर कावूमें नहीं आया एक दिन राजाका खजाना लूंट लिया ये वात सुणतेही सिद्धराजनें

वीस हजार घोडे पकडणेकों भेजे डीडोजी धाडमें लूंटा जो माल सो वेचणेकूं उंझा नाम गांममें गयेथे घोडे पचवीस संगथे तब डीडोजीकूं एक राजपूतनें खबर दी अब आप नहीं वचोगे २० हजार घोडे सिद्धराज जयसिंघनें तुमकों मारणे भेजे हैं सो आय पहुंचे गांमके सब रस्ते रोकलिये हैं वडे सूर वीर डीडोजी कहणे लगे क्या डर है राजपूत क्षत्री रणमें मरणेसें निश्चै रजपूतकी वडाई है इतनें देखे तो खरतर गच्छाचार्य श्रीजिनवल्लभसूरिः हजारों मनुष्यगणोंसें वंदीजते पूजीजते ऊंझा गामके वजारमेंसें आरहे है अतीव चमत्कारी महापुरुषकूं देख घोडेसें उतर चरण स्पर्श किये गुरूनें धर्मलाभ कहा डीडोजी पूछते हैं माहाराज धर्म क्या चीज है गुरूनें कहा खोटी गति नरकतिर्यचादिक उसमें नहीं पडणे दे उसका नामधर्म है धर्म एक भेद अहिंसारूप और अनेक भेद झूठ चोरीका त्याग आदिक इसका मेद भेदांतर सुणते जिनधर्मकी वासना भई इतनेमें राजाके सुभटोंनें आके घेरा दिया गुरूनें डीडोजीका मरणांत कष्ट देख सिरपर वास चूर्ण डाला उसकरकै ये स्वरूप वणाकै डीडोजीके शरीरमें शस्त्रका प्रहार एक लगे नहीं तब डीडोजी गुरुमाहाराजका अतिशय जाण दया करके रंगीजगई आत्मा जिनोंकी सो सब सुभटोंकै शस्त्र छीन लिया तव वो सिपाही डीडोजीकै चरणोमें गिरकै अरजी करणे लगे हे स्वामी सिद्धराज जयसिंहकूं हम क्या मुं दिखलावें हम आजीविकारहित हो गये तब डीडोजी उन २० हजार सवारोंकों अपणे नोकर कर लिये बाद श्रीजिन वल्लभ सूरिकै पास सम्यक्त युक्त बारे व्रत लिया इसतेरेपर जो २५ राजपूत खीची थे उनोंनेंभी धाडा मारणा त्यागकै गुरूकै श्रावक भये डीडोजीका गोत्र गुरूनें धाडेवाह और वाकी राजपूतोंका धाडेवाल गोत्र थापन करा ये अचरज सुण सिद्धराजनें सेनापती वणायकर ४८ गांमका पटा दिया डीडोजीके

१ धाडेवा गोत्री मिलापचदजी नेमीचदजी बीकानेरमें राज्यके मुत्सद्दी धर्मज्ञ है नागपुरमें छोगमलजी धाडेवाल श्रीमत दातार धर्मतत्पर सुसील हैं

पुत्र सूजाजी राजाकुमरपालके कोठारका काम किया वो कोठारी जीवजणेलेग वाकी पुत्र धाडे वाह कहलाये इनोके छठी पीढी सांवलजी गुजरात छोड अपणे कुटुंबको संग ले मारवाडमें आयवसे इहां कोठारी नाम प्रसिद्ध रहा इनोकेँ पुत्रसेढोजीतिवरीगाममें वसे इनोंके सिरपर टाट होणेसें टाटिया कहलाये गुरू गच्छ खरतर

झांवक झांमड झंबक

राठोड वंशी रावचूंडेजीके वेटे पोते १४ राज्य अलग २ स्थापन करा जिसमेंसें मालव देशमें रत्नललाम (रतलाम) नग्रसें करीव २५।३० कोसके फासलेपर जो अब झवुआ नगर वसता है इस नगरीके राजा झंबदेके ४ पुत्र सुखसें राज्य करते थे सं । १५७५ में श्रीजिनभद्रसूरिः खरतर गच्छी विचरते २ पधारे तब राजा वडे २ महोच्छवसें नग्रमें पधराये क्योंके राव सीहाजी आसथानजीनें जिन दत्तसूरिःजीकी सेवा करी तब गुरू बोले हे राजा क्या इच्छा है आस थानजी अरज करणे लगे गुरूराज्य भ्रष्ट हो गया सो किसीतरे राज्य मिलै एसी कृपा करो तब गुरूनें कहा जो तुमारी औलाद मेरे शंतानों- कों सदा मदके लिये गुरु मानते रहेगें तो में आगे होणेवाली वात- का निमित्त भाषण करता हूं आस थानजी बोले जहांलग पृथ्वी और धू अचल रहेगा उहांतक हम राठोडोंकै गुरू खरतर गच्छ रहे- गा कभी वे मुख नहीं होंगें ये उपगार कभी भूलेंगे नहीं सूर्यकी साक्षी परमेश्वर साक्षी है इत्यादि अनेक वचन प्रतिज्ञा अंतःकरणसें करी तब गुरू शाशनदेवीकों आराध कर कहा तुमारे कुलमें चूंडा नाम पुत्र होगा उसके शंतान १४ राज्यपती राजाधिराज पृथ्वी- पती होंयगें और आजसें तुमारी कला तेज प्रताप दिन २ वढते रहेगा. तबसें राठोड राज्य धन परिवारसें दिन २ वढतेइ गयै ख्यात राठोडोमें एसा लिखा है (दोहा) गुरु खरतर प्रोहित सिवड, रोंहडियो बारह्ट कुलको मंगत देदडो, राठोडां कुलमट्ट १ इसवास्ते झंबदे अपणे कुल क्रमके उपगारी गुरूकी भक्तीमें तत्पर भया, इस वखत दिल्लीकै वादसा

मुसलमीननें झंवदेव पर हुकम भेजाके तुम वडे सूरवीर मछराल हो सोघाटेका मालक भींया टांटियाभील नमेरा हुकम मानता है और गुजरात देसमें चोरी कराता है, रस्ते गीरोंकों लूंटता है धंध बांधले जाता है इसकों पकडके लावोगे तुमारी खातरी दरबारमें होगी कुरब वढाकर पटा दिया जायगा राजा उदास हो गुरूके पास गया चरण कमल वंदनकर कहणे लगा हे गुरु आप गुरुओंके आशीर्वादसें ये राज्य पाया आपके वडे गुरू लोकोंनें हमारे वडेरोंकेकेइयक वेर कष्ट आपदा दूर किया है अवकी लाज मरजाद जो गुरू रख दोतो वृद्धपण सफल हो जाय और आपके गुलामोंकी अखियात. कीर्ती राज्य रह जाय तव आचार्य वोले हे राजेंद्र जो तुम हिंसा धर्म त्यागके अहिंसा रूप अणुव्रत सम्यक्तयुक्त जैनधर्म धारो तो सब हो जायं एक पुत्रकों राज्य देणा वाकी महाजन वणो तब गुरूके वचन सुणतहत्त किया तब गुरूनें कहा कलजायता कर दूंगा काला भेरूं मंडोवराकूं आराधन किया उसके वचन लेकर प्रभातसमें विजयपताका जंत्र वणाके राजाकूं दिया राजानें विचारा जो भुजापर धंध रखूंगा तो नमाका युद्ध में खुल नहीं पडे तब अपणे पुत्र वडेके जांघमें चीरके जंत्र डालके टांके लगा दिये और गुरूका आशीर्वाद लेके चढा उन दोनों भायोंको पकडके बादसाहके सुपुर्द किया बादसाहनें वो सब भीलोंका इलाका झावुआनग्रकेतावे दिया सो अभी विद्यमान है राजानें अपणे वडे पुत्रकों राज्य तिलक दिया और कहा हे पुत्र ये राज्य तुमारा नहीं समझणा सदामदके लिये खरतर गुरूसें कभी ऊरण नहीं हो सकोगे अभी भी वो राजा लोक इसीमुजब पिताके वचन निर्वाह करते हैं राजा तीन पुत्रोंके पर धार समेत जैन महाजन भया जिनोंका ये तीन गोत्र गुरूनें स्थापन करा झांवक १ झांमड २ झंवक ३ ये तीनो झवुआनंग्रमें भये.

वांठिया, लालाणी, ब्रह्मेचा, हरखावत, साह, मल्लावत गोत्र.

विक्रम सं० ११६७ में पमारराजपूत लालसिंहजी रणतभंवरके

गढके राजाकों श्रीजिनवल्लभसूरिः इसप्रकार उपदेश दिया लालसिंह-जीके पुत्र ब्रम्हदेवके जलंदरका महा भयंकर रोग पैदा भया उसवख्त लालसिंहजी गुरूसें वीनती करी हे गुरू एसा कोइ इलाज करो सो मेरा पुत्र आराम हो जाय तब वल्लभसूरिःनें कहा जो तुम जैनधर्म धारणकर मेरे श्रावकणो तो पुत्र अच्छा हो जाता है तब लालसिंहजीनें कबूल किया. तब गुरूनें चामुंडा देवीसें उसें आराम करवाया तब लालसिंघजीनें सात पुत्रोंसमेत जैनधर्म अंगीकार करा उसका वडा पुत्र वडा वंठयोद्धार था उसकी ओलाद् वंठ कहलाये ब्रह्मदेवके ब्रह्मेचा लालसिंहजीके छोटे २ ई पुत्रके लालाणी साहकी किताब उदयसिंह पुत्रकों भरु अच्छे नवाबनें इनायतकी बोसाह कहलाये मले पुत्रकी ओलाद मल्लावत कहलाये हरखचंदकी ओलाद हरखावत कहलाये वांठिये चिमनसिंघ संवत् १५०० से में हुमायू बादसाहकी फोजमें देण लेण करणे लगे गुजरातकुं हमलेमें सोनेके बरतण फोजके लोकोंनें पीतलके भरोसे बेच गये इससें चिमन वांठियेके पास वेगिणतीका धन हो गया इस करके बहोत जुगे व्यापार होगया चिमनसिंघने क्रोडों रुपये लगाकर बहोत जिनमंदि-रोंका उद्धार कराया सत्रुंजय तीर्थकी यात्रा जाते गांम २ प्रति आदमी प्रतिएक २ अकब्बरी मोहर सा धर्मियोंकों वांटी पहले वंठ.कहलाते थै मोहरों वांटणेसें वांठिया २ कहलाणे लगे इनोंका परवार जादा बीका-नेर ईलाके वसतें हैं मूलगच्छ खरतर है

चोरवेडिया भटनेरा चोधरी सावसुखा, गोलछा, पारख, बुचा गुल-गुलिया गूगलिया गदहिया रामपुरिया साख ५०

पूरब देश नग्रचंदेरीमें खरहत्थसिंघ राठोड राजा राज्य करता है जिसकै ४ पुत्र है अंबदेव नींबदेव २ भेंसा ३ आसपाल ४ संवत् विक्रम ११९२ में में श्रीजिनदत्तसूरिः खरतर गच्छाचार्ययुगप्रधान चंदेरी परगनेमें

---

१ बादसाहकी खातरीसें आगरानगरमें चिमनसिंहजी वांठियेकी निजरातान गंभीर मलजी वगेरे उसदुकानके मालक वडे २ धर्मके कामदान पुन्य संघ यात्रा जिनमंदिर बाबत क्रोडो रुपे लगया है.

पधारे उस वखत राठ लोकोंकी फोज संगमें लिया भया यवनलोक काबली मुलक लूंटणा सरू करा बहोत अगणित द्रव्य लेकर जाणे लगे तब राजा खरहत्थकों ये खबर भई तब दुष्टोंकों सजा देणे राजा चार पुत्रोंकों संगले फोजके संग युद्ध करणे चला युद्धमें सब धन राजाके सुभटोंने यवनोंसें छीन लिया मगर युद्धमें पुत्र घायल होगये राजा उनोंकों पालखीमें डाल पीछा फिरा शस्त्रवैद्योंनें जवाब दिया ये पुत्र किसीतरे नहीं बच सकते राजा सुणते ही मुच्छी खाकर नीचै गिरा तब लोकोंनें ठंढा पाणी ठंढी हवाकरके सावधान किया विलपात करणे लगा बेटे अचेत पडे हैं इतनेंमें मुनिगणसें सेव्यमान श्रीजिनदत्तसूरि विहार करते चले आये लोकोंनें राजासें अरज करी हे पृथ्वीनाथ शांत दांत जितेंद्री अनेक देवता है हुकममें जिनोंके ५२ वीर ६४ योगनियोंकों वस करता पांचपीरोकों तावेदार बणाणेवाले बीजलीकों पात्रके नीचै थांभणेवाले जंगमसुरतरू आपके भाग्योदयसें वो पधार रहे हैं राजा ये सुणते ही सामनें जाकै चरणोंमे गिरपडा औंर रोणे लगा गुरूनें कहा राजेंद्र क्या दुख है तब चारों पुत्र मृतकवत् पालखीमें जो पडे थे सुभटोंनें लाकै हाजर करे गुरूनें कहा जो तुम जैनधर्मी बणो मेरी आज्ञा मानो तो चारों अभी अक्षत अंग हो जाते हैं राजा कहता है हे परम गुरु जो मेरी ओलाद और में आपसें और आपकी शंतानोंसें बेमुख होगी वो कभी सुख नहीं पायगी आपकी आज्ञा खरहत्थकी सब ओलादकूं मंजूर है इत्यादि जब प्रतिज्ञाकर, चूका तब गुरु जोगणियोकों याद फुर माया आतीही गुरूकी आज्ञासें अमृत छिडका तत्काल अक्षत अंग चारों वीर योद्धार खडे भये गुरूकै चरणकी पूजा करी सब राजपूत अचरजके भरे जैनधर्म .अंगीकार करा उनोंकै न्यारे २ गोत्र स्थापनकरा उनोंका नाम समुच्चय लिखेगें राजा खरहत्थके वडे पुत्र अंबदेव चोरोंकों पकडा वैडियें डाली सो चोर बेडिये अथवा चोरोंसें जाय भिडे इसवास्ते चोर भिडिये कहलाये लोक चोरडिये कहा करते हैं चोरवेडियोंमेंसें वहोत साखें निकली १

नेजाणी २ धन्नाणी ३ पोपाणी ४ मोलाणी ५ गल्लाणी ६ देव सयाणी ७ नाणी ८ श्रवणी ९ सद्दाणी १० कक्कड ११ मक्कड १२ मक्कड १३ लुटंकण १४ संसारा १५ कोचेरा १६ भट्टारकिया १७ पीतलिया १८ सोनी १९ फलोदिया २० रामपुरिया २१ सीपाणी दुसरें नींब देवकी ओलादवाले भटनेरा चोधरी कहलाये इनोनें भटनेर नग्रके लोकोंकी चौधारायत भटनेरके राजाके कहणैसें करी तबसें भटनेरा चौधरी कहलाये, तीसरे भैंसासाहके ५ स्त्रियांथी इनोनें अपणा रहणा मालव देश मांडव गढमें कीया था इनोके पांच स्त्रियोंसें ५ पुत्र ४ कुंवरजी इनोंकी ओलादवाले सांवण सूका कहलाये सो इसतरे कुंवरजी वहोत जोतष निमित्त शकुन शास्त्र पढे थे जो वात कहते सो प्रायें मिलही जाती मांडव गढसें चितोडके राणेजीनें कुंवरजीकूं बुलाये परिक्षा करणेकूं पूछा कहो कुंमर सांवण भादवा कैसें होगा कुंवरजी चोला सांवणसूका और भादवा हरा होगा राणेजीनें उंहांही रखा आखरकों जेसा कहा वैसाही भया तब राणेजीनें कहा सच तुमारा कहणा, सावण सूका गया तबसें लोक सावण सूका २ कहणे लगे, इनकें वंशमें गुलराजजी गुडके गुलगुले वणा २ कर छोकरोंकों खिलाया करते इसवास्ते छोकरोंने गुलगुला सेठ नांम धर दिया कुवरजीके वंशवाले जेसल मेरसें गूगलका व्यापार पालीनग्रमें करणेसें लोक गूगलिया कहणे लगे, दुसरे बेटे २ गेलोजी इनोके पुत्र वछराजजीकों मांडव गढके लोक गेल वछा कहते २ लोकोंमें गोल वछा कहलाणे लगे, तीसरे बेटे बुचा साह इनकी ओलाद बुचा कहलाये ४ बेटा पासूजी आहड नगरमें राजा चंद्रसेणनें इनोंकों सरकारी जवाराहित खरीदणेपर झंवरी कायम किया एक दिन एक परदेशी श्रीमाल झंवरी राजाके पासहीरा वेचणेकूं लाया राजाकों दिखलाया राजानें सहरके सब झंवरियोंकों दिखलाया झंवरीयोनें उस हीरेकी वडी तारीफकरी जिसके वाद राजानें अपणे झवरी पासूजीकूं दिखलाया पासूजी वोलें यद्यपिहीरा वहोतकीमतदारहै लेकिन् इसमें एक एब है राजानें पूछा वोकोनसी पासूजी भोले

जिसके घरमें ये हीरा रहता है उसकी स्त्री मर जाती है तब राजानें श्रीमाल झंवरीको बुलाकर पूछा हमारे झवरी पासूजी इसहीरेमें एसी एव वतलाते हैं उसनें अपणा कान पकडा और कहणे लगा मेनें हजारों नांमी झंवरी देखे हैं मगर पासूजीकी तारीफ करणे जुवानकूं ल्याकत नहीं है सच है मेनें दोव्याह किये दोनों मरगई तब इसहीरेकों एवदार समझ वेचणे आया हूं वाद तीसरा व्याह करूंगा तब राजानें सत्य पारख जांणके पारख पदवी पासूजीकों इनायतकी पासूजीकों लाख रुपया सालियानादेणा उस दिनसें कबूल किया पासूजी उस हीरेके लक्ष रुपया देकर श्रीऋषभ देव भगवानकें तिलक वणाकर चढा दिया इनकी ओलाद पारख कहलाये पांचमा पुत्र सेलहत्थ लाडका नाम (गद्दासा) था उनकी ओलाद गदहिया कहलाये, खरहत्थजीके चोथे बेटे आसपालजी इनोके आसाणी तथा ओस्तवाल दोलडकोंसें गोत्र भये,

भैंसा साहनें गुजरातियोंकी लंग खुलाई

भैंसा साहकैपास खरहत्थ राजानें जो यवनोंसें धन वे गिणतीका छीनांथा वो जादा इनोंकेही पास रहा इनोंकी मातालक्ष्मीवाईसेत्रुं जयकी यात्राकों वडे महोच्छवसें चली जगे २ रथ महोच्छव संघकों जीमाणा धर्मशाला जीर्णोद्धार याचकोंकों दान देते चली पाटण नग्र पोहचते धन पासमें थोडा रहा तब अपणे गुमास्तेकों भेज उहांके वडे व्यापारी नांमीचारोंकों बुलाया उसमें गर्द्दभसाह मुख्य था तब उनोंसें लक्ष्मीवाईनें कहा हमें क्रोडसोनइये चहिये है सो हमारी हुंडी मांडव गढकी लेकरकै दो तब व्यापारीवोले तुम कोण हो क्या जाती किस जगे रहते हो हम पिछानते नहीं तब लक्ष्मीवाईनें कहा मेरा पुत्र कहांई छिपा नहीं हैं भैंसेकी माताहूं, एसा सुणकर गद्धा साह हसकर बोला भैंसा तो हमारे पाणीकी पखाल लाता है एसी हसीकर चारों चले गये मगर देणा कबूल नहीं करा तब मातानें सवार भैंसे साह पास भेजा और सब समाचार लिख भेजे तब भैंसा

साह अगणित धन लेकर पाटण पहुंचा और गुमास्ते भेज गुजरात देशमें जगे २ तेल खरीद करवालिया और पाटणमें उन व्यापारियोंसें तेल मुद्दतपर लेणेका वादा किया लक्ष मोहरें पहले देदी अब पाटणके व्यापारी गांमोंमें गुमास्ते भेजे तेल खरीदणें, मगर कहांइ तेल मिला नहीं, आखिरकों तेल देणेका वादा आय पहुंचा, अब पाटणके सब व्यापारी एकठे होकर लक्ष्मीबाईके चरणोंमें आय गिरे, और कहणे लगे, हे माता हमारी लज्या रखो, तब भैंसा साह बोला, राजसभामें चलकर तुम सब लोक लंग खोल दो, और आइंदे कभी दुलंगी धोती नहीं बांधो तो तेल लेणेकी माफी दूंगा, उनोंनें वेसाही किया तबसें गुजरातवाले दो लंगा नहीं देते हैं, बाकी गांमवालोंसें तेल ले लेकर जमीपें गिराणा सरू करवाया, तेलकी नदी ज्यों प्रवाह चलाया, आखिर गुजरातके व्यापारी हाथ जोड माफी मांगी, तब निसाणीके वास्ते स्त्रोंकी लंग खुलादी, ओर भैंसेंको पाडा कहणा कबूल किया भेसें साहके कहणेसे अपणे नामका सिक्कासेलहत्थ (गद्दासाह) नें ज्यासे सोनेका गदियाणा वणाकर दीन हीन कंगालोंकों वांटा तब पाटणके राजानें भेसासाहकूं बुला कर मानप्रतिष्ठा वढाकर रूपारेल विरुद दिया यानें रूपारेल शकुन चिडी प्रशन्न होकर जब शकुन देती है तो नव निद्ध सिद्ध कर देती हैं सं १६२७ में सत्रुजयपर श्रीजिनचंद्रसूरिः खरतराचार्यके उपदेससें १८ गोत्र और भाई होकर गच्छ खरतरसें प्रतिबोध पाये जिन खरहत्थ राठोडकी साखा इतनी फैली सगे भाईयोंका कुछ क्षात तो पहले लिखा है बाकी कोन फरंसकी रिपार्टमें औरभी गोत्र गोलछापारखोंके सगे भाई लिखे हैं साव सुखा २ गोलछा २ पारख ३ पारखोसे आसाणी ४ पैंतीसा ५ चोरवेडिया ६ बुचा ७ चम्म ८ नावरिया ९ गदहिया १० फाकुरिया ११ कुंभटिया १२ सियाल १३ सचोपा १४ साहिल १५ घंटेलिया १६ काकडी १७ सींधड १८ संखवालेचा १९ कुरकचिया २० सांव सुखोंसें गुलगुलिया २१ गूगलिया २२ भटनेरा २३ चोधरी २४

चोरडियोंमेंसें २४ फेर निकलेयेसब गोत्र राठोडखरहत्थके ४८ गोत्र सगे भाई गच्छमूल खरतर ५० मां ओस्तवाल पारखोंसें ये सब जैनकोन फरंसकी रिपोर्टसें मिलाके श्रीजीके दपतर मिलाके लिखे हैं. १८ तीर्थ भाई कांकरिया १ सेल्होत २ भटाकिया ३ बूब किया ४ खूतडा ५ नारेलिया ६ सिंदूरिया ७ मूंधडा ८ नीवाणिया ९ घावेल १० काकडा ११ फोकटिया १२ इत्यादि इन सर्वोका मूल गछ खरतर है

भणशाली २ चंडालिया भूरा धद्धाणी

लोद्रवपुर पट्टण जोकी जेसलमेरसें ५ कोस है उहांका राजा यदुवंशी धीराजी भाटी उनके पुत्र सागर सागरके श्रीधर राजधर दो पुत्र थे सागर युवराज पदमें था सं। ११९६ युग प्रधान श्रीजिन दत्तसूरिः लोद्रव पत्तनपास विक्रमपुर पत्तनमें थे सगर युगराजकी माताकूं ब्रह्मराक्षस लगा हुवा था सो अगम वात कह देती वेद पढती संध्यातर्पण करती पवित्रतामें मग्न केइ दिनोंतक भोजन नहीं करती और जब खाणे वैठती तो मण अंदाजन खा जाती तब राजा अनेक मंत्रवादियोंकों बुलाया मगर वो मंत्र जो जाणता सो विगर पढे राणी आप पढ देती आखर राजानें जिनदत्तसूरिःजीकी तारीफ सुणी तब राजा खुद सन्मुख गया ओर लोद्रवपुरमें गुरूकों लाया गुरूकों देखतेही ब्रह्मराक्षस बोला हे प्रभू अवमें आपके सामने लाचार हूं कारण आपकी योगविद्याकोंमें नहीं पहुंचता आपके सब देवता दास है गुरूनें कहा आज पीछे धीराके कुटंबकों कभी सताणामत तब ब्रह्मराक्षस बोला हे गुरु इस राजाकामें कथा व्यासथा एक दिन इस राजानें देवीकी स्तुति करी औरमेंनें विष्णु सतोगुणी रामचंद्रकी तारीफ करी राजानें माना नहीं तब मेनें कहा है राजामदिरामांस चढाणा जगदंबा नाम धराणेवाली अपणे पुत्रवत् भैंसे बकरेकों मारके भोग लगाणेवाली जगतकी माताकैसें हो सकती है इतना सुणतेही राजा क्रोधातुर होकर मुझें मरवाडालामेंदयाके परणामसें मरकर व्यंतर निकायमें ब्रह्मराक्षस

भया पूर्वभवके वैरसें इसके कुलका नास कर डालता लेकिन् आप समर्थ योगी हो एसा कह कर राजा धीरकों कहणे लगा अरे दुष्ट तूं देवीकों जीवोंकों मारके मांसमदिरा चढाता और खाता भया नरक जायगा अगर स्वर्गमोक्षकी चाह रखता हैं तो श्रीजिनदत्तसूरिः धर्मकी जिहाज है इनोंका कहा धर्म धारणकरसो तेरे कुटुंबका दोनों भव-कल्याण होगा एसा कहकर राजाके गढका मूल दरवज्जा उत्तर था सो पूरवमें स्थापनकर गुरुसें सम्यक्त ग्रहण कर ब्रह्मराक्षस राणीका अंग छोड दिया अपणी निकायमें चला गया एसा चमत्कार देख राजा अपणे कुटुंबसमेत जैनधर्म अंगीकार करा भंडसालमें वास क्षेप किया इसवास्ते भणसाली गोत्र गुरूनें थापन करा चद्धाजी भणशालीकी ओलाद् चद्धाणी कहलाये थेरूसाह नामका भणसाली विक्रम संवत् सोलेसेमेंभया सोलोद्रवपत्तनमें घीका रुजगार करताथा उस वखत रूपसियां गांमकी स्त्रियें इसकूं हमेस घी लाकर वेचाकरतीथी एक दिन पिछली रातकों वहोतसी स्त्रियों घीके घडे ले गांमसें निकली रस्तेमें एक स्त्री अराई (इंढोणी) भूलगई रस्तेमें उसनें एक हरी वेलकों मरोडके अराई वणाली लोद्रवपुर पहुंची इसके घडेका घी तोलते २ अंत नहीं आया तब थिरूनें विचारा १५ सेरका घडा इसमें ३० सेर तो निकल चूका ओर फेर घी इतनांही भरा हे, अग्गमबुद्धि वाणिया इस न्यायसें वो अराइ नीचेसें निकाल दुकानके अंदर फैंकदी सबोंका घी लेकै अराईवालीकों दूणे दांम दिये तब वो विचारणे लगी थिरू आज भूल गया तद पीछे चोली इराई तो दै घडाकेसें ले जाउं इसनेंको डाला जो जेसलमेरमें वणता है वो निकालकै दिया तब तो वो स्त्री वहोतही खुस होगई आजमें तो रूपारेललेकै आईथी वो सब-चलीगई अब थिरूसाह अपणेपास जो द्रव्यथा उसके नीचै वो इराई धरी जितना द्रव्य निकाले उतनाही अंदर तब श्रीजिनसिंहसूरिः आचार्यसें ये सब बात कही गुरूनें कहा सुकृतार्थ संच, तब थिरूनें धीर राजाका कराया भया सहस फणा पार्श्वनाथके मंदिरका जीर्णोद्धार

कराया ज्ञानमंडार कराया इसतरे क्रोडों रुपे लगाये नवरत्नोंके जिन विंब भरवाये संघ भक्ती वहोत करी संवत सोले वयासीमें सत्रुंजयका संघ निकाला श्रीजिनराजसूरिः प्रमुख केई आचार्य संग थे समय सुंदर उपाध्यायनें इनोंकेही संघमें सत्रुंजय रास वणाया है इस वंस-वाले जेसलमेरमें सुलतानचंदजी कच्छावावडे अकलके सायर पुरुष हो गये उहां मणसालीकछावा वजते हैं जोधपुरमें मणसाली सव जातके चोधरी है, वादसाह अकव्वरनें थेरूसाहकूं दिल्ली बुलाकर वडा कुरव वढाया थेरूसाहनें नव हाथी पांचसें घोडे नजर किये तव वाद-साहनें राय जादाकी किताव वगसी इनोंकी ओलाद रायभणसाली कहलाये आगरेमें वडा जिनमंदिर थिरूसाहनें कराया सो अभी मोजूद है जोधपुरके भणसाली नो वर्षतक अपणे पुत्रोंके चोटी नहीं रखते हैं दादा गुरूके दीक्षत चेले वणा देते हैं चोरी दासोत मणशाली व्याह भोजकोंसें कराते हैं ब्राह्मणोकोंहींजडोंकों व्याहमें नहीं बुलाते हैं-

भणसाली सोलंखी २

आमूगढका सोलंखी राजा आमडदे इसके पुत्र होय सो मर-जावे अनेक देवी देव मनाये मगर पुत्र नहीं जीता तव सं । ११६८ में श्रीजिनवल्लभसूरिः महाराज विचरते २ पधारे तव राजानें गुरूसें अरज करी गुरु मेरे शंतान नहीं जीता है कोइ यत्नकरणा चाहिये गुरूनें कहा जो तुम जैनधर्म धारण करो तो मृतवत्सा दोष मिट जाता है तव राजाराणी दोनोंनें कवूल किया गुरुमाहाराजनें कहा तेरे सात राणि-योंके अव सात पुत्र होगा सो जीते रहेगें राजाराणी उसीदिनसें गुरूसें भंडसालमें वासक्षेप लिया इसवास्ते भणसाली गोत्र थापन करा सबोंके सात पुत्र भया इनोंकी आभूसाख प्रसिद्ध भई इन भणसाल्योंनें जब अंवडनामका अणहिल पत्तनका ओर गच्छका श्रावक मुलतानसिंध देशके नग्रमें जवाराहत खरीदनें गया था उस वखत श्रीजिनदत्तसूरिः उहां पधारे तव राजा दिवान सेठ सामंत सब लोक सन्मुख आकेरवाजागा जावडीधूमसें नग्रमें लाये क्योंके इहां गुरुमहाराजनें दिवानके लडकेकों

सांपकाटे मरे भयेकों जिलाया था इससें राजा प्रजा सब गुरुमहाराजके सेवक थे उस वखत ये महिमा वो गुजराती अंबड देखकर गच्छके द्वेषसें ईर्ष्या अग्निसें दग्ध हो गया तब गुरूकूं कहणे लगा आपका चमत्कार ओर त्याग वैराग्य जबमें सफल जाणूंगा इसतरेके उछवसें जो आप अणहिल पाटणमें आओ तो तब गुरु उसके वचनसें इर्ष्या जाणकै जवाब दिया हम पट्टणमें इसतरेकै उच्छवसें आवेगें मगर तूं निर्धन होकर तेललूंण वेचता उस वखत हमारे सामनें आवेगा वादकेइ अरसेके गुरु उहां पधारे तवतक पाटणमें श्रीजिनदत्तसूरिःके तीनसे श्रावग पट्टणमें वसते थे माहाराज पधारे वडी धूमधाम उच्छवसें सामेला भया अकस्मात दलद्ररूपचींघडतेललूंण वेचणें गांमोंमें जाता था धन सब जाता रहा ऐसा अंबड सामनें मिला गुरुनें पहचानकर कहा हे अंबड मुलतान मिले थे पहचान ते हो लज्जित होकै गुरूके चरण पकडे मनमैं ये द्वेष लाया के इनोंके कहणेसें में निर्धन होगया मतना इनोंकी महिमा इहां बढै तब कपटसें जिनदत्तसूरिःका श्रावक वणगया गुरूका धर्म ध्यांन सुणाकरै उस वखत गुरुमाहाराजके तेलेका पारणां था इसनें भक्तीसें साधुओंकों वहरनें बुलाये तब मिश्रीका जल जहर मिला भया वहिराकर वोला ये जल गुरुमाहाराजके लायक निर्दोष है मेने पारणेके वास्ते मेरे वणाया था साधुओंनें गुरुमाहाराजाकों दिया गुरूने पारणेमें पीलिया और मालम भयाकै इसमें विष है उस वखत भणसाली श्रावक आभूसाखवाला पच्चखाण करणे आया तब गुरूनें कहा मुझें जहर होगया है इतना सुणतेही वो श्रावक अपणी उंठणी (सांड) वहोत शीघ्र गामनीपें सवार होकर भूखाप्यासा निकला सो विषापहारणी मुद्रिका लेकर पीछा आया आचार्य महाराजके उलटीपर उलटी ओर वेहोस वदन काला और वाइंटा चलणे लग रहा है हजारों मनुष्य एकठे भये १ पहरमें पीछा आकर उसकों प्रासुक जलमें डालकर साधुओनें दिया तत्काल सर्व उपद्रव शांत होगया ये वात फैलते २ राजापास पहुंची ततकाल अंवडकों बुलाकर राजानें कबूलकरवालिया राजा

प्राण लेणेकी सजामें चोरंगा करणेका हुकम दिया तब जिनदत्तसूरिःनें साधुओंकों राजसभामें भेजके ये हुकम बंध करवाया राजानें देसोटा दिराया जहां २ जावै उहां हिलारा कहके कोई इसकों बतलावै नहीं आखर गुरूपर द्वेषभाव रखता २ मरकें व्यंतर भया अब वेरान संबंधसें गुरूका छल देखणे लगा अकस्मात गुरूका ओघा आसणसें दूरहटा तत्काल वो व्यंतर लेके अब उत्पात करता गुरूकों उन्मत्त बणादिया गुरू अपणे होसमें होय तो अन्य देव भी याद करतेइ हाजर होय उस वखत वीर औरजो गणियां सब उत्तर दिसामें कोइ व्यंतरोंकै आपसमें युद्ध होता था उहां चले गये थे भवितव्यता जब आती है तब सुमूम चक्रवर्त्ति भगवानवीरकै अनेक देव सेवा करते भी केइ मरणांत कष्ट भोगणा पडा था और उस दुष्ट व्यंतरनें पूरा छल पाया तभी ये कार्य किया उस वखत सब खरतर संघनें बलिदान मंत्रादिक किया तब व्यंतर प्रत्यक्ष बोला जो उस वखतं जहरका प्रतिकार करणें-वाला भणसाली अपणा सब गोत्र मेरेकूं बलिकरे तो में ओघा देके जिनदत्तसूरिःको निजसत्तामेंकर देताहूं इतना सुणतेही भणसालीगोत्रउतारा कराया व्यंतर ओघा देकर जिनदत्तसूरिःकों छोडदिया भणसालीका सब-कुटंबकों मारणे निमित्त जो व्यंतर उद्यत होता था ततकाल श्रीजिनदत्त-सूरिःने उस व्यंतरकूं योग विद्यासें स्थंभन करदिया सब भणसालीकै बचोंपर ओघा फेरतेही सब हुसियार होगये एसा अचरज देख राजा प्रजानें धन्य २ भणसाली तमारी गुरुभक्ती जे तमे सारो कुटंब गुरूनें निमित्त अर्पण कीधूं तमे खर (करडा) छो तबसें सोलंखी भणसाली खरा भणसाली कहलाये इनोंका परिवार बडीमारवाडकछ गुजरातमें वसता है राय भणसालीसें चंडालिया नख प्रगट भया कछावा भया भूरेजीकी औलाद भणसाली भूरा कहलाये केई पूगलसें उठे सो भण-साली पूगलिया कहलाते हैं मूल गच्छ इन सबोंकै खरतर है

लूंकड गोत्र

खेतानांमका महेश्वरी बाबेती जिसके दो पुत्र लाला १ भीमा २ ये

दोनों नबाव लोदी रुसतम खांके खजानेका काम करते थे जिसमें इनोंनें क्रोडोंका माल अपणे महेश्वरी ब्राह्मणोंकों बांट दिया सं।१५।८८ विक्रमके किसीनें चुगली खाई नबाबनें अहम्मदाबादमें इनदोनोंकों कैद करदिया एकदिन पहराय तों की नजर बचाकर ये दोनों भगे सो गोढ वाड इलाकेमें आये पिछाडीसें इनोंकों पकडणे घोडे चढे तब तपागच्छके जतीनें इनोसें करार किया हम तुमें छिपाय लें मगर जैनी श्रावक होणा पडेगा इनोंनें कबूल किया सिपाही लोक ढूंढके चले गये इनोंनें प्राण बचणेसें जैनधर्म अंगीकार करा बाद जोधपुर फलोधी गांमोंमें आयबसें लुकणेसें लूंकड कहलाये मूल गच्छ तपा

आयरिया लूणावत गोत्र

सिंधु देशमें एक हजार गांमके भाटी राज पूत राजा अभय सिंह राज्य करता है सं । ११९८ श्रीजिनदत्तसूरिः विचरते २ वनमें उतरे हैं राजा अभयसिंह सिकारकों निकला उस वखत जिनदत्तसूरिःका एक साधू गोचरीके वास्ते सामने आया उसको देखतेही राजा बोला मुंड अमंगल है एसा समझके एक क्षत्रीनें गोली मारी सो गोली साधूके लगकर गुलाबका फूल होकर गिरपडी राजा घोडेसें उतर साधूके चरणोंमें गिरा साधूसें माफी मांगणे लगा तब वो साधू समतासें बोलें हे राजेंद्र हमारे गुरू आचार्य वनमें उतरे हैं ये सर्व महिमा उनोंकी है तूं उनोंका दर्शनकर तब राजा वनमें गया गुरूकूं नमस्कार किया तब गुरूनें धर्म लाभ कहा और राजाकूं धर्मोपदेश देते कहणे लगे हे राजा जीवोंकों मारणा है इसका फल दुर्गती है जिसमें भी क्षत्रीयोंकों चाहिये सो निरापराधी जीवोकों कभी हणे नहीं षट् दर्शनकूं वेकारण संताना ये राज पूतोंका धर्म नहीं जेसा इस वखत आप करके आये हो, जैनसंघकी रक्षा करणेवाली साशण देवीनें उस मुनिःकी रक्षाकरी और गोलीका फूल कर दिखलाया ये वचन सुणते हीं राजा अचंभेमें रहा इन महापुरुषकों में वार आया था इसवातकी खबर इहां वेठेही होगई ये कोइ महापुरुष है, गुरु बोले हे राजा साशण देवी मुझकों

कह गई, इतनेंमें सींधुनदीका तोफान उठा सो पाणीका पूर एसा आता दीख रहा है के मानों पृथ्वीकों जल जलाकार कर सर्व वहायले जायगा राजा बोला हे गुरू आप और मेरी सर्व प्रजा हजार ग्रामके लाखोंकी वस्तीकी भवितव्यता आगई, गुरूनें कहा, हे राजा, तुमारे सब भाटी राजपूत जो की हजार गावोंमें वसते हैं वो मेरे श्रावक हो जावे तो सबोंकी रक्षा हो जाती है, राजानें कहा हे परम गुरु सब महाजन होकर आपके दास रहेंगें, मगर जलदी २ राजा तो घभराकर उस दरियावके वेगकूं नहीं देखणेकी समर्थासें गिरके बोलता है, हेगुरु मुनिः पर मेरे राजपूतनें बेकारण गोली मारी माफ २ रक्ष २ करता है तब गुरु बोले आयरया, हे राजा आयरहा, ऊठके देख राजा उठके देखता हे तो दरियाव पीछा जारहा है राजा उसी वखत वडी धूमसेंवा जागाजा सब सहरकी प्रजासंग गुरूकों सहरमें पधराया, और दश हजार भाटी राजपूतोंके संग जैनी महाजन भया, गुरूनें आयरिया गोत्र थापन किया इस राजाके सतरमी पीढी लूणा साह भया इसकी संतान लूणावत कहलाये लूणा जेसलमेर परगणेमें आया मरुधरमें काल पडा देख जगे २ सत्रुकार देणा सरू करवाया वाद सत्रुंजयका संघ निकाला कोलू गाममें काबेली खोडियार हरखूकों लूणावत पूजणे लगे ये लोक बहुत वरसोंतक वहलवे गांममें वसते रहे पीछे जेसलमेरसें इसतरे आयरिया लूणावतोंका वंश विस्तार पाया मारवाडमें फैल गये मूल गछ खतरतर है

बहुफणा थापणा

धारा नगरीका राजा पृथ्वीधर पमार राजपूत इसकी सोलमी पीढीमें जोवन और सचू इस नामके दो नर रत्न पैदा भये किसी कारण वस धारा नगर छोड जालोर गढकों फतेकर अपणा राज्यकर सुखसें रहणे लगे तब आगेके जो जालोर गढके राजाथे उनोंनें कनोजके राठोडोंकी मदत लेकर जालोर गढपर चढाइकी बडा घोर युद्ध भया दैवकर्मा हार नहीं तब इन दो भायोंनें अपणे दिलजमीके अदमी गुलरोंमें भेजे

तब गुजरातमें श्रीजिनवल्लभ सूरिःकों चमत्कारी पुरुष जांणके सब हकीगत कह सुणाई तब गुरूनें कहा जावो तुम तुमारे राजासें पूछो जो अगर जैनधर्म अंगीकार करके महाजन बणो तो हम शत्रुजय करा देते हैं तब वो सुभट शीघ्रगतिसें जाकर राजाकों खबर दी, राजा दोनों भायोंनें नम्रतापुर्वक पत्र लिखा जिसमें अपणे कुटुंबका जैनी होणा कबूल करणा लिखा वो पुरुष पत्र लेकर पहुंचा तब श्रीजिन वल्लभसूरिःनें बहुफणा पार्श्वनाथ शत्रुजयकर मंत्र दिया और सब विधि बताई वो पुरुष जोवन सच्चू राजाकों विधिपूर्वक मंत्र दिया वो एकाग्र मनमें साढी बारे हजार जप करकै कही विधीसें घोडे सवार होकर सबफोजमें जा खडे रहे इनोंकों आया देख शत्रुलोक मार २ करते दोडे इनोंने सबोंके शस्त्र छीन लिये सबोंकों जीत लिये तब सब हाथ जोड माफी मांगी ये तारीफ सुण जयचंद राठोडनें इन दोनोंकों सत्कार सन्मानसें बुलाया सब हकीगत पूछी इनोंनें गुरुमहाराजकी सिद्धि बतलाई तब राजानें अपणे सामंत बणाकर मुलकपटा इनायत-कर अपणे देश जाणेका हुकम दिया पीछे आते गुरूकी तलास करते खबर पाईकै जिनवल्लभसूरिः स्वर्गवास होगये और श्रीजिनदत्तसूरिःभी बडे जागती जोत उनोंकै पट्टप्रभा कर है तब दोनोंभाई जिनदत्तसूरिः-जीकै चरणोंमें गिरे ओर बोलै, आज हमारो बापना, हमारी रक्षा अब कोण करेगो, गुरूनें कहा तुम जिनधर्म अंगीकार करो तो, गुरू स्वर्ग-वासी सदा तुमारी सहाय करेंगें, इनोंनें श्रीजिनदत्तसूरिःजीसें जिनधर्म-का तत्व समझकै श्रीजिनधर्मका सम्यक्तयुक्त बारे व्रत लिया, गुरूनें बहुफणा पार्श्वनाथकै मंत्रसें सिद्धिपाई इसवास्ते बहुफणा गोत्र उनोंने कहा बापना इसवास्ते दुसरा इस गोत्रका नाम बापनाभी प्रसिद्ध भया रत्नप्रभसूरि.नें जो अठारे गोत्रोंमें बाफणा गोत्र बणायाथा वो जुदा है लेकिन् वो भी पमारवंशी थे इसवास्ते वोभी चैत्यवासी अपणे गछकूं जाणकर श्रीजिनदत्तसूरिजीकै श्रावक होगये जोवन सच्चूकै ३७ पुत्रभये उनमेंसें

सांवतजी नांमके जो वनराजाके पुत्र राजा अजयपालके पोते पृथ्वीराजके सेनापती भये इनोंके मुसलमीनोंकी फोजसें ६ वखत संग्राम भया ६ वखतहीकावलके बादसाहकों पकडके चूडियां घागरा ओढणा पहराके बजारमें घुमाया एसे महा योद्धाकों देख प्रथ्वी राजजीनें युद्धमें नाहटा इस नांमसेंही पुकारणे लगे लोक सब नाहटा २ कहणे लगे इसतरेफतेपुरके नबावने राय जादा पदवी एक पुत्रकों बगसीस करी वो राय जादा गोत्र भये इसतरे ३७ गोत्र बहुफणोसें निकले १ धापना २ नाहटा ३ राय जादा ४ सुल ५ घोरवाड ६ हुंडिया ७ जांगडा ८ सोमलिया ९ वाहंतिया १० बसाह ११ मीठडिया १२ चाघमार १३ भाभू १४ धत्तूरिया १५ मगदिया १६ पटवा १७ नानगाणी १८ श्रेटा १९ खोखा २० सोनी २१ मरोटिया २२ समूलिया २३ धांधल २४ दसोरा २५ भूआता २६ कलरोही २७ साहला २८ तोसालिया २९ मूंगरवाल ३० मकलवाल ३१ संमुआता ३२ कोटेचा ३३ नाहउसरा ३४ माहाजनिया ३५ डूंगरेचा ३६ कूचेरिया ३७ कूचेरिया ये अनेक कारणोंसें शाखा फटी है मूल सबोंका गच्छ खरतुर है गुरूका वरदान था तुम धन परवारसें बधोगे

रतनपुराकटारिया जलवाणी

विक्रम संवत् १०२१ सोनगरा चउहाण राजपूत रतनसिंहनें रतनपुर नगर वसाया जिसके पांचमी गद्दी सं ११८१ में आखा तीजकों धनपाल राजा तखत वैठा एकदिन सिकार करणे राजा जंगलमें गया घोडा उलटा सिखाया भया था थांमणेंकों ज्यों ज्यों राजाने ठगाम

---

१ नाहटोंमें लखनेउमें राजाका कुरब राजा बछराजाकों था पटवा बादरमल १ जोरावर मल २ मगनीराम ३ बगेरे बडे दानेश्वरी श्रीमंत ५ भाई भये शत्रुंजयका संघ निकाला १८ लाखरुपया खरचपाकी साल सेठोमें कोडो रुपे इनोंने लगाये इनोंकि धवान उदय पुर जेसलमेर कोटारतलाम बगेरे सहरोंमें बगते हैं इसंघुरिः का सूरतमें महेंद्र सुरि:का मंदोरसमें जिनोंने पाट महोच्छव किया इनोंकी उदारता लिखने काबल हु ताकत नहीं इस जमानेमें एसे दाता दुर्लभ होगये एसा अनुमान.

खेंची त्यों त्यों घोडा चोफाले होता रहा तव राजा वाग ढीली करी घोडा ठहर गया सिकार हाथ नहीं लगणेसें पीछा फिरा रस्तेमें एक तलाव नजर आया तव दरखतकी छांहमें घोडेकों बांधके आपसो रहा इतनेमें एक साप निकलके काट खाया राजा थोडी देरसें बेहोस होगया आयुके प्रवल योगसें श्रीजिनदत्तसूरिः आचार्य उस रस्तेसें विहार करते चले आये राजलक्षण अंगमें देख ओघेसें पास किया राजानिर्विप होकर तत्काल बैठा भया आगे गुरूकों देख चरणोंमें गिरा गुरूनें धर्मलाभ दिया राजानें वडी धूमसें गुरूकों नगरमें पधराये राजा अपणे प्राण देणेके वदलेमें गुरूकों राज्य भेट करणे लगा तव गुरूनें कहा हे राजेंद्र हम यावजीव धणकंचनका त्याग किया है हम राज्यका क्या करै राजानें कहा आपका वदलाकेसें उतरे गुरूनें कहा तुम जैनधर्म गृहणकरके हमारे श्रावकवणे हमारा वदला उतर जायगा तव गुरूकूं चोमासे रखा और धर्मका स्वरूप समझकर वडी धूमसें सम्यक्तयुक्त वारे व्रत गृहण किया रत्नसिंहका रत्नपुरा गोत्र गुरूनें थापन करा इनोंके वंशमें झांझणसिंह वडा प्रतापीनर पैदा भया जिसकों दिल्लीके वादसाहनें अपणा मंत्री वनाया झांझणसिंहनें प्रजाकूं वहोत सुख दिया इसवास्ते सब हिंदमें उसके नेक नामीकासि तारा चमकणे लगा एकसमें वादसाहके हुकमसें सत्रुंजयका संघ निकाला उहां पटणीसाह अबीरचंदनें आरती उतारणेकी वोली करी झांझण थाणवे लाख रुपे मालवदेशके इजारेकी आवदानी दे कर प्रभूकी आरती उतारी इनके दूसरे भाई पेथड साहनें सत्रुंजय गिरनारपर धजा चढाई रस्तेमें धर्मपुन्य करते पीछा आके सुलतानसें सलाम करी एकदिन किसी चुगलनें वादसाहसें चुगली खाई करोडों रुपे सरकारी खजानेके पुन्यार्थमें लगाणासावतकरदिया वादसाहनें गुस्सेमें आकर झांझणकूं पकडनें योद्धोंकों भेजे तव झांझण कटारी लेके खडा भया योधे भगे वादसाहसें अरज करी तव वादसा खुद आकर वोला अरे कटारिया सच कह सरकारी क्रोडों रुपे तेने खाये झांझण वोला एक

पैसा भी वे हकका मुझें खाणा हराम है हां अलवत हजूरके मालसें खुदाकी बंदगी और खैरायत जरूर करे गई अन्न जिसका पुन्य है धर्म दलाली मुझकों मिलेगी हजूरका नांम लुग जाहिर था उसकों गुलामनें खुदातक पहुंचा दिया ये वात सुण वादसाह खुस होकर सातों गुने माफकर दरवारमें कटारी रखणेका हुकम दिया और फुरमाया हे नेक नांम जो कुछ नांम और जोकुछतेरेसें सखावत करी जाय सो कर इसतरे कटारिया साख भई वाद केइ पीढी इनोंकी ओ लाद मांडव गढमें जावसी किसी कसूरवस मुसलमांनोंनें कटारियोंके सब गोत्रवालोंकों मांडव गढमें कैद किया २२ हजार रुपे दंड किया तब खरतर भट्टारक गच्छके जती जग रूपजीनें मुसलमीनोंकों चमत्कार दिखलाकर दंड नही लगणे दिया एक रतनपुरा वलाई (ढेढ) लोकोंको रुपे देता लेता वोव लाई कहलाये इसतरे रतनपुरोंमें २४ जात चहुआणोंकी माहाजन भये हाडा १ देवडा २ सोनगरा ३ मालडीचा ४ कुदणेचा ५ वेडा ६ धालोत ७ चीवा ८ काच ९ खीची १० विहल ११ सेंभटा १२ मेलवाल १४ वालीचा १४ माल्हण १५ पावेचा १६ कांवलेचा १७ रापडिया १८ दुदणेच १९ नाहरा २० ईवरा २१ राकसिया २२ वाघेटा २३ साचोरा २४ इन २४ जातमेंसें १० साख माहाजन प्रसिद्ध भये रतनपुरा १ कटारिया २ कोटेचा ३ नराण गोता ४ सापद्राह ५ भलाणिया ६ सांभरिया ७ रामसेन्या ८ वलाई ९ चोहरा १० इनसवोंका मूल गच्छ खरतर है

डागा माल्हू मामूपारख छोरिया

रतनपुरके राजाके दिवान माल्ह देजी राठी तथा मामूजी खजानची जातके राठी तथा राठी वलासाह ये राजाकी फोजके मोदीथे जिस वखत राजा रतनसिंहकों जिनदत्तसूरिःजीनें साप काटे भयेकों वचाया तब चमत्कारी महापुरुष जांण माल्ह देजीके वडे पुत्रकू अर्द्धांगकी वैमारी वहोत सकत होगई थी सो किसी वैद्यसें इलाज नहीं भया तब श्रीजिनदत्तसूरजीसें कही माहाराज बोले रतनपुरके जात राठी

महेश्वरी जैनधर्म अंगीकार करे तो में तेरे पुत्रका उद्योग करूं सब राठी रतनपुरके वासिंदोंनें ये बात कबूलकी कारण एक तो माल्हदेजी दिवान सबके भरण पोषण करणेवाले दूसरा एसे २ चमत्कारोंकी महिमा दुसरा ऐसा संसारमें कोण होगा जिसमें आपदा नहीं आती है तब अपणे कुटंबके रक्षा कारण जाणके सबराठी मिलके पालखीमें डालके पुत्रकों लाये सबोंनें कहा आपकी शंतानके हमारी शंतान सदाके वास्ते आभारी रहेंगें किसीतरे ये कुलदीपक रूपदे अच्छा होजाय गुरूनें योगणियोंकों बुलाया और कहा इसकूं तुम सावधान करो जोगणियोंनें कहा हमारी आज्ञा कारणीयां वींझे विणजारेकी सात लडकियां अग्निमें जलकर मरी इसका कारण रूप दे है वींझे विणजारेकों मासूलकी चोरीमें रूप देने पकडके केद किया और सब माल असबाब जबत् करलिया तब सातों इसकी कवांरी कन्यायीं क्रोधसें अग्निमें जलगई सो शुभ परणामके वस चंडाल जातीकी सातोई व्यंतरण्यां भई हे हम उनोंकों अभी लाती है एसा कह उनोंकों लाई तब उनोंनें कहा हे परम •गुरु हमारा पिता कैद है उसकों छोड दे और माल पीछा देदेतो आपकी कृपासें ये अछा हो जायगा गुरूनें वींझेंकी बेडी तोडाई माल सब दिराया तत् काल उसका अंग अछा होगया तब जोगणियां और वींझ बाइयोंनें कहा अरे राठीलोंकों जबतक तुम जिनदत्तसूरजीके आज्ञाकारी बणे रहोगे और खरतर गच्छका उपगार नहीं भूलोगे उहांतक अर्द्धांगकी वेमारी तुमारे कुलमें नहीं होगी एसा कह गुरूकी आज्ञाले अलोप भई ये चमत्कार देख सब रतनपुरके महेश्वरियोंनें जितनत्तसूरजीका वासक्षेपले जिनधर्मी भये डागा मुंधडा महेश्वरीयोंसें. गोत्र थापन किया, भाभूजीका पारख अर्वांध कांन नहीं विधावे ये राठी महेश्वरियोंसें गोत्र थापा, भोरा गोत्र राठियोंसें, छोरिया गोत्र राठियोंसें सेलोत राठी महेश्वरियोंसें रीहड राठी महेश्वरी इसतरे ५२ गोत्र रत्न पुरमें महेश्वरियोंसें जिनदत्तसूरजीनें थापन किया

रांकां सेठी सेठिया काला बोक वांका गोरा दक०

वलभी (वला) सोरठ देशमें गोडराजपूत काकू और पाताक नांमके दो भाई वहोत द्रव्यसें तंग रहते थे नगर केदर बजे बाहर तेललूंण वेचणेका व्यापार करणे लगे पेट गुजरान भी मुसकलसें भया करै एक दिननेमचंद्रसूरिः आचार्य वल भी नगरमें पधारे उस वखत ये दोनों भाई हमेस व्याख्यान सुणणेकूं जाणे लगे एकदिन गुरूसें पूछणे लगे हे स्वामी हमभीकभी सुखी होंगें गुरूनें कहा जो तुम जिनधर्म सम्यक्त [1]ग्रहण करो तो सब वताताहूं उनोंनें ग्रहण करा गुरूनें कहा तुमारा भाग्य वलभीमें राज्यसें खुलेगा वहोत धनवान हो जाओगें वृद्ध अवस्थामें राजा तुमकों धन छीनके निकाल देगा आखर यवनोंकी फोज लाकर तुम वलभी नगरीका विद्धंसकरावोगे और तुमारी ओलाद् पारकर देशमें पांचमी पीढी विस्तार पावेगी ये दोनों भाई नेमचंद्रसूरिःसें सम्यक्ती भये सगपणं राजपूतोंमें था आखर ये राजाके मानवंत भये वलभीका नास भी इनोंसें ही भया तद पीछे ये वलभी छोड पारकर देश पालीनग्रपास गांममें आय वसें फेर इनोंकी ओलाद् खेती कर्म करणे लगे आखरको पांचमी पीढी इनोंके रांका और वांका नामके दो लडके पैदा भये सो खेती करते थे इधर श्रीने-मचंद्रसूरिःके सातमें पाट धारी श्रीजिनवल्लभसूरिः विहार करते उस रस्ते चले आये इन दोनोंनें वंदनाकर आहार पाणी वहिराया गुरु बोले तुमकों एक महीनेके अंदर सांपका डर होगा इसवास्ते तुम महा पापकारी ये कृपाण कर्मका त्यागकरो एसा कह गुरु विहार कर गये ये दोनों इसवातकी परीक्षा करणेकों करी भई खेतकी रक्षा करते रहे एक दिन सांझकों खेतसें पीछा आते थे रस्तेमें साप पडा था पूंछ पर पांवट्टिका सांपनें फुंकार किया तब ये भगे साप पीछा किया तब ये दोनों एक तलावमें कूदपडे तिरके पार निकले दिलमें डरते एक चामुंडा देवीके मंदिरमें घुसके दरवज्जा बंधकर सोगये प्रभातसमें

[1] ये स्वरूप श्राद्ध विधीमें सब लिखी है काकूपाताककी.

सांपकों देखणें मंदिरकी छतपर चढै तो देखते हैं साप मंदिरकै आस पास घूम रहा है तब इनोंनें मरणांत कष्ट जांण गुरूका वचन याद किया तब चामुंडा देवीकी स्तुति करणे लगे तब देवी मूर्तिके मुख बोली अरे मूर्खों जो तुम उस दिन खेती करणेका त्याग कर देते तो तुमकों ये डर नही होता गुरूके वचन नहीं माना जिसकी ये तुमें सजा. मिली है ये श्री जिनवल्लभसूरिः युग प्रधाननें मुझकों सम्यक्त ग्रहण कराया ओर मदिरा मांसकी बलि छुडाई तुम उनोंकै श्रावक हो जाओ तुम सब तरे सुखी हो जाओगे आज पीछै व्यापार करणा गुरू माहाराजका श्रावक भये बाद तुमकों स्वर्ण सिद्धि मिलेगी जाओ अब साप नहीं है ये दोनों उहांसें निकल घरपर आये इनोंनें खेतीका अनाज बेच दुकान करी व्यापार चलणे लगा इधर श्री जिनवल्लभसूरिः परलोक पहुंचे उनोंकै पाट श्री जिनदत्तसूरिः विराजै सं ११८५ इधर विहार करते पधारे ये दोनों भाई गुरु माहाराजकै शिक्ष जांण सेवा करते.व्याख्यान सुणकर सम्यक्त युक्त बारे व्रत गृहण किया गुरुनें आसीर्वाद दिया तुमारा कुल वढेगा इनोंनें कहा हम खरतर गच्छसें कभी वे मुख नहीं होंगें गुरूनें विहार किया इनोंकी पैठ प्रतीति-पारा नग्रमें खूब वधी इधर १ जोगी रस कूंपी भरकै पाली आया इनोंनें भक्ती करी तब वो वोला बच्चा हम हिंगलाज जाते हैं इस तूंबीकों तुमारे झुंपडेमें टांग जाते हैं आऊंगातब ले लूंगा टांग गया एक दिन तवा तपा भया उसपर वो रसकी एक बूंद पडी तवा सोनेका हो गया वस इनोंनें उसकूं उतार असंक्ष द्रव्य वणा लिया वडे दानेश्वरी सात क्षेत्रोंमें बहोत द्रव्य लगाया पल्लीवाल ब्राम्हणोंकों गुमास्ते रखकर जगे २ व्यापार कराया इस करकै पल्लीवाल ब्राह्मण सब धनपती हो गये एक दिन सिद्धपुर पट्टणके राजाकों लडाईमें ५६ लाख सोनइये चहिये था किसी साहूकारनें नहीं दिया तब सिद्धराजनें इनकों बुलाया इसनें एक मुस्त सब दिया तब सिद्धराजनें श्रेष्ठ पदका स्वर्णपट्ट मस्तक पर वगसा जिसमें लिखा कुबेर नग्रसेठ रांका ओर बांकेकूं कहा आवो

छोटा सेठिया;उस दिनसें रांकोंसें सेठि वांकेसें सेठिया इनोंकी बोला-दकाला, गोरा, दक, चोंक, रांका, वांका, एवं ८ शाखा प्रगट भई रत्नप्रभसूरिनेंजो श्रेष्टि गोत्र थापन कियासो वैद वजते हैं इन सबोंका मूल गच्छ खरतर।

राखेचा पूगलिया गोत्र.

जेसलमेरका राजा भाटी जेतसी उसका पुत्र केलणदे उसके गलत कुष्टकी वेमारी पैदा भई उसकी ऊमर नो वर्षकी थी राजानें वहोत देवी देवमनाये मगर आराम नहीं भया तब राजा अपणे कुलदेवीके वास्ते वलिबांकलदे स्तुति करी तब किसीके अंगमें बोली हे राजा तूं पुत्र अछा कराये चाहता है तो सिंधु देशमें परोपगारी युग प्रधान श्री जिनदत्तसूरिःके चरण शरण जा राजा सिंधु देशमें जाके गुरूकों सब अरज करी ओर बोला आप कृपा कर लोद्रव पट्टण पधारो सब नम्र आपके दर्शनकी राखेचाह गुरूनें कहा जो तुम जैनधर्म धारकर खरतर गच्छके श्रावक वणो तो में चलता हूं जेतसीरावल बोला अहो.भाग्य आपकी सेवा और अहिंसारूप जिन धर्मकी प्राप्ति पुत्र मेरा निरोग्य होय.इस्सेंमें जांणता हूं मेरे पूर्वपुन्य उदय आये तब गुरू लोद्रवपुर पधारे तीन दिन दृष्टिपास किया सोवन वर्ण काया होगई अब राव जैतसी सहकुटंब जैनधर्म धारण किया मकड पुत्रकों राज्य तिलक दिया गुरूका •लाग वैराग्यका हमेसका उपदेश सुण केल्हण कुमार दीक्षा लेणे तईयार भया तब गुरूनें समझाया हे वछ तूं बालक नादान है संजम खांडेकी धार है पिता तेरा वृद्ध है तूं अरिहंत देवकी पूजा द्रव्य भावसें कर महाव्रती अणुव्रती तथा सम्यक्तीयोंकी मन सुद्ध भावसें द्रव्यादिक अनेक प्रकारसें भक्ती कर बारे व्रतपाल, श्रावगधर्म पालणे वालाभी एक भवसें मुक्ती जाता है सात क्षेत्रोंमें द्रव्य लगा तब केल्हण कुमार बोला मेरे दीक्षाकी करी भई प्रतिज्ञा भंग होती है तब गुरु बोले तेरी प्रतिज्ञा पूरण करणेकों सदा मदके लिये तजवीज बताता हूं तूं मेरे सन्मुख मस्तक मुंडन करा और में वास देता हूं गुरुनें स-

म्यक्तयुक्त चारे व्रत उच्चराया और फुरमाया तेरे कुलका बालक नव वर्षका जब होय तब इसीतरे पट मुंडण करा मेरे शंतानोंका वास चूर्ण लेगा तो तुमारे कुलकी वृद्धी होगी लक्ष्मी राज्य लीला करते रहोगे दर्शनकी राखे चाह दीक्षाकी राखे चाह इसवास्ते गुरूनें राखेचाह गोत्रका नाम थापन करा सं ११८७ मूल गच्छ खरतर वृद्धथाल आरथाल खरतर भट्टारक गच्छका राखेचा सदा करते हैं धोत तथा व्याहमें, पूगलसें उठके दुसरी जगे वसे सो पूगलिया राखेचाह वजतेहैं

लूणिया गोत्र

सिंधुदेश मुलतान नगरमें मुंधडा महेश्वरी धींगडमल्ल (हाथीसाह) राजाका दिवान था राजका वंदोवस्त न्यायसें करता था इससें प्रजा हाथीसाहकों प्राणकी तरे मांनने लगी इसका पूत्र लूणा वडा चतुर राजाका मान्य योवन अवस्थामें सादी करी एक दिन लूणा स्त्रीके संग पिलंगपर सोता था इस वखत सांपनें लूणेकों काट खाया ओर नींदसें चमक उठा ये वातकी खबर होते ही मंत्रवादी बहोत जहर उतारणे-वाले वैद्योंका इलाज करवाया मगर लूणा मृतकवत् हो गया उस वखत श्री जिनदत्तसूरिः मुलतानमें थे महिमा सुण हाथीसाह रोता भया चरणोंमें जागिरा सब हकीगत लोकोंनें कही गुरु बोले तुम जैन धर्मी हमारे श्रावक होजाओतो पुत्र सचेतन होता है हाथीसाहनें सहकुटंब कवूल करा गुरू चोतरफ पडदे लगवाकर पिलंगपर ज्यों स्त्री भर्त्तार सोते थे त्यों सुलाकर गुरु अलक्ष आकर्षण करा वो सांप आया और मनुष्य भाषा वोलणे लगा हे गुरू मेरे इसके पूर्व जन्मका वैर है इसनें जन्मेजय राजाके यज्ञमें ब्राम्हणपणेमें वेदका मंत्र पढके मेरेकों होम डाला यज्ञस्तंभके नीचे शांतिनाथ तीर्थंकरकी मूर्त्ति इन ब्राम्हणोंनें शांतिकनिमित्त जब गाडीयानें कोई दयाधर्मी देवता यज्ञमें विगाडनकरदेवे उस मूर्त्तिकों मेनें गाडते देखी उस प्रतिमाके देख-णेसे मेनें विचारा ये मुद्रा मेंनें पहले देखीथी इस करके मुझकों मूर्छा आई तब जातीस्मरण ज्ञान मुझकों पैदा भया मेनें पूर्वजन्म देखा

पूर्वभवमें में जैन धर्मका साधू या तपस्याके पारणे भिक्षाकों गया बालकोंनें मुझें चिडाया क्रोध करके मरा सो सांप भया मेनें, मनसें सम्यक्तयुक्त श्रावक व्रत ग्रहण कर लिया उस वखत ब्राम्हणोंके कहणेसें राजा परिक्षतकी ओलाद राजा जन्मेजयनें सांपोंकों पकडाकर मंगाया और ब्राम्हणोंनें वेदका मंत्र पढकर हवन करा उस मरते वखत मुझें क्रोध भया उहांसें मरके में नाग कुमार देवता भया ये शिवमूति ब्राम्हण गलत कोढसें मरके ८४ हजारके आऊखेसें नारकीया भया-उहांसें निकल वानर भया उहां वनमें जैन साधू देशना देतेथे उनोंनें कहा यज्ञमें पशु हवन करणा इसका फल हिंसा हिंसाका फल नरक एसा वानर सुणकर जाती स्मरण ज्ञान पाया उहां सरल भावसें मरकर हाथीसाका पुत्र भया मेनें इसकूं ज्ञानसें देखा तब पूर्व वैरसें मारणेकूं सांपके रूपसें डंक मारा तब गुरु बोले हे देव किये कर्म छूटते नहीं तेरा बदला तेनें ले लिया अब ये हमारा श्रावक है इसका जहर खेंचले तत्काल नागदेव डंकका जहर उतार डाला और सब लोकोंसें देवता कहणे लगा अहो लोको श्री जिनदत्तसूरिः तीर्थंकरकी आज्ञा मुजब सामाचारीके उपदेशक, पंच महाव्रत पालक एका भवावतारी तरण तारण· गणधर है लुणा सावधान हो सम्यक्त युक्त व्रत पचखाण किया गुरूनें लूणिया गोत्र थापन किया संवत ११९२ मूल गच्छ खरतर ।

डोसी सोनीगरा गोत्र ।

संवत् ११९७ में में विक्रमपुर जोकी भाटीपेमें है उहांकाठाकुर सोनीगरा राजपूत हीरसेन इनोंनें क्षेत्रपालकी मानता करी मेरे पुत्र होगा तो तुमारे निमित्त सवा लक्ष ,मोहरें लगाउंगा देवबसराणीके पुत्र भया खेतल नांम दिया अनुक्रमसें सात आठ वर्षका भया ठाकुर जात देंणेकी चितामें मगर सवा लक्ष मोहरोंका जोड नहीं बणा तब क्षेत्रपाल उपद्रव करणे लगा कहांई अंगार लगावे राजा राणीका सिर आपसमें मचीड दिला देवै कभी गहणा छिपा देवै कभी राणीकों

लुका देवै कमी राजाकै संघ २ में दरद कर देवै खेतल कुमार उन्मत्त हो गया आठ २ दिन भोजन नहीं करै विगर पढा शास्त्र पंडितोंसें संवाद करे हजार अदमियोंसें नहीं उठणेका पदार्थ उठा लेवै इस वखत श्रीजिनदत्तसूरिः विक्रमपुरमें पधारे ठाकुरनें महिमा सुण वडी धूमसें गुरूकों नगरमें पधराये खेतल कुमार गुरूकों देखते ही बोल उठा हे परम गुरु इस ठाकुरनें मेरी बोलवा करके पूजा नहीं करी इससें ये दोसी है गुरूनें कहा हे ठाकुर जो तुम सह कुटंब जैनधर्म धारण करो तो में संकट काट देता हूं क्षेतल कुमार जमीनसें कूद २ कर ८० हाथ उंचे छतपरजा वैठता है फेर कूदकर डमरू त्रिसूल लेकर घुघरु पांवमें गुरूकै सामनें नाचता है ये चमत्कार देख बहोत लोक जमा भये ठाकुरनें श्रावक होणा कवूल करा ततकाल क्षेतल कुमार सावधान हो गया क्षेत्रपाल निजरूपसें गुरुके चरण पकड बोला हे गुरु हे सर्व देवतोंकै स्वामी आपकी आज्ञा लोपे सो इसभवपरभवदुखी होय आपकै जव श्रावक ये लोक भये तो मेरी क्या वलकै चारों निकायकै देवतोंकी मंगदूर नहीं सो इनोंकी वुराई कर सकै ठाकुर सह कुटंब जैनी महाजन भया गुरूनें गोत्रका नांम दोसी रखा लोक डोसी कहणे लगे वाकी राजपूत श्रावक भये उनोंकी शाखा सोनीगरा बजणे लगी इनोंके प्रधान सोवनसिंहजीकै पुत्र पीथलजी श्रावक भये उनोंका पीथलिया गोत्र प्रसिद्ध भया पीथलजी पमारथे मूल गच्छ खरतर ।

सांखला सूराणा गोत्र सियाल सांड सालेचा पूनम्यां ।

विक्रम संवत् ११७५ में सिद्धराज जयसिंह सिद्धपुर पाटणका राजा उसके पिलंगका पहरेदार जिसकों एक क्रोड सोनइया राजा वर्षका देता था जगदेवजीकै सात पुत्र थे सूरजी संखजी सांवलजी सामदेव-रामदेव छारड इसतरे सुखसें पाटणमें रहते हैं जगदेवजी वडे सूरवीर थे आधी रात्री कालीचोदसकों पहरादेरहेथे इस वखत वनमें वडी धूम किल किलाट अट्टहस्सी सुणकै सिद्धराजनें जगदेवजीकों कहाये शब्द कहां हो रहा है निश्चै कर आवो जगदेवजी जो हुकम कहकै

उहांसें निकला आगे देखता हे तो कालिका वगेरे ६४ जोगणियां वडे २ वेत्ताल एकठे होकर नाचते ओर गाते हैं जगदेवनें पूछा अरे तुम कोण हो ओर क्यों फैलवाज़ी करते हो जोगणियां बोली सिद्धराजनें हमारी बलिदांन बकरे भेसें देणेकी बंध कर दी सो अब एक महीनेमें मरेगा जगदेवनें पूछा केसें मरेगा जोगणियां बोली इस देशमें महम्मद गजनवीकी फोज आयगी उसमें लाखों अदमी मरेंगें हमारे खप्पर रक्तसें भरेगा उस युद्धमें हम जोगणियां तथा क्षेत्रपालवीर मिलके दुसमनोंके हाथ सिद्धराजकूं मराकर बलिदांन लेगें तब जगदेव बोला किसीतरे सिद्धराज बचै जोगणियां बोली ३२ लक्षणा पुरुषका जो अगर बलि दांन दे तो शत्रुओंकी फोजमें हम मदतगार नहीं होंयगें तब जगदेव बोला मेरा सिर काटके तुमारे सन्मुख धरता हूं तुम प्रसन्न होकर सिद्धराजकी लंबी ऊमर होय,एसाकरी तुम उसपर सुनिजर रखो जोगणियां उसका सत्व साहस देखणेकों बोली तूं बत्तीस लक्षणवंत सूर है तेरे मस्तकके बलिदांनसें हम सब प्रसन्न हो जायगें तत्काल म्यानसें तलवार निकाल सिर काटणे तइयार भया तत्काल जोगणियोंनें हाथ पकड लिया ओर जय २ शब्द करणे लगी ओर बोली हे सत्व सिरोमणी तू जयवंत रह अभी सिद्धराज जीवेगा मगर दुष्टोंकी फोज इहां आयगी उसकों जय करणेकों शत्रु दल भंजन अमोघ विद्या देकर विदा किया जगदेव पीछा आकर और वृत्तांत सब कहा मगर आप सिर काटणेका साहस किया सो नहीं कहा राजा प्रसन्न भया मेरे जगदेवके बराबर कोई योद्धा नहीं है राजानें लडाईका सामान सब तइयार कराया इस वखत मलधार गछके श्रीहेमसूरिः (आत्मारामजी सवेगी पालणपुर प्रश्नोत्तरमे लिखा है मलधार बिरुद अभय देवसूरिःकों मिलाया) जगदेवजी तथा इनोंके सातोंई पुत्र मलधार हेमसूरिके पास ज्ञानी ध्यानी समझके जाते आते थे राजा सिद्धराजके फोजमें जगदेवजीके बेटे सूरजी अपसर थे महीनेके होतेईकामलके यवनोंकी फोज आई वडा संग्राम होणेका वखत आया सूरजी हेमसूरीसें अरज करी हे गुरु

शत्रुओंके दलसें मेरी जय होय एसी कृपा करो गुरूनें कहा सावद्य करणीमें हम मदत नहीं देते· लेकिन् जो तुम जैन धर्म धारो तो में एक प्रयत्न कर देता हूं तव सूरजी सांवलजी ओर संखजी वगेरे इस वातकों कवूल करी हेमसूरिनें विजयपताका जंत्र दिया ओर कहा भुजापर बांध तुम अग्रेश्वरी होते ही सव फोज यवनोंकी भग जायगी वस वैसाही भया तव सिद्धराजनें फुरमाया सावास सूराणा तवसें सूराणा लोक कहणे लगे संखजीके सांखले, सांवलजी युद्धमें भग गये सो सियाल वजणे लगे, तंव सांवलजीके पुत्र वडे मजवूत वदनमें ह्रष्ट पुष्ट थे सिद्धराज जयसिंह उसकों संड मुसंड कहते थे, एक दिन एक चारणनें सभामें मस्करी करी वाप तो सियाल ओर वेटा सांड केसें तव सिद्धराजनें कहा हे सांड हमारा सूरजका सांड है उससें तूं लडे तो तूं सच्चा सांड दुनियामें कहावै, वो उसी वखत खडा भया जब राजाकै मस्त सांडकूं छोडा उसी वखत पकडसींग धकाकर दया चित्तमें रखता धीरेसें जमीनपर सुला दिया राजा प्रजा जय २ शब्द करकै कहणे लगी सच्चा सांड तूं है मेरी दीमई पदवीकों तेनें सफल कर वताई उस दिनसें सांड गोत्र भया, दुसरा वेटा सांवलजीका सुक्खा जिसके सुखाणी कहलाये, तीसरे साल दे जिसका सालेचा कहलाया चोथा पूनमदेवका पुनमिया कहलाया इसतरे जगदेवजीकै तीन वेटोंसें इतनी साखा फैलकर महाजन भये उस जमानेमें तीन आचार्य हेमसूरी नांमके मौजूद थे मलधार हेमसूरीः पूर्ण तलगच्छी हेमचंद्रसूरिः तीसरे हेमसूरीके गछका पता नहीं है मगर आत्मारामजी संवेगी लिखते हैं राजा कुमारपालकों तीनोंनें प्रतिबोध दिया था तीनोंकों राजा धर्मदाता गुरु समझता था मलधार खरतरकी साखा है वाकी पूर्ण तल्ल गछ विच्छेद भया माता इनोंकी सूराणोंकी सुसाणी ओरलोसल कहाती है वाद अन्य २ मतका संवत् विक्रम सोलेसेंमें इस वंसमें प्रचार भया मूल गुरु मलधार गछ इस वखत सूराणे देवी मोर खाणेकी पूजते हैं ।

आघरिया गोत्र

सिंध देसमें अग्र रोहा नगरका गोसलसिंह राजा भाटी राजपूत उसका परवार पनरेसे घरका विक्रम संवत १२१४ में मुसलमानोंकी फोजनें लडाईमें राजाकूं कैद कर लिया उस वखत खोडिया क्षेत्रपाल सेवित चरणकमल श्रीमणिधारी जिनचंद्रसूरिः गुरु अग्ररोहा नग्र पधारे उस वखत उनका प्रधान घुरसामल अग्रवाला प्रछन्नपणे रातकूं आकर गुरूसें वीनती करी हे गुरु जो हमारा राजा कैदसें छूट जावे तो आपका उपगार कभी भूलेगा नहीं गुरूनें कहा जो राजा हमारा श्रावक वणे तो हम उपाय कर सकते हैं घुरसामलनें कबूल किया गुरूनें कहा तुम आजही देखो क्या स्वरूप वणता है अकस्मात् पनरेसे राजपूतोंकी वेडी तूट पडी मुसलमीनोंकों खबर भई फेर डाली फेर तूट गई एसें सात वखत जब भया तब मुसलमीन समसेरखां अचरजमें आकर पूछणे लगा ये गोसलसिंह क्या चमत्कार है गोसल भाटी बोला में नहीं जाणता ये क्या वात है समसेरखां मनमें सोचणे लगा इस राजाके पिछाडी किसी माहापुरुषकी मदत है राजाकों सपरिवारसें छोड कर बोला हांसी हंसार तुम खरचके वास्ते लेलो ओर मेरे उमराव वणो गोसल कहा देखा जायगा सहरमें अपणे दिवानके घर आया तब दिवाननें सब वात कही गुरूके पास ले गया और धर्म सुणने लगा गुरूसें राजा कहणे लगा किसीतरे पीछा राज्य मिल जाय गुरूनें कहा जैनधर्म धारण करो राजा सपरवार जैनी भया रातकों समसेरखांकूं क्षेत्रपालनें दरसाव दिया या तो तुम राज्य पीछा गोसलकों दो नहीं तो तुमारे हकमें अछा नहीं होगा सुबेकों समसेरखानें मारे डरके राजाकों पीछा राज्य दिया ओर आप उहांसें अपणी फोज ले चल धरा गुरूनें आघरह्या गोत्रका नांम धरा सो लोक आघरिया कहणे लगे मूल गछ खरतर।

दूगडसेखाणी कोठारी गोत्र तथा सुघड.

पाली नगरमें खीची राजपूत राजाका दिवान था किसी दुस्मननें

राजासें चुगली खाई तब राजाके डरसें भगा सो जंगल गढमें जावसे उसकी इग्यारमी पीढीमें सूरदेव बडा सूरवीर पैदा भया उसके दो पुत्र दूगड और सुघड ये दोनों भाई मेवाड़में जाके आघाट गांमके ठाकुर होगये उस गांमके चौ तरफ भीलमेंणे चोरी धाडा मारते प्रजाकूं दुख देते उनोंकों दुगडनें कैद किये ये तारीफ चितोडके राणेनें सुणकर दोनों भायोंकों बुलाकर कुरब वढाया राव राजाकी पदवी दी उस आघाट गांमके वाहिर एक नारसिंघ वीरका पुराणा मंडप था उस गांमके लोकोंनें उस मकानकूं तोडाय डाला तत्काल नारसिंह वीर गांमके लोकोंकों वडी २ तकलीप देणे लगा पणिहा- रियोंके घडे फोड डाले आदमियोंके हाथमेंसें खान पानकी चीज जमीन पे गिरवादेवे इत्यादिक पथरोंकी वरसात रजोवृष्टि तरे तरेके फ़िसाद देखाणे लगा इन रावराजोंनें जंत्र मंत्र वलिवाकल वहोत करवाये मगर फिसाद वंध होय नहीं इस वखत श्री दादा साहबके पट्ट प्रभाकर मणिधारी श्रीजिनचंद्रसूरिः उहां पधारे सं । १२१७ में इनोंके पास दोनों भाई विनयपूर्वक गांमके कष्टका स्वरूप कहा तब गुरु बोले जो तुम जैनी श्रावक होजाओ तो वंदोवस्त हो जायगा दोनों भाई श्रावक होगये तब गुरूनें धरणेंद्र पद्मावतीकी आराधना करणेकूं उपसर्गहरस्तोत्रका स्मरण किया पद्मावती नारसिंहकों पकडके गुरूके चरणोंमें लगाया गुरूनें कहा आज पीछे उपद्रव नहीं करणा ये मेरे श्रावक है नारसिंह वीरनें कबूल किया गुरूनें दूगड सुगडकों कहा नागदेव तुमारे वंशके सहायक होंयगें ये चमत्कार देखसीसोदियावैरीसाल श्रावग भया सोसीसोदिया गोत्रप्रसिद्ध भया इन दोनोंका वंश धन और जनसें दादा गुरुदेवकी भक्ति करणेसें दिनपर दिन वडकी शाखा ज्यूं विस्तार पाया मूल गच्छ खरतर अभी भी दूगड गोत्री नाग कुमारकी पंचमी केई २ दूगड गोत्री पूजते हैं दादा गुरुदेवकूं सब दूगड मांनते हैं सेखा-

जीकी ओलादसेखाणी वजते हैं कोठारका काम करणेसें कोठारीभी दूगंड वजते हैं

मोहीवाल आलावत, पालावत, गांग, दूधेडिया शाखा १६

मोही नगरमें पमार राजा नारायणसिंह राज्य करता है चउहाणोंनें घेरा दिया नारायण गढका वंदोवस्त कर चउहाणोंसें युद्ध करणे लगा मगर चउहाणोपास बहोत धन और लाखोंकी फोजथी नारायण चिंतामें चूर भया तब गंग पुत्र पितासें अरज करणे लगा हे पिताजी श्रीजिन दत्तसूरिःके[1] पाटधारी श्रीजिन चंद्रसूरिःका मैंनें मेवाड देशमें दर्शन करा था सो वडे चमत्कारी महापुरुष है राजानें कहा हे पुत्र उनोंकैपास पहुंचणा मुसकल है गंगने कहा में हर सूरत पुंहचजाउं गा दुसरे दिन ब्राह्मण जोतपीका स्वांग वणाकर चउहाणोंकी फोजमें गया और फोजीलोकोंको तिथिवार नक्षत्र वताता २ फोजमेंसें निकल गया अजमेर परगणेमें गुरूका वंदन करा गुरूकों एकांतमें सब वात कही, गुरूनें कहा तुमारा पिता सहकुटुंब हमारा श्रावक जैनी हो जाय तो में सब वंदोवस्त कर देता हूं गंगराज कुमारनें ये वात कबूल करी तब श्री गुरुमाहाराजनें जया विजया देवी आराधना रूप पार्श्व मंत्र स्मरण किया देवीने एक तुरंग लाकर दिया गुरूसें अदृश्यतापणें मालम करा इस अश्वका चढणेवाला अजयी होजायगा गुरूनें गंगसें कहा तुम इस घोडेपर सवार हो देखते रहो असंक्षा दल तुमारे पीछे आ जायगा शत्रु सब भग जांयगें हमारे कहे भये कबूलायत चूकणा मत तुमारे मनोरथ सदा सिद्ध होगा गंगने चउहांणोकों घेर लिया चउहांणोकी फोज भगी गढके अंदरसें राजा नारायणसिंह देख रहा

---

[1] मक्सूदावादमें इंद्रचंद्रजी तथा केसवदासजी तथा वाबुप्रतापसिंहजी लक्ष्मीपती धनपती छत्रसिंह गणपतसिंह नरपतसिंह माहाराज बहादुर वडे २ श्रीमत दातार देव गुरुके भक्त वसते हैं इनोंका धर्म कर्त्तव्य अगर लिखा जावे तो एक वडा सा ग्रंथ होजाय क्रोडो रूपे दुगड गोत्रीयोनें सात क्षेत्रोमें लगाये हैं हमनें प्रत्यक्ष देखा है दादा गुरुप्रसादात्

था अज थी चमत्कार देखहैरतमेंरहा इतनेमें राजकुमार गंग सिं-
हनें आके मुजरा किया और सब अहवाल कहा अब राजा अपणे
सोलेवेटोंको सगले विजय डका बजाता श्रीगुरुमाहाराजके पग मंडे
मोही नगरमें करवाये जन धर्मोपदेश सुणा तो राजा रोम २ सें फूलणे
लगा और जैनधर्मी महाजन भया उण सोलेवेटोंके १६ गोत्र भये वडे
राजाके पुत्र मोही नगरसें मोहीवाल कहलायें २ आलावत २ पाला-
वत ३ दूधेडिया ४ गोय ५ थरावत ६ खुडधा ७ टोडरवाल ८ भा-
टिया ९ वाभी १० गिडिया ११ गोढवाडा १२ पट्वा १३ बीरीवत
१४ गांग १५ गोध १६ मूलगच्छ खरतर

बोथरा फोफलिया दसाणी वछावत साह
मुकीम जेणावत डूगराणी सारा ९

श्रीजालोर महा गढका धणी देवडा वंशी चउहाण माहाराजा
सामतसीजी उनोंकै दो राणिया थी जिनसें सगर १ वीरम दे २
और कान्हड ३ एसे तीन लडके और उमा नामकी एक लडकी भई
सामतसीजीके पाटपर वीरमदेव बैठा तब बडा पुत्र सगर आकर
आबू पहाड देवलवाडेका राजा भया कारण सगरकी माता देव
लवाडेकै राजा भीमसिंहकी लडकी थी वो दुसरी राणीकी अणवणतसें
सगरकों लेकर अपणे बापके पास जारही भीमके पुत्र नहीं था इस
वास्ते दोहीतेकों राज्य देगया एकसो चालीस गाम सगरके तालूके
थे उसका तेज चारों दिसामें फैल गया बडा बहादुर दानेश्वरी पणेसे
नेकनामी पैदा की उस वखत चितोडकै राणा रतनसीपर मालव
देशका मालक मुहम्मद बादसाहकी फोज चड आई राणा रतनसीनें
सगरकों बहादुर जाण अपणी मदतकों बुलाया सगरकै महम्मदसें युद्ध
भया मुहम्मद भाग गया राणे रतनसिंहनें सगर राणवीर सामत

१ दोहा, गिर अटार आबूधणी, गढ जालोर दुरंग, तिहासामतसी देवडो, अमली माण अभग १

२ ऊमापिंगलराजाकों व्याही थी

एसा पद दिया सगरनें मालव देस तावे कर लिया कुछ मुदतके वाद गुजरातका मालक वहलीमजात अहम्मद वादसाहनें राणा सगरकों कहला भेजा की मेरी सलामी और नोकरी मंजूरकर नहीं तो मालवा छीन लूंगा सगर सख्त जवाव दिया अव इनोंके युद्ध भया अहम्मद भग गया गुजरात सगरनें तावे कर लिया कुछ मुदत वाद दिल्लीका वादसा गौरीसाह और राणा रतनसीके आपसमें तनाजा भया गौरीसाहकी फौज चीतोडपर आई उस वखत राणेजीनें सगरकों बुलाया सगरनें मेल करा दिया वादसाहसें २२ लाख रुपे दंडके लेकर सगरनें मालवा गुजरात वादसाहकों वापस दिया उस वखत राणाजी सगरकी बुद्धिवानी और सखावत देख सगरकों मंत्रीश्वर पद दिया सगर पीछा देवल वाडेमें रहणे लगा इसका चरित्र वहोत है ग्रंथ वढणेके सवव नहीं लिखते हैं धर्म इनोंका शैवमतथा सगरके पुत्र वोहित्थ गंगदास जयसिंह तीन पुत्र थे सगर राणेके पाटपर वोहित्थ देवलवाडेका राजा भया वडा सूर वीर अकलवरथा संवत् इग्यारे सताणवेमें श्रीजिनदत्तसूरिः देवलवाडे पधारे गुरूकेपास राजा वोहित्थ आया गुरूनें धर्मोपदेश दिया राजा वोहित्थ पूछणे लगा हे गुरु मुसलमान लोक वडे जुलमी है सो हमारे राज्यकी क्या दसा होगी गुरूनें कहा जो तुम हमारे श्रावक हो जावो तो सव वृत्तांत कह देता हूं वोहित्थ राजा वोला गुरुमाहाराज श्रावक होणेसें व्यापार करणा होगा शस्त्र डाल देणा होगा राजापणा चला जायगा गुरूनें कहा हे राजा तुमको संसारके स्वरूपका ज्ञान नहीं हाथीका कान पीपलका पान जेसा चंचल एसी राज्यलक्ष्मी चंचल है चक्रवर्त्तके पुत्रकेपास कर्म वस ५ घोडे नहीं मिलते हैं इतने राजपूत वसते हैं क्रोडों उसमें राजा कितनेक है. सो विचारो औरमें तुमारे संतानोंकों सदाके वास्ते राजा लक्ष्मीपुत्र वणा देता हूं इतना सुणतेही वोहित्थ राजा तत्वकों समझ जैनधर्म ग्रहण किया वोहित्थ राजाकी राणी वहु रंग दे जिसके ८ पुत्र थे वडा श्रीकर्ण १ जेसा २ जयमल ३ नान्हा ४ भीमसिंह ५ पदम-

सिंह ६ सोमजी ७ पुण्यपाल ८ इसतरे सातों पुत्रों समेत १२ व्रत सम्यक्तयुक्त ग्रहण किया पदमा वेटी थी तब दादा श्रीजिन दत्तसूरिःनें आशीवाद दिया हेराजा वोहित्थ जहांतक तेरा वंस मेरी आज्ञा मुजब चलेगा खरतर गछकी गुरुभक्ती रखेगा उहांतक, राज्यकार्यमें तेरी ओलाद मान प्रतिष्ठावंत एक न एक सदाके लिये रहेगा वाकी ठाठका मालक तेरा वंश पाटका मालक राजा रहेगा धर्मसें वेमुख नहीं होंयगें जहांतक, लेकिन हे राजा तुम परभवकी नींव लगावो तुमारी आयु थोडी है तब वोहित्थजीका वडा वेटा जिसनें जैनधर्म नहीं धारा उसकों राज्यपदवीका युवराज वणाया इस वखत चितोडके किलपर दिल्लीके वादसाहकी फौज आई राणा रायमल वोहित्थ राजाकों अपणी मदतपर बुलायां वोहित्थ राजा दादासाहबके वचन याद किया गुरूनें कहा आयु थोडी है सो मोका आय वणा है तब सातों पुत्रोंकों द्रव्य दे देकर मारवाड गुजरात कच्छ देशकों जाणेका हुकम दिया और आप श्रीकर्णकों देवलवाडेका राज्यतिलक देकर युद्धमें चढ गये उहां चारों आहारका त्याग कर वादसाहसें युद्ध किया वादसाहकों भगा दिया मगर आप ११ से सोनहरी वंधसें युद्धमें अरिहंत देव और परमगुरू जिनदत्तसूरजीका ध्यांन करते मरकै व्यंतर निकायमें वावन वीरोमें हनुमंत वीर भये जिनोंकी शक्ती पुनरासर गांममें प्रगट है और जिनदत्तसूरजीकी सेवामें हाजर रहणे लगे इन सात पुत्रोंकी ओलाद वोहित्थरा, वडकी शाखा ज्यूं धन और जनसें विस्तार पाये, अब राजा श्रीकर्णके ४ पुत्र पैदा भये समधर १ वीरदास २ हरीदास ३ और उद्धरण ४ श्रीकरण सूर वीर इसनें युद्धवलसें मछेंद्र गढका राज्य ले लिया एकसमें वादसाहका खजाना जा रहा था तब पिताका वैर यादकर खजाना लूंट लिया वादसाहकों खबर भई तब फोज भेजी उस लडाईमें राणा श्रीकर्ण काम आया वादसाही फोजनें मछेंद्रगढ कबजे किया उस वखत राणे श्रीकर्णकी राणी रतनादे कुछरत्नसंगले चार पुत्रोंकों संग लेकर अपणे पीहर

खेडीपुर जारही और अपणे पुत्रोंकों कला अभ्यास कराते २ पंडित वणा लिये एक दिन रातकों सोते भये चारोंकों पद्मावती देवीनें स्वप्ना दिया कल इहां खरतर गच्छ नायक श्रीजिनेश्वर सूरिः आचार्य आयगें उनोंकैपास तुम जैनधर्म अंगीकार करोगे तो तुम पीछे राज्याधिकारी वण जावोगे प्रभातसमें वोही वात वणी ये चारों श्रावक होगये व्यापार करणे लगे अगणित धन पैदा किया अपणे गोत्री बोहित्थरोंकों संगले सत्रुंजयका संघ निकाला रस्तेमे गांम २ में जणे प्रति एकेक मोहर च्यांदीका थाल सोपारियोंसें भरकर देते चले तवसें फोफलिया कहलाये समधरका पुत्र तेजपाल गुजरात देसका मुकाता ले लिया (ठेका) तीन लाख रुपे लगाकर श्रीजिन कुशल सूरिजीका पाट महोच्छव किया सत्रुंजयका संघ निकाला खरतर वसीमें २७ अंगुलके बिंवकी प्रतिष्ठा कुशलसूरिःसें करवाई पिताकी तरे मोहर थाली ५ सेरका लड्डु वांटते सात क्षेत्रोंमें वहोत द्रव्य लगाया पाटणमें जिनमंदिर धर्मसालायें करवाई तेजपालका बील्हा बीलाके २ पुत्र कडवा १ ओर धरण २ कडवा वडा दातार पिताकी तरे संघ जीर्णोद्धार लाणें वांटी एक दिन कडवा चितोड गया राणेजीनें सन्मान दिया अकस्मात् मांडव गढका वादसाह मुसलमान चीतोडपर चढ आया तव राणेजीकी प्रार्थनासें वादसाहसें मेल करा दिया तव राणेजीनें वहोत धन घोडा सिरपावदेकर मंत्री वणाया कुछ दिनवाद फेर गुजरात पाटण गये राजानें पीछी पाटण दे दी गुजरातकी जीव हिंसा वंधकर दी खरतर गच्छाचार्य श्रीजिनराजसूरिःका सवा लाख रुपे लगाकर पाटमहोछव किया सं । १४३२ सत्रुंजयका संघ निकाला सात क्षेत्रोंमें क्रोडो रुपे लगाये कडवेजीके तीन पीढीके नांम मिला नहीं चोथी पीढी जेसलजी भये उनोंके वछ राजजी देवराज हंसराज तीन पुत्र भये वछ राजजी अपणे भायोंकों संगले मंडोवरके रावरिडमलजी राठोडके मंत्री वणगये रावरिडमलकों चितोडके राणे कुंभकर्णनें दगेसें मार डाला मंत्री वच्छराज जोधेजीकों हिकमतसें मंडोवर ले

आया जोधेजीके मंत्री वच्छराजहे जोधेजीके नव रंग दे राणी सांखलोंकी बेटीसें दो पुत्र पैदा भये वीका ओरवीदा किसीकारण वस १४ प्रधान नामी पुरुषोके संग वीकाजी योध पुरसें रवाना भये १५४१ में राजतिलक राती घाटीपर विराज कर किल्ला डाला १५४५ में वीकानेर वसाया मंत्री वछ राजनें अपणे नामसें वछासर गांम वसाया वछ राज सेत्रुंजय गिरनार तीर्थोंकी यात्रा करी इनके करमसी वरसिंह रत्ता ओर नरसिंह तीन पूत्र भये देवराजकै दस्सू तेजा भूणा तीन पुत्र भये वछराजजीसें वछावत कहलाये दस्सूजीके दस्साणी इसतरे पुत्रोंके नांमसें बोथरागोत्रकी केइ साखा निकली वीकाजीके पूत्र रावलूण करणजीनें करमसीकों मंत्री वणाया मुंहते करमसीनें करमसी सर गांम वसाया वहोत श्रीसंघकों एकठाकरकै खरतर गच्छाचार्य श्रीजिनहंससूरिःका पाटमहोच्छव किया सं। १५७० में वीकानेरमें नेमनाथ स्वामीका सिखरबद्ध मंदिर करवाया जो भांडा साहके मंदिरकेपास विद्यमांन हे सत्रुंजयका संघ निकाला एकेक मोहर एकेक थाल पांच सेरका लड्डू घर २ प्रति गांम २ में साधर्मियोंकों देता वीकानेर आया रावलूणकरणजीके पाट रावजैतसीजी इनोंनें करमसीकै छोटे भाई वरसिंहकों अपणा मंत्री वणाया वो नारनोलकै लोदी हाजीखानके साथ युद्धकर काम आया वरसिंहकै मेघराज नागराज अमरसी भोजराज डूंगरसी (डूंगराणी) कहलाये और हरिराज एसेछ पुत्र भया मंत्री नागराजकों चांपानेरकै वादसाह मुंदफरकी नोकरीमें रहणा पडा उसनें वादसाहकै हुकमसें संघ निकाला तीर्थोंपर गुजरातियोंकी गडबड देख भंडारकी कुंची कबजे करी रस्तेमें एक रुपया एक थाल

---

१ काकाकांधलजी २ रूपाजी ३ माडणजी ४ मडलाजी ५ नाथूजी. ६ भाई जोगायतजी ७ वीदाजी ८ सांखलानापाजी ९ पडिहार वेलाजी १० वैदलाला लाखणसी ११ कोठारी माहाजनचोथमल १२ वछावत वरसिंह १३ प्रोहित विक्रमसी १४ माहेश्वरी राठीसाहसालाजी

पांच सेरका लड्डू साधर्मियोंकों देता वीकानेर आया १५८२ में वडा काल पडा तब तीन लाख रुपयोंका अनाज कंगालोंकों वांटा एकदिन मोहता नागराजकै सिंध देस देराउर नगरमें दादा श्रीजिन कुशल सूरिःजीकै दर्शनकी अभिलाखा भई संघ निकालणा विचारा फेर चिंता भई सिंधके रस्तेमें जल मिलणा मुस्कल है इस चिंतामें निद्रा आगई तब स्वप्नेमें दादा गुरूनें दर्शन दिया और फुरमाया हमारा थूंभ कराणा गांम गडालेमें (नाल) में फागुण वदि अमावस सोमवारकों वडका दरखत फटकै सवा पहर दिन चढै देराउरके निज चरण इहां प्रगटेगें सत्यस्वरूप जाणना प्रभातसमें मुलकमें कागद भेजा दिया वहोत संघ एकठा भया सं। १५८३ में उस मुजब चरण प्रगटे सब संघपर आकाशसें केसरकी वर्षात भई नागराज थुंभ कराकरचरणथापन किये राववीकेजीके संग मंडोवरसें भेरूकी मूर्त्ति आई थी वोकोडमदेसरपर थापन करी थी भेरूनें स्वप्ना दिया रावजैतसीकों सहरकी प्रजा मेरी यात्रा करणे आवै सो मेरे गुरू दादा साहिबकी हाजरी मेला किया करै कारण ५२ वीरोंके मालक दादागुरुदेव है रावजेतसीजीनें भादवा सुदि १२ कों वेसाही मेला भरवा दिया अभी यात्रा भया करती है नागराजमंत्रीनें नगासर गांम वसाया रावजैतसीजीकै पाट राव कल्याणसीजी विराजै इनोंनें नागराजकै पुत्र संग्रामसिंहकों अपणा मंत्री वणाया श्रीजिनमाणिक्य सूरिःकों संग ले सत्रुंजयादि तीर्थोंका संघ निकाला एकेक रुपया थाल लड्डूकी लाणी वांटते केसरिया नाथकै दर्शन कर चितोड आये राणा उदयसिंघजीनें वडा सन्मान दिया वीकानेरनरेस वडे प्रशन्न भये संग्रामसिंहकै करम चंद पुत्र भये सो वडा बुद्धिवान शूर वीर दातार पैदा भया ये माहाराजा रायसिंघजीकै मंत्री भये इनोंके जमानेमें त्यागी वैरागी क्रिया उद्धारी श्रीजिनचंद्रसूरिःजीकी व्याणेकी वधाई मल कवीनें करम चंदकों दीं तब सवा क्रोडका सिरपाव वधाईमें

करमचंदमुंहतेनें दिया वडे महोच्छवसें वीकानेरमें सामेला किया श्रीसंघका कराया भया उपासरा श्रीचिंतामण स्वामीके मंदिरके पासमें जो था सो घरवारी माहात्मोंनें अपणे घर वणा लिये तब मंत्रीनें अपणे घोडोंकी घुडसाल माणक चोक (रांगडी) में थी उहा आचार्यकों चोमासे रखा चोरासी गच्छके सब श्रावक इहां आतेथे और धर्म ध्यान होता था संसार त्यागके बहुत लोग साधू होगये अनेक बायोंनें साधवीपणा लिया उनके धर्म ध्यान करणेंको अपणी गउशाला दीनी जो की वडा उपासरा तथा छोटा उपासरा प्रसिद्ध है सं । १६२५ का चतुर्मास संघके आग्रहसें वीकानेरमें करा प्रतिमा निंदकमत फैलतेकूं उपदेश द्वारा परास्त करते गुजरातके तरफ विहार किया कुछ दिनों बाद श्रीवीकानेर माहाराजाकी तरफसें करमचंद लाहोर नग्रमें वादसा अकव्वर साहकैपास गया एक दिन वादसाहनें करमचंदसें पूछा ये करमचंद धर्म सबसें बडा कोनसा है करमचंद वादसाहका आशय समझ गया क्योंके बुद्धीका सागर परम जैनतत्वका जाण कार सम्यक्ती था तब बोला (दोहा) वडा धर्म महंमदका तातें शिव कछु न्यून एकण राजा चाहिरो सबसें जैनजबून १ बादसाह अकव्वर इस दोहेके परमार्थकों खुब समझ गयाके करमचंद बडा सायर जैनधर्मका एक नररत्न है तब पूछा अब करमचंद तुम किस अवलियाके मुरीद हो करमचंद बोला हजूर सिलामत श्रीजिनचंद्रसूरीका वादसाहकों जैनधर्म सुणनेकी और एसे पुरुषके दरसणकी चाह भई तब अपणे उमरावोंके संग बीनती फुरमाण खास कलम लिख भेजी गुरु विचरते २ लाहोर पधारे वडे हंगामसें वादसाह सन्मुख आकर कदम पोसी करी गुरूनें धर्म उपदेश करा उस दिनसे वादसाहकों धर्मरुचि पैदा भई

---

१ नवहाथी दिया नरेश सो तो मदसें मतवालै, नवे गाम बगसीस लोक नित आवे हालै, एराकीसो पांच सो तो जग सघलो जाणे, सवाक्रोडकों दानमल्ल कवि सच बखाणे १ कोइ राव न राणा करसकै, संग्राम नदन तैं किया, युगप्रधानके नामसें करमचद इतना दिया २

हमेस व्याख्यान सुणते २ मदिरामांस तथा कंदमूलका जावजीव त्याग किया हिंसाका त्याग अमलदारीमें करवाया जावजीव सब पाणीका त्यागकर एक गंगाजल वरताव करणेकूं बाकी रखा परस्त्रीका जावजीव त्याग करा जैनधर्मको सब धर्मोसें श्रेष्ठ समझणे लगा एसी सम्यक्तकी श्रद्धा प्रगट भई तब बादसा गुरू अपणा मानकर चमर छत्रादि आपके सब राजचिन्ह नजर किये गुरूनें कहा त्यागियोंको ये उपाधि नहीं चहिये बाद० आपका त्याग सदा कायम है आपने फुरमाया मूर्छा है सो परिग्रह है आप मूर्छारहित हैं क्योंकै देवतत्त्वका स्वरूप आप दरसाते तीर्थंकर परमात्माके आठ प्रातिहार्य चोतीस अतिशय वतलाये जेसें वे देवताके वणाये समवसरण सोनेके कमलोंपर चलणे आदि विभूती रहतै तीर्थंकर जेसें वीतराग है तेसेंमें मेरी भक्तीसें इस राज्यचिन्होंसें उपासना कर जन्म सफल मानूंगा आप तो दुनियां तार्क हो लेकिन् वादसाह राजादिक सेठ सामंतोंकै गुरू परमचमत्कारी प्रभावीकपणेसें आपकूं जिनपद है, (ठाणांगसूत्रमें ५ जिन फुरमाया है) आपधर्मकी जिहाजहो सदा मदके लिये आपके शंतानोंकै संग मेरी भक्तीका निसाण कायम रहै तब करमचंदनें अरज करी हे पूज्य राजाभियोग है जिसपरभी जैनधर्मकी दुनियामें आडंबर महिमा दीखेगी सब श्रीसंघ इस वातसें आनंद मानेंगें तब गुरूनें मौन किया बादसाह इनोंके शिक्ष श्रीजिनसिंहसूरिकों तखत विठलाकर राजचिन्ह संग कर दिये और मुलकोंमैं वंदावणीका फुरमाण लिख दिया माही मुरा तब दिया ये अकबरका मुरातब वीकानेर बडे उपासरेमें करमचंदनें भेजा दिया श्रीगुरुमाहाराजनें काजीकी टोपी आकासमें ठहरी भईकों ओघेसें उतारी तीन बकरी बताई अमावसकी पूनम कर दिखलाई इत्यादि चमत्कार दिखलाकर सब तीर्थोकी रक्षावास्ते जगे २ बादसाहनें अपणे सूबेदार जागीरदारोंपर हुकमनामा भेजा दिया और हिंदमें अमारी उद्घोषणा छ महीना एक वर्षकेवास्ते जारी किया चैत भादवा आसोज चोदस आठम अमावस पूनम हूमायूंका जन्मदिन मरणेका दिन

अपणा जन्मदिन राज्यका दिन इत्यादि मिलाकरके तथा हुमायू वादसाने जवरन आर्य लोकोंकों मुसलमान वणाणा सरू कराया वो अकव्वरके दिलसें गुरूनें मिटा दिया वादसाह हुमायूनें सव भेपधारियोंकों जवरन् गृहस्थी वणाणेका हुकम जारी किया था इससें सामी संन्यासी वैरागी जती लोक वहोतसे घरवारी वण गये थे आत्मार्थी त्यागी लोकोंनें वहुतोंनें प्राणत्याग दिया था वहोत त्यागी रहणेवालोनें सिरपर वस्त्र वांध लंगोटवद्ध महात्मा होगये थे इत्यादिक जुल्म करमचंदके कहणे मुजव श्रीजिनचंद्रसूरिःनें वादसाकों उपदेश दे देकर वंध करवा दिया सव मतोंके अवलियोंसें सत्संग करणा अच्छा समझ उनोंकी संगत करणे लगा हुकमनामा जारी किया कोई मज हववाला होय उसपर जवरन अत्याचार कोइभी हिमायतीवाला नही करसकेगा सच है एसे मंत्री और एसे गुरुमाहाराजकी शिक्षा जवसे अमल दखलमें लाया वस इसही वातोंसें अकव्वर वादसाहकी नेक नामी सदाके लिये हिंदमे रोसन रहचूकी प्रजाके सुखकारी नियम जो जो गुरूनें वादसाहसें करवाये सो लिखें तो एक वडासा ग्रंथ वणजावै इतना है इस सव वातोंका मूल कारण वच्छावत वोथरा करमचंदथा इसवास्ते इनोंका इतिहास विस्तारसें लिखा है ये जमाना भस्मरासी ग्रह भगवान वीरकै जन्मरासीपर जो निर्वाणसमें आया था सो उतरणेका था दो हजार वर्ष वीरके निर्वाणकूं पूरा भयाथा उक्त माहाराजानें जैनधर्मका उदय पूजा सत्कार प्रगट किया तवसें दो फिरका साधुओंमें होगया एक तो सिद्धपुत्र क्षुल्लक जती धर्मोपदेशी पंडित तथा श्रीजिनचंद्रसूरिकै खरतर गछकै सव पंचमहाव्रती जैनसाधू इसकैवाद तपागच्छनायक श्रीहीरविजयसूरिःदिल्लीपधारे तव तव *वेपहर्ष

* वेपहर्पके विजयहर्षशांतिहर्प चोयेशतान जिनहर्प जिनोंनें अनेक चोपईसिझायादि ग्रंथ वनाया परमानदजीकै सिघाडेमें हमनें रत्नानद कमलानदजी वगेरे "खरतर" भट्टारक गच्छमें जतीयोंकू कलकत्ते वीकानेरमें देखा है हेमानद जालणे रहता हैं तपामें विजयसागर नाम होता है वेपहर्प परमानंद तपागच्छी नहीं थे इनोंका वस अभी खरतर भट्टारक गच्छमें मौजूद हैं

तथा परमानंद खरतर गच्छके जतीनें वादसाहसें हीरविजयसूरजीकी तर्फसें अर्ज करकें पांच पहाडोंके हिफाजतका फुरमाण हीरविजयसूरिःजीकों लिखवादिया वो फुरमाणमें इन दोनों जतियोंनें फुरमाण करवादिया एसा सरुमेंही लिखा है मुंबईवाले नाणचंदजी सागर गच्छीनें फुरमाणकी नकल यथार्थ छापी है मासिकमें हीरविजयसूरिःभी त्यागी वैरागी आत्मार्थी जैनधर्मके उद्योतकारी प्रगट भये इनोंका जादा विहार गुजरात गोढवाडमें रहा ये दोनों आचार्य चंद्रसूर्य सम उदय २ पूजासत्कारके कैराणेवाले प्रगट भये इनोंका भी दो फिरका चलते रहा आपसमें वडा संप रहा खरतर तपोंके, वादसाहके माननीय होणेसें जतीलोकोंका चमत्कार देख २ के सिद्ध पुनजतियोंकुं राजालोक गाम जागीर मंदिर उपासरेके हिफाजत करणे शिक्षोंके विद्या पढाणेकूं देतें गये सो अभी भी केंई विद्यमान है वछावत करमचंदनें वीकानेरमें सत्ताईस गवाड गामसारणी घोत लाहण वगेरे जातीके कायदे बांधे मुसलमांन समसेरखांनें जब सिरोहीका मुल्क लूंटा उस लूंटमेंसें १५०० जिनप्रतिमा सर्व धातुकी मिली सो करमचंदनें वीकानेरमें श्रीचिंतामणजीके मंदिरमें धरवाई सो अभी भी वडे कष्ट उपद्रवादि दूर करणेकों वाहेर निकाले जाती है पर्यूषण पर्वमें ८ दिन कसाई भडभुंजे आदिकारुओंका आरंभ बंध करकै लाग बांध दिया सो अभी जाहरी है सोलेसे ३५ का काल पडा उसमें करमचंदने कंगालोंकों तथा जैनी भाईयोंकों गरीव जाण सालभरका गुजरान दियाथा महात्मालोगोंनें श्रीजिनचंद्रसूरिःकी अवज्ञा करी थी माहाजनोंकी वंसावली पास रहणेसें मस्त हो रहेथे भवितव्यताके वस ये काम बुरा भया करमचंदने सोचा जब लोक वहीवटोंकों धन देते रहेंगें तो जैनधर्मके आदि कारण, जती साधुओंका वहुमान लोक नहीं करेगें एसा विचार कर घोखेबाजीसें गृहस्थी माहात्मोकूं एकठेकरकै वंशावलीकी बहियें माणक चोकके कूअेमें गिरा दी उन माहात्मा गृहस्थियोंका रकीना ओसर व्याहोंमें चागवाडी वगेराका बांध दिया वोभी मजूरी करे तो

जो जो वंसावली भंडारोंमें तथा श्रीपूज्यमाहाराजके दपतरोंमें तथा दूरदेशी माहात्मोंपास रहगई सो हाजर है लेकिन् किसी वंसवालोंके नाम ओसवालोंके माहात्मेलोकोंपाससें न मालम किसतरेपर भाट लोकोंपास दस ५ पीढीके नाम हाथ लगणेसें भाटोंनें ओसवालोंपर सिक्का जमाणा सरू करा है और *अश्वपत लोक जैनधर्म झलाणेवाले* जतीलोकोंसें हरवातपर मुं मचकोडते हैं और भाटोंकेवास्ते कडे.कंठी मोती दुसाले इनायतीकी खूवी दिखाते हैं जती माहात्माती कुपात्र ठहर गये, मांसमदिरा खाणे पीणेवाले भाट लोकोंका दान सुपात्रोंमें दरज भया, वाहरे पंचम आरा कलियुग तेरे विनाये हाल कोण वणाता अश्वपती महाजनोंकी वंसावली जती महात्मा टाल अन्यकैपास होय सो विलकुल झूठी गलत है अश्वपत लोकोंकों इस वातका निर्धार करणा चाहिये,' आखिरकों वादसाह करमचंदकों हमेसा अपणेपास रैखणा सरू करा तव *किसीकारणसें राजा रायसिंहजी गुस्से होगये* सूरसिंहजी जव गद्दीनसीन हो दिल्ली पधारे तव करमचंदके पुत्र पोतादि परवारवालोंकों विश्वास दे वीकानेर लाये इनोंकैपास सातसे योद्धा राजपूत थे एकाएक सूरसिंघजीनें इनोंकों मारणेकों फोज भेजी तव इनोंके पुत्र भागचंद लक्ष्मीचंद अपणे हाथसे सव परवारकों कतलकर सातसें राजपूतोंसंगकेसरिया वागे पहन युद्धकरके काम आये इ-नोंका चाकर रगतिया झूझार भया सो भोजग लोक रगतीया वीर करकै पूजते हैं एक वहू गर्भवंती किसनगढ अपणे पीहर चलीगई थी उनोंसें जो पुत्र भया सो किसनगढ उदयपुर वगेरोंमें वसते हैं वाकी वछावत मारवाड वगेर वीकानेर इलाकै वसते हैं पीछे सूरसिं-हजी उनोंकी जड निकालणेसें माणकचोकका नाम रांघडी धरा केई दिनोंवाद कोइ वादसाही काम पडा तव राजा इनोंका स्वामधर्मीपणा विचारके वहुत पछताये आखिरकों एक पुत्र खेमराजकों वुलाकर खीयासर उसके नांमसें गाम वसाय हठोरे हजार वीगा जमीन दे कर वडे कारखानेमें वछावतोंका हाजर रहणा सदा कायम किया ये ज-

मीन रिणीगामके ताल्लूकेमें हे चोथरोंकी मूल साखा ९ प्रतिसाखे अनेक हैं मूल गुरु गच्छ खरतर चोथरा १ फोफलिया २ वछावत ३ दसाणी ४ डूंगराणी ५ मुकीम६साह ७ रत्ताणी ८ जैनावत ९ (दोहा) •वडशाखा ज्यूं विस्तरो, चोहित्थराणा वंश. दिन २ प्रति चढती कला अनधन कीर्त्तिप्रशंस १

गेहलडा गोत्र

विक्रमसंवत् १५५२ खीची गहलोत राजपूत गिरधरसिंहकेपास पिता वहोत धन छोड गया था मगर एस आरामी दातारी, चारण भाट डूंमलोकोंको करता सब धन उडा दिया आखर वहुत तंग हो गया सामी जोगी फक्कडोंपास कीमीयागिरी ढूंढता फिरता है एक दिन खरतर गच्छाचार्य श्रीजिनहंससूरिःकों वहुत साधुओंके वीच खजवाणा नग्रमें विराजमांन देख भक्तिसें वंदनकर वैठ गया अवसरपाके अपणी सब व्यवस्था कहके बोला हे दीनदयाल धन विगर गृहस्थीकों जगतमें जीणेसें मरणा अच्छा है गुरूनें कहा सत्य है (दोहा) चढ उतंग फिर सुय पतन, सो उतंग नहीं कूप, जो सुखमें फिर दुखवसे सो सुखही दुखरूप १ इसवास्ते सुपात्र विवेकीपास धन होता है तो वो उस धनसें स्वर्ग मोक्षकी नींव डालता है और जो बुद्धिहीण धन पाकर सुकृत नहीं संचे बंबूलका वृक्षरूप कुपात्रोंकों दान देता वो इस जन्मपरजन्ममें दुखी होय जिनमंदिर कराणा १ जिनराजकी मूर्त्तियें भरवाकर अंजन शलाका कराणी चैत्य प्रतिष्ठा कराणी २ केवली कथित सिद्धांत लिखाणा पाठशाला स्थापन कर विद्यार्थियोंकों सब तरेसें मदत देणी दीन हीनका उद्धार करणा एसे सुकृतके अनेक भेद है तब गिरधर वोला माहाराज अब जो मेरेपास धन हो जावे तो ये सब काम करू गुरूनें कहा जो तूं जिनधर्मी श्रावक हो जावे तो धन फेर हो जाता है इसनें गुरूसें जिनधर्म अंगीकार करा तब जिनहंससूरिनें वास चूर्ण मंत्रकर दियाके आज रात्रीकों कुंभारका इंटके पजावेपर ये डाल देणा माझ योगसें वाहिर ५ हजार इंटोका छोटा

पजावा दिखाई दिया वास चूर्ण डाल दिया वो सोनेकी होगई
चांदकी चांदणीमें रातोरात घरपर उठा लाया इंटोके मालककूं दुगणा
मोल देके खुसकर दिया गिरधर साहके पुत्र गेलाजी सो भोला था
अब तो इनोंकै राजकाज लगगया धर्ममें बहुत द्रव्य लगाया बाद
गेला साहकूं सहरकै लोकोंनें कहां चिणाको दाणे तो सबोंका घोडा
खाता है आपके घोडोंकों तो मोहरां खिलाणी चहिये है तब गहला
साहनें मोहरोंसें तोवरे भरकै चढा दिये तबसें लोक गेलडा २ कहणे
लगे इनोके सातमें पीढी एक पुरुषकों राठोडोंनें किसी कसूरमें पकडकर
सब धन छीन लिया तब वो दुखी भया उसकों नागोरमें जोतष निमि-
त्तसें एक जतीनें मुहर्त्त बताया इस वखत तूं पूर्वदेशमें चला जा राजा
सा आद होजायगा ये निकला सो सात कोसपर जाकै दरखतकी छाहमें
सो गया सूर्यकी धूप मूंपर आई तब एक साप निकलकै छांया करकै
सूर्यके तरफ रहा इतनेमें ये जगा सांपकों देख घभराया बाद पीछा आया
जतीजीनें देखा ओर बोले अरे पीछा क्यों आया तब बोला ये स्वरूप
वणा जतीजी बोले अरे तूं छत्रपती होता था वो शकुन सांपनें दिखांया
था अभी खेह भरा चला जा राजा तो नहीं होगा तो भी सजा
माहाराजोंका वादसाहोका श्रीमंतमाननीय होजायगा ये चलता २
तीन महीनेसें मुरसिदाबाद पहुंचा क्रम २ व्यापारसें वढते २ जिहाजोंमें
माल भेजणे लगा आखिरकों खाली नाव पीछी आती तोफानमें आई
तब नावाडियोंनें भरतीमें पत्थर डाला वो सब पन्ना रत्न था उस
दिनसें असंक्षा द्रव्यपती होगया इनोंके पुत्र खुसालरायजीकों दि-
ल्लीके बादसा ओरंगजेबनें जगत्सेठकी पदवी इनायतकी तद पीछे
खरतर गच्छाचार्य श्रीजिनचंद्रसूरिःकों सं । १७२२ में मुरसिदावाद
वीनतीसें बुलाये माहाराजनें उपदेश दिया समेत शिखर पहाडकी
यात्रा जाते रस्तेमें प्रजाकों चोरोंका भय रस्ता मिले नहीं इसवास्ते
संघकों दर्शण सुलभ होणा चहिये तब सेठ साहबनें झाडी झंगीमें
साफ रस्ता ६ कोसपर चोकी पहरा विठलाये ऊपरवीसों भगवानकै

चरण पधराये और जातभाई जो आवै उसकों श्रीमंत वणा देणा वडी भक्ती अनेक जिनमंदिर घर देरासर कसोटीके पत्थरसें वणाकर नवरत्नकै बिंबस्थापन किया ये मंदिर हमनें विक्रम सं। १९२३ की सालमें आंखोंसें देखा था उनोंकी वदोलत मुरसिदावाद महमापुर महाजन टोली अजीमगंजवालूचर वगेरे गंजोंमें एक हजार लक्षाधिपती महाजनोंकों वणाकर वसाया वीकानेरकै गामोंकेवासिंदे जो जो गरीब महाजन जगत सेठजीपास पहुंचा उसकों निश्चै श्रीमंत वणादिया अंगरेजसरकारकों जगत सेठसाहबकी वदोलत वादसाही खातर रखणी भई नागपुरके मरेठे राजाकों अडवोंकी जवरात जगत सेठजीनें इनायतकी इनोकै वंशमें जगतसेठसाहब गुलाव रायजी अभी विद्यमांन है वनारसमें राजा शिवप्रशाद सतारे हिंद जो अंग्रेजसरकारकै माननीय होगये ये भी जगत्सेठ सांहबके घराणेदार थे जिनोंनें केई इतिहासके ग्रंथ वणाये हैं मूल गुरु गच्छ खरतर गेलडा गोत्र कुचेरा गांमकै चो तरफ गामोंमें वहोत वसते हैं

लोढा गोत्र २

लोढा गोत्रदोय है एक लोढा तो चउहाणोंसें भये हैं पृथ्वीराज चउहाणका सूवेदार लाखणसिंह देवडा चउहाण उसकै पुत्र नहीं तब रविप्रभसूरजी रुद्र पल्ली खरतरसें निकली शाखावालोंसे लाखणसिंहने पुत्रकैवास्ते दुख निवेदन करा तव गुरूनें कहा जो तूं जैनधर्मी हमारा श्रावक वणे तो तेरे पुत्र होजाय लेकिन् कपटसें जैनधर्म अंगीकार करा आखिरकों पुत्र भया सो लोढे जेसा तब राजा पृथ्वीराजनें कहा अरे मुर्ख ये तेरे कपटका फल है तब लाखणसी गुरूकों ढूंढता वढ नगरमें गया अपणा कपट वयान किया गुरु वडवृक्ष नीचे उतरे थे उस वटमें रही जो देवी वह लाई सो चोटी निराल्य होकर जैनधर्म कवूलकर पुत्रके हाथ पैर सब गुरूकै आसीर्वादसें होजायगें तब इसनें एसा ही किया सम्यक्त्वयुक्त यारे मन लिया गुरूनें उस लडकेपर वास क्षेप किया सब अंगोपांग प्रगट भये उसका लोढा वंश

थापन करा इण लोढोंकी चार सांखा है टोडर मल्लोत १ छज मल्लोत २ रतनपालोत ३ भावसिंघोत ४ टोडरमल्ल छजमल्लकों दिल्लीमें बादसाहनें साह पदवी दीथी राजा टोडरमोजी सोखीन था सो टोडरमलजीतो इत्यादि स्त्रियें व्याहमें गीत गाणेलगी, माता घडलाई पूजते हैं लोढोंकों जोधपुरमें रावकी पदवी है पुत्र भये पीछे इन लोढोंकी स्त्री घडलाई पूजे विगर बाहिर नहीं निकलती . व्यावमें कुंभारका चाक नहीं पूजते कालीभैंस बकरी नहीं रखते झडूला भी पुत्रोंके माताका रखते हैं मूलगच्छ रुद्रपल्ली खरतर वो गच्छ विच्छेद भया बाद संवत सतरेसेमें तपागच्छ कबूल किया.

लोढा दुसरे.

लढामहेश्वरी बाचा विक्रमसंवत् हजारकी सालमें गुरूमाहाराज श्रीवर्द्धमानसूरिका उपदेश सुण जैनधर्मका श्रावक भया ये फकत दसेरा पूजते हैं पाटीकी पूंजा करते हैं इण लोढोंका अभी भी गछ खरतर है मेडता जिले इनोंके घर है.

बोरड गोत्र.

आंबागढमें पमारराजपूत राव वोरड राज्य कारता है सं ११७५ में खरतरगच्छाचार्य श्रीजिन दत्तसूरजी उस नगरमें पधारे राजा शिवका भक्त सो जोगी सन्यासी जितने आवै उनोंसें एसीही वीनती करता है मुझकों स्वामी शिवजीका प्रत्यक्ष दर्शन करवाइये लेकिन् कोई भी करा नहीं सकता श्रीजिन दत्तसूरजीकी महिमा सुणकै राजा आया वंदनकर ये वीनती करी तब श्रीगुरुदेव कहणेलगे अगर जो तूं शिवजीका कहा वचन कबूल करेतो प्रत्यक्ष शिवसें मिलादूं राजा प्रसन्न होय ये बात कबूल करी तब जहां शिवका पिंड था उहां गुरु पधार कर राव बोरडकूं फुरमाया हेराजा अब तूं एकाग्र दृष्टि शिवपिंडपर रख राजा समाधि लगाय एकाग्रदृष्टि धरी इतनेमें लिंगमेंसें प्रथम धूंआ निकलणा सरू भया बाद शिवजी भस्मी लगाया नंदियेपर सवार अर्धांगा पारवती लिया त्रिशूल हाथमें लिया भया मूर्तिके अंदरसें

निकलता भया राजा घोरडकूं दरशण दिया मांग २ एसा वचन मूंसें कहता भया तब राव घोरड हाथ जोड अरज करता है हे नाथ धन धन जन तुमारी कृपासें सब हाजर है लेकिन् जन्ममरणसे छूटूं एसा जो परमपद जो मुक्ति सो मेरेकूं बगसीसकर वेर २ इतनी ही अरजी है तब शिवजी हड २ हसणेलगा ओर बोला हे राजा में आपही मुक्ति नहीं पाई (दोहा) जाहीतें कुछ पाइये, कीजै ताकी आस, रीते सरवर पैं गये, कैसें बुझे पियास १ हे राजा संसारिक कार्य जो कोई मेरेसें होणे लायक होय सो में पूर सकताहूं माझसे उपरांत देवता भी देणे समर्थ नहीं ओर मुक्तिका अर्थ हे राजा कर्मोंका छूटणा है सो तो मोहके क्षय करणेसें कर्मसें जीव छूटता है अगर एसी जो तेरी मुक्ति पाणेकी इच्छा है तो तेरे पीठपर खडे आत्मार्थी जितेंद्री परम गुरूके वचनांनुसार चल क्रमसें जरूर मुक्त होजायगा एसा कह शिव एक कोटी रत्न दिखाकर अंतर्ध्यान भया तब राजा चकित होकर गुरूसें मुक्तिका स्वरूप पूछणे लगा तब गुरूनें नवतत्वका उपदेश दिया राजां अपणे सहकुटुंब जैनधर्म धारण किया इनोंसें घोरड गोत्र प्रसिद्ध भया मूल गछ खरतर.

नाहर गोत्र.

पहली नागोरपास मुंधाडनग्र मुंघडा महेश्वरियोंनें बसाया उस जगें मुधंदेवीका मंदिर है उस देवीके मुंधडे महेश्वरी शैवमती सर्व. भक्त बसते हैं उनोंमेंसें भीमका पुत्र देपाल प्रल्हाद कूपनगरके राजाका प्रधान होता भया धनसें श्रीमंत बणगया उस देपालकै एक पुत्र सो अत्यंत प्यारा आसधीर नाम दिया उस नगरमें श्रीलघुशांति स्तोत्रके कर्त्ता मांनदेवसूरिः आचार्य आये सूंडाजी नामका शिष्य गोचरी गया मगर शैवमतीलोक जैनधर्मसें द्वेष रखणेके कारण आहार पाणी नहीं दिया तब सूंडा गुरूसें सर्व वृत्तांत कहा तब गुरू विहार करणे लगे इस वखत शासन देवी आकर बोली हे गुरू इहां धर्मका लाभ होगा आप एकदिन इहां तप जप साधो गुरु चेले तेला करके बैठगये इतनेंमें

शासनदेवतानें देपालके पुत्र आसधीरकों उहांसें प्रछन्न पणे उठाकर लेगई जब बालककों मातानें नहीं देखा सर्वत्र खबर करी मगर पता नहीं मिला देपाल पुत्रके प्रेमसें पागल होगया वो शिष्य दिसा फरागत गया था इतनेमे रोता पीटता बहुत अदम्योंके संग देपाल मिलाफिकर धंध देख चेला पूछणे लगा तब देपालके नोकरोंनें सब स्वरूप कहा चेला बोला मेरे गुरूके पास जा वो अतिशय चमत्कारी है निश्चै तेरा पुत्र मिलायदेगें सच है गरज दुनियार्में अजब चीज है (दोहा) गरज गरज सब कोइ करै, गरज होत घनघोर, बिना गरज बोले नहीं, जंगल-हूको मोर १ मुतलबरी मनुहार, नेतजीमावैचूरमो, बिनमुतलब कोई यार, राबन पावै राजिया, १ ये वचन सुणतेई सूंडाजीके चरणोंमें गिरा देपाल तब बडा दुखकर कहने लगा हे गुरु परमात्मा पुत्रके बिना मेरा ओर स्त्रीका प्राण निकल जायगा इसवास्ते आप कृपाकर बडे गुरुमाहा-रॉज पास ले चलो तब सूंडाजी संगलेकर गुरूपास आये गुरूसें देपाल मंत्री बडे दीनश्वरसें दुख निवेदन किया तब गुरु बोले जो तूं वृहद्-च्छका जैनीश्रावक बणे तो पुत्र मिला देताहूं देपालनें कहा इसीबखत गुरूनें कहा पुत्र मिलेबाद, तब गुरुनें फेर फुरमाया जा तूं दक्षण दिसाके उद्यानमें तेरा पुत्र सुखसें बैठा है देपाल चेला बहोतलोक संग गये आगे शासनदेवी सिंहणीके रूपसें उसें इांचल (बोबा) चूंगा रही है देखते ही देपाल डरता भया पीछा गुरूसें अरज करी तब गुरूनें कहा तूं निशंक चला जा उस नाहरीकों कहणा श्रीमांन तुंग सूरीकामें श्रावक हू मेरा पुत्र पीछादे इतना कहतेही तुझे पुत्र दे देगी इतना सुण साहसकर गया तो नाहरणी गोदमें पुत्रकों लेकर बैठी है देपाल हिम्मत वचन गुरूसें नाहरणी पास जाकै गुरूके वचन कह सुणाये तब नाहरणी देपालकूं पुत्र अर्पण करती भई और आकाश-मंडलमें जय २ ध्वनि होणे लगी बहोत हर्षके संग अपणा घडा

१ विद्यमानसमयमें सताबचंदजी नाहर मुरसिदाबादमें बडे श्रीमत दातार अंगरेज सरकाररके माननीय बुद्धीवत सुमीलाल पूरणचद वगेरे जयवत है ॥

भाग्योदय मांनता सपरवार गुरुपास जाके जैनधर्मी भया गुरुनें उस आसधीरका नाहर गोत्र स्थापन करा मानदेवसूरी कोटिक गछ चंद्रकुल वज्रशाखाके आचार्य थे इनोंके शंतान जिनेश्वरसूरिकों खरतर विरुद मिला मूलगछ खरतर देवी इनोंकी शासनदेवी व्याघ्री है बीकानेरादिक मारवाडके नाहर अभी भी खरतरगछमें है.

छाजेहड गोत्र.

राठोड राजपूत धांधल रामदेव १ पुत्रकाजल संवत् विक्रम १२१५ में श्रीजिनचंद्रसूरि मणिधारी खरतर गछाचार्य सबीयाण गढ पधारै तब काजल गुरूसें अरज करीके गुरु दुनियामें लोक रसायण सोना सिद्धि होती बतलाते हैं सो बात सच है या झूठ गुरूनें कहा हम त्यागी लोकोंकों धर्मक्रिया टालके और नाटक चेटक करणा योग्य नहीं तब काजल बोला जिसतरे धर्मकी वृद्धि होय और में इस विद्याकों एक बेर आंखसें देखलूं एसी कृपा करो आपके दादा साहिब गुरु श्रीजिनदत्तसूरजी तो एसे चमत्कारी होगये इतना चमत्कार तो आप भी दिखलावो तब गुरु बोले जो तूं जैनधर्म अंगीकार कर हमारा श्रावक बणे तो ये कामभी होसकता है तब काजल अपणे पितासें पूछणे गया तब रामदेव बोला अरे पुत्र जात राठोड खरतर गच्छके चेले हैं तूं अहोभाग्य समझ सो गुरु तुझें जैनधर्म धराते हैं तब आकर बोलालो गुरू जैनधर्मी करो गुरूने नवतत्व सीखाकर श्रावक बणाया बाद दीपमालिकाकी रात्रीकों श्रीलक्ष्मी माहाविद्यासें मंत्रकर काजलकूं बास चूर्णदिया और बोले जा इतना बास चूर्ण जिसपर डालेगा सो सोना होजायगा लेकिन् आजही रातकों ग्रह उगतेमें लक्ष्मीदेवीका विसर्जन करदूंगा फेर नहीं होगा काजलकूं तो ये चमत्कार ही देखणा था उपाश्रयसें निकलकर मंदिर जिनराजके छाजोंपर कुछ बास चूर्ण डाला बाद देवीके मंदिरके छाजोंपर बाद अपणे घरके छाजोंपर डालकर घरमें जाके सोरहा मूंअंधारे उठके श्रीजिनमंदिरमें जाके दर्शकर बाहर निकला इतनेंमें बहोतसे लोक रस्ते निकलते बोले

अरे ये सोनेके छाजे मंदिरके किसने चढाये काजल देख २ बहोत प्रसन्न भया इतनेंमें बहोतसे लोक आकर कहणे लगे रामदेव काजल राठोडके घरकै तथा देवीके मंदिरके जेनमंद्रिरकै तीनों छाजे सोनेके हैं तब काजल बोला अरे लोकों ये महिमा सब खरतर गुरु माहाराजकी है उसदिनसें काजलोत छाजे हड कहलाये मूलगच्छ खरतर.

सिंघवी गोत्र.

नगर सिरोही गोढवाढमें निनवाणा ब्राह्मन बोहरा सोनपालके पुत्रकूं साप काटखाया खरतराचार्य श्रीजिनवल्लभसूरि सं। ११६४ में जहर उतारा सोनपालजी जैनधर्म धारण करा पीछै सत्रुंजयका संघ निकाला जिससें संघवी कहलाया पीछे केइयक संघवी गोत्रवालोंनें संवत विक्रम सतरेसेमें तपागछकी सामाचारी करणे लगे तबसें केइयक खरतर गछमें है केयोंका तपागछ है साखा.४ नवलखा १.फरसला २ ननवाणा ३ पल्लीवाल ४.

सालेचा बोहरा.

सालमसिंघजी दइया राजपूतकूं श्रीमणिधारी श्रीजिनचंद्रसूरिनें प्रतिबोध देकर जैनी माहाजन किया सं १२१५ की सालमें सिंयालकोटमें बोहरगत करणेसें बोंहरा कहलाये गछमूल खरतर.

भंडारी गोत्र.

गोढवाड देस गाम नाडोलका राव लाखणजी चौहाणका बेटा महेसराव वगेरे ६ पुत्रकों श्रीभद्रसूरजी खरतर गछाचार्यनें सं । विक्रमकै १४७८ प्रतिबोध देकै जैनधर्मी श्रावक बणाया देवी इनोंकी आसा पुरी जात नाडोल गांममें इनोकी लगती है गाम कुचेरामें आकरखसे मूलगछ खरतर है बाद कोई २ दूसरा गछभी मांनने लगे कुचेरा परगणेके भंडारी अभी खरतरगछमें है साखा दीपावत मोनावत लूणावत नीवावत.

वांगाणी.

विक्रमसंवत् सातसेमें वृहद्गछी यशोदेवसूरि जैतपुर पधारे उहां

जयंतसिंघजी चउहाणराजाके पुत्र अंधे होगये थे जयतसिंघजीनें गुरूसें वीनती करी तब गुरूनें जैनी श्रावक होणा कबूल कराके शासणदेवतासें एकदिनमें दिव्य नेत्र करवाये बंगदेवका बांगाणी गोत्र प्रसिद्ध भया ये यशोदेवसूरिः खरतर गछीयोंके बडेरे थे इसवास्ते मूलगछ खरतर बाद संवत् सोलेसेमें और २ संप्रदाय मानने लगे.

डागा.

गोढवाड देश गाम नाडोलमें चउहाण राजपूत डूंगरसिंघजीकूं पकडने वास्ते दिल्लीके बादसाहनें फोज भेजी कारण डूंगरसिंहजी पहली लडाईमें बहोतसेखान सुलतानकों मारडालाथा ये खबर डूंगजीकूं भई तब खरतर गछाचार्य दादासाहेब श्रीजिन कुशलसूरजीके शरणागत भये गुरूनें कहा जो तुम हमारे श्रावक बणो तो बादसाह तुमारे सामनें आकर अभी आजीजी करणे लगे डूंगरसिंहजी अपणे कुटुंबसमेत कुशलसूरि दादासाहबके श्रावक भये रातकों बादसाह अपणे महलमें सूतेकों दादासाहबनें वीरकों हुकम देकर उपासरेमें पिलंग समेत उठाकर बुलाया राव डूंगजी उहां बैठे थे चमत्कार देखणे बादसाह सूतेकों डूंगजीने जगाया बादसाह जागकर देखे तो कहांका कहांमें आगया तब डूंगजी बोले अहो दिल्लीतखतके मालक तुम तो हमकूं पकडणे फोज भेजी सो तो अभी इहां पहुचीही नहीं है और मेनें तो तुमें कैद करके मंगालिया है तब बादसाह पूछता है ये वस्तीको नसी है तुम कोण हो और मुझें केसें बुलाया तब डूंगजी बोले देख मेरे जागतीकला जागती जोत सद्गुरूका मेरे सिरपर हाथ है तूं मेरा क्या करसकता है बादसाह ऊठके गुरूमाहाराजके चरणोंमें अपणा ताज रखा और बोला अयपरवरदिगार खुदाई कुदरत तुमें मुबारक हैं मुझें क्या हुकम है गुरूनें कहा एक तो डूंगजीके परवारकों कमी करडी नजर नहीं देखणा दुसरे तेरे राज्यमें जैनधर्मवालोंपर कमी जुलमीपणा मुसलमीन नहीं करणे पावै और हमारे श्रावकोंकों हरव्यापार बादसाही फुरमाया जावै बादसाहनें अजब कुदरत देख सब करणा कबूल करा तब गुरूनें

कहा जा पिलंगपर बैठ आंख मूं चले उसी वखत दिल्लीदाखल कर दिया उस दिनसें सेवडोंकी कदमपोसी सब जात करणे लगी डूंगजीसें डागा गोत्र प्रसिद्ध भया राजाजीके राजाणी पूंजेजीसें पूंजाणी इनों डागाकी ओलाद जेसलमेरकेइवसे वो जेसलमेरिया वजणे लगे मूलगछ खरतर सं। विक्रमसंवत् १३८१ डागा गोत्र भया.

श्रीपति ढड्ढातिलोरा गोत्र.

विक्रमसंवत ११०१ में गोढवाड देश नाणावेडा नगरमें पाटण नगरका राजा सोलंखीराजपूत सिद्धराज जयसिंहके पुत्र गोविंदचंदको खरतर गछी श्रीजिनेश्वरसूरिः खरतर विरुद पाणेवालेनें धर्मतत्त्वका प्रतिबोध देकर जैनीमाहाजन बणाया गोविंदचंदका पुत्र तेलका व्यापार बहोत किया इससें बहोत धन कमाया तबसे श्रीपति गोत्रकूं तिलेरा साखासें लोक पुकारणे लगे तीसरी पीढी झांझण सीजी भये जिनोंनें संघ निकाल-कर सत्रुंजयकी यात्राकी इनोंकी ६ मी पीढी विमलसीजी भये जिनोंनें नाडोल फरड फलोधी नागोर बाहडमेर अजमेर इत्यादि क्षेत्रोंमें जगे २ जिनमंदिर कराकर प्रतिष्ठा कराई संवत विक्रम बारेसेमें इनोंके वंशमें भांडाजी भये जिनोनें जेसलमेर सिद्ध पुरपट्टण जालोर भीनमा-लमें शास्त्रसंग्रह कराणेमें ज्ञान भंडार कराणेमें द्रव्यकी बहोत मदत दी भांडाजीके पुत्र धर्मसीजीनें शाहपद हासिल किया सेत्रुंजय आबूगिरनार बणारस वगेरेमें प्रशाद कराया संघमाल पहनकर समेत सिखरकी यात्राकी सत्रुंजय गिरनार तारंगा वगेर हरजगेपर कलस सोनाका चढाया चोरासी यात्राकी संघमें मोहर २ लाहण चांदी मोतीयोंकी माला सोनं-हरी कल्पसूत्र मुनियोंके अर्पणकी, मुनियोंनें संघके भंडार सुप्रतकीया पृथ्वी परिक्रमादी तीनकरोड असरफिया खरचकर भंडारस्थापन करा बहोतसे मकान बणाये धर्मसी नांमकों धर्मकरणीसें अमर करदिया संवत् संवत् १२५६ मे अंबका देवी प्रशन्न होकर आमके वृक्ष नीचै धन बतलाया धर्मसीजीके नवमी पीढी कुमारपालजी भये उनोंनें सिद्धपुर पाटण छोड सिंधदेशमें निवास किया श्रीशांतिनाथजीका मंदिर सिंधमें

करवाया कुमारपालजीकै तीसरी पीढी वाढजी भये वे शरीरमें बडे लष्टपुष्ट दृढ मजबूत थे संवत १६१५ की सालमें सिंधदेशमें अपणी भाषामें इनोंकों ढड्ढा कहणे लगे संस्कृतमें (द्रढा) तबसें ढढानख प्रसिद्ध भया वाढजीकी चौथी पीढी, सच्चावदासजी भये उनोंकै पुत्र सारंगजीसे सारंगाणी ढड्ढा कहलाये सिंधदेश छोड नगरफलोधीमें बसणे लगे सारंगजीकै रुघनाथमलजी और नेतसीजी दोपुत्र भये नेतसीजीकै खेतसीजी आदि चार पुत्र भये इस जगे रुगनाथमलजीका परवारका नांम मिलणेसे लिखेगें नेतसीजीकै तीन पुत्रोंका परिवार भी बहुत भया मगर इहां खेतसीजीका परवारका पता पाया सो लिखते हैं खेतसीजीकै रतनसीजी तिलोकसीजी विमलसीजी करमसीजी एवं ४ पुत्र भये तिलोकसीजीनें हुलकरकों मददी और जो धन उस लडाईमें मिला उसका चोथा हिस्सा हुलकरनें तिलोकसीजीकों दिया क्रोडपती होगये बाकी तीन भायोंकी ओलाद बहुत है मगर तिलोकसीजीकै चार पुत्रोंकै नांम.

१ पदमसीजी	२ धर्मसीजी	३ अमरसीजी	४ टीकमसीजी
ज्ञानमलजी	रामचंदजी	नथमलजी	लालचंदजी
सदासुखजी	सागरचंदजी	सुजाणमलजी	गुणचंदजी
उदयमलजी	पुत्र २	पुत्र २	मंगलचंदजी
सोभागमलजी	लक्ष्मीचंजी गुला–समेरमलजी उद–		
कल्याणमलजी	बचंदजी एम एज–यमलजी		
	नरल सेक्रेटरीका चांदमलजी		
	न्फरस जैन.		

तिलोकसीजी बीकानेर बसे इन ४ पुत्रोंकी ओलाद बीकानेर तथा जैपुर अजमेर बसते हैं बाकी ढढे फलोधी आदि मारवाडमें सारंगजीकै पहलेका परिवार कच्छदेशमें दसावीसा होगये.

पीपाडा गोत्र.

गहलोतराजपूत पीपाड नगरका राजा करमचंदको वर्द्धमानसूरी नें सं। १०७२ प्रतिबोध करके माहाजन किया मूल गछ खरतर.

घोडावत छजलाणी गोत्र.

राजपूत रावत वीरसिंह जायलनगरका राजा उसकूं सिकार जाके अनेक जीवोंको मारणेका व्यसन एकवखत सिकार खेलणे गये विगर रहै नहीं एकदिन राजा सिकार करणे गया उसवखत नागोर नग्रसें विहार करके श्रीजयप्रभसूरिः रुद्रपल्ली खरतराचार्य जायलनगरके वनमें उतरे थे आचार्यनें कहा हेराजा निरापराधी जीवोंकों मारणा ये राजपूतोंका धर्म नहीं जो दुस्मन शस्त्र डालदे मूमे घासका तिणखा उठालेवै अथवा भगजावै तो खानदानी राजपूत न्यायवत एसे शत्रुकू कभी मारे नही तो हेराजा हिरण खरगोस बकरा वगेरे जानवर शस्त्र रहित नंगे घास मुमें डालणेवाले भागणेवाले निरापराधीयोंकूं तूं कैसें मारता है राजा न्यायवंत बुद्धीवालाथा पूर्वपुन्य जाग्रत भये और बोला हे परमपुरुष आज पीछे सिकारकर किसीभी जीवकूं मारणेका मुझें यावज्जीव त्याग है लेकिन् सीधामास मिलजाय उसके खाणेमें तो कुछ दोष नहीं तब गुरु बोले हे राजा मांस खाणेवाले नंही होय तो कसाई जीवोंकों किसवास्ते मारे वो उन खाणेवालोंके वास्ते मारता है इसवास्ते आधाकर्म लगे मनुस्मृतीमें आठ कसाई लिखे हैं तब राजा बोला जेसें हरीवनस्पतीके सागको गृहस्थ जब पका डालता है तो जैनके साधू उसें निर्दोष समझके ले लेते हैं इसीतरे ही किसी और राजपूतनें मास आपके वास्ते मारके राधा हो तो फेर तो वनस्पतीकी तरे खाणेमें दोष मुझें नहीं लगे गुरुनें कहा हे राजा वनसपती एकेंद्रीजीवचेतन प्रथम तो शस्त्र अग्नि और खारके स्पर्शसें ही निर्जीव अचित्त होजाता है तेसें मास अचित्त निर्जीव नही होता मांसके पिंडमें समय २ असक्षा जीव समुर्छिम पचेंद्री अग्निपर रंधते तथा फेर भी पैदा होते और मरते हैं इसतरै वो पचेंद्री एक जीव मरगया तो क्या भया लेकिन् असक्षाजीवोंकी हिंसा मासाहारीकूं लगती है महामल मूम सेडावीर्य खून चरबीका पिंड हे राजा मांस खाना मनुष्योंका धर्म नहीं विवेकी आदमी मुकाकर अपणे हाथसें वनसपतीतक

नहीं खाते हैं और सूकीवनस्पती कालांतरमें जीवाकुल होजाय तो नहीं खाते एकेंद्री वनस्पती वगेरे ५ थावर विगर मनुष्योंका जीवित नहीं रहसकता लेकिन् बे इंद्रीसें लेकर पंचेंद्रीतकके शरीरके पिंडकी मनुष्योंकों खाणे विगर कोइ हरजा नहीं पहुंचता बलके मांसके खाणेमें प्रत्यक्ष दर्श अवगुण है इत्यादि अनेक प्रश्नोत्तरसें राजा प्रतिबोध पाय जैनी महाजन भया उस बखत राजाकी कुलदेवी नवरतोंमें भैंसा बकरा बलिदान नहीं मिलणेसें उत्पात करणेलगी तब राजा गुरूसें कही गुरूनें विद्याबलसें देवींको बुलाई तब देवी बोली आज पीछे बलिदांन नहीं मांगूंगी तब राजानें विचारा ये देवीकी जो मूर्त्ती जायलनगरमें रहीतो न जाणे किसी वखत फेर भी इस देवीके लोक उपासक होय जीव हिंसा करणे नहीं लगजावे एसा विचार अपणे पुत्र छज्जुकुमारकूं हुकम दियाके जा ओ कुमार इस देवीकी मूर्त्तिकों जायलनगरके कूएमें जलशरण करदो छज्जुकुमार परम सम्यक्ती वैसाहि किया और अपणे पुत्र परिवारकों हुकम दियाके आज पीछे मेरे शंतान कभी कूंएकों झांखकै मत देखणा और न देवीकी पुजा करणी तबसें छजूजीके छजलाणी गोत्रवाले ये दोनों काम नहीं करते फेर इनोंका परिवार बहुत फैला जिसमें एक सेरसिंहनामका पुत्र नागोरनग्रमें घोडेका बडा सोखीन था उसकी ओलाद घोडावत कहलाये एकक्षातमें एसा भी लिखा है रावत वीरसिंह राजपूतोंमें गौडराजपूत थे इसवास्ते छजूजीके छजलाणी दुसरा पुत्र वैरीसालके गौडावत कहलाये जरूर जातके गौडही थे लोक घोडावत कहणे लगे प्रथम गछ रुद्रपल्ली खरतर वाद दुसरागछ संवत १५०० सेमें मांनने लगे छजुजीका बनाया भया एक कवित्त भी हमकूं याद है पिताके जीते बणाया है (नंदनकी नवरही वीसलकी वीसरही रावणकी सब रही पीछे पंछता ओगे, उततें न लाये आय इततें न चले साथ इतहीकी जोरी तोरी इतही गमाओगे, हेमचीर घोडा हाथी काहूके नचलै साथी

१ देखो हमारा बनाया भया वैद्यदीपक प्रथम तीसरा प्रकाश.

वाटकै वटाउ जैसे कलही उठ जाओगे, कहत है छजुकुमार सुण हो मायाके यार बंधी मुठी आये हो पसार हाथ जाओगे १) धन्य है राजऋद्धि भोगते भी चित्तमें कैसा वैराग्य था.

कठोतिया गोत्र.

जायल नग्रपास कठोती ग्रांममें अजमेरा ब्राह्मणकूं भगंदरका रोग था संवत् ११७६ में श्रीजिनदत्तसूरिः उसकूं मंत्रशक्तीसें आरामकर जैनमहाजन किया कठोतिया वजणेलगे गछखरतर.

भूतेडिया गोत्र.

संवत् विक्रम १०७९ सरसापत्तन जंगलदेसमें कछावाराजा दुर्जननसिंघके राज्यमें ब्राह्मन लोक वाममार्गी सो एक स्थानपर वदि चोदस आसोजकों देवी उपासीपणे कर मदिरा मांस लेगये इस मतकी वहोंतसी स्त्रियें उस जगे एकठी भई राजाके कोई तो प्रोहित था कोई कथा व्यास था कोई देरासरका मालक देरासरी था कोई दानाध्यक्ष था कोई जज्ञोपवीत देणेवाला गुरु था राजा अपणे महलके झरोखेमें वैठा संध्या करता था इतनेंमें इन एकेक ब्राह्मनोंकों अंधेरी रात्रीमें एकही दिसीकों जाते देखा राजानें अपणा प्रछन्न अदमी मेजा अदम्योंनें खबरदी गरीबपरवर ये सब ब्राह्मन आज काली चोदस है सो देवीकी पूजा करणे गये हैं इस वातकी खबर अपणे मतावलंबी वाम मार्गवाले विगर और किसीकूं ये बताते नहीं ये सुणकर राजा ये क्या करते हैं सो दिखाते नहीं इस वातकूं जाणने सय्यापालककूं कहा में किसी काम जाता हूं तूं में आउं जब दरवज्जा दरवानोंसे कहकर खुला दैणा राजा तलवार हाथमें लै गुपचुप उहां गया तो जंगलमें एकांत देवीका मंडप उसका दरवज्जा बंध मगर अंदर शब्द सुणाई दिया अब वो स्वरूप देखणेवास्ते पासमें एक उंचा वडका दरखत उसपर चढा उहां एक जोगी उसके पास सरापकी बोतलें धरी भई एक वडा पात्र जिसमें वडे पकोडे मांस पकाया भया सर्व एकत्र किया भया एक प्यालेमें मदिरा भरकर मंत्र बोलताथका प्रथम आप पीया

पीछे सबों ब्राह्मणादि देवी भक्तोंकों उसी प्यालेसें पिलाया पीछे एक स्त्रीकों नंगीकर उसका भग जलसें मदिरासें प्रक्षालकर सबकों चरणामृत दिया बाद वो कुंडेका नैवद्य भगपर चढा २ कर सबोंकों बाट दिया सो सबोंने खाया बाद एक घडेमें सब स्त्रियोंकी कंचुकी उस योगीनाथनें एक ठीकरके डालदिया फेर सबोंकों हुकम दिया जिसकै हाथ डालणेसें जिसकी कंचुकी जिसके हाथ लगे वो चाहे माता बहिन बेटी कोइ हो उससें रमण करै बाद मैथुनके वो गुरु वो देवीसें रमणकरै उस जोगीका और देवीका वीर्य जो निकलै उसकों एक पात्रमें लेकर पुष्पोंके बीच धरकै भजन गायन करै फेर वो वीर्य घी सहत मिलाके सब वाममार्गी चाटणे लगे इसतरे इनोंके चारमार्गी धूममार्गी १ बीजमार्गी २ कांचलिये ३ और कौल ४ इन चारोंका स्वरूप देखकर राजा हैरतमें रहगया राजा महलमें आया प्रभातसमें स्नानकर कोई तों भस्मी रुद्राख्य धारण करें पंचकेशी पांवोंमें खडाउ बगलमें मृगछाला पुस्तक कमंडल धारे भये ओंनमः सिवाय जपते भये ब्राह्मण पधारे कोई रामानंदी त्रिपुंडधारे तप्त मुद्रालिये भये कोई माधवाचारी तिलक किये कोई केसरकी आडंबर खेंचे कोई कुंकमका दो फाड तिलक कोई मूंछ मुंडाये लंबी एक लंग खुली धोती कुसाडाभविछा कर बैठणेवाले नाना रूपसें विप्रगण पधारै राजा उनोंकों देखते ही सुभटोंकों हुकम दिया जल्हादोंसें इन सब दुष्टोंकों मरवा दो इनोनें मेरा देशकूं कापट्यतासें डुबादिया बस उण सबोंको राजानें मरवा डाला वो प्राये शुभ कुछ अभिप्रायसें मरके भूत भये अब नगरीमें घरोंमें विष्ठा वरसावै पथर फेंकै इत्यादि बहोत उपद्रव करणे लगे राजा इस घातसें दुखी भया इस बखत तरुण प्रभसूरिः रुद्रपल्ली खरतराचार्य उस वनमें आये ये स्वरूप सुण राजा आया सब स्वरूप कहा गुरूनें कहा जो तूं जैनी श्रावक होय तो अभी उन सबोंकों बुलाता हूं राजानें कबूल करा गुरूनें जिनदत्तसूरिः दत्ताम्नाय विधिसें आकर्षण करतेंई भूत प्रगट भये गुरूनें कहा खबरदार आज पीछे एसा उपद्रव

मत करणा नहीं तो कीलन करताहूं भयसें सब भूत कबूल करकै अन्यत्र चले गये गुरूनें उस राजाका भूत तेडिया जात प्रसिद्ध करी लोक भूतेडिया कहणे लगे मूलगछ खरतर.

जडिया गोत्र.

सवालख देशनागोर मेडतेके पास उहां कुंमारीनगर यादव भाटी कुलधर राजा उसकै राणी ३२ परंतु पुत्र किसीकै भी नहीं उस चिंतामें राजा दिलगीर था इतनेमें श्रीजिनकुशलसूरिः दादासाहिबकै पाटोधर उहां पधारे तब दिवाननें कही आप चिंता छोंडके इन महाराजाके चरणका जल राणियोंकों पिलाओ इनोंकै गुरु दादासाहिब हाजरा हजूर है जिस करकै जरूर पुत्र होगा तब राजा बडी धूमधामसें गुरूकूं नगरमें पगमंडाकर चरण धोकर केसरादिक उत्तम अचित्त द्रव्यसें नव अंगकी पूजा देवमूर्त्तिकी तरे करी और वो चरणामृत ३२ ही राणियोंकूं भेजा और राणियोकूं कहला भेजा इस जलकों वांट २ कर पीजाओ इसमे २१ राणियां तो गुरु भक्तिसें पीगई ११ राणियोंनें सुज्ञा लाकर पिया नहीं २१ सोंकै पुत्र भया ११ रोंकै नहीं भया उस दिनसें खरतर गछकै सब श्रावक गुरूका माहान् अतिशय जाण पट्टधारियोंका चरण प्रक्षालनकर नव अंग पूजणे लगे, उसपर मोहर रुपिया वगेरे चढाणा बाद बादसा अकब्बरनें फुरमाण लिखकर सिंहसूरिःसें आम श्रावकोंसें सरू करवाया, खरतराचार्योनें द्रव्य लेणा नहीं चलाया, साहान साहनें ये रिवाज सरूकरी सो श्रावक लोक करते चले आये, अब तो श्रावकोंकों कुछ २ संकल्प विकल्पभी पैदा होता है मगर इतना खयाल नहीं करते प्रथम इन आचार्यों विगर तुम जैनधर्मकूं क्या जांणते दुसरा तुम सर्वोपर बादसाह हुमायूका जुलमका हुकम मुसलमांन बणाणेका था सो श्रीजिनचंद्रसूरिःन प्रगटते तो इकलाय लाय इल्लिला और महम्मदरसूलल्लाकै कलमासरीक होणा पडता और इनोंकै पहले लाखों अदमियोंकों बादसाहनें हिन्दुओंसें मुसलमीन करभीडालायाउस उपगारकों देखते द्रव्य कोई चीज

नहीं है पद्मसूरि माहाराजका चतुर्मास नागोर था तब राजा गुरुमहाराजाका झडोला २१ सोंई पुत्रोंके सिरपर रखा और गुरुपास लेकर आये गुरुनें कहा आवो बचे झडियाओ इधर आवो गुरूनें सबोंपर वासक्षेप किया वो जडिया गोत्र प्रगट भया इनों २१ सोंकी कैई २ न्यारे २ नख भी होगये सो लिखणे अवकास नहीं मूलगछ खरतर.

कांकरिया गोत्र.

ककरावत गांमका खेमटरावका पुत्र राव भीमसी पडिहार राजपूत चितोडके राणाके सामंत सो राणाजीका हुकम माने नहीं, नहीं नोकरीमें जाय राणेजीने तलबकिया मगर गया नहीं, तब राणेजीनें इसकों पकडणे फोज भेजी सं ११४२ में खरतर गच्छाचार्य श्रीजिनवल्लभसूरिः भाग्ययोग ककरागांममें पधारे राव भीमसी राणेजीके क्रोधका समाचार कहा गुरूनें कहा फोज इहां आयगी उसका प्रयत्नमें करदूंगा मगर तुम जैनी हमारे श्रावक बणो तो भीमसीनें श्रावक व्रत लियाँ तब गुरूनें कांकरे बहोतसें मंगवाये और उसपर दृष्टि पास किया और राव भीमकों कहा जिस वखत राणेजीकी फोज आवे उस वखत तोपोंपर बंदूकोंपर तलवार वगेरे शस्त्रोंपर राणेजीकी फोजपर हाल देणा सो सब शक्तिहीण हो जाय गें और में मासकल्प इहां धर्मध्यान करूंगा फोज आणेसें किसी अपणे विश्वासी ब्राह्मण पोकरणेकूं देकर वो कांकरे हर शस्त्र अस्त्र फोजीलोकोंपर डलवाये असलमे तोप बंदूक सब छूटणेसे रहगये तरवारसें एक पत्ताभी कटे नहीं तब निरास होकर फोजके लोक राणेजीकूं लिखा राणाजीनें अचरजमें आकर सातगुनामाफ तुमारी नोकरी माफ तुमारे हमारे बीच परमेश्वर है इत्यादि खातरीसें खास रुकालिखा. तब राव भीमसिंह गुरूकी आज्ञा मांग चितोडगया राणेजीनें सत्कार किया सब हाल पूछा तब राव भीम बोला गुरू श्रीजिनवल्लभसूरिःका कांकरिया करामाती है मेरे में तो अकडाई है उसदिनसें ककरावत गांमसें कांकेरके मंत्र अतियसें कांकरिया गोत्र भया मूलगछ खरतर.

आवेडा तथा खटोल गोत्र.

मारवाड गांमखाटूका चउहाण राजपूत अडपायतसिंघ १ बुधसिंह २ संवत १२०१ में श्रीजिनदत्तसूरिः लक्ष्मीकामना पूर्णकर जैनी किया अडपायतरा आवेडा बुधसिंहरे पुत्र खांटडसुंखटेड भया मूलगछ खरतर सं । १५८७ में केइ २ इन वंसवाला और गछमें गया.

खेतसी पगारिया मेडतवाल.

पमार राजपूतोंका गुरु शंकरदास ब्राह्मण सनाढ्य सं ११११ में श्रीअभयदेवसूरिःका उपदेश सुण भीनमाल नगरमें शिवधर्म त्याग जैनधर्मी भया अभय देवसूरिःकों मलधार विरुद था इस वास्ते मूलगछ खरतर बाद ओर गछमें केइ २ गये.

श्रीश्रीमाल.

श्रीदिल्लीनगरमें श्रीमंत साह श्रीमल्ल महतियाण जात पेडपमार बादसाहके खजानेके मालिक थे बादसाह श्रीमल्लसाहसें धर्मके बाबत हमेस ठठा करता था तुमारे साहजी इमान तो जगेपर है ही नहीं ब्रह्मादेव विष्णुदेव महादेव देवी सूर्य अग्नि पाणी गणेश इस बजे अगर गिणावे तो साहजी लाखसें कम नांम नहोंगें तब कहो इमान कहां रहै शास्त्र तुमारे पुराण एसे हैं सो ठोड न ठिकाणा एक पुराणकी बात दुसरे पुराणसें गलत है सो तुम जांणतेई हो मेनें एकदिन जिनचंदसूरिःसेवडेसें धूर्ताख्यान हरिभद्रसूरिःका बनाया सुणा था सो तुमारे पुराणोंमें ठगाई और पागलके बनायेसे मालम देते हैं गुरु तुमारे भोजन भट्ट आजीविका करणेमें हुसियार तुलछीकों माता कहै और चाब जावै सालगराम गंडकी नदीकै पत्थरकों ठाकुर कहै और काती सुदि इग्यारसकों वेटाजी, तुलछीमा, सालगबापका, व्याह अपणे हाथ करै हमारे खानसलेमनें कहाथाकीलाबेवादी एसानर, सो पीर बधरची मिस्तीखर, सो तो बंभण तुमारे गुरूकों हीं देखके कहा था, नीचसे-नीच जातका दान लेलेता है छोकरें खिलाता पाणी पिलाता बोझा उठाता संदेसा जाता सईसी कोंचवाणी एसा काम कोणसा है

सो तुमारे गुरू नहीं करते हैं उडियादेस जगन्नाथ तीर्थमें पंजाब कास्मीरमें बंगालमें वगेरोंके बंभण मछी बकरा सब गोस्त खाते हैं वेद तुमारा एसा है जिसकों तुम खुदाका कहा भया मांनते हो उसमें किस जानवरकों मारके खाणा अंगारमें होमके नहीं बतलाया छी छी जरूर इस बखतके मुसलमांन गोस्त खाते हैं मगर ये नहीं कहते हैं के खुदाका हुकम है बलके कुरानकी रूसे जानका मारणेवाला गुनेगार है, देखो वेदमें लिखा है चारोंवर्ण वालोंका बेटीका दामाद घरपर आवे तब पहली मधुपर्क करणा यानें गऊकों जबै करणी फेर वो गोस्त उबालके सब घरवालोंनें मिजमानी करणी साहजी मुसलमीनोंकों क्यों बुरा कहते हो हाथ लगजाय तो सिनान करते हो मुसलमीन जाजमपर बैठजाय तो जल नहीं पीते हो जेसे तुमारे बंभण वेदका मंत्र पढके छुरियोंसें यागलाघोटके घोडा बकरा हिरणोंकों अंगारके कुंडमें हवन कर खाते स्वर्ग मांनते हैं एसा हमारे भी काजीपाजी बिसमिला कहकै जानवरोंकी गरदन काटते हैं जेसा वेदका मंत्र वेसा हमारे मजहबका विसमिल्लाह अरब्बी मंत्र कुरानी है इसतरे हमेस बादसाह ताना दिया करे श्रीमलजी मुंहता इसबातकों हमेस विचारे और पुस्तकोंकों देखे तो बादसाहके वचन सच मालम दे एकदिन बादसाहनें कहा देखो साहश्रीमल्ल तुमारे सब देव एची थे जिनोंसें तुम तिरणा चाहते हो भागवतके दुसरेस्कंध तुमारे ब्रह्माजीनें सराप पीकर अपणी बेटी सरस्वतीसें जना किया तोभा २ जिसके बनाये वेद और उसकी ओलाद ब्राह्मन जो कुछ करै सो खूबी है इस वखतमें खबर निवेसी खबरदी हजूर आपना जिनचंदसूरसेबडा आया है बादसाह श्रीमल्लकों लेकर सामनें गया आदाब अरज बजाकर सामने बैठा गुरूनें देवतत्व गुरुतत्व और धर्मतत्वका स्वरूप धर्मोपदेश दिया बादसाहनें मांस खाना त्यागकरा श्रीमल्लसाह प्रतिबोध पाय निदोर्षित जैनधर्मका श्रावक भया बादसाहनें कहा अहो श्रीमल्ल अब तेरा जन्म सुधरा में इसधर्मकों अछीतरे जांणता हूं मगर इसधर्मके कायदे करडे महोत खुदामें मिलजाणे

वास्ते दुनियांमें ये एकही मजहब है बादसाह उसदिनसें अंबाडी मोरछल चमर छत्र बगसीसकर राजाश्री श्रीमल्ल लिखकर कुरबहाथीनिवेश और ताजीमदी तुमारी ओलाद सदाके लिये पांवोंमे सोनापहर सकती है इसकी ओलाद श्री श्रीमाल कहलाये भाईपाइनोंका श्रीमालोंसे रहा सादी मिजमानी श्रीमाल ओसवाल दोनोंसे कोई ख्यातमें लिखा है श्रीमालोंमें महतियाण गोत्र जो है सोही श्री श्रीमाल पदवी पाई है धर्म पहले शैव विष्णु सबोंका हो रहाथा मूल गुरु खरतर गछ है.

बावेल संघवी.

चउहाणराजा बावेल नग्रका रणधीर रगतपित्त के रोगसे दुखी केइ वैद्योंसें इलाज करवाया आराम नहीं भया संवत तेरे ७१ की सालमें श्रीजिन कुशलसूरिःजीके गुरु श्रीजिनचंद्रसूरिः उहां पधारे राजा वांदणे आया राजाका वदन जगे जगेसें फूट गया गुरूनें कहा हमारा श्रावक होय तो आराम होजाता है राजानें कबूल करा रातकों चक्रेश्वरी देवी आराधन करी देवीनें संरोहणी औषधी दी प्रभातसमें गुरूनें पेटमें पिलाई और ऊपर भी लगाई सातदिनसें कंचन काया होगई बावेल-नग्रसें बावेल कहलाये इस वखत वो गांम बापेउवजताहै मूलगछ खरतर फैर सत्रुंजयका सिंघ निकाला वो बावेल संघवी• वजते हैं ये संघवी दुसरे हैं संघवी और कोठारी वहोज जातमें है.

गडवाणी भडगतिया.

गडवा राठोड अजमेर परगणे गाम भखरीमें श्रीजिनदत्तसूरिःप्रतिवोध देकर धनकामना पूर्णकरी गडवेजीसुंगडवाणी मस्करी करणेसें भडक उठ्या जिसवास्ते पूरसिंघजीनें लोक भडगतिया कहणे लगा.

सवालख देशमें सोढारजपूत सवासै घर रूणगांममें रहते हैं उनोंका मुख्य ठाकुर वेगाजी उनोंके पुत्र नहीं और क्षीणताकी वेमारी अकस्मात् श्रीजिनदत्तसूरिः सवालख देशमें विचरते २ पधारे सोढे रजपूत सब गये और ठाकुरकी हकीगत कही गुरु बोले खीणता मिट जायगी जो तुम सब जैनधर्मी हमारे श्रावक होजाओ तो इनोंनें ठाकुर वेगाकूं

कही उसी वखत सपरिवार आके मिथ्यात्व त्याग जिनधर्मी भये रूण-गांमके नामसें रूणवाल गोत्र भया गुरूनें वेगेजीकों उपसर्ग हरस्तोत्रका कल्पसाधन बताया दूध घृत चावल मिश्रीकी क्षीर खाकर एक वखत,अरण्यवास एकांत ध्यान सवालक्ष करणा बतलाया गुरु विहारकर गये सं १२१० में रूणवाल गोत्र भया ६ महीना साधनासें एक महिप जितना बली होगये गुरुदेव संवत १२११ में अजमेरमें देवलोक भये तब गुरुमाहाराजके भक्त जो विमानक वासी देव भये थे उनोंनें आकर सर्व खरतर गछके संघकों कहा गुरुदेव सौधर्मदेव लोकमें चार पल्यकी आयूसें टक विमांनमें देवता भये हैं तब संघनें पूछा श्रीमंधरस्वामीसें पूछके निश्चय करदो गुरुमहाराज कितने भवसें मुक्ति सिधायंगें तब वो देवता महाविदेह पुंडरीकणी नगरीमें श्रीसीमंधर भगवानकूं वंदन स्तवनकर खडा रहा तब श्रीमंधर जिनेश्वरने दो गाथा कही वो गाथा गुर्व्वावली तथा गणधर पदवृत्ति प्रमुख ग्रंथोंमें दरज है परमार्थ उसका एसा है टक विमानसें च्यवके तुमारे गुरु महाविदेह क्षेत्रमें श्रीमंतकुलमें जन्मलेकर एक भवावतारी उहांसे दीक्षाले कैवलज्ञान प्राप्तकर मोक्ष होंयगे वो देवता इहां सर्व खरतर संघको वो गाथा श्रीमंधरस्वामीकी कही कह सुणाई तब सर्व संघनें जगे २ गांम २ नग्र २ में गुरूकी चरण थापनाकर पूजणे लगे धर्मदाता सम्यक्त व्रत देणेके उपगारी जिनोंने लाखों जीवोंकों जिनधर्म देकर तारदिया इनोंके पाटमणिधारी श्रीजिनचंद्रसूरिः विराजे वो गुरु रूण पधारे तब वेगे जी पुत्रकी आजीजी करी गुरूनें क्षेत्रपालसें पूछा खोडिये क्षेत्रपालनें जो विधि कही, चक्रेस्वरी देवीकी पूजा बतलाई चेतसुदि आसोजसुदि अष्टमीकी नारेल चढाकर लपसीका नैवद्य करणेसें पुत्र होगा वेगेजीके ४ पुत्र भये दो पुत्रकी ओलाद नागोरमें सं १५७७ में लोढा तपगछीयोंकी बेटी व्याही थी पार्श्वचंदसूरिनें

उस संप्रदायकूं मांनणे लगी गुरु खरतरकों भी मांनते हैं मूलगछ खरतर बीकानेर वगेरोंमें वसते हैं.

पोकरणा गोत्र.

गांम हरसोरका राठोड सकतसिंह अपणेपरवारसमेत पुष्कर तीर्थका मैलापर स्नान करणेकूं पधारे उहां एक स्त्री जिसके ४ छोटे २ पुत्र और उसके सगा संबंधी कोई भी नहीं वो विधवास्त्री अपणे ४ पुत्रोंकों कुछ खाणेकूं देकर घाटपर बिठाके स्नानकरणे लगी इतनेमें गोह आके उस स्त्रीके पावोंमें तंतु डाला वो स्त्री पुकारी इतनेमें खरतर गछके श्रीजिनदत्तसूरिः माहराजका शिष्य देवगणिः दिसाफरागत जाके अकस्मात् आ निकले सकतसिंह बोला अरे दोडोरे दोडो कोई नहीं गिरा सकतसिंह दया लाकर उस स्त्रीकों पकडणे कूदा इतनेमें गोहने इनकों भी तंतुसें खेंचा तब देवगणिः जल निस्तारणी अमोघ विद्या- स्मरण कर कहा में मेरा श्रावक जाण बचाता हूं तत्काल एसा अचरज भयाके मानो हाथ पकडके कोई निकालता होय दोनोंकों घाटपर लाके खडाकर दिया हजारों आलमये चमत्कार देख देवगणिःके चरण पकडे सकतसिंह चरण पकड बोला गुरु आप न होते तो में तो आज इस जीवका भक्ष होगया था धिक है एसे धर्मकों चलाणे वालेकों सोहजारों सुक्ष्म और बडे जीवोंका घात आत्माका घात एसा नदी कूंड तलावोंमें प्रवेशकर स्नानधर्म बतलाया अब आप जेसा मुझे जीवतव्य दिया है एसामें ऋण मुक्त होजाउं एसा करो तब देवगणि बोले है महाभाग मेरे गुरु अजमेरमे है सो कल इहां पधारेगें चोमासा आज उतर गया है दुसरेदिन गुरु पधारे धर्म सुणके ४ पुत्र उस माहेश्वरीके मातासमेत और सक्तसिंहसह कुटम्ब जैन महाजन भया मूलगछ खरतर पुष्करसे पोकरणा कहलाये.

अथ कोचर गोत्र.

पृथ्वी अनादि श्रेष्ठी अनादि छद्रव्य अनादि द्रव्यगुण नित्य, पर्याय अनित्य उत्सर्पणी कालवर्त्तकर अवसर्प्पणीवर्त्ते एसे अनंता कालचक्र-

वीता और वीतेगा श्रीआदीश्वर भगवानसें जैनधर्म चला आदीश्वके संग ४ हजार राजवियोंनें दीक्षाली उनोंसें भूख नहीं सही गई तब वनमें जाकर ऋषभदेवका एक हजार ८ नांम बणाकर गंगाकी तटपर आदिब्रह्मा आदियोगी आदिशिव आदिविष्णु आदिबुद्ध पुरसोतम जगत्कर्त्ता इत्यादिस्तवन करते फल फूल खाते गंगाका जल पीते दरखतोंकी छाल औढते विछाते तीनसे तेसठ मत उनोंसे चला वल्कल चीरी तापस कहलाये ऋषभदेवके पोते मरीची पहले तो जैनदीक्षाली जब क्रिया लोच वगेरे नहीं करसका तब सुखदाई दंडीका भेष बणाया इसका चेला कपिल कपिलका आसुरी आसुरीकों कपिलदेव ब्रह्मदेव लोकमें देवता भयेबाद प्रकृति १ और पुरुष २ सें २५ तत्वसृष्टीका अनादिपना सिद्ध किया इसके शिष्योंकी संप्रदायमें शंख आचार्यसें सांक्षमत प्रसिद्ध भया भरतचक्रवर्त्तनें इंद्रके कहणेसें वारे व्रतधारी श्रावकोकों भोजन कराया वो भरतराजाकी भक्तीसे माहन कहलाये संस्कृतमें माहन प्राकृतशब्दका (ब्राह्मन) मतहण यानें ब्रह्मकों पहचान यथांराजा तथाप्रजा छखंडके लोकमाहनोंकों भोजन वस्त्रादिसें सत्कार करणे लगे विद्यामाहण लोकोंके वालक पढणे लगे तब भरतचक्रवर्त्तनें इनोंकों पढाणे ऋषभदेव ४ मुखसें समवरणमें देसना देणेवाले आदि ब्रह्माके वचनानुसार यह स्वधर्मका स्वरूप त्याग व्रतका स्वरूप छद्रव्य, नवतत्वका स्वरूप, स्याद्वाद न्याय, गृहस्थके उपनयन सोले संस्कार वगेरे,अनेक भावमिश्रित जिनयजनका स्वरूप रूप,चार आर्यवेद रचकर, संसार दर्शनवेद१संस्थापन परामर्शन वेद२ विद्या प्रबोधवेद३तत्वा व बोध-वेद४पाठशाला में पढाणे लगे६महीनेसें परीक्षा अनुयोग होणेपर विद्या मुजब इनाम पारितोषक देणेलगा और गृहस्थोंके माननीय७२कला जो ऋषभदे-वनें दुनियांके सुखजीवनके लिये ग्रंथ वणाकर प्रजाकूं सिखाया था सो सब ग्रंथपर हक्क चक्रवर्त्तनें माहणोंकों सोंपा सोले संस्कार गृहस्थोंके जन्मसे लेकर मरणपर्यंत गृहस्थोंका करवाणा माहनोंके हवाले किया इनोंमेंसें वैराग्य पाय बहोत माहणलोक ऋषभदेव पास दीक्षा लेलेकर

जगे २ साधू होते रहे गृहस्थधर्ममें त्रिकाल श्रीजिनमूर्त्तिका अष्ट द्रव्यसें नानाप्रकारसे याग (पूजा) करते साधुओंका वंदन व्याख्यान सुणना ..त पचखाण ५ अनुव्रत ३ गुणव्रत ४ शिक्षाव्रत पर्व्व तिथीमें पोसह करणा से पोसह करणा माहण प्रसिद्ध भये जिनोंकी आज्ञासें माहण लोक प्रवर्त्ते उपाधान आवश्यकादि षट्कर्म करै उन २ अत्यंत उत्कृष्ट ..ानवंत माहणोंकों चक्रवर्त्तनें आचार्यपद दिया जो वेद आवश्यकादि सूत्रोंके अध्यापक उनोंकों उवझाय (यानें उपाध्याय) पद दिया जो आचारज ओझा अपभ्रंस शब्दोंसें पुकारे जाते हैं एकदिन भगवान कैलासपर समवसरै भरत बांदणेकूं गया और माहणवंश स्थापन करणेकी वधाई सुणाउं इस अभिप्रायकों भगवांननें फुरमाया हेराजा जो उत्कृष्ट श्रावक माहण नांमसें तेनें स्थापन करा है वो सब नवमें भगवान सुविधि नाथ निर्वाणतक तो जैनधर्मी रहेंगें बाद जैन-तीर्थके साधू बिलकुल विछेद हो जांयगें तब ये माहण लोक तेरे बनाये सम्यक्क श्रुत ४ वेदोंमें अपणी पूजा प्रतिष्ठा वधाणेकूं सर्वदेवोंकै देव माहण है इत्यादि आजीविका जमाग श्रुतियां बणा २ करडालेंगें और क्रम २ सें जैनधर्मकै द्वेषीपणे कर अनेक मतोंकै विश्वकर्मा वण वैठैंगें सर्व ग्रंथोंमे क्रम २ सें मिथ्यात्व भरते जायगें आगे इनोंमें याज्ञवल्क्य पैदा होगा सो यथार्थ वेदकूं त्यागकै नई कल्पनाकर याज्ञ-वल्क हो वाच ·इत्यादि अपणे नामका वेद श्रुति जिसका नाम ही परावर्त्तन करेगा फैर पर्वत और राजा वसुकै समय यज्ञ सब्दमें हलते चलते जीवोंकूं हवन करणा मांस खाणा वेदका धर्म पर्वत करेगा भावी प्रबल है होणहार टलेगा नहीं चक्रवर्त्त बहोत पछताणे लगा फैर बोला हे प्रभु मेंने तो अछा काम धर्मजात थापन करीहै आगे जो करेगा सो भरेगा इसतरे ही भया इस वेदमें हिंसा क्यों कर डाले गई सो स्वरूप आठमें नारदनें रावणसें कही है ये सब अधिकार जैनरामायणमें लिखा है इसतरे आर्य वेदकी केइ २ श्रुतिवेदोंमें रहगई बाकी सब मांसाहारि माहणोंने वेदको नष्ट भ्रष्ट करडाला वो श्रुतियां जंगलमें

रहणेवाले ब्राह्मनोंको सुदी २ याद थी सो व्यासनें एकठी करी इस-वास्ते उसकों ब्राह्मन वेदव्यास कहणे लगे प्रथम संज्ञा वेद की तीनहीं करी ऋग् १ यजु २ और साम ३ फेर इनमेंसें उद्धारकर चौथा अथर्वण बनाया इसतरे ४ इनोंमें परमार्थकी बात बिलकुल दोसे चारसे श्लोक संख्या होय तो ताजब नहीं बाकी यूं जज्ञशाला बणाणा यूं घोडेकों बांधणा यूं फरसीसे काटणा यूं अग्निमें पकाणा यूं फलाणेकूं हिस्सा देणा मातामेध पितामेध अश्वमेध गउमेध छागमेध फलाणे देवताकूं इसतरे यज्ञकर तृप्तकरणा सोत्रामणी यज्ञकर मदिरा पीणा इत्यादि अधिकार ही भरा है इतिहास तिमर नासक मुंनसी नवलकिसोरजीके इहां छपा उसका तीसरा प्रकाश देखो वेदोंके भाष्यकार संस्कृत कायदेसें वेदकी श्रुतियोंमें विरुद्धता देखकर आपस्वात् एसी समाधानी करते हैं इसतरे वैदका हाल डाकदर मेक्षमूलर संस्कृत साहित्य ग्रंथमें लिखता है वेदके मंत्रभाग बणेको ३१ सोवर्ष और छंदी भाग बणेकों २९ ससै वर्ष सावत करता है दुसरी वार वैद फेर लिंखणेका समय विक्रमसंवत् तीनसेमें मुंनसीजिया लाल अग्रवाल फरुख नगरवाला सिद्ध करता है और पुराणोंका बणाणा विक्रमसंवत सातसेमें उक्त पुरुष सिद्ध करता है ये अदमी भी बडा खोजी नररत्न है पहले इनोंका वंश वैदमतकाथा इनोके पिता श्वेतांबर जैन भये अभी ये दिगांबरी जैन अछे गृहस्थ सुणणेमें आते हैं कोचर वंशोत्पत्तीमें ये बात इसवास्ते लिखी है कै कोचर वंसके बडेरे पहली तो जैनधर्मी थे बाद फैर वैदमतमें होगये बाद फेर जैनराजा रहे बाद सुजाण कवर परम जैनधर्मी राजाके ७२ सामंत परम जैनधर्मी थे जिसका फेर इन ७३ पुरुषोंकों माहेश्वरी होणा पडा सो वृत्तांत इहां थोडा लिखते हैं जैन इतिहास मुजब.

खंडप्रस्थनगर जो अब मालवदेशकी सीमापर खंडेला बजता है खंडेल राजा परम जैनधर्मी था गुरु इनके दिगंबर जैनये गुरुमाहाराज भट्टारक जीसें पूछी मेरे पुत्र नहीं सो स्वामी क्या करणा भट्टारकजी

घोले चैत्यालयमें नानाविध पूजन करा अतिथि भिक्षुकोंकों दान दे साधर्मी वात्सल्यता कर तब सम्यक्ती देव प्रसन्न होकर तेरी कामना होणी है तो पूर्ण करेगा राजाने अपणे राज्यमें वेसाही कृत्य कराणा सरू करा १२ महीना पूर्ण होणेसें चक्रेश्वरी देवीनें आकासवाणी करीके हे राजा पुत्र तो तेरे होगो और दयावंत दातार भी शूरवीर भी होगो परंतु ब्राह्मन मिथ्यात्वी वाकूं धोखा देकर मिथ्यात्वी और भिक्षारी करदेगें ब्राह्मण यज्ञथंम जहां रोपते हैं उस थंभके नीचे अर्हंतकी मूर्ति गाड देते हैं जिससें कोई दयाधर्मी देवी देवता यज्ञकों विद्वंस नहीं करै इसवास्ते सम्यक्ती देवतो उस यज्ञके पास ही नहीं फुरकते हैं एसा कह अंतर्ध्यान भई पुत्र भया सुजाणकंवर नांमदिया संपूर्ण ७२ कला सीखकै हुसियार भया नवतत्व स्याद्वाद न्याय पढा पिताने पुत्रकों कहा हे पुत्र अपणे सुभटोकों भेज २ कर कहांई भी हिंसक यँज्ञमत होणे देणा लेकिन् तें खुद यज्ञ होता होय उहां मत जाणा एसी शिक्षा देकर राज्यतिलक देकर आप अणसण आराधकर स्वर्गवास भया अब राजा सुजाणसिंह जिनेंद्र देवके गांम २ में मंदिर पूजा धर्मध्यान करता जैनमुनिः जैनसाधर्मियोंकी भक्ती करता दयावंत कहांई भी जीवकों कोइ मारणे नहीं पावै एसी उदघोषणा कराता थका सुखसे सामायक प्रतिक्रमण पोसह दानशील तपभावनांमें लीन अपणे सामंतोंकों भेज २ कर जगे २ हिंसक यज्ञ ब्राह्मणोंका बंधकर दिया जैनधर्म श्वेतांबर और दिगांबर दोनोंकों समतुल्य गिणता भया जैन ब्राह्मणोंकों लाखों क्रोडोंका द्रव्य देता थका हिंसकजीवोंकों सजा दैता थका वेदकी हिंसा जगे २ बंध करवादी तीन दिसामें दयाधर्म सर्वत्र फैलादिया उत्तरा खंडमें म्लेछ मांसाहारीयोंकी वस्ती गुणपचास वडी राजधानीयोंमें म्लेछोंहीकी वस्ती समझ इसदिसामें धर्मोपदेश नहीं करवाया अब इस समयमें मांसाहारी ब्राह्मनोंकूं मांस मिलणा मुसकल होगया पहले तो देवतोंके नामसें यज्ञके वाहनेसें घोडे बकरेका मांस मिलजाता था तब कस्मीरदेशमें ब्राह्मनोंनें गुप्त सभा वेदधर्मी मांसाहारीयोंकी

सुजाणसिंहके डरसें एकठी करी उहां एसा भाषण किया ईश्वरका कहा भया वेद उसका जो कर्मकांड अश्वहवन गउहवन मधुपर्क वगेरे पाखंड नास्तिकमती बोद्ध जैनोनें बंधकर दिया पुरोडासा यज्ञकी मांस प्रसादी देवता पितर ब्राह्मनोंकों जो मिलता था सो सब बंधकर दिया इसवास्ते एसा कोई उपाय होणा चहिये सो यज्ञ पीछा सरू होजाय तब पांच ऋषियोंनें इस बातका प्रचार करणा कबूल करा और मनमें पांचों जणे दाय उपाय सोचते मरु धरमें आये उहां इनोंकों ४ चार राजपूत मिले जिनोंकों सुजाणकवरनें नोकरी जागीर सें बे तरफ कर निकाल दिये थे वो चारों आबूगिर राजकी तळहटीमें पांचो ऋषियोंकों मिले उनोंनें अपणा २ दुख उन ब्राह्मणोंसें कहा बस ब्राह्मणोंको भुखोंकों भोजन जाणे मिला विचार किया ये ४ उस सुजाणसिंहके घरके भेद्र हैं अपणा मनोरथ इनोंसें सिद्ध होजायगा एसा विचारके बोले तुम हमारे कहे मुजब करो तो राज्यपति राजाधिराज बणजाओगे उनोंनें कहा हे ऋषियों अंधोंकूं तो आंखही चहिये हैं हम इसी आसामें फिर रहे हैं वो चारों इनोंके संग होगये आबूपर जाके इनोंकूं कहा हम यज्ञ करते हैं तुम जीते जानवरोंकों पकड लाओ यद्यपि धर्म उनोंका जैन था मगर राज्यका और धनका लालची क्या क्या अकृत्य नहीं करता वो चारों जंगली भीलोसें मिले और उनोंके हाथसें तरे २ के जानवर पकड मंगाये उहां ब्राह्मनोंनें अनल कुंड बणाया और उन जीवोंकों हवन करणा सरूकरा तब वो राजपूत घभराये ब्राह्मणोंनें कहा हे राजपूतों वेदमंत्रोंसें जो देवता इंद्र वरुण नक्त पूषा वगेरेकों बलि दीजाती है इन जीवोंकी हिंसा नहीं होती ये जीव और करणे कराणे वाले यज्ञके सब स्वर्ग जाते हैं बडा पुन्य होता है अब उनके दिलका खटका दूरकर ऋषियोंने मांस आप भी खाया उनोंकों भी खिलाया पहाडके वासिंदेभील भैणोंकों भी खिलाया अब वोभीलमेंणे इनोंके हुकम बरदार भये ब्राह्मणोंनें कहा हम जोछल करेंगें सो तुम सुणो हम एक ऋषीकों माहादेव बणायगें एक भीलणीकों पार्वती और आबू

पहाडसें एसी २ औषधी लाई जायगी सो उसका धूवां लगतेही अदमीवेहोसहोजायगा तुम लोक भीलमेणोकों संगलिये यज्ञ स्थानकै आसपास रहणा और एक आदमी भेजकै सुजाण सिंहकों कहला भेजणा हे राजा तुमनें तो सारे आर्यावर्त्तमें यज्ञ होणा बंध करवाया मगर ब्राह्मण तो मालवदेश खंडप्रस्थ नगरकै पासही जीवहवनरूप यज्ञ सरू करादै, सो जब यज्ञविध्वंस करणे आयगा तब हम उनोंकों जहरका धूम्रप्रयोगकर अचेतकर देकर भाग जांयगें तुम लोक उस वखत खंड प्रस्थका राज्य लेकर चार भाग करलैणा और ब्राह्मणोंकी भक्ती राजसूयादि यज्ञ करणा ब्राह्मनोंकों ईश्वर समझणा उनोंको यथार्थ ये वात पसंद भई वसवेसाही भया वो सब ७२ राजायुक्त विषधूम्रसें अचेत भये जेसा क्लोराफामसें होता है उनोंनें राज्य दावलिया ब्राह्मन भागकर एक योगीकों वहिलपर सवार कर एक औरतको संग लिये उनोंके पास पहूंचे थंडापाणी छिडककर उस मूर्छाका उतार करणे ठंढे पदार्थ कर्पूर वगेरे जो वो विप्रलोक जानेतेथे सो करवाया वो जोगी बैलपर चढा भस्मी लगाया गलेमें सांप अदम्योंके खोपरियोंकी माला पहना खडा रहा इतनेमें मूर्छारहित उठे शस्त्र इनोंका ब्राह्मणोंनें पहलेहीसें उठा लियाथा ब्राह्मन लोक बोले अरे ये महेश्वर शिव पार्वतीनें तुमकों सचेतन किया है तुम सब ब्राह्मनोंकै यज्ञविध्वंस करणेको आये तब दिया जो श्राप उससे तुम पत्थर होगयेथे अब तुम महेश्वरकी उपासना करो इतनेमें एक आदमीनें खबर दीकै खंड प्रस्थमें ४ पुरुष राज्याधिकारी होगये तब ब्राह्मणोंनें सुजाण सिंहकों कहा अरे अरे तूं मृत्यु नींदसे जागा तब जागानाम प्रगटा तब ब्राह्मन अपणी २ ग्रतउनोपर लगाई वो सब माहेश्वरी कहलाये इन ब्राह्मनोंनें अपणे वेद धर्मपर अपणे पंजेमें गंठेवाद इनोंकी स्त्रियें बाल बच्चे और कुछ २ व्यापार करणे लायक धन उन ४ राजपूत राजोंसें दिलाया जहां ये महेश्वरी जात भई उस नगरीका नाम महेश्वर धराबो· चोली महेसर मालवदेसमें है सुजाणसिंह पर ब्राह्मणोंका द्वेष था तब ब्राम्हन बोले अरे भिक्षुक तूं इनोकी

पीढियां गुणकीर्त्तन कर मांगखा सो इन महोंत्तरोंका भाट भया विचारा करैक्या परवस पडे लगे नहीं कारी ये सब उहां मालवदेससें ऊठके मारवाडडीडवाणेमें आयवसे वो सचमाहेश्वरी डीडूवणिये कहलाये.

इन माहेश्वरियोंमें जोगदेव पमारके वेटेभी माहेश्वरी डीडू होगयेथे सो केइ पीढियोंतक माहेश्वरही रहे ये वातका पूरा संवत तो हाथ लगा नहीं है मगर विक्रम संवत् सातसेकाजमाना संभव है वो चार राजपूत पमार १ चौहाण २ पडिहार ३ सोलंखी ४ इस जातके थे अव्वल तो सुजाणके नोकर थे कर्मवस राजाका तो जागा भाट भया और नोकर सो ठाकुरभये अब ब्राह्मन लोक इन महेश्वरियोंकों कहणे लगे तुम यज्ञ कराओ और यज्ञका भाग पुरोडासा मांसखाओ तब ये राजपूत जैनधर्मापणे दयाके भीजे भया अंतरंगवोला हे ब्राह्मनों ये अकृत्यतो हमसें नहीं होगा तुमकों गुरु माना, महेश्वर देवभी पूजा, मगर ये काम तो मरजायगें तोभी नहीं करेगें तब ब्राह्मन मरणे परणे दानदापालेणा इनोंसें ठहराया क्रम २ सें इनोंकी ओलाद ब्राह्मण मिथ्यात्वियोंकी संगतसे रात्री भोजन विगर छाणा मयापाणी और कंद मूलादि अभक्षपर उतर ते गये वाद स्वामी शंकरका मत चला उनोंने जगतमें दया धर्म फैलाभया देख अपणासिक्का जमाणेकूं जैनियोंकों मारकूट वेदपर यकीन तो करवाया मगर यज्ञकी क्रिया तो जैनके भये दयाधर्मियोंकों कवरुचै तब ब्राह्मनोंसें संपकरा सला विचारकर कहा अब वेदकी क्रिया छोडदो वेद ईश्वरोक्त है उसकी फकत श्रुतियांविनाअर्थ सोलेसंस्कारादिकमें काम लाओ मगर ये वात कहते रहो वेदकृत्य सचा है ईश्वरोक्त है मगर यज्ञ करणा सतयुगका काम था ये कलियुग है इसमें घी तिल खोपरा चिरोंजीविदामादिक सुगंध द्रव्यही हवन करणा चाहिये एसा कराते रहो करते रहो नहीं तो ये लोक हिंसा जीवोंकी देखकर जैन हो जायगें और एसे २ शास्त्र वणाणेका ब्राह्मनोंकों हुकम दियाके प्रजाका दिल ठहरावो तव पारासर स्मृतीमें एसा श्लोकडाला (यतः) अश्वालंभं गवालंभं,पैत्रिके पलमेवच, देवराच्च सुतोत्पत्तिः, कलौ पंच विवर्जयेत्,

(अर्थ) अश्वहोमणा गउहोमणा श्राद्धमें तथा मरेके पिछाडी पिंडमें मांसका देणा और वडे भाईकी स्त्री पति मरे वाद देवरसें लडका पैदा करणा ये पांच काम कलियुगमें मनाहै ये काम होता था वो ब्राह्मन वेदमत वालोंका सतयुगथा, तिसके वाद जैन आचार्योंका उपदेश सुणके राजा राजपूत तथा माहेश्वरी पीछा जैनधर्मी होते गये सो हम संक्षेप कर केइ २ महेश्वरियोंका जैन होणा पीछै लिखभी दिया है तब विक्रम संवत तेरेसेमें माधवाचारी दक्षणमें भया इससें माधवाचारी संप्रदाय विष्णु मतमें कहलाती है शंकर स्वामीके मतकूंधकालगाणेवाला दया धर्म कुछ माननेवाला दुनियांकों गोष्टी प्रशाद रामचंद्रजीका भोग खिलाकर रीझाणेवाला वेदपर पडदा डालकर अपणा भक्तिमार्ग दिखाणेवाला रामचंद्रकों ईश्वर माननेवाला सठकोपकंजरका शिक्ष मुनिवाहन, यव-नाचार्य चौथेदरजे शिष्य रामानुज इसतरे प्रगटभया द्वैत पक्ष जै-नियोंका मंजूरकरा प्रपन्नामृत ग्रंथ बनाया सौचमूलधर्म मांनकर खडे तीन फाडेका तिलक और संख चक्र गदा पद्म लोहका तपाकर अपणे मतावलंबियोंकों दाग देणेवाला महादेवके लिंगकों नमस्कार नहीं क-रणेवाला विष्णुमत नया सांक्ष मत चलाया इसके वाद माधवाचारी २ नीमार्क ३ और विष्णु स्वामी ४ विष्णुस्वामीमेंसें निकला वल्लमा-चारी इन्होंनें कृष्णकों देव माना इत्यादि मत चलाया माधवाचारीनें फेर अपणे मतावलंबियोंकों जैन होता देखकै, और जैनलोक शंकर-स्वामीके शिष्यनें शंकर दिग्विजय अभिमांनसे जो बनाया उसकों खं-डत करता एव लगाते देखकै शंकरस्वामीके २५० वर्षवी ते बाद, दूसरा शंकर दिग्विजय बणाया उसमें अपणे मतावलंबियोंकों एसा डरबैठाया जेसें कोई मातापिता अज्ञान बालककूं डराणेकूंकहेहाउ है वाघड है ये है तो कुछ नहीं मगर डराणेकूं कहा करते हैं, सो. हाल किया (यत) न पठेत् यावनीं भाषां,प्राणैः कठगतैरपि,हस्तिना मार्य-माणोपि, न गच्छेजिनमंदिरे १ (अर्थ) उरदु फारसी हिन्दुस्थानी प्र मुख भाषा न पढणी न बोलणी चाहै प्राण क्यों नहीं चलेजाय और

हाथी मार ता होय तोमी शरण लेणेभी जैनमंदिरमें नहीं घुसणा १ इ-
सर्में सिरप अपणे वाडेकूं मजवूत करणे सिवाय और कोईमी प्रमाण
सिद्ध नहीं होता खैर ब्राह्मनोंके वचनसे अज्ञान वालकवत् सैव विष्णु
लोक जैनमंदिरमें नहीं घुसते हैं और ज्ञानवान इस वचनकों कुंजडीके
वेर समझते हैं अपणे वोर मीठे ओरोंके खट्टे मगर वडा अपसोस तो
यह है की शैव विष्णु ब्राम्हन लोक प्रथम लिखे शिक्षाकों क्यों भूलगये
माधवनें लिखे है उडदू फारसी मतपढो सो तो हमने हजारों अदमियोंकों
फारसी उडदू पढके नोकरी वकालात करते देखाहै माधवाचारीने सं-
दिग्ध वचन धरा हैं विचार किया है सभामें पंडत लोक प्रमाण पूछेंगें
तब तो कहदूंगा की जैन नाम वैस्याका है यानें । वैष्णवोंने हाथीसे
मरतेभी वैस्याके घरमें नहीं जाणा तब तो सब लोक कवूल करहीलेंगें
नहीं तो अपढ लोकोंकों पंजेमें गांठणेकों प्रगट नांम जैन मंदिरही में
जाणा निपेधक होगा इस वखत वोही हालवण रहा है ये इतनी वातें
प्रसंगवसकोचरजाती महेश्वरी भये वाद फैर जैन माहाजन भये इस
वास्ते जैन लोकोकों वाकव करणे लिखीहै अब कोचरोकों महाजन
होणा लिखते हैं संवत ९१५८ में पमारवंसी डीडू महेश्वरी जिणोंकी
प्रथम जात पवार डोडा पीछे जोगदेव चोटीलेका पुत्र सुजाण कुमर
साथ माहेश्वरी हो गया जिणोंमेंपंवारोकीराठी जात पडी राठीयोंके
१६२ नखजिणोंमें डोडा मुंहता १२५ में नखमें डोडेजी सुं डोडा
मुंहता, कहाया सीरोही में पवारवंसीराज करतेथे उनोंकी दिवानी
करणेसें मोहता पद डोडाजीकूं राजाइनायत फुरमाई प्रथम सिरोही
पमारोंनेंही वैसाईथी सो वैद गोत्रके इतिहासमें हमने लिखीहै जब

१ डोडाजीसें डोडा मोहता राठी वजणे लगेये माहेश्वर कल्पद्रुम पाने ११२ में २ सिरोही पमारोंनें वसाई सो लेख कमले गछके महात्मा लखूजी वैदोंकी पीढी दी जिसमें लिखी है और भी केइ गोत्रोंका नाम गाम देकर हमकों ये इतिहास लिखणे पहली मदत दी है इनोंका जसमाननीय है कोचर वसकी उत्पत्ती हमकों . कोचर मुहता लूणकरणजीनें सक्षेपदी थी धन्यवाद् देताहू.

गोढ वाढमें विष्णु शैवमती पोरवालोंकों हरि भद्रसूरजी उपदेस देकर जैनी किया तव डोडाजीभी जैनधर्म धारण किया विक्रमसंवत् ९।५८ में इहांसे जैनधर्म पालणे लगा पीछे इनोके पोते स्यामदेवजी ब्राम्ह-णोंकी संगत राजाओंकी नोकरीसें श्राद्ध करणा मरेके पीछे सव घर-वालोंनें धाल मुंडाणा इत्यादि अनेक कर्म मिथ्यात्वियोंका करणे लगे इस वखत संवत् १००९ में श्रीनेमिचंद्रसुरिः वृहद्गछ वालोंनें पुनः मिथ्यात्व छोडाय वारे व्रत उच्चराय सम्यक्तकी पहचान कराई और गुरूनें फुरमाया इहांसें धनमाल लेकर तूं गुजरात पाल्हणपुर चला जा इहां राज्यमें भंग होगा तव स्यामदेवजी अपणे पुत्रकूं वहोत साधन देकर राजासें प्रछन्न भेज दिया वो रामदेव उहां वहुरायत करणे लगा इहांसें पाल्हणपुरी वोहरा कहलाये देवी इनोकी वीसल गुजरातमें मानी पहली सचाय थी सं । १०१४ में पाल्हणपुर दुकान रहवास पूगल करा तवसें पूग लिया वजणे लगे पीछे पूगलमें मुसल-मानोंका एल फैल देखकै सं १३८५ में पूगल छोडकै मंडोवरमें भी मडजी आकर वसे सं १४४५ में महीपालजीकूं रावचूंडाजी मारवाडका सव काम सुपुर्द करा राठोडोंनें मुंहतापद फेर दिया इस महीपालजीके पुत्र नहीं सो चित्तमें चिंता किया करै एक दिनसोझत गांमके वासिंदे महात्मा पोसा लिया लंगोटवद्ध तपेगछ कै किसी राजकाजकैवास्ते मंडोवर आये वो काम महीपालजीके हाथ था महात्मा इनोंके घर आया और वोला म्हेताजी ये काम मेरा करो तुमारा कोई काम मेरे लायक होय तो कहो तव महीपालजी वो काम रावचूंडेजीसें कह निर्वाण चढाया ओर कहा मेरे पुत्र नहीं सो होयगाया नहीं तव माहात्मा वोला आज पीछे तेरी औलाद तपागछकै माहात्मोंकूं गुरु मांने तव विधिवता देताहूं पुत्र होगा इसकै पहली सिंधमें तथा मंडो-वरमें रहते नेमचंद्रसुरिकै पट्टधारी खरतर गछकों गुरु मांनते थे तव महीपालजी तपागछ मांनना कवूल किया तव माहात्मानें कहा आसोज चैतमें नवरते करो वीसल देवी मनाओ पुत्र होगा जव देवीकोचरीके

रूपसें बोलेगी कोचर नांम देणा फेर तुमारे वंशकूं कोचरीके अपशकुन लगेगा नहीं पूजन चेत आसोज ८ तथा ९ मकी करणा भेसेंकी वीसल रायकी असवारी है पुत्र जनमें तब तथा परणे तब १। देवीकी भेट करे जब पहिला पुत्रका कोचर वंसमें आधानरहैतब पांच महीना स्त्रीके वीतणेसें पूजे तो १।) कलसमें राती जोगा दिरावै दसेरा पूजे तो लोंगी हाथ १। नारेल १ नव नेवद्यसें पूजा करणी, इतना कांम कोचर वंसवालोंकों करणा नहीं काला कपडा नीला कपडा रखै नहीं घूघरा भैंस बकरी सांकल राखै नहीं बिछियोंमें रुणरुणाडलावैनहीं चंद्रबाईका चूडा नहीं पहरै कदास कोई पहरे तो पीहरसें पहरे, चरखा, पालणा झुणझुणा रखै नहीं, पीला ओढणा पेस्तर पीहरका स्त्री ओढे पीछै घरका ओढै इतना कांम करणा तब महीपालजी सब कबूल कर वीसल देवी मनाई पुत्र भया कोचरी बोली कोचर नांम दिया पीछे कोचरजी मंडोवर छोडके महीपालजीके संग फलोधीमें आयवसे सं. । १५१५ पीछ महाराजा सूरसिंहजीके संग उरजाजी कोचरवंसी वीकानेर आये उसमे उरजेके वेटे आठ जिसमें रामसिंहजी १ भाखरसीजी २ रतनसीजी ३ और भीमसीजी पिताके साथ वीकानेर आये वीकानेरमें माहाराजा सूरसिंहजी सं १६७२ में लेखणकी खिजमत इनायतकी और गांम पटा दीया जिनोंकी ओलादके घर अंदाजन १०१ वीकानेर वसते हैं फेर तो सायर मंडी दिवानी वगेरे अनेक कांमके करता साम धरमी राजाओंके भये कितनेक घर रतनगढ वीदासर गांम ददरेवा या गांम सारूणे इलाकै राजगढ या तालूके सदरमें रहते हैं वेटे ४ फलोधी उरजेजीके रहै राहूजी १ डूंगरसीजी २ पचायण दासजी ३ राजसीजी ४ इनोंके घर ८० अंदाजन फलोधी वाकी जोधपुर वगेरे बडी मारवाड सब मिलके जुमलें घर अंदाजन तीनसे कोचरोंकें होयगें जिनराजके मंदिरोंकी भक्ती सात क्षेत्रमें धन लगाणा गुरुभक्ती सनातन 'जैनधर्मपर विचारणा सूरवीर'नांमी २ पुरुष इनोंमें भये और होते जाते हैं

फलोधीमें केइक कोचरकानूगा वजते हैं (दोहा) देवगुरुकी भक्तिधर, पुत्र वधे परिवार, अनधनसें चढतीकला, कोचर वड सुखका : १ विद्यमान तपागछ

पीढीयोंकी तपसील

रामदेवजी १ हर देवजी २ धनदत्तजी ३ वाहडजी ४ भीमदेवजी ५ लखमसीजी ६ जसवीरजी ७ मेघरायजी ८ श्रीचंदजी ९ पालणसीजी १० मूलराजजी ११ देहडजी १२ भीमडजी १३ चम्मडजी १४ झांझणजी १५ महीपालजी १६ कोचरजी १७ माणोजी १८ देवोजी १९ सीहोजी २० उरजोजी २१

अथ वैदश्रेष्टी गोत्र

प्रथम रातपूत धूम १ अगन २ धीर ३ रावसी ४ धांधू ५ वीसल ६ आसल ७ सोमदेव ८ इणरे पुत्र ११ सो सब पमार कहलाये, सोढल ९ इसकी औलाद सब सौढा कहलाये, भोमदेव १० सीहल दो भाई भोमरे नरदेव ११) धीरके पुंडरीक १ माघदेव २ कीरतः चंद ३ जोपदेव ४ मोपाल५धरणीवाट६ नेरस ७ गर्दभिल्ल (गंधर्वसैन ८ विक्रमादित्य इनोंके पाटानुपाट ५ राजा विक्रम भये ५ भोज भये राजतखत उजैन लघु भोजकै मरे पीछै राज्य गया १२ •पुत्र उहांसें निकल गये ६ वीसलका ७ चक्रवर्त्ति ८ पालणदेव ९ जोगींद्र १० ११ समरसेण १२ सुरसेण १३ नरदेवरे गोदवनराज १४ अचलसेण १५ कर्मसेण १६ कंवरसेण १७ ग्रोहसेण १८ धीरधवल १९ देवसेण २० सनखत्त २१ सेणपाल २२ आसधर २३ महीधर २४ शिवधर २५ विक्रमसेण २६ भीमसेण २७ सामदेव २८ वछराज २९ सुदवछ ३० रतनसी ३१ चंद्रसेन ३२ २६ पटधर भीमसेन भीनमाल नग्र अपणे नांमसें वसाया और सिरोही नग्रके पहाडपर गढ वणाया इसवास्ते नग्रका नाम सीरोही भया ३२ डुंगरसी ३३ रामसी ३४ कनकसी) भीमसेणके तीन पुत्र •उपलदेव वडा सो तो ओसियां वसाई सामदेव सीरोहीका राजा भया आसल भीनमालका राजा भया

इसमें उपलदेव तो जैनधर्म धारण कर लिया सो ओसवाल भया ओर आसलका श्रीमाल गोत्र प्रसिद्ध भया नाना श्रीमलराजाके नांमसें

२७ भीमसेणका २८ उपलदेव रत्नप्रभसूरिःने सेठिया गोत्र थापा ओर ओसवाल कहाया भीनमालमें आसल, पीछे कनकसी सामदेवकी ओलाद राज कीया

२८ उपलदेवके भ्रुगुनरेस ३९ चक्रवर्त्त ३१ पालदेव ३९ जोगीप ३२ कोगुर ३३ समरसी ३४ सुखमल ३५ सुखमलका छोटाभाई अचल सो भीनमालके राजा कनकसीके गोद दिया साले ३६ समरथ ३७ करमण ३८ योद्दरथ ३९ इहांसें भीनमालका राज्य सिरोहीवाले इनोंके परवारवालोंनें दाब लिया इहां ४ पीढीतक भीनमाल और औसियांका सिरोहीका एक राजाही भया ४० वीरधवल नाणणे पैदा भया इस वखत विक्रमादित्य पमार उजेणमें राजा भया इसके बहिनका बेटा माणजा सालिवाहन प्रतिष्ठानपुर (महेश्वर) सकी चलाया, ये राजा जैन था, उनोंकी ओलाद अभी भी महेश्वर तथा गुजरात भावनगरमें राज्य करते हैं.

इहांसें व्यापार करणे लगे ४० वीरधवल ४१ पुन्यपाल ४२ देवराज ४३ सनसत्त ४४ जीवचंद ४५ वेलराज ४६ आसधर ४७ उदयसी ४८ रूपसी ४९ मलसी ५० नरब्रम ५१ श्रवण ५२ समरसी ५३ सांधतसी ५४ सहजपाल ५५ राजसी ५६ मांनसी ५७ उदयसी ५८ विमलसी ५९ नरसी ६० हरसी ६१ हरराज ६२ धनराज ६३ पेमराज सुखराज भाई ६४ पेमके थानसी ६५ वैरसी ६६ करमसी व्यापारभी करता और वैद्य विद्या भी करणे लगा लोक वैद २ कहते ६७ धरमसी ६८ पुनसी ६९ मानसी ७० देवदत्त ७१ डुलहा, स १२०१ में चितोडका राणा भीमसीकी राणीके आंखमें आकका दूध गिर गया तब डुलहे कू बुलाया और कहा तुम वैद्य नांम धराते हो राणीजीकी आंख अछी करो तब बोला अभी दवा लेके आता हू वो चोमासा श्रीजिनदत्तसूरिःजीका चितोडमें

या गुरूकैपास जाके वीनती करी तव गुरूनें कहा तुमारे पोते दोय है सो एककूं हमारा श्रावक करो तो तत्काल माझ खोल देताहूं कबूल किया तब गुरु बोले जाओ जो तुम लगाओगे उससें तत्काल सिद्धि होगी दुलहेजीनें घीमें सुड मिलाके आंखमें लगवाया तत्कालु आंख अच्छी भई तव राणाजी कुरव वढाकर वैद्य पदवी इनायतकी इहांसे श्रेष्ठि गोत वदलके वैद गोत्र भया दुलहेके ७२ वर्द्धमान ७३ सच्चा तथा शिवदेव सो शिवदेवकूं जिन दत्तसूरिःका वासक्षेप दिलाकर खरतर गछमें करदिया वो वर्द्धमानवैदकानासर अजीमगंज मारवाड वगेरे देसोंमें अभी चिरंजीवी है सच्चाके ७४ सहदेव और करमण ७५ सहदेवके जसवीर ७६ मोहल ७७ के माणकभाई गोद माणकसी इनोकी औलाद वहोत फैली ७८ देल्हो ७९ केल्हणसी ८० त्रिभुवनजी ८१ सादूलसीजी ८२ लालोजी लाखणसी जेतसी ३ भाई २ भाई वीकैजी संगवीकानेर आये. जैतसीजीका परवार फलोधीमें अंदाजन असीघर वसते हैं वाकी सब मारवाडमें लालेजीके ८३ श्रीमंतजी ८४ अमराजी सूरमलजी भाई ८५ अमरेका सींमाजी ८६ जीवणदासजी जीवणदेसर वीकानेर इलाके गांम वसाया ८७ ठाकुरसीजी ८८ राजसीजी ८९ आस करणजी ९० रामचंदजी ९१ उदयभांणजी ९२ दोलतरामजी ९२ माणकचंदजी ९४ घमंडसीजी ९५ मूलचंदजी अबीरचंदजी २ भाई मूलपुत्र ४

१ आवडदानजी हिनदूमलजी छोगमलजी अनाडमलजी
२ अमोलखजी गुमानसिंघ जसजी बिसन केसरीसिंह
३ हरीसिंहजी ज्वानीसिंह छत्रसिंह.
अभयसिंभाई.
४ किसनासिंघजी रामसिंह.
५ सेरसिंहजी.

गछ कवला देवी सचाय सेवगचलिअद.

मीन्नीखजानची भुगडी साख १५

मोहणसिंहजी जातका चौहाण राजपूत दिल्लीमें मणिधारी श्रीजिनचं-द्रसूरिःप्रतिबोध देकर जैनी माहाजन किया सं १२१६ में मोहणजी रामीन्नी खजानाका काम राववीकाजीका किया खजानची वजणे लगे भुगडी सूकेपेर सिंघमें वेचतेथे इसवास्ते भुगडी नख भया वाकी नख इनमेंसें फटे है मगर नांम नही मिला मिलणेसें लिखेंगे गछमूल खरतरे

मुहणोत गोत्र पींचा गोत्र.

किसनगढ मारवाडके रावराजाराठोड रायपालजीकें १२ पुत्र सो मोहणसिंघजी और पांची सिंघजी भायोंकी अणवणतसें जेसल मेर गये उहां रावलजी बहोत खातर तवज्याकरी उहां माणिक्य-सूरिः माहाराजकै पाटधारी श्रीजिनचंद्रसूरिःका त्याग वैराग्य उत्कृष्ट ज्ञान तपकी तारीफ सुणकै हमेस व्याख्यान सुणने आणे लगे आखिरको मिथ्यात्व त्याग गुरुपास सम्यक्त उचरकर व्रतधारी श्रावक भये राव-लजीने बहोतही तारीफ करी जेसल मेरमें वसे मुणेजीकै मुहणोत पांची सिंघजीकै पींचागोत्र प्रगट १५९५ में भया उहां संवत् सो लेसेके करीवमें तपागछके विद्यासागर जतीने मुहणोत गोत्री खरत-रोंकों अपणे गछमें करलिये पींचा खरतरमेंही रहै वाद उहांसे मुह-णोत किसनगढ जोधपुर वगेरेमें राज्यके मुसद्दी हो गये ठाकर वजते हैं वस ये आखरी जात है ये विद्यासागर ढूंढियोंकी तरे क्रिया कष्ट दिखाता बृहद्गछी खरतरादि गछोंके प्रतिबोधे राजन्यवंसीयोंकों अपणे पक्षमें करता गया.

विज्ञापन.

ओसवंस रत्नागर सागर है मेरा ये इतिहासक ग्रंथ गागरतुल्य हैं इसमें कहांतक समावै लेकिन् तथापि जो कुछ इतिहास मिला उसकों संग्रह करकै अनेक इतिहास रत्नोंसें इस ग्रंथ गागरकों अश्वपती महा-जनोंके गुणरत्नसें भरकै मेनें पूर्ण कलस करलिया और माहाजनोंकी

नांम श्रेणीरूप मुक्तावली इस कलसकों पहराकर जैनधर्मरूप कमल पुष्पपर विराजमान अल्पबुद्धिसें किया है जो कोई भूलचूक अधिक कम लिखा होय सर्व श्रीसंघसें क्षमा मांगता हूं ॥ आप श्रीसंघका सुनिजर वांछक,उ । श्रीरामलाल गणिः दंत कथामें सुणा है कै एक भोजगनें अश्वपतियोंकी १४४४ नख लिखे घरपर आया स्त्रीनें पूछा सब जात लिखली भोजग बोला हां तब बोली मेरे पीहरमें डोसी जात असपत है देखो तुमनें लिखाया नहीं तब देखें तो डोसीका नांम नहीं भोजकहारकै बोला फेर लिखूं डोसी फेर घणाई होसी सच है मूलगोत्र तो थोडे मगर कोई व्यापार कोइ गांमके नांमसें कोई राजाओंकी नोकरीसें खजानेका कांमसे खजानची कोठारी मुसरफ दपतरी बगसी, हीरेजीकी ओलाद हीरावत, इत्यादिपिताओंकै नांमसें, लेखणिया कानूगा निरखी इत्यादि राजाओंकी तरफसें इनायत होके जात पडी सिंघवी भंडारी इत्यादि फेर मुल्कोंकै नामसें मरोटी फलोधिये रामपुरिये पुगलिये नागोरी मेडतवाल रूणवाल इत्यादि बहोत, फेरघीया तेलिया भुगडी बलाई चंडालिया बाकुचार बांमी ये सब कारणोसें नख भया है ओसवालोंमें सईकडों गोत निज जात राजपूतोंसें भी विख्यात है राठोड सीसोदिया सांखला कछावा इत्यादि अनेक जाण लेणा इसवास्ते २ हजार नख होंयगें अठारे जातके नखसाखा तो कवला गछ प्रतिबोधक है ६०० नख खरतर गछ प्रतिबोधक है बाकी नख खरतरके भाई मलधार गछी प्रतिबोधक है, केइ यक अल्प संक्षा वड गछ चित्रा वाल गछ प्रतिबोधक राजपूत होगें बाकी मलधार श्रावकोंकों हीर विजयसूरि आदिकोंनें बहुतोंकों तपा वस्तपाल तेजपालकी द्रव्यकी मदतसें जादा होगये हैं गुजरातमें पूर्ण तल्ल गछकै भी इस वखत तपागछ मानते हैं प्राय जैन पोरवाल हरिभद्राचार्य प्रतिबोधक है श्री श्रीमाल श्रीमाल सर्व जात वैष्णव भये बाद खरतर गछी श्रीजिनचंद्रसूरिः प्रतिबोधक है जहां जिस नगर जिस गांममें निजगछकै गुरु नहीं होय उहां २ तीन पीढी बी-

तणेसें जो भेषधर संप्रदाई होय वो गुरु ठहर जाते हैं ओसवंस तो सुरतरू है जो उसकी छांह वैठते हैं उसकों छाया फल पुष्प सुगंध देते ही हैं लेकिन् सुरतरूका बीज बोणेवालोंके संतानोंके तो जरूरही उपगारके आभारी होणा फरज है इस वखत गछोमें तो कमला तपा खरतरा इन तीनोंकी शाखाओंही फैलकर जती २ फैल गये हैं क्योंकी १३ तपोंमेंसें संप्रदायनिकली पांचमकी संवत्सरी माननेवाले जो जो संप्रदाय है वो सब तपागछमेंसेंही निकले हैं लोंकाजी भी तपागछी श्रावक था इत्यादि संपूर्ण, जेसें किसी कवीनें कहा सवै पदा हस्तिपदे प्रविष्टा ८४ गछ माहावीरके सब जाके चार रहे तपा खरतर वडगछी भाइ है पार्श्वनाथके कमला ये भी ८४ में ही है क्योंके उद्योतनसूरिके वासक्षेपमें आगये, जैनके सब संप्रदाई वडगछ खरतर कमला विदून इस तपागछसें अलग नहीं, गुजरातमें तपागछमेंसेंही अलग होते गये सामाचारी अलग २ करते गये कमलामेंसें कोई साखा निकली नहीं खरतरमें ११ साखा अलग फटी मगर सबोंकी सामाचारी एक है जिसमें ७ साखा मौजूद है दो तो आचार्य गछ खरतर, पाली १ दुसरे बीकानेर २ रंगविजय खरतर गछ लखनेउ ३ भाव हर्ष खरतर गच्छ बालोतरा ४ मंडोवरा खरतर गछ भट्टारक जैपुर ५ वृहत् खरतर गछ भट्टारक बीकानेर ६ पीपलिया खरतर गुजरातमें फिरते सुणा है.

लोंका गछके जती तो ६ के हैं मगर पूज्याचार्य तो ४ ही विद्यमान है गुजराती लूंपक गछी १ कवरजी पक्षके गुजराती २ धनराजजी पक्षके ३ नागोरी २ जिसमें १ में आचार्य विद्यमान है उतराधी लोंका गछी जती थोडे है मगर आचार्य नहीं है तपाखरतर वड गच्छ कमलोंसें लोंकागछवालोंके भाई पा है मगर कछमें रही जो आंचल गछी संप्रदाय वो लोंका गछवालोंसें भाईपा नहीं रखते हैं कारण वो पूर्वपक्षका लाते हैं मगर हमतो गुजराती आचार्य नरपतचंद्रजी पूज्याचार्यकों तथा अजयराजजी पूज्याचार्यकों तथा नागोरी प्रश्नचंद्रजी पूज्याचार्यकों तथा रामचंद्रजी पूज्याचार्यकों अंतरंग

मक्तीसें जिनप्रतिमांकों जिन सदस भावसें भावभक्ती दर्शन पूजा कराते देखा है हमारे तो इसन्यायसें लोंका गछी प्राणसेंभी प्यारे है सामाचारीका झगडा फजूल आपसमें चलाणा नहीं अपणी २ रोटियोंके नीचे सब अगार दे रहे हैं आत्मार्थी आत्मा साधै श्रावकोंकों जिन आज्ञामुजब उपदेश करै पक्षपात नहीं करै वो अछा है जो प्रश्न श्रावक अथवा जती पूछे तो पूछेका जबाब सूत्र सिद्धांत पंचागीमें लिखेका दाखला दिखाकै देणा जिसकी सामाचारी सूत्र सिद्धांतकी राहसें मिलती होगी तो वो जरूर खराही कहलायगा क्रियावंत जरूर तपेश्वरी कहलायगा मित्रतापणे वर्त्तना जिसकामोसे जैनधर्म जगत्में अतुल ओपमा पावै उस वातोकी खोज करणा सर्व यती समुदायका सुनिजरवाछक उपाध्याय श्रीरामऋद्धिसारगणिः

कछदेशी श्रावकोका वृत्तात.

पारकर देस पाली सहरकै अतराफ गिरदावकै महाजन लोक सोलेसे ३५ के वर्षमें मरुधरमें वडा काल पडा उस वखत ५ हजार घर सिंधुदेशमें अनाजकी मुकलायत जाणके उसदेसमें चले गये उहा महनत कर गुजरान चलाणे लगे दो तीन पीढियां वीतनेपर धर्म करणी भूल गये उपदेशक कोईथानहीं विना खेवटिये नाव गोता खावै इसमें तो ताजब ही क्या उहा इतना मात्र जाणते रहे की हम जैनमाहाजन फलाणे २ गोत्रके हैं तद पीछे सवत् सतरेसेमें एक आचल सप्रदायकै जती कछकै राजापास पहुंचा और राजासें कहा मेरा कुछ सत्कार करो तो वाणियोंकी वस्तीलादेताहूं राजानें कहा जागीर दूगा गुरुभाव रखूगा तब वो जती सिंधमें पहुंचा और इन लोकोंको मिला और पूछा इस देसमें सुखी हो या दुखी तब बोले मुसलमानलोक बहुत तकलीफ देते हैं कोइ जिनावर घरमें वेमार होता है तो काजीकों खबर देंणा होता है तब काजी उस जीती गउ वकरीके गलेपर छुरी हमारे घरपर आकै फेरता है आधे मसलमान होगये हैं उस जतीनें पूछा हमकों तुम

जाणते हो हम कोण हैं उनोंनें कहा नहीं जाणतें तुम कोण हो तब वो बोला हमारे संग चलो कछ भुजदेसमें राव खंगारके राज्यमें तुमकों सुख स्थानमें वसा देताहूं वो सब एकठेहो, उस जतीके संग कछ देसमें आये राव खंगारनें सुथरी नलिया जखउ आदि गांमोंमें वसाया बहोत खातरतवज्या करी अब वो जतीजी तो राज्यके माननीय. जागीरदार वण वैठे एक तो राज्यमद दुसरे विना कमाया जागीरका धन अब धर्म, उपदेश इनोंकी वलाय करे वो माहाजन खेती करे गुरजी जागीरदारसें रुपया व्याजसें उधार लेवे रोटीभी जतीके इहां खा लेवे इत्यादि हाल एसा वणा कै बावेजी के बावेजीतरकारीकी तरकारी बावाजी तुमारा नांम क्या बाबा बोले बचा वैगणपुरी, वो हाल वणाया तब राजानें अपणे जो राजगुरु प्रोहितथे वो इनोंके गुरु वणा दिये परणे मरणे जनमणेपर वो ब्राह्मनोंने अपणा घर भरणे इनोंकों पोपलीला सिखाई अनेक देवी देव पूजाणे लगे खेती कांम करणेसें जादा धनवान कोई इनोंमें नहीं था क्योंके नीतीमें लिखा है (यत) वाणिज्ये वर्द्धते लक्ष्मी किंचिद् २ कर्षणे अस्तिनास्तिच सेवायां भिक्षा नैवच२। १ (अर्थ) व्यापारसें लक्ष्मी वढती है खेतीसें कभी होय कभी वरसात नहीं होय तो करजदारी हो जाय नोकरीमें धन होय किसी सूंमकै, नहीं होय खाउखरचूकै, और भीख मांगणेवालोंकै कभी धन होवै नहीं लेकिन् श्रीमाली ब्राह्मन टाल और भिक्षुकोंके १ इसतरे गुजरान करते थे इस वखत मुंबई बचन अंग्रेजसरकारनें व्यापारका एक सागरही मांनूं खोलकर वसाया इस वखत आंचल गछके श्रीपूज्य रत्नसागरसूरिःके दादागुरुसंवतअठारेमें गुजरातसें कछमें पधारे पहले मारवाडमें विचरतेथे इनोंनें जिन २ पूर्वोक्त गछोंके प्रतिबोधे माहाजनोंकों अपणी हेतु युक्तियोंसें अपणे पक्षमें करेथे थी केइ दिनोंतक इनोंकी राह देखी थे तो कछदेसमें उतर गये तब मारवाडके आंचलियेंलोंकानागोरी तथा गुजराती कुंवरजीके धन राजजीके पक्षकों मांनने लगे मारवाडमें जादा प्रसार

नागोरी लोंकोंका हो गया संवत् अठारेमें, कछदेशके महाजन लोक जाती थोडे होणेके सबब बेटी नही मिलणेसें नातराभी करणे लग गये उस वखत आंचल आचार्य उनोंकों धर्मोपदेसदे समझाया खेतीमें महा पाप है केइ लोकोकों सोगन दिलाया व्यापारकैवास्ते मुंबई पत्तन बताया केइयक लोक इधर आये बदनके मजबूत और उद्यमी साहसी-कपणेकर पहली मजूरी कर कुछ धन भया बाद साझेसें कंपनी व्यापार खोला गुरुदेवकी भक्ती और जतीलोकोंका उपगारपर कायम रहै दि-नपर दिन चढतीकला अन और धनसें होती गई नरसीनाथा कोट्या-धिपती धर्मात्मा प्रथम भया उसनें वहोत मदत देकर जातीका सुधारा किया अड वो रुपे जगे २ मंदिर धर्मशाला गुरुभक्ती साधर्मी भक्तीमें कछवासी श्रावकोंनें सोडेदसें वर्षोंमें लगाया सो प्रत्यक्ष मौजूद है जती श्वेतांबरियोंका जैसा मान पान भक्ती कछी श्रावक रखते हैं एसा कोई विरला रखता होगा दस्सोंका नातरा नरसीनाथेनें बंध करा अब तो धर्मज्ञ होगये लक्ष्मीसें कुसंप वढगया ये पंचम कालका प्रभाव, सब गछके थे, मगर वर्त्तमान आंचल गछ मानते हैं दस्से सब, वीसे कछमें मांडवी वंदरादिकमें सईकडों घर खरतर गछ अभी मांनते हैं वीसे व्यापारकैवास्ते मारवाडसें उठके कछमें वसगये, गुजराती कछमें गये वो तपागछ मांनते हैं.

अथ श्रीमालगोत्र उत्पत्ती ॥

भीनमाल नगरी, जिसका नाम भगवान माहावीरस्वामीके विचरते समय श्रीमाल नग्रथा राजा श्रीमलकी पुत्री लक्ष्मी इसका विवाह करणेकी फिकरमें राजानें ब्राह्मणोंसें पूछा मेरी कन्या साक्षात् लक्ष्मी-तुल्य है इसके लायक रूपवंत गुणवंत वर राजकुमार मिलणेका उपाय बतलाओ स्वयंवर मंडप करणेसें वहोत राजा आंयगें इसका रूप देख मोहित हो करकै आपसमें लडके लाखों अदमी मरजायगें इससें मेरीबदनांमी होगी तब ब्राह्मनोंनें कहा हे राजेंद्र अश्वमेध जज्ञ कर इसपर लाखों ब्राह्मण देश २ के जमा होंगें उनोंकों पूछनेसें तथा जज्ञके

पुन्यसें तुमारी कन्याकों इंद्र जैसा वर मिलेगा राजाने असंक्ष द्रव्य लगाकर यज्ञ सामग्री तइयार कराणे लगा भगवान माहावीरका समो सरण सत्रुंजय तीर्थकी तलहटीमें भया लाखों पशुजीवोंकी हिंसा देख श्रीमल्लराजाकों प्रतिबोध गौतमसें होणेवाला देख भगवाननें गौतमगण-धरकूं आज्ञादी हे गौतम श्रीमाल नगरीका श्रीमल्लराजा तुमसें प्रतिबोध पायगा लाखोंजीवोंका उपगार होणेवाला है इसवास्ते तुमारे शिष्य पांचसें साधुओंकों संगले तुम श्रीमाल नग्र जाओ भगवानकी आज्ञासें गौतम विहार करते २ मरुधर भूमीमें प्राप्त भये इधर राजानें लाखों ब्राह्मनोंकों देस २ मेंसें निमंत्रण देदे बुलवाया सो सब यज्ञ करणे तइयार भये घोडेकों देश २ में फिराकर उहां लाये औरभी जीव जल-चर थलचर खचर ब्राह्मनोंके वचनसें श्रीमल्लराजानें अग्निमें हवन कर-णेकों मंगवाये हैं सो सब जीव त्रासपाते विलापात करते करुणास्वर से एसा जता रहे हैं अरे कोई दयाका भरा महापुरुष हमारी फरि-यादी सुणके हमें बचावे हम बेकसूरमारे जाते हैं अपणे २ दिलमें तथा निजभाषामें कहते हैं अरे दुष्ट ब्राह्मणो हम स्वर्ग नहीं पहुंचे चाहते एसा स्वर्ग तुम तुमारे कुटुंबके प्यारे मातापिता भाई वगेरोंकों क्यों नहीं पहुंचाते अरे मांस खाणेके लालचियों हमारे प्राण लेणेसें तुमकों स्वर्गके सुपने आयगें इस हिंसासें राजा और तुम मांसाहार करणेसें नरकपात्र होवोगे जिस हिंसारेनें एसा शास्त्र बणाया और तुम-कों ये क्रिया सिखलाई वो दुष्ट कमी मुक्ती नहीं पायगा दुर्गतीमें भट-गेगा हे अंतर्यामी तुम पूर्ण ज्ञानसें सचराचर जीवोंके अभ्यंतरी परणाम सब देखते हो जाणतेहो हे प्रभू आप दयालू कृपालू हो अब हम नि-राधार निस्सरण अनाथ जीवोंकी फरियाद सुणकर हमारी सहाय करो इस वखत गौतम गणधर उन २ जीवोंकी कामना मनपर्यवज्ञानसें जाणके लब्धिबलसें तुरत उहां पहुंचे उहां यज्ञमें हवन होणेवाले जी-वोंके प्रतिपाल यज्ञसालाके बाहिरं ठहरकर दयाधर्मका उपदेश करणे लगे तब अग्निहोत्री ब्राह्मण गौतमके बहोतसें गोत्री सगे हुसरे साले

मामा फूंफा वगेरे तथा पांचसें मुनियोंके सगे कुटंबी वगेरे गौतमकूं देख वेदपाठी यज्ञका निर्द्धार करणे आये गौतमनें न्यायसूत्रसें सबोंके दिलमें दयाका अंकूर बोदिया यज्ञयाज्ञनपूजायां श्रीजिनराजके मूर्तिकी पूजा है सो गृहस्थोंके तांइ दयारूप यज्ञ है श्रीप्रश्न व्याकरण सूत्रमें दयाके साठ नांम जिसमें पूजा है सो दया है तब उनोंनें यज्ञका स्वरूप समझा त्रसजीवोंका हणना यज्ञ छोडा, सम्यक्तयुक्त व्रतधारी ब्राह्मन भये वो श्रीमाल नग्रके होणेसें श्रीमाली ब्राह्मण दया धर्मी संज्ञा भई वाकी पंचगौड देसवासी तथा पंचद्रविड देसवासी जो जो ऋषी उस जज्ञमें हाजरथे उनोंने तो जीवकों होमणेका यज्ञ छोडा और मांसमदिरा पीणा त्याग कर दिया गौतमके चरण पूजणे लगे सब जीवोंकों यथास्थान पहुंचाया उहां सवालक्ष राजपूत श्रीमल्लराजाके साथ जैनधर्म धारण कियां उन श्रीमालोंकी एक सो पैंतीस जात स्थापन भई, पंचाल देसी (पंजाब) बंगदेसी कन्नोजदेसी सरवरीये इत्यादि ऋषी विप्र जो उस यज्ञमें नहीं आये थे वो सब मांसाहारी ही रहे क्योंके वैदका यज्ञ तो जैनाचार्योंने प्रायें आर्यावर्त्तमें बंधकर दिया तथापि वो ब्राह्मन तो मांस खातेही रहे दायमा गोड गूजर गोड संखवाल पारीक खंडेलवाल सारस्वत और वाघड इत्यादिकोंनें गौतमके उपदेससें मांस मदिराका खान पान करणा यज्ञ छोडा इसतरे राजपूत ब्राह्मन दयाधर्मी गुरु गौतमके सेवक भये पूजा गौतमकी करणे लगे उसकै बाद मुल्क २ में अलग २ वसणेसें श्रीमाली ब्राह्मणोंकी ४ साखा फंट गई मारवाडी १ मे वाडी २ लटकण ३ और ऋषि ४॥ इस जज्ञमें सैंधवारण्यवासी (सिंधदेशके जंगलमें रहणेवाले) पांच हजार ब्राह्मनोंकूं गौतमका उपदेस क्रमयोग नहीं रुचा मांस खाणेमें लुब्ध चित्त वैदोक्त मांसका पुरोडासा खाणेकूं यज्ञ क्रिया अश्वादिक हवनकूं सत्य मांनते गौतमकी पूजा सत्कारकूं नहीं सहते गौतमकी निंदा करणे लगे तब श्रीमल्लराजाके हुकमसें जिनोपवीत (जनेउ) इन सबोंकी ब्राह्मणोंनें छीनकर ब्रह्मकर्म रहित जाण आर्यवेदके बाहिर

किया शूद्र कृत्य और अनार्य वेदकी रुचिवालोंकों सब ब्राह्मनोंनें इन ५ हजारोंकूं निकाल दिया क्योंके बहुतोंकी सम्मती गौतमके सत्य दयाधर्मपर ठहर गई वो पीछे सैंधवारण्यकों चले गये क्षेत्री करणे लगे भाटी राजपूत जो सैंधुदेसमें तथा लवाणे जो सींधुदेसमें दरियावकी मच्छीयोंकूं सुकाकर वेचते थे उनोंके गुरु वणगये जो कृत्य गुरुओंका वैसाही कृत्य जुजमानोंका था जब संवत् सतरेमें औसवाल लोक सींधदेससें कछमें आये तब केइ यक भाटिये लवाणे. कछमें आयवसे उनोंकों वल्लभाचारी गुसाईयोंनें वो व्यापार छुडाकर व्यापारी वणा दिया जो अब भाटिया वजते हैं, अब थोडेइअरसेमें श्रीमल्लराजाके राजधानीपर सिरोही गढके राजा पमारका पुत्र भीमसेन राजपूतोंकों संगले श्रीमाल नगरीके घेरा दिया तब राजा श्रीमल्लनें विचारा में वृद्धहूं पुत्र मेरे है नहीं एक कन्यालक्ष्मी है में जुद्ध करणे समर्थ हूं मगर युद्धकर लाखो जीवोंका संहार करणा आखर तो कोई दूसराही आकर राज्य भोगेगा जीव वधका पाप मुझें भोगणा होगा ये घरपर गंगा आगई है पुत्री देकर पुत्र गोदले लेणा दुरस्त है एसा विचार राजा श्रीमल्लनें अपणे प्रधान सुबुद्धीके संग भीमसेनकूं कहला भेजा मेरी पुत्री आपकों दी व्याह करकै हथलेवेमें श्रीमाल नगरका राज्य दिया राजा श्रीमल्ल सब राज रीती सर्वोका कुरब कायदा मान मुलायजा पुन्य दांन किये भये ग्रांम मुसदीयोंकी खातरी सब गुप्त रहस्य जामातकूं सिखलाते ५ वर्ष श्रावक धर्म पालते राज्यमें रहे तब लक्ष्मीराणीके दो पुत्र भये उपलदेव १ और आसल २ और आसपाल फेर पीछे भया ३ राजा भीमसेण आसलकूं नानेके गोद दिया और राजका हक्क आसलकुं करदिया आसलका नानेके नांमसें वोही श्रीमाल गोत्र रहा वाद श्रीमल्लराजा जामातकी वेटीकी आज्ञा लेकर गौतमपास जाके राजग्रहीमें दीक्षा लेकर तपकर केवल ज्ञानपाय मोक्ष गये भीमसेनका मत वाम मार्ग था उपल और आसपाल वाम मार्ग मानते रहे आसल फकत जैन नामधारी नानेके नामपर रहा जैनधर्मकी शि-

क्षाचार नहीं जाणता था भीमसेनके राज्यमें श्रीमालवंसवाले जैन
धीरे २ गुजरात गोढवाड मालवा हिन्दुस्तानमें क्रमसे विखर गये
श्रीमाल नग्रका नाम भीनमाल धरा गया जब उपलदेव होसमें आया
तव पिताकी आज्ञा लेकर छोटे भाई आसपालकूं संगले ओसिया पट्टण
जावंसाई इहां वृद्ध अवस्थामें रत्नप्रभसूरि:ने इनोंकों जैनधर्म धराया
श्रेष्टि गोत्र थापन किया आसपालका लघुश्रेष्ठी गोत्र थाप्या श्रेष्टी गोत्र
तो १२०१ में वैद वजणे लगे लघुश्रेष्ठीवाले सोनपालजीके नांमसें
सोनावत वजणे लगे भीनमालमें भीमसेनकी गद्दी आसल वैठा वोभी
रत्नप्रभसूरि:सें जैनधर्म धारण किया श्रीमाल गोत्र इसी वास्ते १८
गोत्रोंमें गिणते हैं श्रीमाल गोत्रकी थापना गौतमस्वामीनेंही कर दी थी
अब लक्ष्मीमाता वृद्धअवस्थामें विचारणे लगीके मेरे पिताके हाथसें
५००० हजार विप्र निकाले गये तव इनोंने अपणे पुत्र आसलकूं
कहकर उन सवोंकों बुलाया और गौतमगुरूकी आज्ञा दयाधर्म पालणा
कवूल करवाके पुष्कर खुदवाया क्योंके गौतमकी अवज्ञा करी थी
ब्राह्मनोंसें भिन्नता करी थी इसवास्ते दंड दिया पुनर्जिनोपवीत देकर
ब्रह्मकर्म नेष्टित किया दुसरे ब्राह्मण श्रीमाली छन्यात वाले कहते हैं
पुष्कर खोदणेसें ओडोंकों ब्राह्मण किया वो पुष्करणे कहलाये ये वात
इसी वास्ते द्वेषसें वाकी ब्राह्मणोंनें सरू करीके उस वखत ब्राह्मणोंका
हुकम नहीं माना दयाधर्म और गौतमस्वामीकी अवज्ञा करी थी
राजाके देवी सचाय थी तो पुष्करणोंनें मानी सिंघमें देवी ऊंठा थी
गोत्र पुष्करणोंका सांडिल्यस वगैरे जाति २ का जुदा २ है एक २
गोत्रमें छव २ नख है जैनशास्त्रसें पोसह करणा माहन भरतचक्रवर्त्तीनें
नाम थापन करा था पर्व्व तिथीमें प्रोषध करणेवाले (धर्मस्य पुष्टिं
धत्ते इति पोषध) धर्मकी पुष्टि करणेवाले जैनधर्मी असंख्या वर्षतकर
है फेर और धर्म सवोंनें मन मतसें आजिविका रूप करडाला उस
पोसह करणा शब्दका अपभ्रंस पोकरणा लोक कहणे लगे श्रीमाली
ब्राह्मनोंकी देवी वो राजपुत्रीलक्ष्मी है फेर स्वामी शंकराचार्यके जुल-

मर्से श्रीमाली पुष्करणे ब्राह्मणोंनें वेद कृत्य कबूल करके यज्ञका मांस खाणा तो कबूल नहीं किया लेकिन् मन्नावत श्रीमाली दसेरा वगैरे पर्व्वोंपर लपसीका भैंसा वणाकर कुसा घास डाभसें वेद मंत्र पढकर उसके गरदनपर फेरके प्रशादीवांट खाते हैं ये महिमा अभी भी वेद यज्ञकी करते हैं पुष्करणे व्याहमें आधी रातकों कोरपाण वस्त्रपर सब वैठके गुडकी, लपसी और दूध खाते पीते हैं बाद कलसा जांनके दिन जिनेउ वदलकर स्नान करते हैं ये वोही निसाणी स्वामी शंकरनें पीछी सिखलाई जो की सेंधवारण्यमें करते थे इसवास्ते ही गोतमसें द्वेष किया था विक्रमसंवत् सातसेमें श्रीमाली ब्राह्मणोंनें श्रीमाल पुराण बनाया उसमें कुछ मेद पाठांतर ये बात लिखी है हिंदमें संप नहीं करमसोतराजपूतोंका कटक नहीं कुत्तोंकी कतार नहीं पोकरणोंके पुराण नहीं श्रीमाल पुराणके अंतर्गतही अपणी उत्पत्ती मानते हैं केइ पुष्करणे भीनमालसें कछमे गये आगे मरुधर जेसलमेर पोकरण फलोधी मल्हार जोधपुर वीकानेर छडे विछडे और २ जगे इसवखत सर्व पोसहकरणे ४० हजार करीब होगा विशेष गोकुल गुसांइयोंके सखावण रहे हैं वाकी कुछ शाक्त हैं.

श्रीमाल वणिक् गुजरातमें श्रीमाली दसावीसा वजते हैं गोत्रका नाम नहीं जाणते स्वामी शंकरके हमलेमें जैनधर्म छोड शैवमती विष्णुमती होगये ये गुजरातमें हेमाचार्यनें फेर जैनधर्म इनोंका कायम रखा सगपण जैन विष्णवोंके होता है दीली लखनेउ आगरा जेपुर झझणूंके जो श्रीमाल है इनोंकों श्रीजिनचंद्रसूरिःनें शैवधर्मसें प्रतिवोध दे जैनधर्मी किया वो सब खरतर गछमें है वडे २ श्रीमंतलक्षाधिपती श्रीमाल गोत्रीधर्मज्ञ है कलकत्तेमें रायसाहिब कालकादास वद्रीदास रायकुमार राजकुमारादि परिवारयुक्त कोट्याधिपती विद्यमांन है मुंबईमें बाबू पन्ना लालजीके अमीचंदजी जीवणदासजी वगैरे कोट्याधिपती विद्यमांन है वाकी कलकत्तेमें लक्षाधिपती श्रीमाल बहुत है इनोंकी १२५ जाती राजपूतोंसें फटी है.

श्रीमाल गोत्र १३५.

१ कटारिया २ कहूंधिया ३ काठ ४ कालेरा ५ कादइये ६ कुराडिक ७ काल ८ कुठारिये ९ कूकडा १० कोडिया ११ कौकगढ १२ कंवोतिया १३ खगल १४ खारेड १५ खौर १६ खौचडिया १७ खौसडिया १८ गदउडघा १९ गलकटे २० गपताणिया २१ गदइया २२ गिलाहला २३ गींदोडिया २४ गूजरिया,२५ गूजर २६ घेवरिया २७ घौघडिया २८ चरड २९ चांडीं ३० चुगल ३१ चडिया ३२ चंदेरीवाल ३३ छकडिया ३४ छालिया ३५ जलकट ३६ जूंड ३७ जूंडीवाल ३८ जांट ३९ झामचूर ४० टांक ४१ टांकरिया ४२ टींगड ४३ डहरा ४४ डागड ४५ डूंगरिया ४६ ढौर ४७ ढौढा ४८ तवल ४९ ताडिया ५० तुरक्या ५१ दुसाज ५२ धनालिया ५३ धूवना ५४ धूपड ५५ ध्याधीया ५६ नाग्री ५७ नरट ५८ दंक्षणत ५९ नाचण ६० नांदरीवाल ६१ निवहटिया ६२ निरदुम ६३ निवहेडिया ६४ परिमाण ६५ पचौसलिया ६६ पडवाडिया ६७ पसेरण ६८ पंचोभू ६९ पंचासिया ७० पाताणी ७१ पापडगोत ७२ पूरबिया ७३ फलवधिया ७४ फाफू ७५ फोफलिया ७६ फूसपाण ७७ बहापुरिया ७८ बरडा ७९ बदलिया ८० बंदूवी ८१ वांहकटे ८२ बाईसझ ८३ वारीगोत ८४ वायडा ८५ विमनालक ८६ वीचड ८७ वौहलिया ८८ भद्रसवाल ८९ भांडिया ९० भालोदी ९१ भूधर ९२ भंडारिया ९३ भाडूंगा ९४ भोथा ९५ महिमवाल ९६ मऊठिया ९७ मरदूला ९८ महतियाणा ९९ महकुले १०० मरहटी १०१ मथुरिया १०२ मसूरिया १०३ माधलपुरी १०४ मालवी १०५ मारूमहटा १०६ मांदोटिया १०७ मूसल १०८ मोगा १०९ मुरारी ११० मुंदडिया १११ राडिका ११२ रांकिवांण ११३ रीहालीम ११४ लवाहला ११५ लडारूप ११६ सगरिप ११७ लडवाला ११८ सागिया ११९ सांभडती १२० सीधूड २१ सुद्राडा २२ सोहू २३ सौठियां २४ हाडीगण १२५ हेडाउ १२६ हीडौय्या १२७ अंगरीप

१२८ आकोड़पड १२९ ऊधरा १३० बोहरा १३१ सांगरिया १३२ पलहोट १०३ घूघरिया १३४ कूंचलिया १३५.

इसतरे श्रीमालोंकी १३५ जातीथी वहोतसी तो गुजरातमें वसणेसें गोतमारे गये गुजरातमें गोत नहीं मारवाडमें छोत नहीं इस न्यायसें और वाकी देसोंमें जो श्रीमालोंकी वस्ती है उनोंमें गोत्रका पता लगता है, भीनमाल गुजरात मारवाडकी संधीपर है इसवास्ते श्रीमालोंके विवाह मरणेपरणेकारिवाज गुजरातीयोंकी राह मुजव है अव तो गुजराती श्रीमालीयोंकी अनेक तरेकी नई जाती संज्ञा वंध गई है जेसेंकै मारफतिया घमघम देवी इनोंकी लक्ष्मी है ये वात यथार्थ मिलतीभी है श्रीमाली ब्राह्मन और श्रीमाललक्ष्मीके तो पात्रही हमनें बहुतोंकों देखा है.

पोरवाल जांगडा गोत्र २४

श्रीपदमावती नग्र (पारेवा) में २४ जातकै राजपूतोंकै सवा लाख घर वसते थे इनोंकों महावीर स्वामीके ५ में पट्टधर श्री यशोभद्रसूरि प्रभूके निर्वाण वाद डेढसे वर्ष करीब विक्रमकै पूणातीनसें वर्ष करीब पहले प्रतिबोध देके जैनधर्म धारण कराया पारेवा नग्रकै होणेसें पोरवाल कहलाये वाद फेर केइ हजार घर शैवधर्मी राजाओंकी नोकरीसें होगये वाकी जैनधर्मी रहे विक्रम राजाके १०८ वर्ष वीतणेपर पोरवाल जावडसावडे नांमी शूर वीर जिनधर्मीनें अडवों रुपे लगाकर जिनमंदिर, जीर्णोद्धार सात क्षेत्रोंमें लगाया सत्रुंजयका संघ निकालकर क्रोडोंसोनइये जात्रियोंकै लिये लगाये फेर सत्रुंजय तीर्थका चौदमा उद्धार कराया सोले उद्धारोंमें इनोंका नाम मोजूद है केइ हजार घर विष्णुधर्मियोंकों हरिभद्रसूरिनें प्रतिबोधे फेर संवत एक हजारमें उद्योतनसूरिःजीके निजपट्टधारी वर्द्धमानसूरि वैश्रव विमलसामंत्रीकै गोत्रवालोंकों तथाविमलमंत्रीकों उपदेशदे आबू तीर्थ ब्राह्मनोंनें दवा लिया था सो अठारे क्रोड चायन लाख सोनइये खरच ब्राह्मनोंकों द्रव्य दे खुसकर पीछा कवजा किया वर्द्धमान सूरिःने मंत्राराधनासें

अंबिका देवीकों प्रत्यक्ष कर बादसाहोंकों बुलाया जमीनमेंसें अलोप मंदिर पुष्पमाल ब्राह्मनकी कुमारी कन्याके हाथसें जहां गिरे उहां जिनमंदिर है उहां प्राचीन मंदिर निकला, ये सब विस्तार खरतर गछकी गुर्व्वा वलीमें विस्तारसें विवरण लिखा है जिनमंदिर करवाया सो विमलवसी नांमसें विक्षात है फेर वस्तुपाल तेजपाल जिनोंनें सब संघमें दस्सा बनाया इनोंनें जगचंद्रसूरिःकों चितोडके राणेपास महातपाविरुददिराके आचार्य पदकानंदीमहोच्छव करा जगचंद्रसूःरिःका जगे २ विहार करवाया तपागछ माननेवालोंकों हजारोकों श्रीमंत बणाया १३ सेत्रुंजयका संघ निकाला बेगिणतीका द्रव्य इनोंने लगाया तपागछकों बहोत मदत दी इनोंकी मदतसें मारवाड गुजरात गोढवाडमें तपागछ फैला आज विद्यमान जो जो मंदिर जैनियोंके कायम है क्रोडोंके लागतके सो सब पौरवालोंका ही कराया भया रहा है बाकी जैनराजाओंका श्री श्रीमाल श्रीमाल ओसवालादिकोंका क्रोडोंकी लागतका कराया भया मंदिर मुसलमान बादसाहोंनें नामी मंदिर तीन लाख तोड डाला गुर्जर भूपावली वगेरे इतिहास देखणेसें मालम होता है निन्नाणवे लाख सोनइया धन्ने पोरवाल राणपुरेके मंदिरकों लगाया एसे २ धर्मात्मा पोरवाल वंसमे होगये समय मुजब मंदिरोंकी भक्तीमें अभी भी लगाते हैं गोढवाडमें जैन पोरवालोंकी वस्ती वहोत है खरतर गछमें भी पौरवाल बहुत थे उपाश्रय खरतरोंके खाली पडे · खरतर साधुओंका विहार कम भया इस ६० वर्षोमें तपागछी साधुओंका जाणा आणा वणते रहा गछ दोनूं पोरवालोंका है खरतरतपामालवेमें चांभल नदीके किनारे तीन हजार घर अभी भी वैष्नवधर्मी है.

पोरवाल २४ गोत्र नांम.

१ चोधरी २ काला ४ धनघड ४ रतनावत ५ धनोत्यौ ६ मजावत्या ७ डब करा ८ भादल्या ९ सेठया १० कामल्या ११ ऊधिया १२ वखरांड १३ भूत १४ फरक्या १५ ऊभेपन्या १६ मंडावन्या

१७ मुनियां १८ घाट्या १९ गलिया २० मैसोंढा २१ नवेपन्या २२ दानगढ २३ महता २४ खरब्या देवी इनोंकी पद्मावती है.

हुंवड गोत्र.

पाटण नगरका राजा अजितशत्रु जिसकै पुत्र दोय भूपतसिंह १ भवानीसिंह १ भूपतसिंघकी माता देवलोक होगई भवानीसिंहकी माता पाटरणी राजाकै माननीयथी राजपूतोंकी रसम है वडापुत्र होय सो तखतका मालक होय वैस्य महाजनोंकी ये रसम है छोटा पुत्र घरका मालक होय हिस्सा वरावर जितने पुत्र होय जितना करै पिताकै जीते दम एक पत्ती पिता अपणी रख लेवै माताकै जीते माता गहना अपणा रख लेवै पीहरसें मिला भया भी माताकूं रखणेका अधिकार है देवै तो खुसीसें हिस्सेमें दे सकती है मगर कायदेसें हिस्सेदारोंका हक्क नहीं है वो माता पिताकै मरे वाद छोटे पुत्रका होता है अगर माता पिताका दिल दुसरे पुत्रोंकों या और किसीकों देणा धारे दे सकते हैं पुत्रोकों रोकणेका अधिकार नहीं है मातापिताकैपास कुछ नहीं होय तो पुत्र हिस्से मुजव उनोंका गुजरान चलावै इसमें एक मोतव्वर कमाउ होय तो वोही मातापिताकै निर्वाहका जुम्मेवार होता है सिरपर करजा कुटंव खरचका होय तो सव पुत्र हिस्से मुजव देणेके जुम्मेवार है कोइ भाइ वडा ओर छोटा अंगहीण अण कमाउ होय तो वाकी भाई मिलकै या समर्थ एकही रोटी कपडा देणेका जुम्मेवार हो राजाओंकै वडा पुत्र राज्यपती होता है इत्यादि कायदे विचार भवानीसिंहकी माता अपणे पतीकी वहोत भक्ती करणे लगी, राजा भोजन करै वाद भोजन करै, प्रभात मुखदेखेविगर मूंमें पाणी नही डाले, पतीकोंनिद्रा आये वाद आप सोवै, विना हुकम कोईभी काम नहीं करै, इसतरे पतिव्रताधर्म पालती भई विचरे, एक दिन राजा परीक्षाके वास्ते रातभर राजकार्य करता रहा जव चारवजैरणवासमें गया तो राणी खडी भई सामनें आई, राजानें पूछा क्यों आज सोये नहीं, राणी वोली हजूर सुख नहीं फरमाया तो, मैंरातो क्या, तव राजा

सत्कार कर बाहिर आकर नाजरकों पूछ, निश्चय किया, राणी बिलकुल रातभरखडी रही, तब राजा राणी पास जाकर प्रसन्नतासें बोला, तुमारे सत्व परमें प्रशन्न हूं जो मांगणा होय,सो मांगो, राणी बोली हजूरकी महरबानी, राजा बोला महरबानी तो घणी ही है, मगर मागो, (यतः) सकृद् जल्पंति राजानः सकृद् जल्पंति साधवः। सकृद् कन्या प्रदीयंते त्रीण्येतानि सकृद् २ (अर्थ) राजा एक वचन बोलता है पलटता नहीं उसहीका नाम राजा है साधूभी एक जुबानरखते हैं कन्याभी एक वेरही दिये जाती है येकाम एकवेरही होता है वेर २ नहीं १ फेर एसा भी कहा है (यतः) अमोघ वासरे विद्युत् अमोघं निशिगर्जनं। अमोघं उत्तमावाणी अमोघ देवदर्शनं २ (अर्थ) दिनकी चमकी भई बीजली खाली नहीं जाती कहाइ भी वरसे ही, रातका गाजा भया खाली नहीं जाता, उत्तम पुरुषोंकी निकली जुबान खाली नहीं जाती देवताका दर्शन खाली नहीं जाता २ इसवास्ते हे राणी तें माग तब राणी बोली स्वामीनाथ मेरा अगजात भवानी सिंघ ठाकुर होगाकै राजा राजा समझ गयाकै राणी पुत्रकों राज्य मागती है राजा बोला जाते रे पुत्रकों राज्य दिया भोपतकों जागीर दूगा राजानें केइ अरसेवाद वडे पुत्रकों जागीर तीसरे हिस्सेका दिया भोपतनें कबूल किया- राजा परलोक पहुंचा पिताकै तखत भवानीसिंघ बैठा भोपतसिंह अपणे बलसें पिता जितना राज्य वदा लिया अनेक राजा पायनाभी भये तब भवानीसिंघ इर्ष्यासें दूत भेजा तूं मेरी सेवा कर राज्यपतीमें हूं तूसामत है भोपतने गिणारा नहीं तब लडणेंको फोज भेजी तब भोपतसिंघ भाईकों अन्याई जाणकर फोजकों मारकै भगाई और आप आकै पाटणकै बाहिरकर घेरा दिया-दोनोंकै घोर युद्ध भया तब इन भोपतसिंघका मामा वृद्ध भोजराजा समझाणे आया मगर दोनो भाई माने नहीं इतनेंमें मानतूंगाचार्य भक्तामरस्तोत्रकै कर्त्ता उस वनमें समवसरे मामा भाणेजकूं लै वदनको गया और गुरूसें धर्मोपदेशना सुणी चित्तमें धर्मकी वासना भई तब गुरूसें बोला हे गुरु हुवड

हूं और भवानी लघु है इस वातकों आप इनसाफसें फुरमा दो कसूर किसका है, गुरूनें वृत्तांत सुण कहा तूं सचा है, और भवानीका पक्ष अहंकार पूरित है तव राता भोज, अपना अदमी भेज, भवानीकों बुलाकें चरणोंमें लगाया, तव प्रशन्न होकर भोपतनें सव राज्यभाईकों अपणाभी दे दिया, और अपणे पुत्रों समेत जैन माहजन श्रावक भया सेत्रुंजयका संघ निकाला गुरुकै सामने कहा था हूं षड हूं तव गुरूनें जातीका नांमही हूंवड धरा पीछे परिवार वहोत वधा कुमदचंद भट्टारकनें केइ घर दिगांवर धर्ममें किया केइ घर विष्णु होगये थे उनोंको १८ हजार वायडदेशमें रहणेवाले जो वायडी वजते थे उनोंकों खरतराचार्य वल्लभसूरिःनें प्रतिवोध खरतर किये जिल्लासाह हुंवडनें अपणा पुत्र वल्लभसूरिःकों वहिराया वो दादा श्रीजिनदत्तसूरिः भये इसतरे मालवा मेवाड गुजरात वगेरे देसोंमें हुंवड दिगांवर स्वेतांवर दोनों वसते हैं.

गोत्र १८.

सं.	गोत.	वश.	स.	गोत.	वश.	स.	गोत.	वश.
१	खेरजा	गहाया	७	भदेश्वर	भाटी	१३	सोमेश्वर	कछावा
२	कमलेश्वर	परमार	८	विश्वेश्वर	सोनगरा	१४	जियाण	हाडा
३	काकडेश्वर	सोलखी	९	सखेश्वर	झाला	१५	ललितेश्वर	गहोडिया
४	उग्रेश्वर	चउहाण	१०	गगेश्वर	जादव	१६	भगेश्वर	पडिहार
५	मानेश्वर	राठोड	११	अवेश्वर	नेहरा	१७	वास्यपेश्वर	चुवाल
६	भीमेश्वर	देवडा	१२	मामनेश्वर	मीसोदिया	१८	बुधेश्वर	चद्रावत

चोरासी गछोंके नाम.

२३ में श्रीपार्श्व प्रभूके शिक्षवर्गोका उपकेश गछ वजता था केशी कुमारके नांमसें, वो आचार्य मंदाचारी चैत्यवासी होगये वाद उद्योतन सूरिःकेपास ८३ थविरोंके औरभी शिक्ष जो त्यागी वैरागी माहाव्रती वजते थे उसमें पार्श्वप्रभूके शंतानीभी एकथविरके शिक्ष पढते थे माहावीरस्वामीके इग्यारे गणधरोंके नव गछमेसें एक सुधर्मा स्वांमीका

ही गच्छ कायम रहा बाकी गणधरोंके शिक्ष सब मुक्त गये इस गछका नाम तो यथार्थमें सौ धर्म, निर्ग्रंथ गछ भया; बाद क्रम२सें आचार्योंके शिक्षवर्गोंसें, गछ कुल शाखा अनेकानेक चली, जो की श्रीकल्पसूत्रमें दरज है, काल दोषसें सबगछप्राय थोडे रहे संवत् ९०० सें विक्रमके में शंकर स्वामीकै वखतपर मंद पड गये, कोटिक गछ चंद्रकुल वज्र शाखाधर आचार्य वृहद्गछी श्रीनेमिचंदसूरिःके पट्टप्रभाकर श्रीउद्योतनसूरिः महागीतार्थ प्रभावीक त्याग वैराग्य विराजित महाव्रती एक आचार्य ही सं १००० में विचरते रहे, बाकी सब थविर नामसें विक्षात थे, आज्ञा सब पर उद्योतनसूरिः हीकी थी, तब गुरुमाहाराज जैनधर्मका उद्योतका समय अर्द्धरात्रीकों नक्षत्रोंका स्वरूप देख, वृद्धिभावसें, प्रथम निजशिष्यवर्द्धमानसूरिःकों सूरिमंत्रदै, फेर ८३ विद्यार्थियोंकोंभी सूरिःमंत्र दिया, वो सब चोरासी ही पालीताणेके सिद्धवडके नीचेसें ही गुरूके, हुकमसें अलग २ विचरै, उनोंनें ज्ञानयुक्त क्रियासें, अपणे २ गच्छ प्रगट किये, साधु साधवी आत्मार्थी बणाये, उणोंकै नाम ८४, प्रथम निजशिक्षवर्द्धमान सूरिःके शिष्य जिनेश्वर सूरिकों खरतर विरुद मिला सो १ खरतर गछ २ सर्व देवसूरिका वड गछ पूनमिया ३ चित्रावाल गछ विछेद जाकर तपागछ प्रसिद्ध भया ४ उपकेसगछीओसियांमे जाकै शिष्यवर्ग वधाया इस करकै ओसवाल गछ कहलाया ये चारों अभी विद्यमान है ५ जीरावला गछ ६ गंगेसरा गछ ७ केरंडिया गच्छ ८ आणपुरी गच्छ ९ भरुअच्छागच्छ १० उढविया गच्छ ११ गुतउवा गच्छ १२ डेकाउवा गच्छ १३ भीनमाला गच्छ १४ मुंहडसिया गच्छ १५ दासरुवा गच्छ १६ गछपाल गछ १७ घोपपाल गच्छ १८ मगउडिया गच्छ १९ ब्रह्माणिया गच्छ २० जालोरी गच्छ २१ बोकडिया गच्छ २२ मुझाहडा गच्छ २३ चीतडिया गच्छ २४ साचोरा गच्छ २५ कुचडिया गच्छ २६ सिद्धंतिआ गच्छ २७ मसेणिया गच्छ २८ आगम २९ मलधार ३० भावराजिया ३१ पलीवाल ३२ कोरंटवाल ३३ नाकदिक ३४

धर्मघोषा ३५ नागपुरा ३६ उस्तवाल ३७ ताणावला ३८ सांडेरवाल ३९ मंडोवरा ४० सूराणा ४१ खंभायती ४२ बडउदिया ४३ सोपारिया ४४ नाडिया ४५ कोछीपुरा ४६ जांगला ४७ छापरिया ४८ घोरसडा ४९ दोचंदणक ५० वेगडा ५१ वायड ५२ विजहरा ५३ कुतपुरा ५४ काचेलिया ५५ रुदोलिया ५६ महुकरा ५७ कपूरसिया पुर्णतल्ल ५९ रेवइया ६० धूंधूंपा ६१ थंभणिया ६२ पंचवलदिया ६३ पालणपुरा ६४ गंधारा ६५ गुवेलिया ६६ सार्द्ध पूनमिया ६७ नगरकोटा ६८ हिंसारिया ६९ भटनेरा ७० जीतहरा ७१ जगायन ७२ भामसेणा ७३ तागडाया ७४ कंद्योना ७५ सेवना गछ ७६ घाघेरा ७७ वाहडिया ७८ सिद्धपुरा ७९ घोघरा ८० नेगमिया ८१ संजमा ८२ वरडे वाल ८३ बाडा ८४ नाग उला.

ये सब गच्छ कोई नग्रके नांम कोई क्रियासें कोई विरुदपाणेसें कारणसें नाम भये.

अथ जैनी श्रावगी गोत्र ८४ खंडेलवाल.

प्रथम आदीश्वर भगवानसें लेकर माहावीर स्वामीतक जैनधर्मके पाळणेवाले श्रावक कहाते महावीर स्वामीकों मुक्ति गये बाद चारसो तेवीस वर्ष.जव बीते तापीछै उज्जेण नग्रमें विक्रम संवत् सूर्यवंसी पमार राजा विक्रमादित्यनें चलायो विक्रम संवत् १ एककी सालमें अपराजित मुनिश्का सिंघाडामेंसें जिन सेनाचार्य ५०० सो मुनिराज साथ लेकर विहार करते २ संवत् १ का मिती माहासुदि ५ कों खंडेला नग्रमें आये (खंडेला नग्र जोकी जैपुर राज्यके इला के में है इस वक्त) खंडेलाका राजा खंडेल गिरि सूर्यवंसी चहुआण राज्य करता है अत राप खंडेलाके ८३ गांम लगे उस राजधानीमें केइ दिनोंसें माहामारी विपूचिका रोग फैल रह्यो थो हजारों आलम मर रहे थे तब राजा रैयतकी फिकर करता ब्राह्मनोंकों पूछणे लगा हे भूदेव ये उपद्रव कैसे मिटै तब ब्राह्मणोंने कहा हे राजा नरमेघ यज्ञ कर उससें शांति होयगी तब राजा यज्ञ प्रारंभ कियो और ब्राह्मणोंकी आज्ञा मुजब बत्तीस

लक्षणवंत पुरुष लाणेकी आज्ञा अपणे नोंकरोंकों दी उस वखत १
मुनिः स्मशान भूमिमें ध्यान लगाकर खडे थे उनोकों राजाके नोकर
पकडके यज्ञशालामें ले गये उनोंकूं स्नान करा कर गहणा वस्त्र पहराके
राजाके हातसें तिलक कराकर हाथमें ब्राह्मणोंनें साकल्यदेकर वेदमंत्र बोलते
वेदी कूंडमें स्वाहाकर पुरोडासा वांटते भये ब्राह्मनोंने राजासें केसा
अनर्थ करांया उस पापसें मुल्कमें असंक्षा गुणा क्लेस और उपद्रव
होता भया सच मिसला लोक कहते हैं, (नीमेहकीमखतेरज्यान
नीमे मुला खतेरे इमान, एसे दुरबुद्धियोंके उपदेससें भलाइ क्या
होणी थी महा भयंकर समय आण पहुचा अग्निदाह प्रचंड अंधकार
अनावृष्टि नानातरेके उपद्रवसें प्रजापीडत हाहाकार मच गया तब राजा मूर्छा
खाकर अचेत होगया उस मुर्छामें वो जो मुनीहोमे गये थे वो दीखणे
लगे राजा उहांसें ऊठके अपणे अमरावोंके संग वनमें डोलणे लगा
हाय मृत्युका वखत आया एसा विचारता उहां वनमें पांचसें नग्न
दिगांवर मुनी ध्यानमें खडे हैं देखके चरणोंमें जागिरा और रोता
भया प्रार्थना करणे लगा तब मुनि बोले धर्मवृद्धि राजा देशके उप-
द्रवकी शांति पूछतो भयो तब आचार्य बोले हे राजा पापसें तो रोग
दुकाल दुख संताप होता है और फेर तेनें नरमेध जज्ञ कर मुनिःयोंकों
होम डाला इसवख्त फल तो यो मिल्यो है बाकी तो कराणेवाले और तूं नर-

१ कोई जमाना एसा मिथ्या हिंसा धर्म ब्राह्मनोंने फैलाया था घोडे गउ
वकरे हिरणादि ६०९ तरेके नाना जीव यज्ञमें ब्राह्मणोंका भक्ष होता था लेकिन्
हाय जुलम मनुष्योंकों मारणेमें भी नहीं चूक्ते थे पतीके पिछाडी मोहाकुल
स्त्रियोंकों पती मिलापका, लालच दिखाकर उसका जरजेवर ले स्त्रियोंकों अग्नीमें
जलाते थे, और अजाण लोकसती होणा अछा ब्राह्मणोंके वहकाये मानते चले आये,
पुरुषोंका माल छीनकर कासीकरवतवणा मनुष्योंका प्राण लेते थे, वादसा अकवरनें
जिनचंद्रसूरिके उपदेशसे करोतलेणा बंधकरा, रायपुर छत्तीसगढ जिल्ले महरिम पूजामें
परदेशी मनुष्यका वलिदान होताथा विसनोई ब्राह्मणोके सखा जाभेका सोंड मनुष्य
मणाकर मारते थे, अंग्रेज सरकारने सती वगेरे सब बंधकरा, वाहरे ब्राह्मनो
वलिहारी है,

कका दुख पावेगो जेसें खूनकामीगा कपडा खूनमें धोणेसें साफ नहीं होता इस दृष्टांत वैदका यज्ञ है तेराजी जैसा तुझें प्यारा लगता है वेसाही सर्व प्राणियोंका समझ राजा बोला हे प्रभू जो कुछ कसूर भया सो तो भया किसतरे शांती होय सो विधि वतलाओ गुरु बोले दया मूल जिनधर्म धारण करो जगे २ चैत्यालय कराके श्रीजिन प्रतिमा धराके शांतिक पूजन कराओ धर्मका प्रभावतें दुष्ट पापकी शांति होगी राजा खंडेल गिरीका खंडेलाका सर्व राजपूत ओर ८१ गांम दूसरोंके सब राजपूत २ गांम सुनारोंके ८४ गांमके सब मिलके राजा खंडेलगिरि श्रावकधर्मधारतो भयो जिन चैत्यालय ८४ गामोंमें करा २ कर पूजन होतेही सर्व उपद्रव शांत भया वर्षात होके सुकाल भया तब ८४ जात स्थापन भई सोठीलाके तो साह कहलाये वाकी सबोंके गांम जात राजपूत कुलदेवी सब नीचे मुजब.

संख्या	गोत	वंश.	गांव.	कुलदेवी.
१	साह गोत	चउहाण	खंडेला	चक्रेश्वरी देवी
२	पाटणी गोत	तंवर	पाटणी	आमादेवी
३	पापडीवाल	चौहान	पापडी	चक्रेश्वरी देवी
४	दोसा गोत	राठोड	दौसागांम	जमाय देवी
५	सेठी गोत	सोमवंसी	सोठाणियो	चक्रेश्वरी देवी
६	मौसा गोत	चौहाण	मौसाणी	नांदणी देवी
७	गौधा गोत	गौधड वंश	गोधाणी	मातणी देवी
८	चांदूवाड गोत	चंदेलावंश	चंदूवाड	मातण देवी
९	मौठ्या गोत	ठीमरवंश	मौठ्या	औरल देवी
१०	अजमेरा गोत	गौडवंश	अजमेरयो	नांदणी देवी
११	दरडोयागोत	चौहाणवंश	दरडोद गांम	चक्रेश्वरी देवी
१२	गदय्यागोत	चौहाणवंश	गदयो गांम	चक्रेश्वरी देवी
१३	पहाड्या गोत	चौहाणवंश	पाहाडी गांम	चक्रेश्वरी देवी

संख्या	गोत.	वंश.	गांव.	कुलदेवी.
१४	मूंच गोत	सूर्यवंश	मूंछड गांम	आमण देवी
१५	वज गोत	हेमवंश	वजाणी गांम	आमण देवी
१६	वज्रमाहाराया	हेमवंश	वजमासी गांव	मौहणी देवी
१७	राऊका गोत	सोमवंश	रालौली गाम	औरल देवी
१८	पाटोधा गोत	तवरवंश	पाटोदी गांम	पद्मावती देवी
१९	पाघडा गोत	चौहानवंश	पादणी गांम	चक्रेश्वरी देवी
२०	सोनी गोत	सोलंखीवंश	सौहनी गांम	आमण देवी
२१	बिलाला गोत	ठीमरसोमवंश	बिलाला गांम	औरल देवी
२२	विरलाला गोत	कुरुवंशी	छोटी बिलाली	सौतल देवी
२३	गगवाल गोत	कछावावंश	गगवाणी गांम	जमवाय देवी
२४	विनायक्यागोत	गहलोतवंश	विन्यायकी गांम	वेथी देवी
२५	वांकलीवाल	मौहिलवंश	वांकली गांम	जीणी देवी
२६	कासलावाल	मौहिलवंश	कांसली गांम	जीणी देवी
२७	पापला गोत	सोढावंश	पापली गांम	आमण देवी
२८	सौगाणी गोत	सूर्यवंश	सौगाणी गांम	कन्हाडी देवी
२९	जाझन्या गोत	कछावावंश	जाझरी गांम	जमवाय देवी
३०	कटान्या गोत	कछावावंश	कटान्यो गांम	जमवाय देवी
३१	वैद गोत	सौरडीवंश	वदवासा गांम	आमणी देवी
३२	टौंग्यागोत	पमारवंश	टौंगाणी गांम	पावडी देवी,
३३	वोहरा गोत	सोढावंश	वोहरी गांम	सौतली देवी
३४	काला गोत	कुरुवंश	कुलवाडी गांम	सौहणी देवी
३५	छावडा गोत	चौहाणवंश	छावडा गांम	औरल देवी
३६	लौंग्या गोत	सूर्यवंश	लगाणी गांम	आमणी देवी
३७	लुहाड्या गोत	मौरठ्यावंश	लुहाड्या गांम	लौसल देवी
३८	भंडशाली गोत	सौलंखीवंश	भंडसाली गांम	आमणी देवी
३९	दगडावत गोत	सोलंखीवंश	दरड़ोद गांम	आमणी देवी

संक्षा	गोत.	वंश.	गांव.	देवी.
४०	चौवंरी गोत	तंवर वंश	चौधऱ्या गांम	पदमावती देवी
४१	पौटल्या गोत	गहलौत वंश	पौटला गांम	पद्मावती देवी
४२	गींदोड्या गोत	सोढावंश	गिन्होडी गांम	श्री देवी
४३	साखुण्या गोत	सोढावंश	साखुणी गांम	सिरवराय देवी
४४	अनोपड्या गोत	चंदेलावंश	अनोपडी गांम	मातणी देवी
४५	निगोत्या गोत	गौडवंश	नागोती गांम	नांदणी देवी
४६	पांगुल्या गोत	चहुआणवंश	पांगुल्या गांम	चक्रेश्वरी देवी
४७	मूळाण्या गोत	चहुआणवंश	मूळाणी गांम	चक्रेश्वरी देवी
४८	पीतल्या गोत	चउहाणवंश	पीतल्यो गांम	चक्रेश्वरी
४९	वनमाळी गोत	चउहाणवंश	वनमाळ गांम	चक्रेश्वरी
५०	मरडक गोत	चउहाणवंश	मरडक गांम	चक्रेश्वरी
५१	रावल्या गोत	ठीमरसोमवंश	रावल्यो गांम	औंटळदेवी
५२	मौंदी गोत	ठीमरसोमवंश	मौदहसी गांम	ठौरल देवी
५३	कौकणराज्या	कुरुवंशी	कोकणज्या गांम	सौनल देवी
५४	जुगराज्यागोत	कुरुवंशी	जुगराज्या गांम	सौनळ देवी
५५	मुलराज्या गोत	कुरुवंशी	मूलराज्या गांम	सौनळ देवी
५६	छदड्या गोत	कुरुवंशी	छाहड्या गांम	सौनळ देवी
५७	टुकडा गोत	टुलालवंश	टुकडा गांम	हेमा देवी
५८	गोती गोत	टुलालवंश	गोतडा गांम.	हेमा देवी
५९	कुलमाण्यागोत	टुलालवंश	कुलमांणी गांम	हेमा देवी
६०	वौरखंड्यागोत	टुलालवंश	वौरखंडी गांम	हेमा देवी
६१	सरपत्या गोत	मोहिलवंश	सरपती गांम	जीन देवी
६२	चिरडऱ्यागोत	चौहाणवंश	चिरडकी गांम	चक्रेश्वरी देवी
६३	निगर्दा गोत	गौडवंश	निरगद गांम	नांदणी देवी
६४	निरपोल्या गोत	गौडवंश	निरपाळ गांम	नांदणी देवी
६५	सरवड्या गोत	गौडवंश	सरवड्या गांम	नांदणी देवी

संख्या	गोत.	वंश.	गांम.	देवी.
६६	कडवडा गोत	गौडवंश	कडवगंरी गांम	नांदणी देवी
६७	सांभन्या गोत	चहुआणवंश	सांभभ्यो गांम	चक्रेश्वरीधीयाडी
६८	हलद्या गोत	मौहिलवंश	हरलोद गांम	जाणिधयाडादेवी
६९	सौमगसा गोत	गहलोतवंश	सौमद गांम	चौथी देवी
७०	चंबा गोत	सोढावंश	चंबाली गांम	सिरवराय देवी
७१	चौवाण्या गोत	चहुआणवंश	चौवरत्या गांम	चक्रेश्वरी देवी
७२	राजहंस गोत	सोढावंश	राजहंस गांम	सिरवराय देवी
७३	अहंकान्यागोत	सोढावंश	अहंकर गांम	सौनल देवी
७४	मूसावच्यागोत	कुरुवंश	मसवच्या गांम	सिरवराय देवी
७५	मौलसरा गोत	सोढावंश	मौलसर गांम	औरल देवी
७६	मांगडा गोत	रवीमरवंश	मांगड गांम	लौसलधियाडी
७७	लौहट्या गोत	मौरठावंश	लोहट गांम	हेमा देवी
७८	खेत्रपाल्यागोत	दुलालवंश	खेत्रपाल्या गांम	सरस्वती देवी
७९	राजमद्रागोत	सांखलावंश	राजमदरा गांम	जमवाय देवी
८०	भुंवाल्या गोत	कछावावंश	भूंवाल गांम	जंमवाय देवी
८१	जलवाण्यागो	कछावावंश	जलवाणी गांम	औरल देवी
८२	वैदाल्या गोत	ठीमरवंश	वनवौडा गांम	श्री देवी
८३	लठीवाल गोत	सोढावंश	लटवाडा गांम	ब्रमाणी देवी
८४	निरपाल्यागोत	सौरटावंश	निरपती गांम	

जैनधर्म पालणेवाले इस वखत लाड परवाल पलीवाल वगेरे वणिक् जाती बहुत है मगर उनोंकी उत्पत्ती गोत्रादिकका पता मिलणेसें किसी वखत जरूर लिखा जायगा ये बात बहोत जाणनें योग्य है आर्यदेश २५॥ देस जितने वणिये व्यापारी दया धर्म पालते हैं वे सब राजपूत या ब्राह्मन वंशवालोंकों हिंसाधर्म वैद यज्ञ तथा मांसमदिरा खाणा पीणा छुडाके व्यापारी वणाणेवाले जैनके आचार्योंका उपगार है

उनोमेंसें केइयक स्वामी शंकराचार्यके पीछे कोइ वणिया शैव कोइ विष्णु पीछा हो भी गया है॰ तथापि दयाधर्म पालणा मांसमदिराका त्याग तो उन वणियोंकी जातीमें प्रचलित है वो जैनधर्मके आचार्योंका उपगार ही प्रथमका समझणा क्योंकी स्वामी शंकराचार्य श्री चक्रकों मानने वाले थे उनोंके चार शिष्योंके नामसें चारोंही हिन्दूस्थानकी दिशाओंमे जो शृंगेरी १ द्वारिका वगेरे मठ है उसमें श्रीचक्रकी थापना है और श्रीचक्र है सो वाममार्गी कूंडा पंथी शाक्तोंका निज परम इष्ट है इस वास्ते वाममार्गी मदिरा पीणा मांस खाणा. पवित्र धर्म समझते हैं मांस १ मदिरा २ मछी ३ मैथुन ४ और मुद्रा ५ ये पांच वातोंके करणेवाला मुक्ति जाता है एसा वाममार्गका सिद्धांत है चंडालणीसें भोग करणा पुष्कर तीर्थ मानते हैं रजस्वला २ धोवण ३ इसतरे अधम जातीसे गमन करणा ये वाममार्गवालोंके मतमें तीर्थ यात्रा स्नान दानका फल मिलता है इत्यादि मतके उपदेशकोंके उपासक दयाधर्म किसतरे पाल सकते हैं खुद स्वामी शंकराचार्यके शिष्य १०॰नामके गुसाई वकरा भैंसा मीढा मारकर मांस खाणा मदिरा पीणा दक्षण हेदरावादमें हमने सइकडों गिरी पुरियोंकों आंखोंसें देखा है जब उनोंके धर्माचार्य इसतरे काम करते थे और करते हैं तो उनोंके उपासकोंके दिलमें दयाधर्म किसनें डाला है ये वदोलत जैनाचार्योंकी है जहां एक ब्रह्म, ऽहं ब्रह्म, द्वितियोनास्ति, एसी श्रद्धा रखणेवालोंके वास्ते नतो कोई ब्राह्मण है न कोई चंडाल है स्वामी शंकरनें कासीमें ब्रह्मपणे जाति भिन्नता कुछ नहीं समझी एसा ब्रह्म समाजी वंगाली कहते भी हैं जातिका झगडाऽहं ब्रह्म वाले अभी करते सो वडी भूल करते हैं हां जैनी वैष्नव करे तो न्याय है सो तो फकत देखणे मात्र है जिसनें अंग्रेजी दवा सूकीया अर्क वगेरे पिया वो मांस मदिरा वेसक खा चूका चाहै वैष्नव हो चाहे जैन विलायतके व्यापारियोंका ढंग रमणक दिखाणा है मगर अभ्यंतरी॰ परिणाम तो दयाधर्म पालणेवाले विचार करे तो निभाव होय स्वामी शंक-

कराचार्यनें सब कोमकों एकाकार करणे जैनियोंका तीर्थ जीरावला पार्श्वनाथका जो अब जगन्नाथके नांमसें प्रसिद्ध शैव विष्णुका तीर्थ है उसकूं बलात्कार अपणे कबजे कर मूर्तिपर लकडका हाथ पांवकटा चोला पधराके पार्श्व प्रभूकी मूर्ती अंदर कायम रखके भैरवी चक्र विठलायाकै इहां जातीकी भिन्नता नहीं रखणी एसा दयानंदजी सत्यार्थ प्रकाशमें लिखते हैं मतलब उनोंका एसा थाकी इहां चारों वर्ण सामलखालेंगे तो फेर आपसमें नो पूरबिया तेरे चोका नहीं करेगें सो दोनो पार नहीं पडी दोनों खोई रे जोगिया मुद्रा अरु आदेश सो हाल वणगया उहां जाके सब ब्राह्मण वैष्नव सामल झूंठ खाके जातभी खो वैठते हैं ओर पुरीकै वाहिर निकलै फेर तो वोही छूंछा मोजूद है ये जगन्नाथ पार्श्वप्रभूका मंदिर उडिया देसकै राजा जो परम जैन थे उनोंनें कराया था, जो की अब कलकत्तेमें मलक कहलाते हैं वंगालियोंमें, इसवास्ते मात्र दयाधर्मी वणिक् जाती जैन-धर्मी थे दक्षण कर्णाटक माहाराष्ट्र तैलंग इसमें जो लिंगायत वणिये सेठी कहलाते हैं ये जैनथे हिमाद्रि राजाका प्रधान वसप्पेनें जैनधर्म छोड शैव सन्याणी जंगम नामका भेष खडा किया शैवधर्म चलाया आखिरकों जैनाचार्योंसें हिमाद्रि राजानें सभा कराई वसप्पा हार गया ये वात सेठी लोक सब जाणते हैं वसप्पेका पुराण उसका इग्यारमा अध्याय अभी भी जंगम गुरु लिंगायत वणिये नहीं वांचते नहीं सुणते हैं उसमें जैनियोसें हारा प्रश्नोत्तर लिखा है इसवास्ते लिंगायत वणियोकै सिरपर शिखा नहीं गलेमें लिंग मुडदा घरमें मरे तो उसकूं थंभेसें वांधकर रसोई माल वणाकर मुडदेकै सामने जंगमोंकों विठला-कर भोजन करावै वो जंगम मुडदेकूं ग्रास (कवा) दिखाता जाय खाता जावै वाद उसको वैठा निकाले सामने संख वंजावै गाडकर आवै मगर स्नान नहीं करते एसा स्वरूप शिवधर्मवार करते हैं तैलंग देशमें कूंमटी वणिये सर्व जैनथै, अब शैव, मांस मदिरा त्याग है.

॥ अथ वघेरवाल ५२ गोत्र ॥ महाजन जैन ॥

वघेरवाल महाजनोंकी आदि उतपत्ती गांम वघेरामें भई राजा व्याघ्रसिंह इनोंका इतिहासभी यज्ञमें हिंसा हिंसाका फल नर्क एसा उपदेश श्रीजिनवल्लभसूरिः आचार्यादिकसें सुणके जैन श्रावक महाजन होते भये दिगांबर श्वेतांबर दोनों धर्म मानते हैं व्याघ्रसिंहसें वाघडी कहलाये वाकी गांमके नांमसें वघेरवाल वजणे लगे.

संक्षा	गोत.	संक्षा	गोत.	संक्षा	गोत
१	खटवड गोत	२०	तातहडयागोत	३९	सरवड्या गोत
२	लावावास गोत	२१	मंडाया गोत	४०	पापल्या गोत
३	साखूण्या गोत	२२	घालदचट गोत	४१	भूंगरवाल गोत
४	घनोला गोत	२३	पीतल्या गोत	४२	ठग गोत
५	सवधरा गोत	२४	दगोन्या गोत	४३	घहरिया गोत
६	वावन्या गोत	२५	भून्या गोत	४४	चमान्या गोत
७	सीघडासोड गोत	२६	देहतोडा गोत	४५	सुरलाया गोत
८	वागड्या गोत	२७	जिठाणीवाल गोत	४६	सौराया गोत
९	हरसोरा गोत	२८	मथून्या गोत	४७	सीलौस गोत
१०	सादूला गोत	२९	जोगिया गोत	४८	साखूण्या गोत
११	कौटिया गोत	३०	अवेपुरा गोत	४९	गंवाल गोत
१२	माडान्या गोत	३१	निगोत्या गोत	५०	केतग्या गोत
१३	कटान्या गोत	३२	कामरिया गोत	५१	खरडया गोत
१४	वनवाड्या गोत	३३	ठाइया गोत	५२	
१५	धौल्या गोत	३४	कुचील्यागोत		इन महाजनोंका
१६	पहान्या गोत	३५	मादलिया गोत		वंस देवीका पता लगा
१७	वौरखंड्या गोत	३६	सेठ्या गोत		नहीं इसवास्ते लिखा
१८	दीघडया गोत	३७	मुंईयाल गोत		नहीं है और ज्यादा
१९	वडमूंड्या गोत	३८	सांमन्या गोत		इतिहास लिखणेसें ग्रंथ

मी वधजाता है लोक गुणकै तरफ खयाल रखणेवाले कम वस ये कह उठेगें दाम जादा लगाये हैं इसवास्ते

॥ अथ नरसिंघपुरे महाजन जैनी गोत २८

नरसिंघपुर नग्र झव्वलपुर दक्षण मध्यदेसमे हैं दिगांवराचार्य भट्टारकजी रामसेनजीका उपदेससें वेद यज्ञ नानाजीव वध घातरूप मिथ्यात्व धर्मत्यागकै अष्टद्रव्य पूजा चैत्यालयमें श्री २४' तीर्थंकरकै मूर्त्तिकी सम्यक्तयुक्त नरसिंघपुरका राजा प्रजाकै साथ जैनधर्म आदर करा इनोंकी वस्ती मालवा मेवाड तथा धूलेवगढ केसरिया नाथ तीर्थपर है

सक्षा	गोत	देवी	संक्षा	गोत	देवी.
१	खडनर	वारणी देवी	१५	तेलियागोत	कांतेश्वरी देवी
२	पुलपगर	पावई देवी	१६	वलोलागोत	अंवा देवी
३	भीलण होडा	अवाई देवी	१७	खेलणगोत	कटेश्वरी देवी
४	रयणपारखा	रयणी देवी	१८	खांभी गोत	वरवासनीदेवी
५	अभथिया	रोहणी देवी	१९	हरसोलगोत	चक्रेश्वरी देवी
६	शुद्रपसार	भवानी देवी	२०	नागर गोत	नीणेश्वरी देवी
७	चिभडिया	घरू देवी	२१	जसोहरगोत	झांझणी देवी
८	पवलमथा	पावई देवी	२२	झडपडा	पिसाची
९	पदमह	पलवी देवी	२३	वारोड	पिपला
१०	सुमनोहर	सोहणी देवी	२४	कथौटिया	पिरण
११	कलसधर	मौरिण देवी	२५	पंचलौल	मौरण
१२	कंकूलौ	चक्रेश्वरी देवी	२६	मोकरवाडा	
१३	वौरठेच	वहुरूपणीदेवी	२७	वसोहरा	सीवाणी
१४	सापडिया	पद्मावती देवी	२८		

॥ अथ गौरारा माहाजन जैनी गोत ॥ २२

गोंरारे श्रावक तीन तरेके हैं १ गोरारारे २ गौलसिंघारे ३ गौला

पूरव इन सवोंका जैनधर्म है रहणा इनोंका ग्वालियर, इटावा, आ- गरा, इलाके है इनोंकी उत्पत्ती कहां पर केसें भई सो तो पाई नही फगत गोत मिले सो लिख दिया है किसीकों मालम होय लिख भेज- णेसें दुसरी वेर छपाया जायगा

संक्षा	गोत	संक्षा	गोत
१	पावईकेसें गेई	१२	वरेड्या गोत
२	गयेलीकेसें गेई	१३	ढनसइया गोत
३	पेरिया	१४	अदवइया गोत
४	वेद गोत	१५	सराफ गोत
५	नरवेद वुरवेद	१६	चोधरी वरांदके
६	सिमरइया	१७	चोधरी आंतरीके
७	कौसाडिया	१८	चोधरीकूकन्या
८	सौहार्ने	१९	डघा गोत
९	जमसरिया	२०	तसटिया गोत
१०	चौधरी जासूद	२१	वडसंइया गोत
११	चौधरी कौलसे	२२	तेत गुरिया

अथ अग्रवाल जैनवैस्य उत्पत्ती गोत्र १७॥

ये वात जगत् विक्षात है की चारवर्णोंमें सवसें पहले वैस्यवर्णका काम करणेवाले इस आर्यावर्त्तमें उग्र कुलवाले थे जैनियोंके आवश्यक सूत्रकी टीकामें युगादि देशनामें भरतेश्वर वाहूवली वृत्तीमें तेसठ शला- का पुरुप चरित्रमें आदिनाथ (ऋपभ चरित्रमें) वडी मनुस्मृतीमें इत्यादि श्वेतांवर संप्रदाई ग्रंथोंमें तथा इसतरेही दिगांवराचार्य रचित आदिनाथ पुराणादिकमें उत्तर पुराणादि धर्मकथानुयोगमें इसतरेसें लिखा है जंव भगवान ऋपभ देव तेत्रीस सागरका आयू सर्वार्थ सिद्ध विमानसें पूर्णकर निर्मल. तीन ज्ञानयुक्त इक्ष्वाकू भूमीं जो कस्मीरके परे है जिसके चारों दिशामें चार पहाड आये भये हैं सुर

शैल्य १ हिम शैल्य २ महाशैल्य ३ ओर अष्टापद (केलास) इसकी
नीच भूमीमें ऋषभ देवकै वडेरे सात कुलकर (मनु) विमल वाहन
वगेरे युगलिक लोकोंमें कसूर करणेवालोंपर वचन दंड करणेवाले
भये प्रथम हकार फेर मकार ओर फेर धिक् (धिक्कार) इसतरे केइ
यक उस जमानेके लायक कायदे वांधणेवाले भये लोक एसे ऋजु
थे सो जवानसें धमकाणेसें ही डर मांनते थे काल ज्यों ज्यों वीतता
गया त्यों त्यों कल्पवृक्ष हीन फल देणे लगे त्यों त्यों उन युगलिक
लोकोंके अन्यायका अंकूर वढणे लगा विमल वाहनके सातमें मनु
नाभिराजा उनकै मरुदेवी राणीकै ऋपभ देवका जन्म भया उहां
नगरी वगेरे कुछ नहीं थी जो वस्तु उन युगलिक लोकोकों चाहिये
वो १० जातके कल्पवृक्ष उनोंकों देते थे पूर्वजन्मके तपके प्रभावसें
युगलिक पुन्यवंत पैदा होते हैं ४५ लक्ष जोजनमें जो अढाई द्वीपमें
मनुष्योंकी वस्ती उसमें कर्माभूमी १५ मेंसें सुकृत करकै युगलिक
लोक अकर्मा भूमी कालधर्मसें पैदा होते थे प्रजा इक्ष्वाकु भूमीमें
कुल दोयसे ऊपर कुछ संक्षा प्रमाण औरत मर्दोंकै जोडे रहते थे
वाकी पांचसे छवीस जोजन छकला ऊपर सव भरतभूमी मनुष्य
क्षेत्रकी जिसमें वैताढ्य (हिमालय) इधर दक्षिण भरत आधा दोयसे
१२ जोजन तीनकला प्रमाण क्षेत्र सव खाली मनुष्य विगरकाथ
वैताढ्यके पहिले तरफ उत्तरमें म्लेछ खंड गुण पचास नग्र उस वखत
वस्तीवाला था उन लोकोंका खानपान मांस मछीका था क्योंकै जैन
ग्रंथोंमें लिखा है भरत पहिला चक्रवर्त्त छ खंड भरत क्षेत्र साधने
निकला तव हिमालयकी तिमिश्रा गुफाकै वाहिर फोजका पडावडाला
जिसकूं अभी खंधार कहते हैं इहांसे ४९ नग्रवाले म्लेछ संजोकूं
अपणी आणा मणाने दूत भेजा एसा लेख जंवूद्वीपपन्नती मूलसूत्रमें
लिखा है इसवास्ते सिद्ध होता है ऋषभ देवकै वडेरोंकै वखतसें ही
म्लेच्छ खंडकी वस्ती कायम थी आगे भरतमें कालधर्म पहिला • दुसरा

तीसरा आरा वरतणा सिद्ध होता है सर्व भरतमें नहीं सिद्ध होता ऋषभ देवने तो म्लेच्छ खंड वसाया नहीं फक्त सो पुत्रोंके नामका सो राज्य जिसमें निन्याणवे इथर १ एक हिमालय पार वहुली देशका वल जो बाहूवलकूं वसा कर दिया भरतचक्री ४९ नव म्लेछोंपर आंज्ञा मनाकर फेर अयोध्या आकर वहुली देसकी लडाई तो वाद करी है जैनेलोकोंनें इस वातकूं विचारणा कोई बुद्धिवान इस वातकूं न्यायसें असत्य ठहरा देगा सिद्धांतकी साक्षीसें तो दुसरी वारवो वात लिखी जायगी हमनें तो सूत्रकी साक्षीसें ये वात लिखी है हां आम तोरपर जैनधर्मवाले ये वात मांनते हैं के भरत एरवतमें काल चक्र फिरते रहता है ऋषभ देवका होणा तीसरे अरेका आखरी भाग अवसर्प्पणी कालका था अंग्रेज लोकभी हिमालय (वैताढ्यके दक्षिण मुल्क तीनखंडकोंही भारतभूमी कहते हैं क्या मालम ये नांम कौरव पांडवोंके युद्धका होणा भारत कहलाता था, उसवास्ते धरा है, या, भरतचक्री पहला जब होता है, तब भरतही नांमका होता है, इसवास्ते इस भूमीकों भारत क्षेत्र कहते हैं (भरतोद्भवा भारता) लेकिन् जैनधर्मवाले तो, जहांतक भरत पहले चक्रवर्त्तका राज्य शासन चले, ऋषभकूट पहाडतक, जिसपर अपणा नांम लिखता है, उहांतक भरत क्षेत्र मांनते हैं, पैरिसतक, उसके पहलेवर जैनियोंका लिखा चुल हिमवंत पहाड जिसकों आज कल को क़ाफ़, कहते हैं उसके ऊपर, परियोंकी वस्ती मांनते हैं, उसकैपार कोई अदमी नहीं जा सकता, वो उदयाचल पहाड कहलाता है, जहांसें सूर्यकी किरणें इस भरतभूमीपर प्रकाशकर दिखाई प्रभातसमें देती है, अंग्रेजी इतिहासवाले लिखते हैं भारतभूमीमें फकत म्लेछ भील वगेरे पहाडोंपास अणपढलोक रहते थे और वस्ती नहीं थी उनोंकों ग्रीक लोक पेस्तर आकर इल्म सिखाकर हुसियार किया, इस• लेखका परमार्थ तो हमारी समझमें तो एसा निकलता है कै ये वात दक्षण भरतकी नहीं है हिमालिये के

येकी पहलै तरफ जो उत्तर भरत है उसमें ४९ नग्रवालोंकों ग्रीक लोकोंनें कोई जमानेमें अपणे सागिर्द वणाये होगें खेर रहणे देते हैं, ॥ जब ऋषभदेव वाल्यावस्था त्यागी नाभी मनुकै हुक्मसें युगलिक लोकोंनें युगलियोंमें अन्याय फैलता देखकै ऋषभकूं राजा वनाया उस वखत लोक जुवानकी सजाकों कुछ नहीं गिणारं णे लगे तब अव्वल तो कल्पवृक्ष फलहीण भये देख प्रथम तो चावल पकाकर सबोंकों रसोई करकै खाणा सिखाया फेर वस्त्र वुणणेवाले नाई चितेरे वगेरे ५ कर्मके सो कर्म करणेवाले कारीगरी सिखलाई प्रजाकूं वढाणे संगमें जन्मी कन्याका विवाह वंधकर दुसरेकूं बेटी देणा और दुसरे गोत्रीकी लाणा सिखाकर युगला धर्म मिटाया तब रसायणिक प्रयोग पास होकर प्रजा वढी गढकोट किल्ला अस्त्र शस्त्र हाथी घोडे गउ ऊंट सब मनुष्योंकै कांम लायक किये नोकरी लिखत पठत प्रमुख ७२ कला प्रगटकर प्रजाकूं सिखलाई ६४ कला औरतोकूं ग्रहाचार सिखाकर नवनारू नवकारू एसें १८ श्रेणीकै १८ प्रश्रेणीकै ३६ कुलक्षत्री वंसमेंसें प्रगट करे.

सीसगर १ दरजी २ तंबोली ३ रंगारे ४ गवाल ५ घढई ६ संग्रास ७ तेली ८ धोबी ९ धुनियापिनारा १० कंदोई ११ कहार १२ काछी १३ कुंभार १४ कलाल १५ माली १६ कुंदीगर १७ कागजी १८। कृपाण १९ वस्त्रकार २० चितेरा २१ वंधेरा २२ रेवारी २३ लखारा २४ ठंठेरा २५ राजपटवा २६ छप्परबंध २७ नाई २८ भडभूंजा २९ सोनार ३० लोहार ३१ सिकलीगर ३२ धीवर ३३ चमार ३४ गिर ३५ सुथार ३६ इनोंमें फेर केइ २ तरेके भिन्नता भई जेसें छीपा दरजी १ मीरू दरजी २ टोपसिया नाई १ घाचर नाई २ मारूकुंभार १ वांडाकुंभार २ इसतरे जिनोंनें ये कृत्य किया वोही जाति होगई ब्राह्मण सुनार १ मेढ सुनारादिक समझना ब्रम्ह भगवाननें प्रजामें ४ वर्ण स्थापन किये उग्र कुल १ इनोंकों दंडपासक यानें कोटकचहरी दिवान मुसदी कोटवाल प्रमुख

राजकार्य करणा न्यायाधीस वणाया १, भोगकुल २ प्रजाकेवास्ते भगवान आप जिनोंकों गुरु करके माना २ राजन्यकुल ३ जो भगवान इक्ष्वाकूका कुल जिसमें सूर्य यस पोतेका सूर्यवंश १ चंद्रयश पोतेका चंद्रवंश २ चंद्रसूर्यके जितनें कोसोंमें पर्याय वाचक नांम है वो सब नाम इन वंशवालोंका समझणा जेसें आदित्यवंश १ तो सूर्यही का नांम है इसतरे सोमवंश २ वो चंद्रहीका नांम है कुरु पुत्रसें कुरुवंश इत्यादिसो पुत्रों वगेरे परवारका संतान राजन्यवंस कहलाया ३ बाकी युगलिक लोक प्रजा उनोंका कास्यप गोत्र और क्षत्रीवंश था पणकि·या जिसमेंसें छत्तीसपूण निकली जिसके वाद असंक्षा काल वीतणेसें उण चारोंका पर्याय वाचक नांम और होगया उग्र कुलवाले गुप्त कहलाये देखिये वागभट्ट नांमका जैनगुप्त (वणिक्) नें वागभट्ट वैद्यक ग्रंथ नेम निर्वाण महाकाव्य वागभट्टालंकार काव्य अनेकानेक गुप्त जातीके वनाये भये हैं ये वागभट्ट जैनधर्मी था. उसका ग्रंथही धर्मकी सबूती देता है भोगकुलकूं शर्मा संज्ञा भई राजन्यवंशियोंकूं वर्मा संज्ञा भई इसतरेही चारोंका पर्याय नांम धरा पीछेसें विप्रसंज्ञा वेदपाठीकों, विगर संस्कार शूद्रसंज्ञा, संस्कार किये वाद द्विजसंज्ञा, जब जीव अजीव पुन्य पाप इत्यादि नव तत्व जाणे, क्षमा १ मार्दव २ आर्जव ३ निर्लोभता ४ तप ५ सत्य ६ सौच ७ अभ्यंतर परणामी (संजम ८ इंद्रियदमन) और जिन पूजादिक षट्कर्म ९ इतने करणेवालेके गलेमें जिनोपवीत डाली गई, जिसका अपर नांम, नो गुणी, उसकूं प्राकृत व्याकरणके शब्दसें, माहण, भरतचक्रीनें कहा था, उसका संस्कृत व्याकरणसें (ब्रह्म वेत्ति स ब्राह्मण) यानें ब्रह्म जो अविनासी आत्माका स्वरूप जाणे; सो ब्राह्मण कहलाये, शर्मापद देवपूजकोंकों मिला, वर्मा नांम धराणेवाले राजन्यवंशियोंकूं क्षत्री कहणे लगे, वो जो राज्यकार्य कर्त्ता उग्रवंशी जो गुप्त नांम धराया था वो वैश्य कहलाये, छत्तीस श्रेणी प्रश्रेणीके क्षत्री वंशवाले जो ये वो कर्म्मानांम धरातेथे वो शुद्र कहलाणे लगे ये संज्ञा चार ब्राह्मण

१ वैस्य २ क्षत्री ३ और शुद्र ४ श्रीकृष्णचंद्रकै राज्यमें कृष्णद्वैपायन व्यासनें गीता बनाई उस वखत ये नांम पूर्व्वनाम पलटाके थप गया, गीतामें कर्मके पिछाडी चार वर्ण बंधे हैं, व्यापार, खेती करणा, गऊओंका गोकुल रखणेवालेकों वैस्य कहा है, इस न्यायतो, जाट कुणबी, सीरवी, अहीर वगेरेभी, एसा कृत्य, करणेसें गीताके हिसाव, वैस्य होणा चाहिये, पुराणोंमें छ कर्म करणेवाले, ब्राह्मनोंकूं अधम लिखा है (यतः) असीजीव मषीजीव, देवलो ग्रामयाजकः । धावकः पाचकश्चैव, षडेते ब्राम्हणाधमाः ५ (अर्थ) तलवार बांधके फोजोमें सिपाही रह नोकरी करै, मसीयानें लिखणा नांमा ठांमा व्यापार करै, देवलोयाने मंदिरोंकी नोकरीका चलि भक्षणादिक नोकरी करै, ग्राम याचक यानें ग्रत, जुजमान वणाके दापावंट परणे मरणे आदिका लेवै, धावक यानें नोकरीमें इधर उधर जावै संदेसा करै कासीदी करै, पाचक यानें रसोई मिठाई वगेरे वणाकर आजिविका करै, एसें ब्राह्मनोंकों पुराणोंमें अधम लिखा है, अरे कलियुग एसा कोई कांम नहीं सो पेटकेवास्ते ब्राह्मण लोक इस वखत नहीं करतें होय सिरफ नाम मात्र ऋषियोंकी ओलाद है, दातारकी भक्ती, दान देणा गृहस्थका धर्म है, गृही दानेन शुद्ध्यति, इस वचनसें, वाकी नोकरी हाजरी भराकै जो ब्राह्मनोंकूं पुन्य समझ दांन देते हैं वो देणेवाले मूर्ख है पुन्य उसका नांम है जिसका वदला नहीं लिया जाय वस इस वातकूं समेट उग्रकुलका इतिहास लिखते हैं.

उग्र कुल दुनियांका कार्य चलतेही स्थापन भया वो क्रमसें राजकार्य करते २ कोई भुज वली राजाधिराजभी वण गये एसा जमाना नहीं गुजरणा वाकी रहा होगाके चारों वर्णोंवाले राजा न भये होय यानें जमानेके फेरसें अंत्यजतक तो राजा हो चूके और राजा, अन्नसें मोहताज होगये ये सब पुन्य पापके योगसें कर्मोंनें जीवोंकों अनेक नाच नचाये और नचाता है और नचायगा जमानेके फेरफारसें कभीं धर्म जैन प्रबल रहा इस वखत नानातरेकै धर्मकत शिक्षा अपणा

वखत दिखा रहा है मिथ्यात्व जीवके संग अनादि कालसें लग रहाहै संसारमें रुलणेवाले जीवोंकों जिसतरफ सरीरके पांचों इंद्रियोंके सुख मिले अपणेवास्ते चाहे कितनाही द्रव्य खरच होजाय परमार्थमें पैसा कम खरच पडे वो धर्म कलियुगी जीवोंकों संसारसें तारणेवाला मालूम देता है जिधर जिसकाजी मानता है उधरही धर्म कबूल करता है लेकिन् जिधर पांचो इंद्रियोंकों मजा मिले उस धर्मकी तरफ जादा रजू होणे दीखता है उग्र कुलवाले वैस्य वजणे लगे और आपसमें वली होकर राज्यभी करणे लगे राजा उग्रकुली धनपाल धनपुरी नगरी पंचाल देशकूं कवजे करके वसाई इनोंके केइ पीढियोंतक राज्य रहा राजारंग पुत्र विशोक विशोकके मधु इस वखतमें वैताढ्य पर्वतपर इंद्रनामें विद्याधरोंमें वडा वलवंत राजा पैदा भया इस मधुका वर्णन जैनरामायणमें नारदजीकूं रावणने हिंसक यज्ञ क्योंकर चला इस प्रश्न करणेसें उत्तर दिया है उसमें राजा मधूका और सगरका वृत्तांत चला है उहां देखणा मधूका महीधर इस वखत राजा इंद्रनें रावणके वडेरोंकों युद्धमें हटाकर लंका छीनली रावणके वडेरे पाताळ लंका (अमेरिका) में जारहे महीधर रावणके वडेरोंके आज्ञाकारी था इसवास्ते इंद्रनें इसका राज्यभी छीन लिया महीधर फेर और राजाओंकी नोकरी करणे लगा पीछे रावण पैदा भया और इंद्रसें युद्धकर वैताढ्यपर्वतका राज्य छीन लिया महीधरकों रावण बुलाकर सेनापती वणाया जब रावणपर रामचंद्र आये तब विभीषणके संग महीधरभी रामचंद्रपास आगया फेर अयोध्यामें महीधर काम कर्त्ता भया फेर केइ लाख वर्ष वीतणेमें फेर महीधरके कुलवाले राजा होगये यों केइ पीढीयोंमें इस वंसवाले जैनधर्म छोडके ब्राह्मणोंका वेदधर्म मांनने लगे अग्रायण (अग्रसेन) नांम राजा हांसी हंसार जो अब वस्ती है इहांपर अपणे नांमसें अग्रोहा नग्र वसाया उग्रकुली लोक तथा अन्यलोकोंकी वस्ती बहोत वसी ये जमाना करीन विक्रमराजाके कुछ पहिलेका है राजा दिल्ली मंडल सर्व कबजे कर लिया इस वखत

वैताढ्य पहाडपर इंद्रकै वंसवाला सुरेंद्रनामका राजा पीछा राज्य तिव्नत राजधानीमें करता था इसवखत दक्षणदेशमें कोलापुर नग्रमें नागवंसी राजा अभंगसेनकी पुत्रीको सुरेंद्रनें मांगी अभंगसेन दोनों कन्या माधवी १ औरचंद्रिका २ अग्रसेनकों देदी एसा कहला भेजा तव सुरेंद्र अग्रसेनसें युद्ध करणे आया अग्रसेन ये सुणकर भग गया कासीमें जाकै माहालक्ष्मीका मंत्र साधनकरा लक्ष्मी प्रसन्न होकै कहा मांग इसने कहा लक्ष्मी मेरे घरमें अतूट रहै और शत्रु मेरे कोई नहीं होसकै लक्ष्मी तथास्तु कह अलोप भई उहा इसकूं भूमीमें असंक्षनिधान प्राप्तकर कोलापुर जाके दोनो कन्या व्याहकर स्वसुरका दायजा लेकर अग्ररोहा नग्रपीछा लेलिया उन कन्यांओंकै गर्भाधान रहा तव ब्राह्मनोंनें कहा हे राजा तेरेकों लक्ष्मी प्रशन्न है तूं पुत्रोंकै कल्याणार्थ जज्ञकर तव राजा यज्ञ सरूकरा इसतरे अनेक जज्ञ अश्वमेध गउमेध छागमेधादिक सतरे पुत्र होते रहै यज्ञकरता रहा अठारमा पुत्र गर्भमें था यज्ञकै लिये नाना पशुगण जमा किये भये त्रासपारहेथे इसवखत महालक्ष्मी देवी चित्तमें व्याकुल भई विचारणे लगी जो मेंनें सुकृतार्थ

माहेश्वर कल्पद्रुमवालेन अग्रवालोंकी उत्पत्तीमें लिखा है अठारमा यज्ञ आधा भया किसी कारणसें ग्लानी भई एसा लिखा है वो ग्लानीकै कारणकों प्रगट नहीं किया फक्त अपणे वेद धर्मकी वेअदवी छिपाणेनों आदि उत्पत्ती त्रेतायुगके प्रथम चर्ण वारतक लिखकै सबूती दिखाते हैं, कोइ पूछे किस वेदमें या स्मृतीसें या पुराणसें ये बात लिखी है तो मौन करणा ही जवाब होगा और हमने उग्रकुलका होणा असक्षा वर्षकै पहिले दुनियाकी रीत रसम चलते ही पहल लिखे शास्त्रोंसें प्रमाण देकर लिखा है उस जमानोंकों वीते असक्षा चोकडी सतयुग द्वापर त्रेता कलियुग वीतगये है आगे चलकर लिखा है अग्रायणके केइ पीढीवाद जैनधर्म अग्रवालोंने धारा है इतना नहीं विचारा की यज्ञम ग्लानी प्राप्त होणा ही जैनधर्मका कायदा था इसवास्ते खुद अग्रायण वेद यज्ञ छोड जैनी भया था जिससें १७॥ गोत भये ये लिखतें सरम आगई स्वामीशकरके चेले आनदगिरी शकरदिग् विजयम लिखते हैं (वेदकी हिंसा हिंसान भवति) अर्थात् वेदकी रूसे जों जानवरका मास खाया उसमें हिंसा नहीं होती तव विचारो (धर्मियोंकों ग्लानी केसें आवेगी वलकै एसे वचनोंसें तो हिंसाकर्म वेदधर्मी वेधडक) कम्मर वाधके करेंगे वाहरे धर्मोपदेशक

करणे इसकों प्रशन्न होकर द्रव्य दिया था उसकों इसनें महा अघोर पापका हेतु नरक जाणेका मार्ग जीव वध घात कसाइयोंका कर्म ब्राह्मणोंके वचनोंसें कररहा हे इस पापकी क्रिया मुझकों भी लगेगी और मेरा भी परामव होणेसें दुसकी भागण होउंगी तव रातकों देवी इस राजाकों उठाकर प्रथम नरकमें ले गई उधर वो जीव फरसी लेलेकर राजाकों मारणे दोडे जिन २ जीवोंकों इसनें अग्निकुंडमें हवन किया था और माहादुरगंध माहाविकराल मनुष्यसें वर्णन नहीं किया जाय एसा नरककूं देख राजा रोता पीटता भागणे लगा तब लक्ष्मीदेवी मृत्युलोकमें लाकर बोली अरे राजा इस यज्ञसे तूं मरकै नर्क जायगा और तेने जो मारे हैं जीव अग्निकुंडमें वो तेरेसें बदला लेंगें तव राजा बोला हे माता अब इस पापसें केसा छूटूं मेरा उद्धारकर (एसाही हाल प्राचीनवर्ही राजाका नारदजीनें यज्ञके पापके बदले नरक दिखाकर छुडाया है देखो विश्नुओंका भागवतपुराण उसमें लिखा है) तब माहालक्ष्मी देवी बोली हे राजा प्रभातसमें भगवान महावीरकै शंतानी लोहाचार्य महाराज इहां आंयगें उनोंकी वाणी सर्व जीव हितकारणी

जंगद्गुरु बजणेवालोंके चेलेजी एसे न्यायके वचनोंसें ही दिग्विजय भया होगा धन्य दिग्विजय धन्य, फेर माहेश्वरकल्पद्रुमवालेनें आग्रायणके कुलकों ब्राह्मण ठहराया है ऋपि लिखा है भिक्षुककर्म करणेवाले छत्तीसही पूणसें दानादिक प्रतिग्रहीयोंकी ओलाद लिखा है जों उग्रवंश राजपूतोंमेंसें प्रगट भया वो भिक्षुक जाती जैनधर्मवालोंने नहीं मानना अग्रवाले बडे दानी बडे शूर बडे व्यापारी प्रतक्ष दिखते हैं ये वात ब्राह्मणोंसें कभी नहीं होसके दान लेणेवालेकी जाती कभी एसा दान नहीं करसकती इसवास्ते अग्रवाल अव्वल राजन्यवंशी वैस्य है बीजकी तासीर कभी मिटे नहीं जैनधर्मवालोंका इतिहासकूं उलटा मुख्य करके माहेश्वर कल्पद्रुमवालेनें शैव विष्णुधर्मी प्रथमसें सिद्धकरणे कल्पितवात लिखी है वैश्नवमती अग्रवंशी निरापेक्षीपणे कसोटी लगाके बुद्धीसें परिक्षा करलें इतिहास कोनसा सचा है ऽलमिस्तरेण, सतरेराणियोंके ही सतरे पुत्र किसी जगे लिखा है अठारमां पुत्र राजाकी पास वान ब्राह्मणी पटदायत थी उसका नाम गोणथा इसवास्ते आधा गोत्र ठहराया और बहोत लेख एसा हे के उग्रकुलवाले जो राजाके गोत्री वैस्य थे उन सबोंका आधा गोत्र ठहराया मतलब आधेमें तो सतरे पुत्र राजा [illegible]गसें और आधेमें सब गोत्री भाई एसा एक

भवसमुद्रतारणी सुणकर पापारंभ छोड दया सत्य बोलणादि धर्मग्रहण करणा तेरा उद्धार होगा प्रभातसमें लोहाचार्य (गर्गाचार्य) अपरनांम पधारे राजा सपरिवार गया दया क्षमाकूं सुणकर जेसे सांपकंचुकी त्यागता है तेसें मिथ्यात्वधर्म त्याग सम्यक्त युक्त श्रावकव्रत लिया जगे २ चैत्यालय कराये बाकी सर्व अग्रवंसीयोंका गोण गोत्र किया सतरे पुत्रोंका सतरे गोत्र भये इनके कुलप्रोहित हिंसक यज्ञ छोडकर दयाधर्म धारण किया जो गौडब्राह्मण कहलाते हैं त्यागी गुरुमुनिः जतीराजानें कबूलकरा, देवी माहालक्ष्मी उपदेश देकर दयाधर्म धराणे वाली, लक्ष्मी पुत्र अग्रवाल लक्ष्मीकैही पात्रही रहते हैं, बाद नोकरी व्यापार राजके मुसद्दीपणा करते रहे एक पुत्रकी ओलाद अग्रोहाका राजा रहा मुसलमीन साहबुदीननें मुलक छीनलिया बाद फेर हेमचंद अग्रवाला हुमायू बादशाहकूं विक्रमसंवत् १५०० से ७६ में युद्धकर भगादिया दिल्लीतखतका बादसाह होगया तदपीछै अकबरनें फेर युद्ध कर छीनलिया हेमचंदकूं अकब्बर अपणे पास रखे चाहता था मगर दिवाननें उसकूं मारडाला इस बातसें अकब्बर नाराज होकर उसकूं

अग्रवालकुल ब्याह करणा आपसमें ठहराया माता अलग २ होणेसें फकत दूंध टालदिया जेसें मुसलमानलोक टालते हैं आगे हिन्दमें ये रसम जारीथीके गोत्र पुत्रोंका अलग २ मान लेतेथे दायमें सब दधीचके पारीक सब पाराश्वरके संखवाल संखारडीकै एककी सब ओलाद मगर ब्याह आपसमें करते थे सिरपमाता जुदी २ सें जुदा गोत्र समझा जाता था कृष्णकी भूआ कुंती उसके पुत्र अर्जुनकूं कृष्णकी बहनसोदरा ब्याही एसा वैश्नव कहते हैं जैनोंके अधकवृश्नी १ भोजगवृश्नी दोनों एक बापके बेटे जादव अधकवृश्नीका उग्रसेन भोजगवृश्नीका समुद्रविजयका पुत्र अरिष्टनेमि (नेमनाथ) उग्रसेनकी पुत्री राजेमतीसें ब्याह होणे लगा पडदादाएकथा इसवास्ते अग्रसेननें कुछ नई बात नहीं करी दक्षणमें अभी भी मामाकी बेटी भाणेजसें सादी होती है राजपूताणेके सब राजा भी एसा करते हैं कोइ टालता कोई नहीं मगर एब नहीं गिणते हैं, माहेश्वरकल्पद्रुमवालेनें अग्रवालवंशकी तारीफ तो लंबी चोडी मनमानी लिखी मगर अठारमा गोत्र गोल्हण ठहराया और लिखा ये गोत्र कलयुगमें बहोत घटेगामतलब गोलोंकी जाती बहुत बढेगी देखिये केसीकटुसालेमें लपेटके मारी है सो गोलोंकी जातकूं अग्रवाल ठहराया है आपसमें सगपण ठहराया है पूज्यपुरुषकी

मके निकालदिया देखो वंगवासी छापेमें छपा अकव्वरचरित्र, अग्रवाले राजाओंकी नोकरी करणेसे संगतका असर जैनधर्मके कायदे सखत, लगामदार घोडा जेसें कुछ खासकेन पीसके, इसवास्ते माल खाणा मुक्तिजाणा, दिनरात दिल चाहे सो खाणा लगाम छोड, वेलगामी, सातसे वर्ष भये वहोतसे लोक, कोइ शैव, कोइ गोकुली उधर लछमण गढके माहानंद रामजीके लटके पूरणमलजी दक्षण हेद्रावादमें कोट्याधिपती वणके चक्रांकित रामानुज धर्मी श्रीवैश्नव होगये, द्रव्यकी मदत देके हजारों छन्याती ब्राह्मणोकों, महेश्वरी अग्रवालोंकों श्रीविश्नव वणादिया, और तोताद्री जोजीरस्वामीका काम था लांछित करणेका, वो नई गद्दी वणाकर पुष्करजीमें स्थापित करदिया, लाखोरुपे सीताराम वागकों लगाया एकतरफ दक्षणी आचारी एकतरफ अपणे गोडब्राह्मन गुरुकी गद्दी लगादी इसतरे कोई शैव कोई विष्णु धर्मी भये और वहोतसे दिल्लीके भरदन वाह सनातनधर्म जैनही पालते हैं, दिगांबर जादा श्वेतांवरी अग्रवालोंमें कम हे, सतरे पुत्रोंके नांम १ गर २ गोयल ३ मंगल ४ संगल ५ कांसल ६ वांसल ७ ऐरण ८ ठेरण ९ विंठल १० जिंदल ११ जिंजल १२ किंदल १३ कुंछल १४ विंछल १५

मखी तो करी मगर पूज्य पुरुषके नाकपर बेठी मखी जूतीसें उडाणा सो मिलाकर दिखाया है, वीकानेरमें नाथी पातर मोहता महेश्वरी देसदिवान राजा सूरतसिंहजीके राज्यमें घरमें रखीथी उसकी ओलाद महेश्वरियोंमें मिलाये गई गडवड चलाते हैं मगर महेश्वरीयोंकी बेटीयोंसे व्याह होते चार पुस्त वीत गये असलमें पिता तो मोहताजी महेश्वरी होनेसें महेश्वरीनाथीके मोहताही वजते हैं इनमाफसें तो कोइ हरजा नहीं दिखता क्योंकि ब्राह्मणोंकी ओलाद भी तो इसतरे ही भारतमें लिखी है कोई धीवरणीके पेटसें कोई धीरणीके पेटसें देखो विश्वामित्रका पाराशर उसका पुत्र कृष्णद्वैपायनव्यासके सुकदेव इन सबोंकी माता सब अधम जातवाली थी मगर ब्रह्मकर्मसें ब्राह्मन मानेगये इस न्याय रखोंमेंई छोकी ओलाद पिताके वीर्यसे है इस न्याय वैश्योंने दलील नहीं उठाणी चहिये जैनलोकोंमें ये विवहार नहीं मालम देता अग्रसेनके भी वेदधर्मी थे तभी अठारमा पुत्र निरवंस नहीं जैनधर्मके कायदा धारेसोद जो भरा भी है तो आधा गोत्र ठहराया, जैन पूरे आपेमें सब उमकुल १७॥ में मानते हैं.

बुद्दल १६ मिंतल १७ सिंतल और आधे गौण गोत्रमें सब उग्रकुल गिणा गया इसतरे १७॥ कहलाते हैं.

इसवखत प्रसिद्धनांम ग्रोत्र.

१ गरगोत	६ तरलोगोत	११ सिंतल	१६ हरहरगोत
२ गोयलगोत	७ कासलगोत	१२ मिंतल	१७ वच्छिलगोत
३ सिंगलगोत	८ वांसलगोत	१३ झिंघल	॥ गरसूंगूण ॥
४ मंगलगोत	९ ऐरणगोत	१४ किंघल	
५ तायलगोत	१० टेरणगोत	१५ कछिल	

श्री वीकानेरगद्दीनसीन माहाराजा

१ रावश्रीवीकाजी
२ रावश्रीनेराजी
३ रावश्रीलूणकरणजी
४ रावश्रीजैतसिंघजी
५ रावश्रीकल्याणसिंहजी
६ महाराजा श्रीरायसिंहजी
७ महाराजा श्रीदलपतसिंहजी
८ माहाराजा श्रीसूरसिंघजी
९ महाराजा श्रीकरणसिंघजी
१० महाराजा श्रीअनोपसिंहजी
११ महाराजा श्रीसरूपसिंहजी
१२ महाराजा श्रीसुजाणसिंघजी
१३ महाराजा श्रीजोरावरसिंहजी
१४ महाराजा श्रीगजसिंघजी
१५ महाराजा श्रीराजसिंघजी
१६ महाराजा श्रीप्रतापसिंहजी
१७ महाराजा श्रीसूरतसिंहजी
१८ महाराजा श्रीरत्नसिंहजी
१९ महाराजा श्रीसिरदारसिंहजी
२० महाराजा श्रीडूंगरसिंहजी
२१ महाराजाधिराज श्रीगंगासिंह जीवहादुर विजयराज्यै ॥

जेसा लिखापाया वेसा सब राजवियोंकी पीढी लिखी है विद्यमान माहाराजा श्रीगंगासिंघजी वडे बुद्धिशाली न्यायनीतीमें अग्रेश्वरी प्रजापालणेमें साक्षात् राजारामचंद्र जेसें जिनोंकी कीर्ति सब वादसाहीयोंमें रोसन है अग्रेजसरकार सप्तमऐडवर्ड सम्राट् तथा गवर्नरजनेल साहबोंके माननीय चंद्रसूर्य ध्रुवकी तरे राज्य दीपाते भये आप.हजूर साहब चिरंजीवी रहो ग्रंथकर्ताका आश्रीवाद है ॥

राष्ट्रकूटस्थानें राष्ट्रमायनें भारतवर्षरूपराज्य जनपद देश उसके राजवियोंमें [illegible] याने शिखरसमान जिसका नाम (र[illegible]ड).कनोजकी

घादसाही तूटी तब सीहाराव आसथानजी खरतर गच्छपती श्रीजिन-दत्तसूरिःके उपगारसें आभारी भये संवत् विक्रम ११०० सेके उतारमें पालीनग्रमें खरतर गुरू जाए राठोड मानेगें एसी प्रतिज्ञाकरी इसका विस्तार विवरण बीकानेरके घडे उपाश्रयके ज्ञानमंडारमें सर्व चमत्कार उपगारका विस्तारवर्णन है आगे चुंडाजी पडिहारोंके मंडोवरमें सादी करी, दोहा,•चूंडा चवरी चाढ, दीवीमंडोवर दायजै, इंदातणो उपगार कमधजकदियनवी सरै, पीछे सुणा है चूंडेजीके १४ जाया १४ रावक हाया प्रथम योधपुर १ बीकानेर २ किसनगढ ३ रतलाम ४ झबुआ ६ ईडर ७ अहम्मदनगर इत्यादिक १४ ही राजा भये.

अथ योधपुर तखत नसीनमाहाराजा.

१ रावश्रीजोधाजी	११ महाराजा श्रीजसवंतसिंहजी
२ रावश्रीसातलजी	१२ माहाराजा श्रीअजीतसिंहजी
३ रावश्रीसूजाजी	१३ माहाराजा श्रीअभयसिंघजी
४ रावश्रीगांगोजी	१४ महाराजा श्रीरामसिंहजी
५ रावश्रीमालदेवजी	१५ महाराजा श्रीवखतसिंहजी
६ रावश्रीचंद्रसेणजी	१६ महाराजा श्रीविजयसिंहजी
७ महाराजा श्रीउदयसिंहजी	१७ माहाराजा श्रीभीमसिंघजी
८ माहाराजा श्रीसूरसिंहजी	१८ माहाराजा श्रीमानसिंहजी
९ माहाराजा श्रीगजसिंहजी	१९ माहाराजा श्रीतखतसिंघजी
१० रावश्री अमरसिंहजी नागौर तखतविराजे	२० माहाराजा श्रीजसवंतसिंघजी
	२१ वर्त्तमानमाहाराजा श्रीसिरदारसिंहजी चिरंजीवी विजयराज्यै

(जेसलमेररावलराजा)

सात कुलगर विमलवाहन वगेरे सातमानाभि १ ऋषभब्रह्मा २ आत्रेय प्रथम वैद्य ३ असंक्षापाटवीते सोम ४ असंक्षापाटवीते बुद्ध ५ असंक्षापाटवीते परूरवा ६ असंक्षापाटवीते आई ७ असंक्षापाटवीते लघु ८ फेर असंक्षापाटवीते ९ असंक्षापाटवीते, जयात्र १० असंक्षा पाटवीते चंद्रकीर्ति ११ इसके पुत्र नहीं तब युगलकदुसरे क्षेत्रसे लाकर देवता

तखत बिठाया हरिराजा इहांसें हरिवंस कुल प्रसिद्ध भया चंपानगरी मैं जो दक्षण मुगलाईमें बीडनांमसें प्रसिद्ध है १२ इसके असंक्षा वर्षपर दधाद १३ असंक्षा पीछे अजोन १४ असंक्षा वर्षवीते अधिपति १५ असंक्षावर्षवीते थाई १६ सरमेंद्र १७ उमेकर १८ चित्र १९ चित्ररथ २० चक्रधन २१ अष्टकर २२ चंद्रकुमार २३ अत्रेय २४ सहस्त्रार्जुन २५ सार २६ उद्धरण २७ वलिमित्र २८ प्रल्हाद २९ सृगधत्त ३० हरिविम्रम ३१ भवण ३२ दूसल ३३ झूझक ३४ अवनसान सात ३५ भूमिपाल ३६ नवरथ ४० दसरथ ४१ शक्तकुमार ४२ पृथ्वीमार ४३ समर्थ ४४ श्रेष्ठपति ४५ पहियपत्र ४४ जादू ४७ इसके परवार वहोत जादव कहलाये इसका सूर ४८ सूरकै दो पुत्र सोरी ४९ दुसरा सुवीर सोरीका अंधकवृश्नी ५० सुवीरका भोजगवृश्नीकै उग्रसेन मथुराका राजा भया अंधक वृश्नीकै समुद्रविजय वडा सोरीपुरका राजा छोटाही छोटा वसुदेव ५१ ये १० भाई दसारण वजतेथे वसुदेवकै कृश्न ५२ प्रद्युम्न ५३ अनरुद्ध ५४ वज्र ५५ प्रतिवाहू ५६ वाहू ५७ सुवाहू ५८ भाटी ५९ इसका परिवार भाटी वजणे लगे जगसेन ६० सालिवाहन ६१ भुवनपति ६२ भोपराज ६३ मंगलराव ६४ बुद्ध ६५ वच्छराज ६६ देहल ६७ केशर ६८ तणा ६९ विजयराव ७० देवराज +सिद्ध ७१ तणु ७२ मंधु ७३ राववाछ ७४ दुसाज ७५ जेसलजी जेसलमेर गढ डाला विक्रमसंवत् १२१२ सावण सुदि १२ अदीतवार ७६ सालिवाहन ७७ राव बीजल पिता द्रोणक रिष्ट ७८ राव कल्याण ७९ राव चाचोवडो ८० रावकर्ण ८१ रावलपण ८२ राव पुन्यपाल ८३ राव जैतसी ८४ राव मूलराज ८५ राव दूदल ८६ राव घडसी ८७ राव केहर ८८ राव लखमण ८९ राव वैरसी ९० राव चाचो ९१ राव देईचीदास ९२ राव जैतसी ९३ राव लूणकर्ण ९४ राव मालदै ९५ राव हरदास ९६ राव भीमजी ९७ राव कल्याणदास ९८ राव मानसिंह ९९ राव रामचंद १०० राव सबलराज १०१ राव

× देराउर वसाई पमारापास लोद्रवालिए।

अमरसिंह १०२ राव जसवंतसिंघ १०३ राव जगतसिंह १०४ राव अखयसिंह १०५ राव मूळराजजी १०६ राव गजसिंहजी १०७ राव रणजीतसिंहजी १०८ वैरी सालजी १०९ शालिबाहनजी विजयराज्ये

अथ ओशवंशनाम

श्रीमाल १ श्रीश्रीमाल १३५ गोत्र २ श्रीपना ३ श्रीपती ४

अ

आदित्य १ आसुपुरा २ आसाणी ३ अचल ४ अमरावत ५ अघोडा ६ अमाणी ७ आकोल्या ८ आमड ९ अशुभ १० असोचिया ११ अमी १२ आइचणाग १३ आकाशमार्गी १४ आंचलिया १५ आछा १६ आयरिया १७ आमदेव १८ आलीझाड १९ आलावत २० अंवह २१ आवगोत २३ आसी २४ आमू २४ आखा २५ अछड २६

इ.

इलडिया १ ईंदा २

उ.

उत्कंठ १ उर २ ऊरण ३ ऊनवाल ४ ऊदावत ५ ओसतवाल

क.

काउक १ कटारिया २ कठियार ३ कणोर ४ कनियार ५ कनोजा करणारी ६ करहेडी ७ कडिया ९ कंठोतिया १० कठफोड ११ कहा १२ कसाण १३ कठ १४ कठाल १५ कनक १६ कक्कड १७ कचाडिया १८ कांकलिया काकेरचा १९ कावसा २० काग २१ कांकरिया २२ कासतवाल २३ काजल २४ कजलोत २५ काठेलवडा २६ कावेडिया २७ कांधाल २८ कांधल २९ कापड ३० कांचिया ३१ करणावट ३२ कुंगचिया ३३ कांसेटिया ३४ केल ३५ कावा ३६ कछावा ३७ कुंमटिया ३८ कोरा ३९ कांगसिया ४० कसूंमा ४ केसरिया ४२ काला ४३ कोचर ४४ कानूगा ४५ कोठारी केई तराका ४६ कोचेटा ४७ कातेला ४८ कातरेला ४९ कुहाड केइतरेका ५० कुहाड ५१ करमदिया ५२ करोंदिया ५३ कान्हउडा ५४ कूबे-

रिया ५५ कुचेरिया ५६ कुरकचिया ५७ कलरोही ५८ काकडा ५९ कर्णाट ६० कुलहट ६१ कूकड ६२ कुळभांण ६३ क्यावर ६४ किरणाल ६५ कूंकूरोल ६६ काछवा ६७ कुंदण ६८ कोट ६९ कोटेका ७० कैहडा ७१ कलिया ७२ कंकर ७३ कावडिया ७४ कांचलिया ७५ कुंकम ७६ केड ७७ कूकडा ७८ कूहड ७९ कौवर ८० कोठेचा ८१ करहडा ८२ कल्पाणा ८३ कोटलिया ८४ कोठीफोडा ८५

ख.

खटवड १ खाटोडा २ खाटेड ३ खाव्या ४ खींमसरा ५ खुडया ६ खेमासऱ्या ७ खेमानंदी ८ खेतसी ९ क्षेत्रपाल्या १० खडभंडारी ११ खडभणशाली १२ खजानची १३ खूतडा १४ खरधरा १५ खरहत्थ १६ खोखा १७

ग.

गणधर १ गणधरचोपडा २ गिडिया ३ गहलडा ४ गडवाणी ५ गादहिया ६ गाय ७ गावडिया ८ गांग ९ गांधी १० गंधिया ११ गूगलिया १२ गुलगुलिया १३ गेवरिया १४ गोरा १५ गोखरू १६ गोंदेचा १७ गोलेछा १८ गोढवाडया १९ गोध २० गोठी २१ गोगड २२ गटा २३ गर २४ गोय २५ गोसल २६ गेलोत २७ गलाणी २८

घ.

घुल्ल १ घोरवाड २ घोडावत ३ घोपा ४ घंटेलिया ५ घीया ६

च.

चउहाण २४ सोंइ जातवाले अश्वपति मये १ चतुर २ चीपट ३ चींपड ४ चोरवेडिया ५ चौपडा ६ चौधरी ७ चंडालिया ८ चव ९ चिडचिड १० चींचड ११ चम्म १२ चामड १३ चीलमोहता १४ चोद् १५ चंद्रावत १६

छ.

छजलाणी १ छाजहडकाजलोत ३ छाजेड ४ छोहऱ्या ५ छापरिया ६ छैत ७ छंदवाज ८ छापरवाल ९

ज.

जणिया १ जालोरा २ जैणावत ३ जिन्नाणी ४ जुएल ५ जुजाणा ६ जुबहि ७ जोइया ८ जांवड ९ जांगडा १० जडिया ११ जाइलवाल १२ जोधा १३ जलवाणी १४ जिंद १५ जादव १६ जोटा १७

झ.

झंवक १ झांवक २ झांवड ३ झवरी ४ झोटा ५ झलाई ६

ट.

टाटिया १ टूंकलिया २ टोडरवाल ३ टिकोरा ४ टेका ५ टीकायत ६

ठ.

ठाकर १ ठंठवाल २ ठीक ३ ठीकरिया ४

ड.

डहरथ १ डफरिया २ डफ ३ डागा ४ डाकलिया ५ डाकूपालिया ६ डोंगी ७ डूंगरवाल ८ डीडू ९ डोडिया १० डिडुल ११ डोसी १२ डूंगरेचा १३

ढ.

ढड्ढा १ ढाबरिया २ ढिल्लीवाल ३ ढीलीवाल ४ ढेढिया ५ ढेलडाया ६ ढींक ७ ढोर ८ ढेलडिया ९

त.

तलेरा १ तातहड २ तातेड ३ तिलहरा ४ तेलिया ५ तेलियानोहरा ६ त्रिपेकिया ७ तेल्या ८ तोडरवाल ९ तिल्लाणा १० तेजाणी ११ तोसालिया १२

थ.

थरावृत १ थररावत २ थाहर ३ थोरिया ४

द.

दरगड १ दक २ दरडा ३ दीपक ४ दूणीवाल ५ दूधेडिया ६ दूदवेडिया ७ दूगड ८ देसरला ९ देहरा १० देवानंदी ११ दोसी

१२ दुदवाल १३ दस्साणी १४ दुडिया १५ दूधोडा १६ दपतरी १७ दइया १८ देवडा १९ दसोरा २० द्रव२१ देलवाडिया२२दाना २३

धः

धनचार १ धडवाई २ धाडीवाल ३ धाडेवा ४ धाकड ५ धीया ६ धूर ७ धूंप्या ८ धूप्या ९ धेनडाया १० धौन्या ११ धंग १२ धत्तूरिया १३ धन्नाणी १४ धेनावत् १५ धांधळ १६ धोका १७

न.

नवलखा १ नपावल्या २ नडुलाया ३ नक्षत्रगोत ४ नाहर ५ नाहटा ६ नानगाणी ७ नावरिया ८ नानावट ९ नागपरा १० नावेडा ११ नावेडार १२ नाडूल्या १३ नांदेचा १४ नेणेसर १५ नेणवाल १६ नाग १७ नींवहडा १८ नारण १९ नारेला २० निरखी २१ नवकुद्दाल २२ नीमाणी २३ नाहउसरा २४ नीबाणिया २५ नाणी २६ नवाव २७ नागोरी भणसाली ओर भी केइतरेका २८ नागपुरिया २९

प.

परमार १ पंवार २ पडिहार ३ पंचोली ४ पचायणेचा ५ पसला ६ पटवा ७ पटवारी ८ पटविधा ९ पगारिया १० पगान्या ११ परघाल्या १२ पारख ३ तरेका १३ पापडिया १३ पामेचा १४ पालावत १५ पीपाडा १६ पींपलिया १७ पंचोली वावेल १८ पूनमिया २ तरेका १९ पूनम्या २० पूगलिया ४ जातका २१ पोकरणा २२ पींचा २३ पंचकुद्दाल २४ पोपाणी २५ पोमाणी २६ पीतलिया २७ पीथल्रिया २८ पोरवाल २९ पैतीसा ३० पचीसा ३१ पांचा ३२

फ.

फतेपुरिया १ फूमडा २ फूसला ३ फूलफगर ४ फोकटिया ५ फोफलिया ६ फलोधिया ७ फाकरिया ८ फलसा ९

ब.

बरंडिया १ वरहडिया २ विछायर्ता ३ वछावत ४ बराड ५ वड-

लौंया ६ वहगोता ७ वलाही ८ वलदोवा ९ वणमट १० वभाला ११ वाघेल १२ वडोल १३ वरड १४ वोरड १५ वोंकड़ाया १६ वोकडा १७ वोहरा अनेकजातका १८ वोहरिया १९ वौल्या २० वौरद्या २१ वंव २२ वंवोड २३ वंश २४ वंका २५ वांका २६ वंठिया २७ वांटिया २८ वांट्या २९ वाफणा ३० वहुफणा ३७ वापनागोत्र ३२ वूच किया ३३ वैदकेइजातका ३४ वेतालिया ३५ ब्रह्मेचा ३६ वडेर ३७ वद्धाणी ३८ विरहट ३९ वीर ४० वलहरा ४१ वसाह ४२ वाहंतिया ४३ वोक ४४ वोथरा ४५ वांगाणी ४६ वावचार ४७ वाघमार ४८ वाकरमार ४९ वेगाणी ५० वीराणी ५१ वीरीनत ५२ वांभी ५३ वुचा ५४ वूंचा ५५ वराहुन्या ५६ वगडिया ५७ वायडा ५८ वाघडी ५९ वालिया ६० वरण ६१ विलस ६२ वाल ६३ वांवल ६४ वांहवल ६५ वट ६६ विनायकिया ६७

म.

मल्लडिया १ मडारा २ मद्रा ३ मडकतिया ४ मकड ५ मटेवरा ६ मादाणी ७ माद्रगोत्र ८ मामू ९ मामूपारख १० मीलमार ११ मुरड १२ मौरडिया १३ मौर १४ मंगलिया १५ मंगशाली १६ मणशाली राय ओर खड १७ मंड गोत १८ मांडावत १९ मंडारी राय तया कठ २० मूरा २१ मर २२ मेला २३ मूतेडिया २४ मल २५ मुगडी २६ मडसूरा २७ मूतोडया २८ मटाकिया २९ मट्टार किया ३० मेलडा ३१ माटिया ३२ माटी ३३ मूआत्ता ३४ मूप ३५ मंवरा ३६ मलाणिया ३७ मैंसा ३८ मट्ट ३९ मींडा ४० मगत ४१

म.

मटा १ मरडयासोनी २ मणहडिया ३ मसरा ४ मम्मइया ५ मणहडिया ६ मकवाण ७ महामद्र ८ मगदिया ९ माल्ह २ तरेका १० माधोटिया ११ मुहणाणी १२ मुंहणो १३ मुंहणोत १४ मेड़तवाल १५ मोहीवाल १६ मौहीवाला १७ मेहयवा १८ मंडोवरा १९ मंडोचित

२० मंगलिया २१ मेर २२ मोहड़ा २३ मेघा २४ मोदी २५ मल २६ मुहाला २७ मुहियड २८ महेचा २९ मुकीम ३० मरोटी ३१ मसाणा ३२ मारू ३३ मोराक्ष ३४ मोलाणी ३५ मदारिया ३६ मरोटिया ३७ मकलवाल ३८ मगदिया ३९ मीठडिया ४० मूंगरवाल ४१ महाजनिया ४२ मूंगरेचा ४३ माल्हण ४४ मुसरफवेगाणी ४५ मीन्नी ४६ मडिया ४७ मल्लावत वांठिया ४८ महाजनिया ४९ मालविया ५० माघवाणी ५१ महतियाण ५२ मूंधडा ५३ मोर ५४ मांचोदिया ५५ मेनाला ५६ महीपाल ५७

य.

मक्ष गोत १ यौगड २

र.

रतनपुरा १ रतनसूरा २ रतनावत ३ रत्ताणी बोथरा ४ रातडिया ५ राखेचा ६ रावल ७ राणाजी ८ रायभडारी ९ रांका १० रीहड ११ रोटागण १२ रूप १३ रूपधरा १४ रूणवाल १५ रायजादा १६ रावत १७ राठोड १८ रूणिया १९ रामपुरिया २ तरेका २० रेणू २१ राखडिया २२ रामसेन्या २३ रणधीरोतकोठारी २४ राव २५

ल.

लकड १ ललवाणी २ लींगा ३ लुबक ४ लूकड ५ लूणावत ६ लालण ७ लालाणी ८ लूणिया ९ लेला १० लेवा ११ लोढाराय १२ लोढांकठ १३ लोटा १४ लोलग १५ लुटकण १६ लांबा १७ ललित १८

स.

सचिंती १ सुचिंतीदिल्लीवाल २ सरवला ३ समुद्रिया ४ सवरला ५ सालेचा ६ साहेल ७ सियार ८ सीखाण ९ सीसोदिया १० सीरोहिया ११ सियालदोतरेका १२ सुदेवा १३ सुराणा १४ सुराप १५ सुदर १६ सूरपुन्या १७ सूरपूरा १८ सुकलेचा १९ सेठिया २० सेठी पावरा २१ सोनगरा २२ सोलखी २३ सोनी २ तरेका २४ सांड २ तरेका २५ सघवीकेइतरेका २६ संड २७ सखला २८ सुदर २९

संचल ३० संखवालेचा ३१ संचती ३२ सांखला पंवारामांह सुवाज्या ३३ सांखला निजराज पूत हुवा ३४ समदड़िया ३५ सांमसुका ३६ सावण सूका दोनों एक ३७ सेठिया वैद बीकानेर माहाराव प्रमुख ३८ लघु सेठीसोनावत ३९ साहचांठिया ४० साहेबोथरा साहपद बहु जाती ४१ सिंघल ४२ सींप ४३ सीपाणी ४४ सुत ४५ सघरा ४६ सोझतवाल ४७ सिंघाडिया ४८ सेखाणी ४९ सुखाणी ५० सेठ ५१ सुघड ५२ सोमलिया ५३ समूलिया ५४ साहला ५५ सोनीवापना ५६ सापद्राह ५७ सांमरिया ५८ सारंगाणी ५९ सूर ६० सींघड ६१ सिंदूरिया ६२ सचोपा ६३ सेल्होत ६४ सेवड़िया ६५ साचोरा ६६ सोझतिया ६७ संभुआना ६८ सरला ६९ सूंधेचा ७०

ह,

हगुड़िया १ हींगड २ हेमपुरा ३ हूंडिया ४ हाहा ५ हायाला ६ हाला ७ हीरावत ८ हिरण ९ हरखावत चांठिया १० हिडाउ ११ हेम १२ हठीला१३ हमीर १४ हंसारिया १५ हूंस १६

इसतेरे हमनें ६७६ इतनें नाम पाये सो लिख दिया हैं बाकी अश्वपति जात रत्नागरसागर है इसमें गोत्र नख मुक्तावलीका पार कोण पासकता है अन धन संपदा पुत्र कलत्रादि परवारसें गुरु देव सदा इनोंकी सवाई बाजी रखैवडसाखाज्यूं विस्तार पाओ

गृहस्थाश्रम व्यवहार

अव्वल तो शोले संस्कार जैनधर्मके (आर्यवेद) के प्रमाण मंत्र युक्त,विधिसें जैनधर्मी श्रावकोंकों जन्मसें लेकर मरण पर्यंतके हैं सो आगे तो जैनधर्मी ब्राह्मण थे वो कराते थे और अब श्रावकोंकों चाहिये जो काल धर्मकों विचारकर जैन जती पंडितोंसें करवाणा दुरस्त है जो किसी जगे जती पंडित नहीं मिले तो सोले संस्कारकी पुस्तक जैन आर्यवेद मंत्रोंकी विधि समेत बीकानेरमें उ। श्रीमोहणजीनें छपाई है, मगर सुलभ कीमत ।-) में प्रतापगढ राजपूताना बीया लक्ष्मीचंदजी शंकरलालजीसें मंगाकर अन्यदर्शनी पंडित ब्राह्मणकों

कर इसविधिसेंही करवावै मगर मिथ्यात्वियोंके संस्कार विधिसें रही रहणा दुरस्त है गुजरातमें तो प्रथा सरू होगई है, व्रत पच्चखाण अपणी कायाकी शक्ती मुजब नमकारसीसें आदिलेनिभेजे साधारणा १ धन पैदा करके इसभव परभव दोनों सुधरे और दुनियां तारीफ धर्म वंतकी दातारकी हमेसां करे वैसा करणा २ शास्त्र पढे भये विचक्षण उपदेशी जैनधर्ममें तत्पर निष्कपट महापुरुषकी संगत और द्रव्य भाव भक्ती करणी ३ लेण देण साफ रखणा ४ करजदार बणे जहांतक बेकारण होणा नहीं ५ विश्वास पैठ प्रतीती पूरे वाकबकार भये विगर हर किसीसें करणा नहीं ६ स्त्रियोंकों कुलवंती सुलक्षणी चतुरा सिवाय हर किसीकी संगत नहीं करणे देणा ७ अपणी तासीरकों नुकशान करै एसा पदार्थ ऋतुविरुद्ध कुलविरुद्ध प्रकृतीविरुद्ध कभी खाणा नहीं ८ तन सुधारणेकूं हमारा वणाया वैद्यदीपक ग्रंथ छपा भया विचारते रहणा ९ या पूर्ण विद्यावान देशी वैद्यकी आज्ञा उपदेस हमेस धारण करणा १० कोइतरेका भी व्यसन सोखसें सीखणा नहीं ११ रोग कारण और विचारणा, १२ वडे माता पिता माई सगे संबंधियोंका अदब रखणा १२ करड़े लब्ज बेकारण किसीकों कहणा नहीं १४ घरका भेद कुमित्रकों कभी देणा नहीं, धर्मी पुरुषकों वणे जहांतक सहाय देणा, १६ परमेश्वर, और मोत, और अपणेपर किया भया उपगार, इन तीनोंकों हरदम याद करते रहणा १७ किसीके घरपर जाणा तो बाहिरसें पुकारकर घुसणा १८ मुल्कगीरी करते वख्त हाथकी सचाई १ जवानकी सचाई २ लेनदेणकी सचाई लंगोटकीसचाई रखणा १९ ४ और बेखबर गफलत सोणा नहीं २० बणे जहांतक इकेलेनें मुसाफरी नहीं करणी २१ फाटका करणे वाला तथा जुवारीकों गुमास्ता रखणा नहीं रुपया उधार देणानहीं २२ मंत्र पढकर या किमियागरीसें जो पुरुष द्रव्य चाहते हैं उणोंपर दैवका कोप भया समझणा २३ अपणे लडका लडकियोंकों हरतरेका हुन्नर सिखाणा इल्म सीखाणाही अखूट धर्न देणा है २४ सरकारके काय

देके घर किलाप पांव नहीं धरणा २५ धन पाकर गरीबकों सताणा नहीं २६ गरूर करणा नहीं २७ तनमन और वस्त्र हमेस साफ रखणा २८ जैनधर्मके मुकाबले दूसरा कोई धर्म नहीं २९ क्योंकै अहिंसा परमो धर्म इस सलूकसें इसधर्मका सारावरताव है पक्का इतकात रखो ३० जीव अपणे पूर्वके किये भये पुन्यपापसे सुखदुख पाता है ईश्वर किसीका भला बुरा नहीं करता ३१ दुनिया न किसीनें वणाई ननास कोई करता है पांच समवायके मेलसें सारा काम घट बढत हो रहा है काल १ स्वभाव २ भवतव्यता ३ जीवोंके कर्म ४ जीवोंका उद्यम ५ सब इनोंकाही फेर फार कुदरत दिखाता है ३२ कर्मके न चाये देव मनुष्य पशू सब स्वांग नाच रहे हैं ब्रह्माकूं कुंभार कर्म करणा पडा, विष्नुकों दस अवतार धारण कर महा संकट उठाणा पडा, महा रुद्रकों ठीकरा हाथले भीख मांगणी पडी, सूर्यकों हमेस चक्र लगाणा पडा, बस कर्मकी गतीकों जिसनें पहचाणी जन्ममरणसें छूट गया वो सर्वज्ञ ईश्वर ज्ञानानंदमई अरूपी आत्मा है ३४ जेसें ईश्वर और जीव दोनों किसीके वणाये भये नहीं तेसें ये दुनियां किसीकी भी वणाई भई नहीं ३५ दुनिया ईश्वरकी कर्त्ताकी दलील करती है मगर इन्साफसें पेस नहीं आते ३६ आकाशमें सूर्य चांद तारे जो तुम देखते हो ये ईश्वरके वणाये भये नहीं जोतषी देवतोंके विमान है देवते इनोंकों चलाते हैं ३७ कइलोक जमीनकों नारंगीकी तरह गोल कहते हैं लेकिन् जमीन थालीकी तरह गोल और सपाट है ३८ जमीन नहीं फिरती अचल है चंद १ सूर्य २ ग्रह ३ नक्षत्र ४ और तारे ५ अपणे कायदे मुजब फिरते हैं ३९ आत्मा एक अविनाशी शरीर तापसें जुदा पदार्थ है मगर कर्म तापके वस मोह अज्ञान जडनें घेरा भया है ४० मांस खाणेसें वैद्यक विद्याके हिसाब बडाही नुकशान करणेवाला और धर्मके कायदेसें नरक जाणेका कारण और जिसजीवकों मारकर मांस लिया जाता है वो पीछा बदला लिये विगर हर गज छोडेगा नहीं ४१ पेस्तर रावण कृश्न चंद्र तथा राम लक्ष्मणा-

दिक विमानके जरिये हजारों कोसोंकी मुसाफरी करते थे ४२ जिसके पुन्य प्रबल उसका बुरा कोई नहीं करसकता ४३ देव गुरूके दर्शन करै विगर भोजन करणा श्रावगकों उचित नहीं ४४ दोलत धर्मकी दासी है ४५ जैसा दुस्मनका कोप रखते हो एसा १८ पाप स्थानकों का रखा करो ४६ वापमाकादिल वंदगी कर खुस रखा करो माका फरज वापसें भी आलादरजैका है तुम वो करजा कमी नहीं फेट सकोगें जहांतक धर्म प्राप्तीका सलूक नहीं करोगे उहांतक ४७ जलमें मत घुसो ४८ विगर छाणा जल मत पीओ ४९ विगर गुणदोप जांणे विगर नजरके वेदरियाफ्त कोइ चीज मत खाओ मत पीओ ५० वासी भोजन मत करो ५१ सरकारी एन कै कायदेसें वाकिब रहो ५१ राजद्रोह मत करो ५२ देसी उन्नतीका ढंग हुन्नर इल्म संप ओर मदत देणा ही मुख्य है ५३ व्यापार सब मुल्ककी आवादानीका बीज है ५४ सराबसें खराब होणा है ५४ सभामे गुरु पास और दरवारमें जाते संका मत लाओ पूछेका जवाब विचारकै दो सभामें वैठणा बोलणा लायकीसें करो ५५ राजकी कचहरीमें हाकम धमकावै या फुसलावै तो डरोभी मत और न फुसलाणे पर कायदेकै वर खिलाप वात करो हाकमोंका दस्तूर है सो। मुद्दीया-मुद्दाय लेकै दिलकों कमजोर कर वात पूछणा जिसें वोहड वडाकै कुछका कुछ कह उठै, अब वोजमाना नहीं है जो की न्यायकी गहरी खोजसें, सचका सच और झूठका झूठ, अब तो चालाकी सफाई और गवाहीसें मिसलका पैटाभरा वस झूठा भी सचा वण जाता है ५६

जैनधर्मियोंका रिवाज है प्रातसमें ऊठकै परमेष्टी ध्यान मनगत करै फेर शुच होके वस्त्र वदल सामायक प्रतिक्रमण करै उहांसें ऊठकै स्नान तिलक कर उत्तम अष्ट द्रव्य ले जिनमंदिरजीमें या घर देरा सरमें पूजा करै नैवद्य बली चढाकर वस्त्र पहनकर गुरूकूं यथा योग्य वंदन कर वख्याण सुणे पच्चखाण काया शक्ति मुजब छछंडी चार आगार मोकला रखै फेर घरपर सुपात्र तथा क्षुल्लक सिद्ध पुत्र अनुकंपा

वगेरे दान यथा शक्ति करके ऋतुपथ्य प्रकृति पथ्य कुलाचार मुजब भोजन दो भाग एक भाग जल एक भाग खाली पेट रखे सराप ब्रांडी मिली तथा जीवोंके मांस चरवीसें वणा पदार्थ खाणा तो दूर रहा मगर हाथसें भी स्पर्श न करे वस्त्र उजले धोये साफ पहरणा आगे एसा रिवाज भारतवर्षमें था की सुद्र जातीके लोक नख बाल साफ कराये भये शुद्ध वस्त्र पहनकर शुद्धताईसें भोजन रसवती तइयार करते तब राजपूत वैस्य और ब्राह्मण भोजन कर लेते स्वामीदयानंदजी सत्यार्थ प्रकाशमें लिखते हैं एसा वेदोंमें लिखा है कोण जाणे इसी रिवाजकों हमारी जैनकोम कबूल करके चलते होंगें मारवाडके, क्योंके आगे ब्राह्मन लोक भट्ट झोकणेका काम सुद्रोंका समझ नहीं करते थे और बनोवासी ऋषी थे वो तो मध्यान्हमें एक वखतही भोजन अपणे हाथकी वणाई करते थे वो स्वयंपाकी वजते थे अब तो चारो कामकों ब्राह्मण मुस्तेद है पीर १ बबरची २ भिस्ती ३ ओर खर ४ तो बहोतही अच्छा है मांसमदिराके त्यागी जो मारवाड गुजरात कच्छके ब्राह्मण है उनोंसें चारों काम कराणा जैनियोंके लिये वेजा नहीं है मगर जल दिनमें दो वखत छाणणा चूलेमें लकडीमें सीधे सर जांममे सागपात फल फूलोंके जीवोंका तपासणा जैनधर्मकी स्त्रियोंनें अथवा मरदोंनें करणा वाजब है ब्राह्मण तो फरमाते हैं हमतो अग्निके मुख हैं जो होय सो सब स्वाहा मगर दयाधर्मियोंनें इस बातका विवेक रखणा, एकका झूठा तथा बहोत अदम्योंनें सामल बैठके जीमना ये उभय लोक विरुद्ध है डाकटर लोक कहते हैं गरमी सुजाक कोढ खुजली आंख दुखणा वगेरे केइ किसमके एसे २ रोग हैं सो झूठ खाणेवालेकों लग जाता है जिस वरतणसें मूं लगाकर पाणी पीणा वो वरतण पाणीके मटकेमें डालणा नहीं कारण उस पाणीसें रसोई वणाणे आवे तो साधू संत अभ्यागतको देणा उनोंकों अपणा झूठ खिलाणा रोग लगाणा महापाप है धर्म ध्यानके कपडोंसें गृह कार्य नहीं करणा स्त्रियोंने तीन दिन ऋतु धर्म आणे पर घरका अनाज चुगणा कोरा कपडा

ीणा वगेरे रिवाजोंकों बंध करणा ठाणांग सूत्रपाठ दशमें ठाणे खूनकी असिझाई भगवांननें फरमाई है स्नान २४ पहरवीते वादही करणा २ दिनसें करणावाजब नहीं सूतक जन्म पुत्रका १० दिन लडकी के ११ दिन मरणका सूतक १२ दिन जादा सूतक अभक्ष विचार देखणा होतो. रत्नसमुच्चय हमारा छपाया भया पुस्तक देखणा जहांतक भक्षा-भक्षका विवेक नहीं उहांतक पूरा व्रतधारी श्रावक नहीं होसकता रोगादिक कारण जतना करै श्रावककातनदुरस्त रखणा तो सम-झदार धर्म १ अर्थ २ काम ३ और मोक्ष ४ चारों साध सकता है अन्य दर्शनियोंकी संगतपाकर श्रावक धर्मकूं छोडणा नहीं चाहिये राजदंडेलोकीकभंडे एसा रुजगारखान पान धन प्राप्ती कभी नहीं करणा चाहियै रात्री भोजन करणेसें हैजा जलंधर अजीर्णादिक रोग होणाइसभवविरुद्धहै और नानातरेका रात्री भोजनमें जीवघात होणेसें नरकतिर्यंचगती होती है ये परभव विरुद्ध है, मकान, चौका, और वरतण, और लडका लडकियें ये सब साफ सुघड रखणा चहिये जहां पवित्रता है उहांही लक्ष्मी और आरोग्यता निवास करतीं हैं श्रावक कुलाचारमें मांस मदिराका तो विलकुल अभाव ही है तथापि सर्वज्ञ फरमाते हैं जहांतक तुम आत्माकी देवकी और गुरूकी साक्षीसें सोगन नहीं करोगे उहांतक निश्चय नयसें तुमें उन चीजोंकी मुमानत नहीं मानी जायगी हरी वनस्पती विलकुल छोडणेका रिवाज आज कल मारवाडके जैनोंमें जादा प्रचलित है इसमें मूंमेंसें मसूंढे पककर खून गिरणा जोडोंमें दरद खूनकी खरावी नाताकत वहोत अदमी देखणेमें आते हैं, और गुजराती कच्छी जैनकोम जादा सागपात तरकारी खाणेसें वदहजमी मेदवृद्धि दस्तवेटम इत्यादि रोगोंसें पीडित देखणेमें आते हैं इसवास्ते कलकत्ते मकसूदावादवाले जैनकोमका रिवाज हरी वनस्पतीका मध्यवृत्तीका मालम दिया जो की ताजी वनस-पती आंम केरी अनार संतरे मीठे नींबू नेचू गुलाबजामून परवल दूधी (कदू) आदिक वढिया फलोंका और गिणती मुजब सागोंका तन

दुरस्तीका वरताव देखणेमें आया न तो अन्नन पणा रखते हैं और न ऊंठोंकी तरै हरवनस्पती खाकर दोनों जन्म विगाडते हैं गिणती मुजब पचखाण करते हैं जेसें उपासग दशासूत्रमें आनंद श्रावकनें किया वेसा इच्छारोधन शक्त्यानुसार करते हैं, श्रावकोंकों सडा फल चलितरस गिलपिला भया आपसें हीं छेद पडा भया एसे फल तथा तुच्छ फल वेर पीलू वगेरे कमकीमती जिसमें लट्टे अंदर पडं जाती है एसोंसें हमेस वचणा चाहिये पत्तोंके साग वरसातके ४ महीने हर गिज न खाणा चाहिये और मोलका आटा विगर तपासा भया घी, सा-घत सुपारी खाणेसें जैन शास्त्र मांस खाणेका दोप फरमाते हैं, मगर मुसाफरी करणेवाले गरीव श्रावकोंसें मोलका आटा और घीका व्रत पलणा दुस्वार मालम देता है रेलके मुसाफरोंकों मोलकी पुडियेंही मयस्सर होती है विचारके सोगन लेणा चहिये सोगन दिलाणेवाला पूरे जांणकार १ लेणेवाला पूरा जाणकार २ दोनोंमेंसें एक जाणकार ३ इहांतक तो सोगन यानें पच्च खाण शुद्ध मांने गया और करणेवाला करांणेवाला दोनों पचख्खाणके स्वरूपके अजाण ये पचखाण तदन अशुद्ध है, साग पत्तोंके जीव तपासे विगर हरगिजवरताव नहीं करणा चाहिये जो जो पदार्थ वैधक शास्त्र वालोंने रोग कर्ता निरूपण किया है सो प्रायेंतीर्थं करोंनें अभक्ष फुरमाया है देखो हमारा वनाया वैद्यदीपक ग्रंथ, झूठे वरतण रातवासी नहीं रखणे चाहिये पत्तलोंमें भोजन करणेसें श्रावककूं वडा पाप लगता है कारण उसपत्तलोंपर भोजनका अंस लगा रहता है वो एक पर एक गिरणेसें प्रत्यक्ष कीडे पैदा होकर हिंसा होती है पात्र चांदीका सोनेका, गरीवोंकों उमदा कांसीके थाली कटोरे रखणे दुरस्त है आजं कल टेन अेलियोमीनीम वगेरेके घर २ में चल रहे हैं धातू वो अच्छा समझणा चाहिये की जिसके परमाणू पेटमे जाणेसें कोई किस्मकी पीछे तकलीप न पैदा करै तांवा पीतल जरूर नुकसान करता है हमेसके मावरेमें ये पात्र विलकुल अच्छा नहीं कारण भोजनमें षट्रस आता है और खट्टारस लूण वगेरे जिस

धातुके संग दुस्मन दावा रखता है एसा पात्र अच्छा नहीं श्रावककी करणी खरतर गच्छी जिन हर्षजीनें चोपई रूप २२ गाथाकी वणाई है सो श्रावकोंके लिये नसियत है जरूर उसकों अमलमें लाणा फर्ज वचपणेमें व्याह करके उनोंका समागम कराणा जिंदगानीकों धक्का लगाणा है, स्त्री तेरे पुरुष १८ ये कलयुगी रिवाजसें तो तदन हटणा न चाहियै वचोंकों पढाणा जरूर है मगर याद रखो पहले दयाधर्मकी शिक्षा दिलाकर पीछे अंग्रेजी पढाणा मुनासिब है अगर न, दी जायगी दया धर्म शिक्षा, तो अंग्रेजी पढके जरूर होटलोंके महवांन वणेगें कोरे घडेमें पहले घी डालकर पीछे आप चाहै सो वस्तु डालो खार खटाई विना हरगिजठीकरी चिकणा पना घीका नहीं छोड़ेगी खार खटाई शिक्षामें क्या चीज है स्त्रीका लालच धनका लालच समझणा चाहियै, कारण धर्म शिक्षा पाये भये भी इन दोनोंकी आसामें निज-धर्म चहोतसे खो वैठते हैं मगर थोडे प्रायें नहीं छोडते हैं, इल्म पढा-णामें गणित कला, लिखत कला, शास्त्री अक्षर, अंग्रेजी अक्षरादिकोंकी पठत कला , शिखाणा जमानेके अनुसारही चहियै, व्यापार हरकि-स्मके करके धन पैदा करणा गृहस्थोंका मुख्य कृत्य है तथापि तिल वगेरे अनाज फागुण महीने उप्रांत रखणेसें महाजीवोंकी हिंसा होती है सब कार्यमें विवेकही रखणा मुख्य धर्म है (विचार) जेसे गीतामें लिखा है स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः इसका अर्थ निर-विवेकी कुछका कुछ करते हैं लेकिन् कृश्नद्वैपायन व्यास आगामी चोवीसीमें तीर्थंकर होणेवालेकी वनाई गीता कर्मयोग ग्रंथ है इसके वचन प्रायें विरुद्ध होय नहीं इसवास्ते इसपदका सीधा अर्थ ज्ञानि-योंके मान्य करणे लायक विवेकी एसा समझते हैं स्वधर्म क्या चीज आत्माका ज्ञान १ दर्शन २ चारित्र ३ तप ४ रूप धर्म इसधर्ममें निधन याने इस शरीरके त्यागणेसें श्रेय यानें मोक्ष होता है, परधर्म याने कर्म जड पदार्थका जो मोह अज्ञान मिथ्यात्व अव्रत रूप धर्म है सो

भयका देणेवाला है एसा अर्थ विवेकी करते हैं इत्यादिक हर पदार्थ पर विचारणा उसका नांम विवेक है

स्त्रियोंके लिये शिक्षा

पवित्रता रखणा शील व्रत धारणा स्त्रियोंका मुख्य शृंगार है पतिकी भक्ती करणा हुकम मुजब बरतणा घरका काम देखणा रसोइ वणाणा चुगणा चीणना फटकणा कूटणा पीसणा छाणना सब कामोंमें जीवोंका जतन करणा पापडवडी दाल वणाणा सुकाणा विगडणेवाले पदार्थोंमें फूलण कीडे न पडणे पावे छायांमें फैलाणा हवा देणा ऊनूरेसमी वस्त्रोंको चतुर्मासमें जीव न पडणे पावै इसतरकीवकों ध्यानमें लाणा आचार मुरब्बा वणाकर विगडणे नहीं देणा वस्त्र धोये रंगे सुगंधित रखणा वचोकों स्नान मज्जन खान पान पोसाख गहणोसें अलंकृतकर पढाणे भेजणा लडकियोंको लिखत पठत सींवणा गुंथणा कसीदा चंपा अलमास गोखरू वगेरे औरतोंकी चोसठकला जेसें श्रीऋषभ आदीश्वरनें अपणी लडकियें ब्राह्मी सुंदरीकों सिखलाई उसमेंकी वणे जहांतकं सिखलाणा क्योंकै स्त्रियोंकों जगे २ पुरुषोंकी अर्द्धांगा फरमाई है और सच है भी एसा, अदमी धन कमाणा इतनेही मात्रका मजूर है लेकिन् घर धणियाणी तो स्त्रीही कहलाती है अगर वो अणपढ कलाहीणता होगी तो पुरुषका आधा अंग वेकाम हो जाता है जेसें पक्षाघात (लकवा) में होता है ये भी एक जन्मभरका रोगही लगा समझा जाता है (दोहा) पुत्र मूर्ख चपलातिया पुत्री विधवा जात, धनहीणा शठ मित्र तें, विना अगनजरजात १ ये पांच योग जब वण आता है तब विना अंगार अदमी जल जाता है जिन स्वार्थ तत्परोंनें एसे २ वहेम हिंदुस्थानमें डाल रखा हैं की लडकियोंकों हरगज नहीं पढाणा वो व्यभिचारणी वा विधवा हो जाती है उन धर्मा धक्षोंनें ये विचार कीया कै जो घरधणियाणी जादा पढी भई हुसियार होगी तो हम गपोडपुराण सुणाकर धर्म राजकै ईश्वरके तथा नवग्रहोंके अंग या आडतियें वणकर माल उतारणेका ढंग जमायगें तो हर गिज

नहीं ठगायगी सच है इस अणपढताकै सबब घरमें किसीकूं बेमारी होती है तो और तें झाडा फूका कराणे जोगी फक्कड काजीमुल्लोंकै हाथ हजारोंका माल ठगवाती है या किसी मनमांने भूत पलीतकी वो लवाकर मूर्ख अणपढ कुमार्गी कुपात्रोंको भोजन वस्त्र रुपया वगेरा जो. वो मांगे सो देती है लेकिन् रोगकी परिक्षा कराकर विद्वान वैद्यया डाकदरोंसें कभी पेस न आयगी जो कभी भाग्य योग घरमेंका स्याणा अदमी किसी वैद्यकूं लायगा तो प्रथम तो उसके कही वातपर अमल न होणे देगी या रोगीके मनमांने कुपथ्य खिलायगी और मनमें समझेगी वैद्य तो परेज कराकर मारही डालते हैं जब अच्छी मनमानी चीजें खायगा तो ताकत आकर झट आराम हो जायगा दवाइयोंसें क्या होणा है या तो अंगमें भेरूं पितर मांवडयां देवियांनचायगी ये सब काम अणपढी स्त्रियोंकै साथ संबंध रखते हैं बाजै २ अणपढ स्त्री भक्त मोह ग्रसित अदमी भी काठकै उल्लू एसे २ होते हैं विधवा होणा पूर्वजन्मका संस्कार है प्रथम तो लडकेकी आयुरेखा समझ वारोंसें दरियाप्त कराणी ज्योतिषी पूरे विद्वानसें ग्रहाचार आयुरेखा निश्चय कराकर वाद, लग्न करणा चाहिये, वरके तरफ खयाल नहीं करती, घरके तरफ खयाल करती है, गहणा जादा डाले सो घर होणा, कारण कोई पूछे तो फरमाती है जमाई मर जाय तो मेरी वेटी क्या खायगी एसा मंगलीक सुणाती है जो इल्मदार कलाकोशल शीखी भई कन्या होगी तो ऐसे मोकेपर अपणी कारीगरीसें चारोंका पेट भर सकती है अपणी तो विसायतही क्या है वाजै स्त्रियें इल्महीण पती मरे वाद गुजरान चलाणे, परपुरुषका आसरा लाचारीसें लेती है, लडकपणमें व्याह करणेसें, जब पतीका वियोग होणेसें होस संभाले वाद कुललांछित करणा सूझता है या जब हमलरह जाता है तो विरादरीकै कोपसें गिराती है वाजे आपघात करती है मुल्क छोडती है सरकारसें सजा पाती है जाती बाहिर होती है इसवास्ते सूद्र संज्ञकै लोकोंमें पुनर्विवाहका रसमजारी है एसे २ वावतोंकों देख

गवरमिन्ट पुनर्विवाहकों पूरा अमलमें लाये चाहती है क्योंके प्रजा वृद्धि और पचेंद्री जीवोंकी हिंसाका बचाव, और स्वामीदयानदजी भी यही तूती वजागये समाजी लोक वजाते फिरते हैं जैननि ग्रंथका हुक्म है तपसाकरके इंद्रीयोंकों दमनकर धर्मतत्परता होणा विधवाओंनें या दुनिया तार्के, सो प्रायें जैनकोमकी स्त्रियें वेला तेला अठाई पक्ष मासादिकोंकी तपस्या करती चद रोजमे हाड मांस सुकाकर परलोककों सिधाती है एसी कोमकी वर्त्ताव करणेवालीयोंके लिये ये शिक्षा नि ग्रथप्रवचनकी वहोत लायक तारीफके है मगर सवोंका दिल और वदन और आदत एक सा होता नहीं उनोंके लिये अपणी २ कोमके पंचोंने सुलभ निर्वाह मुजब कायदेके प्रबंध सोचणेकी जरूरी है, राजपूतोंमें पडदेका रिवाज शील व्रत कायम रखणेंकूं ही जारी किया गया है ये जवराईसें शील व्रत रखणेका कायदा है सच है जो स्त्री स्वैच्छाचारणियां होकर इधर उधर भटकैगी जरूर लछत हो जायगी पुरुषोंका सग दुराचारणी स्त्रियोंका सहवास मनुष्योंकी प्रार्थना और धनका लालच एकात पाकरके भी जो अपणा व्रत कायम रखती है वोही सती जगतमें धन्य है स्त्रियोंका स्वभाव है रूपवत युवानकों देखते ही मदन बाणसें मदको अधो भागमें छोड देती है भगवान महावीर भगवती सूत्रमें फरमा गये हैं जो स्त्री मनमें कुशीलकी वाछा रखती है और लाजसें या डरसें कायासें दुराचार नहीं करती वो मरके वैमानिकवासी पहले दूजे देवलोकमें ५५ पल्य (असक्षा) वर्षोंकी ऊमरवाली अपरिगृहीता (वैस्या) देवांगना होकर सुख भोगती है इतना पुन्य मन विगर शील पालणेका है, पंछी आकाशमें उडते हैं मनुष्योंमें भी कुदरत हैं उडकर या चलकर एसा काम कर सकता है विद्याधर, रेल, वाईसकल, मोटरमें वैठे एसी चाल प्रत्यक्ष चल रहे हैं, पहाड भी अदमी उठा सकता है, यानें नवोंई नारायण कोडमणकी शिला उठाई, हजारों पहाड अगजोंनें फोड डाले, सांपकू सिंघकू पकड सकता है, दरियावमें प्रवेशकर रत्न

निकाल सकता है, अग्निमें कूद जाता है, तरवारोंके प्रहार सह सकता है, एसे २ दुसवार काम मनुष्य कर सकते हैं मगर हाय जुलम, इस अनंग काम देवकों नही जीत सकते हैं, अठ्यासी हजार ऋषी ब्राह्मन वडे २ तपेश्वरी पुराणोंमें लिखै होगये, तपस्या करते २ स्त्रियोंके दास. वणगये ब्रह्माविष्णु महादेव स्त्रियोंके नचाये नाचे इसवास्ते काम्मदेव जीतणेवाला है वोही परमेश्वर है वीर्य पात नहीं करे नव, क्योंकि विषय अनेक किस्म है हस्त, पशु, पंडग, स्त्री, इन सवोंकों छोडणे वालेकों भगवान वीर फुरमा गये हे गौतम ब्रह्म व्रतधारी मेरे अर्द्ध सिंघासण वैठणेवाला है यानें परमेश्वर है इसवास्ते पडदेका रसम अच्छा है मनोमती फिरणा वाजव नहीं मगर एक २ तरेका पडदा केइ २ मुल्कोंमें वडीकोमोंमें जारी है उसमें कहार पहाडिये चाकर वगेरे जा सकते हैं क्या उत्तम कोमके अदमियोंके लिये पडदा है वो क्या नाजर हैं पडदा नांम राजपूतोंका ही सच्चा है वाकी तो गुल खाणा गुल गुलेका परेज करे जेसा है हरतरे पतिव्रताधर्म रखणा श्रेष्ठ है पडदा तो दिलका होणा दुरस्त है सो भी मंदिर धर्मशालामें नहीं होणा ये रिवाज गुजरातका अच्छा मालम देता है, धन लेकर अपणी लडकियोंकों साठ २ वर्षोंके वुड्ढोंके संग व्याहे जाती है ये चाल उत्तम कोमवालोंकै लिये तदन बुरा है साठ वर्ष वाद वुड्ढेनें हर गज व्याह करणा इस जमानेके हिसाव अच्छा नहीं है वेटीकों वेच पईसे लेणेसें वरकत कभी नहीं होती अगर पुत्र नहीं होय माता पिता पास धन नहीं होय अशक्त होय वेटी धनवान के घर व्याही होय मावापोंका खरच चलाणा इंनसाफ है वेटा जेसी वेटी है लेकिन् ये मर्यादा आपत्कालकी है व्याहोंमें जादा खरच करणा जमाईके धनसें दुरस्त नहीं कच्छ देश मारवाड देशके गामोंमें थोडे धन वाले कवांरे रह जाते हैं इसकाकारण रीत नहीं दे सकणा है दस हजार होय तो पांच छोकरीके मावाप भाईकों पांचका दागीना एसा जुलम गार रिवाज या तो न्याई राजा वंधकर सकै या विरादरीमें इकलास होय

तो धंधकर सकते हैं, यहोत जोगियोंकी संगत भी इकेली स्रीनें नहीं करणा सतियोंके चरित्र सुणना या पंढणा

अर्हन्नीति मुजब हकदारीकानूनसें

ख्याल रखो, जो सख्स अंतकाल भये उसकी माल मिल्कियतपर किसका हक पेस्तर और किसका दोयम दर्जे हे बाद फेर किस २ का पंहुंचता है

दाय भाग कानून अर्हन्नीति

लोक) पत्नी पुत्रश्च भ्रातृव्याः, सपिंडश्च दुहितृजः, बंधुजोगोत्रजश्चस्व, स्वामीस्यादुत्तरोत्तरं १ तदभावेचज्ञातीया, स्तदभावे महीभुजः तद्धनं सफलं कार्यं, धर्ममार्गे प्रदायच २

अर्थ) स्वामीके मरणे बाद उसके कुलज्याय दादकी मालकिन उसकी औरत है बेटेका कोई हक्क नहीं आप मालिक बन सकै, औरत पेस्तर आई थी तिस पीछे लडका भया तो फेर उसहीका हक्क पेस्तर है बाद औरतके दुसरे दरजे बेटा मालक है जिसकै औरत बेटा दोनों नहीं है उस मिलकियतकै मालिक भतीजेकै न होणेपर सातमी पीढीतकका भाई मालक हो सकता है वो भी कोई नहीं होय तो बेटीका बेटा (दोहीता) मालक है और वो भी नहीं होय तो चोदे पीढीतकका भाई मालक है वो भी नहीं होय तो गोत्रकै लोक मालक है गोत्री भी नहीं होय तो उसकी जातीकै लोक मालिक है अगर जाती भी नहीं होतो राजा उस धन दोलतको धर्म कांममें लगा देवै अगर खजानेमें डाले तो गैरइन्साफ है

खाविंदके मरणे बाद उसकी औरतकों कुल इकतियार है सब ज्यायदादकों अपणे तालुकमें रखै, बेटेकों इख्तियार नहीं कि, बिना, माकै हुक्म कुछ खरचकर सकै चाहै जात पुत्र हो चाहै गोदका स्थावर, (थिर रहणेवाली) जंगम (फिरणे टुरणेवाली) मिल्कतका देणा या बेचणा किसीका हक्क नहीं शिवाय धणियाणीकै, इसमें इतना सर्त जरूर है कि, उसकी चाल चलण नाकिस न हो मिल्कीयतकी

मालकण सदाचारणी हो सकती है गैरचलण होणेपर वेटेका इकतियार इन्साफी पंच तथा सरकारके इनसाफमें हो सकता है क्योंके धनकै लालचसें झूठा भी वलवा पुत्र उठा देवै वदचलण सबूत होणेसें वेटा मिलकियतका मालक होकर कपडा रोटी वगेरे खरचा, पंचोकै राह मुजब बांधणा माताकै लिये इनसाफसे हैं गैरचलण. हो, ती भी, नेकचलण माता होय तो पुत्रकूं ज्यायदादपर. कोई हक नहीं है हुकम मातासें सब कांमकर सकता है

अगर कोई शक्स विन ओलाद अपणे मरणेकै वख्त अपणे घरका वंदोवस्त करना चाहे तो इसतरे वसीहतनामा लिख सकता है जो दत्तपुत्र अपणी औरतकै हुकम की तामीलकरणेवाला हो खाविंदके मरणे वाद अगर दत्तपुत्र वसीहतनांमवाला शख्स वदनियत हो जाय तो उस स्त्रीकों इकत्यार है उस वसीहतनांमेंकों खारिज करके दुसरेकै नांमपर वसीहतनामा लिखा सकती है धर्म कामकै लियै या जातिव्यवहारकै लियै—खाविंदकी मिलकियतकों रैण व्यय करणा स्त्रीकों इकतियार है, मावापकों अपणे जात पुत्रपर भी इतना इकतियार है अगर हुकमकै वरखिलाफ चलै या धर्मभ्रष्ट हो जाय यानें कुलमर्याद विपरीत खान पान करणे लग जायतो घरसें. निकाल देवै इसीतरह गोदलियेकों भी निकाल सकता चाहै उसका व्याह भी कर दिया चाहै कुल इकतियार दे दिया होय माता पिताकी मोजूदगीमें जात पुत्रकों इकतियार नहीं है जाय दाद मावापकीकों रैण वा व्यय कर सकै अलग होकै कमाया होय उसपर उसका इकतियार है रैण वा वेचणेका

जिसकी औरत वदचलण होय पतीकूं इकतियार है अपणे घरसे निकाल दे वदचलण औरत पतीपर रोटी कपडेका दावा नहीं कर सकती है कोइ सक्सकी औरतनें पती मरे वाद लडका गोदलिया ओर वो कंवारा ही मर गया तो दूसरा वेटा फेर अपणे नामपर गोद ले सकती है मरे लडकेके नामपर नहीं लें सकती है सासकी मौजूदगीमें मरे

भये वेटेकी वहूकों सुसरेके धनमें रोटी कपडेके सिवाय दुसरा कुछ भी हक्क नहीं है वेटा गोद लैण वगेरे कुलकाम सासूकै कहणे मुजब करणा चाहियै सासूका अंतकाल भये वाद फेर वहूका इखतियार चल सकता है

माता पिताके मरे वाद वेटे अपणे हिस्से अलग करणा चाहे तो सवके हिस्से बरावर होणे चाहिये पिताके जीते हिस्सा चाहे तो मुताविक मरजी पिताकै होगा अगर कोई भाई कवारा होय और हिस्से करणेकामौका आजाय तो मुनासव है उसका व्याह करकै या व्याहका खर्च अलग रखकर वाकी दोलतका हिस्सा वरावर वांट लैणा अगर वहिनकवारी होतो सवी भाई मिलकर पिताकै धनसें भागका सवोंनें चोथा हिसा दूर कर व्याह कर दैणा कोई भाई ऐसा होयकी अपणे वापका धन नहीं खरचकर, नोकरीसें, या किसी इल्मसें, या फोजमें वहादुरी वताकर धन हासिल करै उस दोलतमें दुसरें भाइयोंका हक्क नहीं है विवाहसें सुसरालसें जो कुछ धन मिलै या दोस्तसें इनाम पावै उसमें भी भाइयोंका हक्क नहीं पहुंचता, अपणे कुलका दवा भया धन वाप भाई न निकाल सकै उसकों अपणी ताकतसें विना भाइयोंकी मदतके निकाल लावै तो उस धनमें किसी भाईका हिस्सा नहीं हो सकता

विवाहके वख्त या पीछे जिस औरतको उसके माता पितानें गहणे कपडे गांम नगर जमीन जहांगीरी जो कुछ दिया हो उसकों कोई पीछा नहीं ले सकता वो सव औरत का है चाचा, वडी वहन, भूआ, मासी, भाई, सासू, सुसरा, या उसके खाविंदनें जो कुछ दिया हो वो सव औरतका है, खाविंद भी उस हालतमें मांग सकता है दुकाल वडी मुसीवत पडी हो वाकी नहीं ले सकता ये सव कायदे जैनी आमलोकोंके लिये अर्हन्नीतीसें लिखा गया ॥

अथ सूतक निर्णय

जिसके घर मृत्यु होय उसके घर १२ दिनका सूतक, एक वापके दो वेटे अलग सूतकके घरका खान पान नहीं करै तो उसके घर सूतक नहीं

सूतकवाले घरमें ५० रहवासी अन्य जाती रहती होय तो वो सब सूतकवाले गिणे जाते हैं, चोक १ दरवज्ञ १ होय तो बारह दिनः तक उस घरकै लोक जिम मूर्त्तिकी पूजा नहीं कर सकतै, साधू तथा साधर्मी उस घरका खान पान फल सुपारी तक नहीं खाते २, मंदिरमें दूर खडे दर्शन कर सकते हैं मुखसें धर्म शास्त्र प्रगट नहीं बोले, मुर्देकों खांध देणेवाला २४ पहर सूतकी है, न पूजा करै, न किसी खान पानकी चीजोंकों छुवै, कपडे धुआणे मुर्दे संग जाणेवाला ८ पहरका सूतकी है, दास दासी अपणे घरमें मर जाय तो ३ दिन उस घरका सूतक, जिस रोज बालक जन्मै उसी दिन मर जाय तो एक दिनका सूतक, उस स्त्रीकों ४० दिन सूतक; जितने महीनेका गर्भ गिरे उतने ही दिन सूतक, आठ वरसतककैबालकै मरणेका ८ दिनका सूतक, हाथी घोडा गउ भैंस उंट कुत्ता बिल्ली घरमें मर जाय तो जबतक उठावै नहीं उहांतक सूतक,

सर्व धर्म सार शिक्षा

मोह द्वेष अज्ञानता, तजे कर्म अरुनार, एसो शिव हरि ब्रह्म जिन सबकों करो जुहार १ (सवइया) विद्यमांन तीर्थंकरकूं वंदन जो पुन्य होत वेसोही पुन्य फल जिनमूर्ति वंदनकों, चारित्रव्रत पालवे को साधूकूं फलकहा सोही फल सूत्रों मैं प्रतिमा अभि नंदन कों, दशा श्रुत स्कंध सूत्र आचारांग राय प्रश्नी तीनोंका पाठ एक हित सुख मोक्ष स्पंदनको, एसी सूत्र आज्ञा देख संका मत चित्त राखो जिन प्रतिमा पूजन फल पापके निकंदनको २ साधू दर्शन पुन्य फल, तीरथ दुयम साध, थावर तीरथ देर फल, तुरत मुनिः फल लाध ३ अन्न पान घर वस्त्रसें, शय्याशन कर भक्त, सेवा शोभा वंदना, नवविध पुन्य प्रशक्त ४ पर अवगुण देखे नहीं, निज अवगुण मन त्याग, निज शोभा सुख नाक है, समकित धरवड भाग ५ परनिंदा निज श्लाघता, कर्त्ता जगमैं बहोत, निजअवगुणकों जांणता विरलेई नरहोत ६ उत्तम नरका क्रोध क्षण, मध्यमका दो पैहर, अधम एक दिन रखत है, अधमंनीच नितजैहर ७

उत्तम साधू पात्र है, अनु व्रत मध्यम पात्र, समकित दृष्टी जघन्य है, भक्तिकरो शुभ गात्र ८ मिथ्या दृष्टी हजार तें, एक अनुव्रतिनीक, सहस अणुव्रतीतें अधिक, सर्वव्रतींतहतीक ९ सर्व व्रतीतें लख गुणा, तत्वविवेकी जांण, तात्विक सम कोई पात्र नहीं, यूं माखे जिन माण १० सत्य अहिंसा शील व्रत, तज चोरी पुन लोभ, सर्व धर्मका सार यह स्वर्ग मुक्ति जग शोभ ११ गुजरात देशमें औदिच्य ब्राह्मन हेमाचार्यके उपदेशसें जैनधर्म धारण किया उनोंकों गुजरातमें भोजक कहते हैं (मारवाडी जिन गुण गाणेसें गंद्रप कहते हैं) इनोंका घर कुलती न सोहै वहोत जगे इनोंके सगे सोदरे विष्णु मती जो निगाले वजते हैं वो ५।५० जिन पद सीखके मारवाडादिक क्षेत्रमें गंद्रपोंके नामसें नाटकादिक कर मांग खाते हैं असली गंद्रप भोजक ओसवंश तथा श्रावकों विगर हाथ नहीं मांडते वो भोजग जिन मंदिरके पूजारे गुजरातमें हैं गंद्रपत्रिकालोंकी परिक्षा जैनको न्फ़्रेंस धारेगी तब होगी न मालूम कोन तो जिनधर्मी है और कोण वैश्नव है पर देशवालोंकों क्या खबर हो सकती है

मारवाडके भोजक शाक्त निर्णय गोत्र १६ ॥

ऋषीनाम	नख.	गोत्र.	वेद.	प्रवर.	साखा.	क्षेत्र.	वास.	माता.	भेरूं.	गणेश.
१ माथुर	मुथरिया	कश्यप	ऋग्	त्रि	कोथमी	जगन्नाथ	मथुरा	सच्याय	रुरु	एकदंत
२ भारत	भरताणी	भारद्वाज	ऋग्	त्रि			शेरगढ	भ्रामरी	स्वर्णाकर्षण	गजानंद
३ मालेव	आसीवाण	शोनक	ऋग्	त्रि			आमकगढ	यक्षणी	समशनिश्वर	गणेश
४ हरिस्मति	हरिमोता	हरितस	ऋग्	त्रि			माचल	महालक्ष्मी	रक्तपान	सुखोचित
५ योगहट	हटला	वांतसव	यजुः	त्रि	माध्वनी	द्वारिका	हथनापुर	पध्याई	शल	गणधरू
६ बलभद्र	बलिअद्	साडिल्य	यजु	त्रि			कोटडा	पिपल्याद	क्रोध	कपिल
७ छेत्रउ	छांपरवाल	गौतम	यजु	त्रि			छापरलाडणू	सच्याय	उनमत्त	लम्बोदर
८ केशव	हूंवेरा	गौतम	यजु.	त्रि			करमरी	चामुंडा	चंड	गजकर्ण
९ ऋद्धि	रत्न	उपमथ	साम	पच	कोथमी	बद्रिका	रगपुर	खीमाज	आनंद	गणधीस
१० देवगृत	देवेरा	कुडलस	साम	पच			देरावर	सच्याय	भीषण	विघ्ननास
११ शोम	शावलेरा	चंद्रास	साम	पच			साजनपुर		कपाल	धूम्रकेतू
१२ मूर्द्धना	मुधवाडा	वत्सगोत्र	साम	पच			ओसिया	मुंडार	असितांग	सुमुख
१३ जगदीश	जागला	काश्यप	अथर्वण	पच	असतीनहन	स्वेतपुर	अडगपुर	ब्राह्मणी	भूतेश्वर	सुपनेश्वर
१४ मांडव्य	मेडतवाल	पारासर	अथर्वण.	पच			मेडता	पुडरीक	त्रिपुर	वक्रतुंड
१५ भाल	भीनमाल	भारद्वाज	अथर्वण	पच			भीनमाल	भीमा	शहर	भालचंद्र
१६ वटि	वटारुया	कपीजल	अथर्वण	पच			कोडपुर	कालिका	वटुक	नीलवर्ण
॥ अबोटी	ये सब १६ ॥ गोत्रवाले जैनविश्वव रुद्रका मंदिर पूजते हैं इनोमें कोइ जैनधर्म मांनता है									

दोहा) खंडखंडेलामें मिली, साढी वारे जात, खंड प्रस्थ नृपकी समय, जी म्यां दालरुभात॰ १ वेटी अपणी जात में, रोटी सांमल होय कची पक्की दूधकी, भिन्न भाव नहीं कोय २ श्रीमाल भी न मालसें १ ओसवाल ओ सियांसें २ मेडत वाल मेडतासें ३ जायल वाल जायलसें ४ बघेरवाल बघेरासें ५ पल्लीवाल पालीसें ६ खंडेलवाल खंडेलासें ७॰डीडू महेश्वरी डीड वाणेसें ८ पौकरा पौकरजीसें ९ टींटोडा टींडोडगढसें १० कठाडा खाटूसें ११ राजपुरा राजपुरसें १२ आधी जात बीजा वर्गी ॥

मध्य देश ८४ वणिक जाती

गोढवाड देश पारेवा पद्मावती नग्रमें वस्तुपाल तेजपाल जितनें दयाधर्मी वणिक जाती थी उन सबोंकों मुल्क २ में खरच भेज एकठे किये वडी भक्तीसें उतारा दिया भोजन पंक्ती जीमणे लगी उस वखत एक बुड्ढी पौरवालकी विधवा स्त्रीनें भर पंचोंमें आकर कहा अहो धर्म भाई यो किसके घर जीमते हो ये वस्तुपाल तेजपालका नाना कोन है ये भी कुछ खबर है खबर करी तो मालम भया बाप पोरवाल मा बालविधवा दुसरे वेस्यकुलकी सबूत भई तब जीमलिये सो १०। नहीं जीमें सो २० ये झगडा बहोत जगे २ फैल गया तब वस्तुपाल तेजपाल असंक्ष द्रव्य खरच २ अपणा पक्ष मंतव्य गुरु सब ही थापता भया उहां आये जिनोंके नाम

श्रीमाल २ श्रीश्रीमाल ३ श्रीखंड ४ श्रीगुरु ५ श्रीगौड ६ अगरवाल ७ अजमेरा ८ अजोधिया ९ अडालिया १० अवकथवाल ११ ओसवाल १२ कठाडा १३ कठनेरा १४ ककस्थन १५ कपोला १६ कांकरिया १७ खरवा १८ खडायता १९ खेमवाल २० खंडेलवाल २१ गंगराडा २२ गाहिलवाल २३ गौलवाल २४ गोगवार २५ गीदोडिया २६ चकोड २७ चतुरथ २८ चीतोडा २९ चौरडिया ३० जायलावाल ३१ जालोरा ३२ जेसवाल ३३ जंबूसरा ३४ टींटोडा ३५ टंटोरिया ३६ डूंसर ३७ दसोरा ३८ धंवलकोटी ३९ धाकड

४० नारनगेरसा ४१ नागर ४२ नेमा ४३ नरसिंहपुरा ४४ नबांमरा ४५ नागिंद्रा ४६ नाथचला ४७ नाछेला,४८ नौटिया ४९ पल्लीवाल ५० पवार ५१ पंचम ५२ पौकरा ५३ मौरवाल ५४ पौसरा ५५ वघेरवाल ५६ वदनौरा ५७ वरमाका ५८ विदियादा ५९ वौगार ६० भवनगे ६१ भूंगडवार ६२ महेश्वरी ६३ मेडतवाल ६४ मथुरिया ६५ मौडलिया ६७ राजपुरा ६८ राजिया ६९ लवेचू ७० लाड ७१ हरसोरा ७२ हूंवड ७३ हलद ७४ हाकरिया ७५ सांभरा ७६ सडौइया ७७ सेरडवाल ७८ सौरठवाल ७९ सेतवाल ८० सौहितवाल ८१ सुरंद्रा ८२ सौनेया ८३ सौरंडिया ८४

इसतरे दक्षिणके ८४ जाती तथा गुजरातके ८४ जातीकै वणिकोंमें कोई नांम इसमेंकै नहीं दुसरे है ग्रंथ वढणेके भयसें इहां दरज निरुपयोगी जाणकै नहीं किया है ये वणिक् जाती दयाधर्म पालते हैं इससें प्रगट प्रमाणसें सिद्ध है प्रथम सवोंका धर्म जैन था राजपूतोमेंसें जैनाचार्योंनें हीं प्रति वोध देकर व्यापारी कोम वणाई है जमानेकै फेर फारसें अन्य २ धर्म कोई वैश्य मानने लग गये हैं मगर मांस मदिराका त्याग पणा जो इन जातियोमें है वो जैनधर्मकी छाप है जो जैनधर्म पालते हैं उनोंकों लोकीकवाले अभी महाजन नांमसें पहचाणते हैं जिनोंने जैनधर्म छोड दिया है वो वैस्य या वणिये वजते हैं, वीसे दसे पांचे अढाइए पूण तथा पचीसें इस किसम इनोकी शाखायें कारण योगसे फंटती चली गई है दुनियांमें सवसें वडे राजन्य वंशी लेकिन् धर्ममूर्त्ति दीन हीन पट्दर्शनादि सर्व जीवोंके प्रतिपाल गुणवंत गुणीकी कदर करणेवाले माहाजन, वैस्य, वणिक्, परमेश्वरकै भक्त जयवंत रहो ये जाती वडी उत्तम दरजेकी सत्य धर्म पर चिरंजीवी होकर वर्त्तो श्रीरस्तुः कल्याणमस्तुः ॥ आपका सुभेच्छक जैनधर्मी पंडित। उपाध्याय श्रीरामलालगणिः

श्रीमद्वृहद् खरतरगच्छ पट्टावली

१ भगवंतश्रीवर्द्धमानस्वामी स्वयंवुद्धकेवली २४.में तीर्थंकर

२ श्रीसुधर्मास्वामी गणधर ५ में केवली सौधर्मगछ प्रगटा
३ श्रीजंबुस्वामी चरमकेवली इहांसें जिनकल्पादि १० वस्तु विछेद मं
४ श्रीप्रभवस्वामी श्रुतकेवली १४ पूर्व्वधर
५ श्रीशय्यंभवसूरिः श्रुतकेवली १४ पूर्वधर
६ श्रीयशोभद्रसूरिः श्रुतकेवली १४ पूर्वधर
७ श्रीसंभूतिविजयसूरिः श्रुतकेवली १४ पूर्व्वधर
८ श्रीभद्रबाहुसूरिः अनेक सूत्र निर्युक्ती निमित्त ग्रंथ रचे १४ पूर्व्वधर श्रुतकेवली कल्प सूत्रमें आसाढ चोमासेसें५० दिनसें संवत्सरी पर्व करणा फरमाया जैनअभिवर्द्धन संवरसरमें पोप असाढ सिवाय दुसरें महीनें वढते नहीं इसवास्ते संवत्सरी वाद ७० दिनसें काती चोमासा लगता है समवायांगसूत्र और कल्प सूत्रका पाठ संमिलत है भद्रबाहुस्वामीनें कल्प सूत्रमें महावीरकै ६ कल्याणककहे (पंचहत्थुत्तरे होत्था साइणापरिनिव्वुए) पांच कल्याणक उत्तरा फाल्गुणीमें, स्वाती नक्षत्रमें निर्वाण पाये
९ श्रीथूलभद्रसूरिः १४ पूर्वधर श्रुतकेवली ८४ चोवीसी नांम चलेगा
१० श्रीआर्यमहागिरिसूरिः दश पूर्वधर श्रुतकेवली
११ श्रीसुहस्तिसूरिः १० पूर्व्वधर श्रुतकेवली
१२ श्रीसुस्थितसूरिः इनोंनें कोटि सूरि मंत्रका जाप किया कोटिक गच्छकी यापना भई १० पूर्व्वधर श्रुतकेवली
१३ श्रीइंद्रदिन्नसूरिः १० पूर्व्वधर श्रुतकेवली
१४ श्रीदिन्नसूरिः १० पूर्व्वधर श्रुतकेवली
१५ श्रीसिंहगिरिसूरिः १० पूर्व्वधर श्रुतकेवली
१६ श्रीवज्रस्वामीसूरिः १० पूर्व्वधर चरम श्रुतकेवली वज्र शाखा नाम भया
१७ श्रीवर्ज्रशेनसूरिः भगवानकै ६०९ वर्षपर दिगांवर संप्रदाय निकली
१८ श्रीचंद्रसूरिः इनोंकै नामसें कोटिक गच्छ वज्र शाखा चंद्र कुल जाहरी भया .

१९ श्रीसमंतभद्रसूरिः
२० श्रीवृद्धदेवसूरिः
२१ श्रीप्रद्योतनसूरिः
२२ श्रीमानदेवसूरिःलघु शांतिस्तोत्रके कर्त्ता
२३ श्रीमानतुंगसूरिः वृद्ध भोजराजा सन्मुख भक्तामर स्तोत्र कर्त्ता तथा भयहरस्तोत्र रचकर नागराजाकों वस करा
२४ श्रीवीरसूरिः
२५ श्रीजयदेवसूरिः
२६ श्रीदेवानंदसूरिः भगवांनके ८४५ वादवल्लभी नगरी तूटी
२७ श्रीविक्रमसूरिः
२८ श्रीनरसिंहसूरिः
२९ श्रीसमुद्रसूरिः
३० श्रीमानदेवसूरिः इनोंके समय भगवानसें ८८५ हरिभद्रसूरि स्वर्ग गये और पूर्वोंकी विद्या विछेद गई
३१ श्रीविबुधप्रभसूरिः इनोंके समय सूत्रोंके भाष्य कर्त्ता जिनभद्रगणि आचार्य भये
३२ श्रीजयानंदसूरिः
३३ श्रीरविप्रभसूरिः
३४ श्रीयशोदेवसूरिः
३५ श्रीविमलचंद्रसूरिः
३६ श्रीदेवसूरिः त्यागी वैरागी क्रिया उद्धारीसें सुविहित पक्ष भया
३७ श्रीनेमिचंद्रसूरिः प्रवचन सारोद्धार ग्रंथ वणाया वरडिया वगेरे घहोत गोत्र स्थापन किये
३८ श्रीउद्योतनसूरिः इनोंके निज शिष्य चैत्य वास छोडके आये भये वर्द्धमानसूरि ८३ दुसरे २ यविरोंके शिक्षजिनोंकों सिद्ध वडनीचे शुभ मुहूर्त्तमें सूरि मंत्रका वास चूर्ण दिया यें ८३ अलग २

गच्छोंकी थापना करी इसवास्ते खरतर गच्छमें अभी भी ८४ नंदी प्रचलित है ८४ गच्छ थापन भया

३९ श्रीवर्द्धमानसूरिः १३ बादसाह आबूपर अंबादेवीकों वस कर बुलाकर विमल मंत्री पचायणेचा पौरवाल गोत्रीकूं प्रति बोध देकर शाबू तीर्थपर १८ क्रोड तेपन लाख द्रव्य लगाकर मंदिर विमलवसीकी प्रतिष्ठा करी १३ बादसाहोंने गुरुकों सन्मान दिया हजारों सचिंती वगेरे महाजन बणाये

४० श्रीजिनेश्वरसूरिः अणहिलपुर पाटणमें चैत्यवासी शिथलाचारी उपकेश गच्छियोंसें राजानें सभा कराई राजा दुर्लभ (भीम) नें शास्त्र मर्यादसे यथार्थ ज्ञान क्रिया देख राजानें कहा तुमे खराछो शिथलाचारी चैत्य द्रव्य भक्षकोंकों कहा तुमें कवला छो इहांसें खरतर विरुद सं १०८० में मिला कोटिक गच्छ वज्र शाखा चंद्र कुल खरतर विरुद प्रसिद्ध भया सुविहित पक्ष

४१ श्रीजिनचंद्रसूरिः इनोंनें एक गरीबके अंग चिन्ह देख कहा तूं साहान साहा साम्राट् होगा आखरकों वो मोजदीन दिलीका बादशाह भया गुरूकों वडे उच्छवसें धनपाल शिवधर्मी महतियान श्रीमाल घर विराजमान किया उहां त्याग वैराग्य अतिशय विद्या उपदेससें श्रीमाल सर्व जैनधर्म धारण करा महतियाण गोत्रीयोंकों श्रीश्रीमालकी किताब बादसाहनें इनायतकी एसा भी एक जगे लिखा देखा है, दिल्ली लखनेउ आगराभियाणी झुंझणू जैपूर वगेरे सर्व श्रीमाल १३५ गोत्रके गुरुके श्रावक होगये प्रथम श्रीमाल जैन थे वो शैव शंकराचार्यके हमले में होगये थे सबोंकों पीछा जैन श्रावक करा जिनोंकी वस्ती राजपूताना दिल्लीके अतराफ इनोंका गच्छ खरतर है गुरूनें संवेग रंग शाला ग्रंथ रचा

४२ श्रीअभयदेवसूरिः बारे वर्ष आंबिल तपकरणेसें गलत कुष्ट पैदा भया तब शासन देवी प्रगट हो नवकोकडी सूतकी सुलझाणेका कहा और कहा हे गुरु अणसण अभी नहीं करणा सेढी नदीकी

तटपर पार्श्वजिनेंद्रकी स्तुति करो सर्व दुरस्त होगा तब गुरु राजा-
दिक संघयुक्त जयतिहुअणवत्तीसीवणाकर स्तुति करी थंभणा
पार्श्वनाथकी मूर्त्ती धरणेंद्रनें प्रगट करी स्नात्र जल छांटते सोवन
वर्णकाया भई इस वखत जिन वल्लभसूरिः चैत्यवासी चित्रावाल
गछकी विरुद्ध आचरणा देख श्री अभय देवसूरिःके शिष्यभये योग्य
जांण गुरूनें वाचनाचार्य पद दिया आप नव अंगोंकी टीका शा-
शनदेवीके आग्रहसेंरचीगंधहस्तीकृत टीका दुष्टलोकोंनें गलादी
जलादी शंकराचार्यनें, तब जैनेंद्र व्याकरण पूर्वकृत गुरुमुख अर्थ
धारणासें टीका वृत्तिरची १२ वर्ष विचरते रहै अपणे हाथसें सूरि
मंत्र देकै वल्लभसूरिःको आपनें अणशण किया तब गच्छमें केइ-
यक साधू आचार्य पद वल्लभसूरिःके क्रिया कठनतासें डरते नहीं
देणा धारा तब गुरूनें चामुंडा सचाय देवीकों वस करकै सो ग्रंथ
संघपट्टा पिंड निर्युक्ती स्तोत्रादि रचकर ५२ गोत्र राजपूत महेश्वरि
बाघडी हुवडोंकों प्रतिबोध दे महाजन किये तब सर्व संघ और
वडे २ आचार्य मिलकें आचार्य पद दिया चामुंडानें कहा आज
पीछै आपकै शंतानकों जिन संज्ञा होणी ५ जिनठाणांगमें कहे
प्रभावीक पुरुषकों जिन संज्ञा है सर्व २५ वर्ष वाचनाचार्य पदमें
रहै छ महीना आचार्य पदपाला, द्वेषबुद्धीसें एक ग्रंथमें अपणी क-
ल्पित पट्टावली लिखणेवालेनें मन मानी वात लिखी है जिनेश्वर
सूरिके पाट वल्लभसूरीकों लिखा है और अपणेही हाथसें जैन कल्प
वृक्षमें जिनेश्वरसूरि चंद्रसूरिः अभय देवसूरिः के पट्टपर वल्लभसूरिः कों
लिखा है उस वखत द्वेष नहीं जगा होगा वाद तो द्वेषबुद्धि प्र-
त्यक्ष दरसाई है कुछ तो पूर्वापर विचारणा था २ पाट दूसरे ले-
खमें उठाया जिनेश्वरसूरीकै ७० वर्ष वीतने वाद, वल्लभसूरि भये
हैं भगवतीकी टीका तो देखी होगी उसमें अभयदेवसूरिः खुद
लिखते हैं जिनेश्वरसूरिःके चंद्रसूरिः उनोंका में अभय देवसूरिनें ये
वृत्ती रची तो जिनेश्वरसूरिःकै पट्टपर वल्लभसूरिःकेसें भये प्रमाणीक

ग्रंथ वनाकर उसमें कल्पित पट्टावलीमें असमंजस लिखणा न्यायांभोनिधि पदकों झलकाया मालम देता है चर्चाका चंद्र उदय करणेवाला जो लिखता है सो सब जाहिरा मालम दिया है फेर लिखा है कुर्चपुरी गच्छवासी वल्लभसूरिःनें छ कल्याणक वीरके प्ररूपणा करी, नतो जिनवल्लभसूरिःका कुर्चपुरी गच्छाया नपट्ट कल्याणक इनोंनें प्ररूपणा करी छ कल्याणक परूपणेवाले श्रुत केवली भद्रवाहु स्वामी है, नहीं माननेवाले आप लोक हो, पहलेका गच्छ अगर लिखणेका प्रवाह आप मंजूर करते हो तब तो मेघ विजयकों लोंका गछ पीछे क्यों नहीं लिखा अगर फेर एसा हैतो इस लिखणेसें कोइ द्वेपापत्ती तों नहीं होगी पंजाबी ढूंढिया जीवण दासका शिष्य आत्मारामनें बुंटेरायका शिक्षपणे हो अहम्मदावादमें सोरठ देश सत्रुंजय तीर्थकों अनार्य देशकी प्ररूपणा करी, इस वातकों विचार कर प्रमाणीक लेख प्रमाणीक पुरुष होकर यथा थंही लिखना जरूर था वल्लभसूरिःनें तुमारी तरे विरुद्ध आचरणा छोड दीथी फेर एसा आक्षेप द्वेपवुद्धिसें क्यों किया.

४३. श्रीजिनवल्लभसूरिः इनोंके समय मधुकर खरतर गछ भेद १

४४ श्रीजिनदत्तसूरिः सवाक्रोड ह्रींकारका जाप करा ५२ वीर ६४ योगणी पंचनदी पंचपीर वसकिया १ लाख तीस हजार घर राजपूत महेश्वरी आदिकसें जैनधर्मी महाजन वणाया चितोड नग्रकेवज्रखंभकी तथा उज्जयण नग्रकै वज्रखंभकी साढातीन कोटि सिद्ध विद्या निकालकर जैन संघमें महा उपगारकरावोपुस्तक अब जेसलमेरमें विद्यमान धंध है वीजली गिरी उसकों पात्रकै नीचे दावकर वीजलीसें वरदान लिया दादा श्रीजिनदत्तसूरिः एसा नाम जपणेवालेके घर गिरूंगी नहीं मरीगउकूंपर काय प्रवेशनी विद्यासें जिनमंदिरके सांमनेंसें स्वतः उठादी मरे भये नवाव पुनकों भरु अच्छ नग्रमें परकाय प्रवेशनी विद्यासें छव महीना जिलादिया संघकी आपदामेटी पुत्र धनरोगअनेक वांछार्थियोंकी

कामना पूर्ण कर ओस वंश वधाया रत्नप्रभसूरिःनें ओसियां नग्रमे १८ गोत्ररूप अश्वपती गोत्रका बीज बोयाथा उसकों खरतर गच्छाचार्योंनें साखा प्रशाखा पत्र फल फूलसें उस ओसवंश सुरतरूकों शक्तिरूप जल उपगाररूप छायांसें गहमहकर दिया जिनोंसें जैनदर्शन तथा अन्यमतीभी निर्वाह करते हैं इनोंके विद्यमान समय १२०४ में लोद्रव पट्टणमें रुद्रपल्ली खरतर दुसरा गच्छ भेद भया जिससें खरतर गच्छके द्वेषीवे प्रमाण लिखते हैं १२०४ में खरतर भये, ये दुसरी साखा फटी एसें तो ११ शाखा फट चूकी है द्वेष बुद्धिवाला तो सत्यकूंभी असत्य कहेगा लेकिन् वे प्रमाण लिखणेसें अन्यायी ठहरते हैं.

४५ मणिधारी श्रीजिनचंद्रसूरिः इनोंनें हजारों घर माहाजन वणाया दिल्लीमें इनोंकी रथी उठी नहीं तब बादसाहके हुकमसें सिरेबजार दाग भया खोडिया क्षेत्रपाल सेवित अनेकोंका मरणांत कष्ट मिटाया मुसलमीनभी जिनोंकों दादापीर कहतेथे इनोंके समय पूर्ण तल्ल गच्छी देव चंद्रसूरिःका शिष्य हेमचंद्रसूरिः जिनोंनें शब्दानुशासन प्रगट करा कुमारपाल राजाकों जैनी किया छीपा भावसालोंकों जैनीकिया ऊदीच्य ब्राह्मणोंकों उपदेश देकर जैन किया जो गुजरातमें भोजग मारवाडमें (गंद्रपके नांमसें पहचाणे जाते हैं धर्म ३०० घर जैन पालते हैं जैनी सिवाय दांन नहीं लेते हैं इनोंके समय १२१३ में आंचल १२२६ में सार्ध पुनमिया १२५० आगमिया भये.

४६ श्रीजिनपतिसूरिः इनोंके समय चित्रावाल गच्छी चैत्यवासी जग चंद्रसूरिःनें वस्तुपाल तेजपालकी भक्तीसें क्रिया उद्धार करा तप करणेसें चितोडके राणेजीनें १२८५ में तपाविरुद दियो वस्तुपाल तेजपाल लहुडीन्यात ओसवाल पोरवाल श्री मालीयोंमें करणेवाला मायाका अखूट भंडारीनें इनोंका नंदि महोत्सव करा जिसनें जगत् चंद्रसूरिकी सामाचारी कबूल करी उस गरीबकों श्री-

मंत वणाते गया जगत् चंद्रसूरिःनें श्रावककूं पोसह व्रत पच्चख्खाण करे वाद पोसहमें भोजन एकाशन करणेकी प्ररूपणा करी और आंबिलमें ६ विगय गलके सींधानिमक कालीमिरच पोतीके वेसणके चिलडे वगेरे अनेक द्रव्य खाणेकी प्ररूपणा करी सो अभी गुज़रातमें प्रथा चलती है वड गच्छके आचार्य जव अपणा समुदायकूं आज्ञाकारी नहीं देखा तव हनुमांनगढवीकानेर इलाकेमें आय रहै पिछाडी फेर जती श्रावग मिलके फेर आचार्य मुकरर किया उनोंकै पाटानुपाट विद्यमांन सं० विक्रम १९६६ कार्तिकमें मुंबईमें वड गच्छके आचार्य श्रीजिनचंद्र सिंहसूरिः हमसें मिलेथे मगर तपागच्छके वस्तुपाल तेजपालकी मदतसें वड गच्छ कमजोर होता गया जतीभीकेइयकतपा गछमें मिलगये श्रावकभी मिलते गयै मगर पट्टधर आचार्य वड गच्छमौजूद है.

४७ श्रीजिनेश्वरसूरिः इनोंकै समय १३३१ में सिंहसूरिःसें लघु खरतर शाखा निकली ३ गच्छ भेद भया

४८ श्रीजिनप्रवोधसूरिः

४९ श्रीजिनचंद्रसूरिः दिलीकै वादसाह चितोडका राणा जेसलमेर कारावल-मंडोवरकै राठोड राव राजा एसे ४ राजा गूरूके भक्त भये इस आर्यावर्त्तमें जगे २ जीव दया और जैनधर्मकी उन्नती खरतराचार्योंकी महिमा विस्तार पाई वादसाहनें केइ २ वंदोवस्तके फुरमाण लिख दिये तवसें राज्यगुरु खरतर राज गच्छक हलाया अनेक प्रतिवादियोंकों जीता तव वादसाहनें भट्टारक श्री जिनचंद्रसूरिः एसा खास रुकेमें लिखा भट्टारकनाम हेम अमरादिकोशोंमें पूजनीक पुरषोंका है अथवा अनेक भट्टोंकों न्यायसें हराणेवाले,भट्टारक सर्व गच्छकै लोक खरतर भट्टारक गच्छ कहणे लगे

५० श्रीजिनकुशलसूरिः ५२ वीर ६४ योगनी पंचनदी पंच पीर वसकरकै संघका वहोत उपगार करा निर्धन श्रावगको धन अपुत्रियेकूं पुत्र दियां पाटण सहरमें गुरु व्याख्यान वांचते थे उस वखत

गूजरमलचोथरेकी जिहाज रत्नागरमें डूबणे लगी उसनें गुरूकी स्तुति करणीसरूकीकेसें २ अवसरमें,गुरु रखी लाज हमारी उस वखत गुरु पक्षीरूप हो उडकर गुजरमलकी जीहाजकों किनारे लगा दरसण दै पीछे आकर व्याख्यान करा तब संघयेस्वरूप देख आश्चर्य पाया १ महीनेसें गूजरमलपाटण आकै सर्व्व वात संघसें कही इस तरें स्वर्ग पाये बाद समय सुंदर. उपाध्यायकी तथा सुखसूरिः की डूबती भई जिहाजकों पार लगाई मुसलमान लोकोंका बहोत उपगार कर दादापीर कहलाये फागुण वदि अ-म्मावस देराउरमें धांम पाकर पूनमकों अपणे भक्तोंकों जगें २ दर्शन दिया फुरमाया भुवनपतीनिकायका आयुष्य मेरा पहली बंध गया था सम्यक्त बाद गुरु माहाराजसें पाया जो याद करोगा तो होणेवाला काम तुरत कर दूंगा वडे दादासाहबसौधर्म देव-लोक टक विमान ४ पल्यकी स्थिती पर विमानाधिपती भये हैं उन धर्मदाता गुरूका ध्यान पूजन भक्तीकारककूं में सहाय क-रूंगा भक्तजनोंकै आधीन रहूंगा अंतर्ध्यान भये तबसें लोक नग्र २ में चरण पूजने लगे

५१ श्रीपद्मसूरिः कुशलसूरिःकै शिष्य उपाध्याय श्री क्षेमकीर्त्ति गणीनें सवियाण गढमें राजपूतोंकी जांन प्रतिबोध ५०० कोंदिक्षादी कुशल-सूरिः प्रगट हो ५०० सेका उपगरण राजासें दिलाया क्षेम धाड साखा प्रगट भई ये प्रथम भट्टारक गण साखा १ तीन शाखा ओर एवं ४ है

५२ श्रीजिनलब्धिसूरिः

५३ श्रीजिनचंद्रसूरिः

५४ श्रीजिनउदयसूरिः यावज्जीव एकांतरोपवास नव कल्पी निहार एक लाहारी सं।१४२२ में जेसलमेरमें वेगड खरतर गंच्छ भेद ४ था

५५ श्रीजिनराजसूरिः न्यायमार्तंड कहलाये

५६ श्रीजिनभद्रसूरिः इनोंनें दोनों भैरवोंकों आराधा काला भेरूकूं

गच्छाधिष्टायक वणाया गद्दी धरकूं मंडोवर जाणा, आराधे तर
साहायकारी रहूंगा वलि देणा अष्ट द्रव्यकी एसा वचन लिय
१४७४ में पीपलिया खरतर ५ मां गच्छ भेद भट्टारक गच्छ
इनोंसें भद्रसूरिः शाखा चली

५७ श्रीजिनचंद्रसूरिः इन माहाराजाके देवलोक भये पीछे १५३१ में तपागच्छी दस्सा श्री माली वणियाल्लंकेनें जिन प्रतिमा निषेधरूप मत अहम्मदावादमें चलाया उसमें ३ गुजराती २ नागोरी १ उत्तराधी इनोंमें ५ संप्रदाई विद्वान होकर जिन प्रतिमा मंजूर करी

५८ श्रीजिनसमुद्रसूरिः सोम यक्ष ५२ वीर ५ नदी साधी

५९ श्रीजिनहंससूरिः इनोंनें गहलडा गोत्र थापा बहोत माहाजन वणाये आचारांगसूत्रपर दीपिका बणाई देव सानिद्धसें ५०० से कैदी वाद साहसें छुडाये मुल्कोंमें अमारी डूंडी पिटवाई इनोंके समयमें १५६४ में आचार्य खरतर गच्छभेद ६ जो पाली नग्रमें है १५६२ कडवा मती १५७० में लूंकेका मत त्याग बीजा मत निकल जिन प्रतिमा मानी १५७२ तपागच्छमेंसें पार्श्वचंद्रजीनें ५ की संवत्सरी प्रमुख संप्रदाय निकाली

६० श्रीजिनमाणिक्यसूरिः इनोंके समय हुमायू वादसाहके जुलमसें त्यागियोंनें अणसण किया केइलंगोटबद्ध माहात्मा पोसालिया होगये वाकी वहुत गच्छके जती घरवारी होगये तब लोक मतिहीन कहणे लगे (मथेण) तब आचार्य शिथलाचार बहोत फैला देख जेसलमेरमें रहे वादवछावत संग्रामसिंहनें गछभावसें महाराजकूं वीकानेर बुलाया तब कुशलसूरिःजीका दर्शन करणेकूं संघके साथ देराउर जाते दिनकूं जल नहीं मिला तब रातकूं जल मिला यावजीव चोविहार तब अणसण कर शिष्यकों क्रिया उद्धार करणेकी आज्ञा दे देवता भये जेसलमेरमें श्रीजिनचंद्रसूरिःकों दर्शन देकर सहायकारी भये कहा भस्म ग्रह उतराहै उदयका वखत है जो विचारेगा सो सर्व कांम होता रहेगा

६१ श्रीजिनचंद्रसूरिः इनोंने लाहोर नग्रमें अकबर वादसाहकों धर्मोपदेश दे अनेक दुख प्रजाका दूर कराया, जैन तीर्थ श्रावकोंकी रक्षा कराई अरब्बीकै मोहर छाप फुरमाण• वादसाहके करे भये वीकानेरवडे उपाश्रयमें भेज दिये महात्यागी पंच महाव्रतधारी प्रतिमा. निंदकोंकों परास्त करते गुजरातमें लूंपकमती तपोकों प्रतिबोधकै श्रावक वणाया गुरुनें विचारा गुजरातमें मतांतरी वहोत होगये हैं उन जीवोंपर करुणा लाकै गुजरातमें विचरकै मत कदाग्रह तोडा जगे २ खरतर गच्छ दीपाया और मतांतरियोंकों शुद्ध श्रद्धाकी पहचान कराई तपागछी विजयदानसूरिःकै शिष्य धर्मसागरनें कुमति कुद्दाल कल्पित ग्रंथमें लिखा था की अभय देवसूरिः नव अंग टीकाकार खरतरगच्छमें नहीं भये इसका निर्धार करणेकों पाटणनग्रमें सब गच्छकै प्रमाणीक आचार्योंकों उपाध्याय वगेरोंकों एकठे किये धर्मसागरकों सभामें बुलाया मगर आया नहीं तब सबोंनें धर्मसागरकों ८४ गच्छ बाहिरकरायेव्रात गीतार्थ विजयदानसूरिः मेडता में सुणकै कुमतिकुद्दालग्रंथकी जो प्रति मिली सो सब जलशरण करी और खरतरगच्छसें विरोध करणा बंध करा इनोंके पट्ट हीरविजयसूरिः बैठै उनोंनें तपागच्छकै संघमें सात हुकम जाहिर किया पर पक्षीकों निन्नव नहीं कहणा, परपक्षी प्रतिष्ठित मंदिर प्रतिमा मानवा योग परपक्षीनी धर्मकरणी सर्व अनुमोदवा योग इस तरे ७ है सो लेखवडे उपाश्रय वीकानेर ज्ञानभंडारमें विद्यमान है इन दोनोंनें वडा संप रखा प्रभावीक होगये इस वखत वालोतरेमें भाव हर्ष उपाध्यायनें ७ गच्छभेद किया भाव हर्ष नामसें, इनोंने अपणे हाथसें सिंहसूरिःकों आचार्य पद दिया, वादसाहनें चमरछत्रादि राजचिन्ह संग करदिया

६२ श्रीजिनसिंहसूरिः सागरचंद्र १ की त्तिरल २ साखा भई

६३ श्रीजिनराजसूरिः इनोंकै समय १६८६ में मंडलाचार्य सागरसूरिः

सें आचार्य खरतर साखा निकली ८ मां गच्छभेद गुरुमाहाराजनें सूरि मंत्र देके रत्नसूरिकों आचार्य पद थापन किया

६४ श्रीजिनरत्नसूरिः इनोंके समय सं ।१७०० में रंगविजयगणिः सें रंगविजय खरतर साखा ९ मां गच्छभेद इस गछमेंसें जिन हर्ष गणिःके चेले श्रीसारनें श्रीसार खरतर साखा निकाली ये १० मा गच्छांतर भया

६५ श्रीजिनचंद्रसूरिः इनोंके समय १७०९ में ढुंढक मत प्रगटा धर्म-दास छींपा वगेरे २२ सोंनें मूं बंधा मत निकाला हाजी फकीरकी दवासें मत चलाया

६६ श्रीजिनसुखसूरिः इनोंकी गोगाबंदरसें खंभात जाते दरियावमें जि-हाज फटी तब पाणीसें भरगई कुशलसूरिःका स्मरण किया दादा साहबनें नई जिहाज बणाके खंभात पहुंचाके जिहाज अलोपकरी

६७ श्रीजिनभक्तिसूरिः सादडीग्राममें परपक्षीकों जीता पूनामें सिवाजी पेसवाके सभामें वेदांतमती ब्राह्मणोंकों जीता

६८ श्रीजिनलाभसूरिः

६९ श्रीजिनचंद्रसूरिः इनोंनें लखणेऊमें प्रतिमा उत्थापक मत जो फैला था उनोंकों परास्तकर राजा वच्छराजनाहटेकों चमत्कार दे नवाबसें राजा वणवा दिया

७० श्रीजिनहर्षसूरिः इनोंके ५ शिष्य निजये छठा शिष्य नागोरके जती माणकचंदजीका रूपचंत देखके मांगकर लेलिया निज शिष्य सूरतरामजी, जो मांगके लिया उनोंका नाम मनरूप जीथा, इनोंके समय खरतर भट्टारक गच्छमें १८०० जतियोंकी संक्षाथी

७१ श्रीजिनसौभाग्यसूरिः इनोंके समयमें १८९२ में मंडोवरमें महेंद्र-सूरिःसें ११ मां गच्छभेद भया सौभाग्यसूरिः जावजीव एकलठाणा प्यादलविहार साढे १२ हजारसूरि मंत्रका हमेस जाप सचित्तके त्यागी कंवर पदेमें हनुमंत वीरका मंत्र साधा था सो सिद्ध हो-गया था रामगढमें पोतेदारकी लडकीके बचपणसें पथरी होरहीथी

गुरुपास लाया गुरूनें तीन चलूपाणी पिलाया उस वखत २ रुपे भरकी पथरी निकल पडी मुरसिदावादमें प्रतापसिंह दूगडकों वृद्धपणमें नव पद आम्नाय दे लक्ष्मीपति धनपती दो पुत्र दिये वीकानेरमें माहेश्वरी माणकचंद वाघडीकों वृद्धपणमें पुत्र दिया राजा राठोडकू अनेक चमत्कारसें वीकानेरमें सिरदारसिंहजीकूं परम भक्त वणाकर अनेक जीवोंका कष्ट आपदा दूर किंया इत्यादि वहुत है ग्रंथ वढणे भयसें नहीं लिखते हैं महाराजा सिरदारसिंहजी ४ गांम भेट करणे वहोत अर्ज करी गुरूनें फरमाया सन्यासियोंकों भृष्ट करणेकों जागीरी होती है सर्वथा इनकार किया एसे दीर्घ दृष्टी त्यागवुद्धिः परम उपगारी भये.

७२ श्रीजिनहंससूरिः इनोंके समय श्रीजिनमहेंद्रसूरिः के पटोधर श्रीजिनमुक्तिसूरिः वडे षट्शास्त्रवेत्ता चमत्कारी प्रगटे जेसलमेरसें फलोधी पधारते पोकरणके ठाकरके कवर हिरण मारणे वंदूक उठाई गुरूनें मना किया गुरूनें कहा छोडतो देखताहूं तीन वखत कारतूस दिया वंदूक काष्ठकी तरे होगई चरणोंमें गिरा संहरमें पधराकर भक्ति करी ऊंठ फेरता फतेसिंह चांपावतकूं फुरमाया १ वर्षमें तेरे राज जोग होणा है वेसाही भया जैपुर नरेससवाई रामसिंहजी के सामनें कुलकाम कर्त्ता मुसाहव भया गुरु जैपुर पधारे तव फतेसिंहनें राजासें सर्व वृत्तांत कहा राजा वोला मेरे मनकी वात कहेंगे तो जरूर भक्ती करूंगा दोनों गुरुपास आये गुरूनें कहा विलायतसे जो हुकम चाहते हो सो एक मुहूर्त्तसें सिद्ध काम होणेवाला है वस वैठे २ ही तार वेसाही आगया तव राजा भक्तीसें ५ रुपे हमेस्के गाँम भेटकर जैपुरमें हरदम रहणेकी प्रतिज्ञा कराई एसे प्रभावीक खरतराचार्य विद्यमान हमने देखा है खरतर साधू १। ऋद्धि सागरजी २। श्रीसुगणचंदजी वडे प्रभावीक निकले श्रीक्षमाकल्याणगणिः के पोत्र ये ऋद्धिसागरजी पलि वाकळ प्रतिष्ठामें दश दिग्पालोंकों दंते नारेल उछालते

गोटा ऊपर आकाशमें अलोप टोपसियां फकत नीचे गिरती दुसालेपर आरती कपूर सिलगाके धरकर श्रावकोंसें जिनप्रतिमाके सामनें उतरवा ते दुसाला के दाग लग नहीं सकता. मारवाडमें जिनमंदिरको बंधकर विनापाणीविनाअदमी धोकर साफ करव्या हजार घडे पाणी ढुला मया. मंदिर खोलातो सब मलीनता साफ और जलसें गीला मालम दिया इत्यादि अनेक विद्या संपन्न फलोधीलोहावट पोकरणके श्रावक देखणेवाले मौजूद है ३। श्रीसुगणचंदजीने वीकानेर नरेसमहाराजा डूंगरसींघजीको अनेक मन चिंताकी होणेवाली वात आगूं कहदी तब राजासें सिववाडीमें मंदिरके वास्ते भूमीका पटा करवाया अभी आचार्य खरतर पंडित तनसुखजीनें मेघ वर्षाका वीकानेरमें विलकुल अभाव मया तब दरबार माहाराजा श्रीगंगासिंहजीनें हजारों रुपे खरचकर ब्राह्मणोंका अनुष्ठान कराया बूंदमी नहीं गिरी तब इनोंको बुलाया इनोंनें कहा गुरु देव करेगा तो भादवा वदि दशमीसें वर्षा सरू होगी सच उसदिनसें ही मेघनें जय २ कारकर दिया ये वात सं।१९६३ की है एसे २ प्रभावीक मंत्रवादी सर्व शास्त्रवेत्ता जती अभी विद्यमान है खरतर गच्छमें.

७३ श्रीजिनचंद्रसूरिः इनोंकी अवज्ञा करणेवालेकों माहाराजनें फुरमाया तूं कोढिया होगा सो सच हो गया पंडित अनोपचंद जतीको सेतान लगाथा सो विना पढे अनेक भाषा बोलता था बहोत इलाज लोकोंने किया अच्छा नहीं भया गुरुनें एक तमाचा मारा सो उसी बखत छोड कर बोला जाता हूं वो होसमें आया सो जती विद्यमान वीकानेरमे हैं एसें प्रभावीक गुरु हो गये.

७४ जंगमयुग प्रधान वर्त्तमान भट्टारक श्रीजिनकीर्त्तिसूरीश्वर विजयते क्षेम धाड शाखामें उपाध्याय श्रीनेममूर्त्तिजीगणिः । वाचक विनय भद्रजीगणिः पंडित श्रीक्षेममाणिक्यजीगणिः तथा पंडित राजसिंहजीगणिः इनोंकों दादासाहब अरसपरस थे जिनोंनें छत्रपती थारे पायनमें.

इत्यादि दर पूनम एक स्तवन सीखणी गुरूकी कर एकाशन हमेस करते वदन कमल वाणी विमल इत्यादि अनेक छंद महाकवी पट्ट शास्त्र-वेत्ता भये उनों दोनोंके शिष्य पंडित लब्धि हर्षजी सवियाणा गांममें ठाकुरके पूजनीय भये उनोंके शिष्य छठे मास लोच पंचतिथी उपवास उभयकाल प्रतिक्रमण चाल ब्रह्मचारी सर्व आरंभके त्यागी स्वाक्रोड परमेष्ठी मंत्र स्मारक प्रसिद्ध नांम श्रीसाधूजी दीक्षा नांम धर्मशीलगणिः उनोंके वडे शिष्य हेम प्रियगणिः लघुपंडित श्रीकुशल निधानमुनिः कै शिष्य उपाध्याय श्रीरामलाल (ऋद्धिसारगणिः) नें इस ग्रंथका संग्रह करा जो कुछ जादा कम लिखणेमें आया होय तो मिच्छामि दुक्कडं ये ग्रंथ सर्व विवेकि भव्य जीवोंकों आनंद मंगल सुखवृद्धिः करो श्रीरस्तु कल्याणमस्तु लेखकपाठकयोः शुभं ॥

(दोहा) विक्रम संवत् उगणशत, छासठ ऊपरमान, श्रीविक्रमपुरन-ग्रमें, गंगसिंह राजान १ खरतर भट्टारकपती, श्रीजिनकीर्त्तिसूरिंद ध्रुवज्यों निश्चल जय रहो, काटो कुमति फंद २ धर्मशील गुरु राजके, मुनिवर कुशल निधान, युक्तिवारिधिः गुण प्रगट उपाध्याय पद था न ३ संग्रह कीनो ग्रंथको रामगणिः ऋद्धसार मंत्री जीवणमल्लमुनिः उदय धर्म आधार ४ प्रेम अमर परगट करै, जैन धर्म उद्योत, पढ सुणकर श्रीसंघके नित २ मंगल ज्योत ५ इति श्री ओसवंशमुक्तावली श्रावकाचार कुल दर्पण संपूर्णम् ॥

प्रकाशक सूचना

पुस्तक मिलणेका ठिकाणा वीकानेर राजपूताना रांघडी उपाध्यया श्रीरामलालजीगणिः की विद्याशाला पत्र व्यवहार करणा,

उपाध्यायजी योग मार्गके वेत्ता विद्या मंत्रबलके आसपास वास और न्यासकी अलक्ष क्रियासें चिकित्साके पटांतरसें हजारो मरणांत दुख पडे मनुष्य गणकों वचाणेवाले अनेक सद्य चमत्कार मंत्रके ज्ञाता जिनोंनें दक्षण हेद्रावादमें आर्या ,समाजी याज्ञेश्वरानंदकों प्रतिवादमें जैन न्यायसें जीतकर जती शिक्ष वणाया वीकानेरमें तेरा पंथी ऋषी

शिवराजजी पन्नालालजीकों सनातन धर्मकी श्रद्धा जैनागमसें ४ दिन चर्चा करके जती शिष्य वनाया तेरा पंथी ऋषी हुकमचंदजीकों जती शिष्य वनाया जो अभी गंगा सहरमें वाचनाचार्य पद युक्त शिष्य पांफूलचंद शिष्य पं० विजयचंदयुक्त माहाराजसें अलग आज्ञाकारी रहते हैं यावज्जीव सचित्त त्यागी यावज्जीवचो विहार नवकारसी प्रमुख तप कर्त्ता सम्यक् ज्ञान १ सम्यक् २ दर्शनादि तीनों रत्न विराजमान अनेक ग्रंथोंके सुगम भाषा प्रकाश कर्त्ता अलक्ष देव सहाई अगर माहाराजके मंत्र तंत्र शक्तीका जो चमत्कार प्रत्यक्ष हमनें देखा है सो लिखे तो एक वडासा ग्रंथ हो जाय कभी २ कोई २ अज बी नमूना श्रावकोंकों दिखा देते हैं जोधपुरमें चतुरभुजजी कल्ला ७० अदम्योंसे भेरू वागमें ४९ की शालमें महाराजके दर्शनकूं आया जिसकों पाणीका अतर मनमें विचारे मुजब एकहीफोहेसें ७० रोंकों अलग २ कर सुंघाया पाणीका लोटा भरेकूं दूध २ ही कर दिया बीकानेरमें दांन मलजीना हटेके हाथमें दावा भया रुपया उडा दिया सो भैरवकी मूर्त्ती पास मिला प्रश्न मन चिंता लिखके कागदमें लपेट हाथमें मुठीमें दानमलजीनें रखा था सो वो कागद जाकर प्रश्नका जवाबरूप कागद मिला आगे होणेवाली वार्ता लिखी सो हो गई एसे वालचंद आमडकों अगम वातका पत्र मंगा दिया सो सच मिलगया हेदरावाद कुलपाक तीर्थपर नारेल तथा अतरकी पूजाके वास्ते हस्तमलजी गोलच्छे फलोधीवालेकूं चाह भई जो कहा सो मंदिरमें वैठे मंगा दिया ये सव चमत्कार देखणेवाले मोजूद है, एक अग्र वालके अंगमें जिंद था, किसीसें नहीं निकला माहाराज गंजमें, गुरूने एक पूतला उसके सांम्नें रखकर तीन चलू पाणी छिडक-तेही पूतला, वेलाग, तडफडणे लगा, उसको पकड कीलदिया, हैदरावादमें हरि रामजी कलंत्रीकूं जो चमत्कार दिखाया उसका मनकामना सव मंत्रशक्तीसें पूर्ण कर दिया इत्यादिक परम उपगारी कितनेइ विद्यार्थी शिष्य जिनोंके जगतमें पूज्य हो गये. विद्यमान उपाध्यायजी वहोत दिन चिरंजीवी रहो

॥ श्री ॥

अनुक्रमणिका

पत्र

छपे भये ग्रंथ तइयार

करुणा बत्तीसी दादा गुरु देवकी मंत्रयुक्त गायन पूजा ।

सिद्धमूर्त्ति विवेकविलास १ भाग ।।) भाग दूसरा ।।।) दोनोंसंग १ =

श्रावक व्यवहार धनकमाणेका १

खरगच्छ तपगच्छ ३७ गायनपूजा विधियुक्त २।।

सोले चाणाक्य अर्थ, कामसिद्धका पासाशकुन, स्वरोदयजैनभाषा, ।।।

वैद्यदीपक सब डाकदरी देशी यूनानी होमियापैथी ३५ हजा ग्रंथ वदनकी रक्षा खान पान चाल चलण रोग परिक्षा इलाज पथ्य एसा दुनियामें कोई विद्या रही नहीं जो इसमें नहो सब गृहस्थोंके तनदुरस्ती रखणे पास रखणे लायक ऋषभ संहिता है ५

शकुन जानवर मनुष्य छींक अंग फुरकण काल सुकाल होणेके खबर सब चीजोंकी तेजी मंदी भजालक्या है सो इस मुजब देख व्यापार करे तो निश्चे धन कमावेही नाना गुण भरे हैं १

ओसवंशमुक्तावली १।।) स्वप्न सामुद्रक कामशास्त्र छपेगा १

रत्नसमुच्चय (रत्नसागर) जैनियोंका सर्व धर्म कर्त्तव्य सब गच्छोंका ...

ये पुस्तक मंगाणेवालेनें वी. पी मंगाकर पुस्तक लोटाणा नहीं टायगा उसकूं अपणे इष्टकी बेमुखीपणा करणेका पाप लगेगा कारण ज्ञानमें नुकशानी करणा इष्ट देव तुल्य नुकशानी है प्रथमन मंगावे कोण जबरन् करता है नाटपेट पत्र नहीं देणा ।। टिकट भेज सूचीपत्र मंगाके देखो परसन पडे तो जरूर होय तो मंगावो हम तो ज्ञानके वृद्धिकारक रक्षक वीर प्रभूके धर्म दलाल हैं श्रावक व्यापारी ग्राहक है अगर ज्ञान पाकर व्रत धर विवेकी होय तो हमारी धर्म दलाली पकै और मार्गानुयायी होकर धर्म धन पावें आपका अभिन्न हृदय विद्या शालाके मंत्री पंडित वैद्य जीवण मलमुनिः मालक सर्व हक शिष्य पेमचंद अमरचंदः श्रीरस्तुः इस ग्रंथका सर्व हक ग्रंथ कर्त्तानें विद्या शालाके स्वाधीन किया है कोई छापणेकी तस्दी विना इजाजत स्वामीके छापेगा कायदेसें दंडका भागी होगा.